स्मृतियों में हार्वर्ड

सीताकान्त महापात्र

यात्रा संस्मरण

अनुवाद



दिनेश कुमार माली

आमुख

एक नदी जिसका नाम है चार्ल्स, इस नदी के किनारे दो विश्व विख्यात शिक्षा-संस्थान हार्वर्ड और एम॰आई॰टी॰ विद्यमान है। इस नदी के दूसरी तरफ बोस्टन विश्वविद्यालय है। नदी के किनारे बसे शहर का नाम कैम्ब्रिज है। भले ही, क्षेत्रफल में यह छोटा है, मगर बहुत ही प्राचीन शहर है। नदी की दूसरी तरफ बहुत बड़ी नगरी बोस्टन है। हर दिन होने वाले परिवर्तन को सुदूरगामी बनाने वाले हार्वर्ड का परिवेश असाधारण है। इसकी सुदृढ़ नींव चार सौ साल की परंपराओं और संस्कारों की पृष्ठभूमि पर आधारित है। विश्व के सर्वोत्तम दस विश्वविद्यालयों में इसका स्थान हमेशा अव्वल रहा है। ऐसे विश्वविद्यालय में फोर्ड फ़ाउंडेशन फ़ेलो तथा एसोसिएट प्रोफेसर के रूप में एक वर्ष(1987-88) बिताना मेरे लिए किसी परम सौभाग्य से कम बात नहीं थी।

हार्वर्ड विश्वविद्यालय और कैम्ब्रिज शहर की स्थापना इंग्लैंड के 'निर्वासित' बहु प्रतिभाशाली व्यक्तियों के अथक प्रयासों का फल है। नए महाद्वीप में उपनिवेश की स्थापना करना,बोस्टन टी-पार्टी और न्यू इंग्लैंड जैसे नामकरण ऐतिहासिक कथावस्तु है। इंग्लैंड के कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के पूर्वतन विद्यार्थी देश से निर्वासित होने के बाद भी 800 साल पुराने विश्वविद्यालय को भूल नहीं पाए थे, इसलिए उन्होंने इस शहर का नाम कैम्ब्रिज रखा और वह कुछ हद तक हार्वर्ड का ढांचा भी कैम्ब्रिज जैसा ही बनाया।संयोगवश सन 1968-69 में मैंने जो एक साल कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के फ़ेलो के रूप में बिताया था, उनकी स्मृतियाँ हार्वर्ड में एक साल प्रवास के दौरान तरोताजी हो उठती थीं।

हार्वर्ड ने मुझे अजस्र रंग-बिरंगे अनुभव प्रदान किए। सेंटर में मेरे साथ काम करने वालों में मेक्सिको के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार कार्लो फुएंट्स,आइरिस कवि सियामस हिनि मुझे घनिष्ठ मित्र के रूप में मिले।उस समय हिनि को नोबेल पुरस्कार नहीं मिला था। विश्वविद्यालय के विभिन्न दौरों के समय मुझे नाइजेरिया के उपन्यासकार चिनिआ आचिबी,रूसी कवि जोसेफ **ब्रोडस्की**,मेक्सिको के कवि **ओक्टेविओ पॉज** ,स्वीडेन के कवि थॉमस ट्रांस्ट्रोमार के साथ मिलने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

मैं जिस फ़ेलोसिप पर काम कर रहा था,उसमें संयुक्त राष्ट्र अमेरिका,कनाड़ा भ्रमण के साथ-साथ यूरोपियन कम्यूनिटी के निमंत्रण पर उनके हेडक्वार्टर और संसद और ब्रसेल्स और **स्ट्रासबर्ग** की यात्रा भी शामिल थी। इसके अतिरिक्त, मुझे अमेरिका के विभिन्न विश्वविद्यालयों में व्याख्यान और काव्य-पाठ हेतु भी निमंत्रण मिला था। उनमें प्रमुख शिकागो विश्वविद्यालय की **विलियम वॉन मूडी** व्याख्यान-माला और काव्य-पाठ शामिल था, जिसकी अध्यक्षता मेरे मित्र ए.के. रामानुजन ने की थी। बहुत दिन से मेरे मन के अंदर प्राचीन संस्कृति के अन्यतम देश मेक्सिको देखने की प्रबल इच्छा थी। प्रवास के दौरान मैंने मेक्सिको का भ्रमण भी किया।

सारी बातों को लेकर एक किताब लिखने की इच्छा मन के अंदर बहुत दिनों से छुपी हुई थी, मगर समय के अभाव और मेरे स्वभाव-सुलभ आलस्य के कारण यह संभव नहीं हो पा रहा था। बहुत सारे कागज-पत्र,मेरी पुरानी डायरी,उपरोक्त दोस्तों की चिट्ठियों आदि की सहायता से चार वर्ष पहले (2004) मैंने इस पुस्तक को लिखना शुरू किया था, जो अब यानि 2010 में पूरा हो रहा है। मुख्य प्रकाशक पीताम्बर बाबू को इसका प्रकाशन दायित्व लेने के लिए उन्हें और उनके छोटे पुत्र श्रद्धेय जीवानंद को मेरा हार्दिक धन्यवाद। सन 1981 में फ्रेंड्स पब्लिशर द्वारा प्रकाशित 'अनेक शरत' को पाठकों का भरपूर प्यार मिला। ज्ञानपीठ द्वारा इसके हिन्दी अनुवाद के तीन संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। इससे पूर्व मेरा दूसरा यात्रा-संस्मरण 'शाणित तरवारि और सेवती फूल' प्रकाशित हुआ है। अब इस पुस्तक को ओड़िया पाठकों को उपहार देते हुए मुझे खुशी हो रही है।

सीताकान्त महापात्र

महाशिवरात्रि
12.02.2010

अनुवादक की कलम से ...

ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित डॉ.सीताकांत महापात्र का नाम न केवल भारतीय साहित्य में वरन विश्व साहित्य में भी अपनी विशिष्ट उपस्थिति दर्ज करवाता है। एक प्रबुद्ध प्रशासक और साहित्यकार होने के साथ-साथ नृतत्व (मानविकी) विषय पर आपका विशेष अधिकार है। भारतीय प्रशासनिक सेवा की परीक्षा में पूरे देश में अव्वल होने तथा परवर्ती प्रशासनिक सेवाओं में उत्कृष्ट योगदान देने के लिए भारत सरकार की तरफ से आपको कैंब्रिज एवं विश्वविद्यालय में बतौर 'फ़ेलो' के रूप में भेजा गया। वहां पर भी वर्ष के अंत में होने वाली लिखित परीक्षा में सबसे ज्यादा अंक प्राप्त कर आपने हमारे देश का नाम गौरवान्वित किया।

विगत एक दशक से मैं सीताकान्त महापात्रा से परिचित हूं,ओड़िशा के ख्याति-लब्ध शीर्षस्थ कवि के तौर पर। ओड़िया काव्य के प्रति प्रगल्भ स्वानुभूत साहित्यिक अवधारणाओं एवं विमर्श के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं के समकालीन साहित्य पर भी आपकी गहरी पकड़ है।अपनी यात्रा-संस्मरण *'हार्वर्डरे सेईसबु दिन'* उन्होंने मुझे सन 2011 में अवलोकनार्थ भेंट की थी,भुवनेश्वर में उनके घर सत्यनगर में एक औपचारिक मुलाक़ात के दौरान,जब मुझे आंतरिक उत्कंठा इस सदी के बड़े-बड़े लेखकों से मिलने को प्रेरित करती थी। ये पुस्तक मुझे उपहारस्वरूप देते हुए उन्होंने कहा था,"दिनेश,यह मेरे जीवन की एक अनमोल धरोहर है।" एक-दो महीने में मैंने इसे अच्छी तरह पढ़ लिया था, मगर वैदेशिक पृष्ठभूमि, अनेक विदेशज शब्द और विदेशी साहित्यकारों की अनभिज्ञता के कारण मैं इस पुस्तक का अनुवाद करने में अपने आपको अक्षम पा रहा था। मगर जब मैंने राहुल सांस्कृत्यायन की *'वोल्गा से गंगा तक'*, *'किन्नर देश की ओर'* यात्रा-संस्मरण पढे तो मेरे यायावरी स्वभाव के कारण मुझे साहित्य की अन्य विधाओं की तुलना में यात्रा-संस्मरण ज्यादा आकर्षित करने लगे। सन 2011 में थाईलैंड-प्रवास पर लिखे मेरे संस्मरण को लखनऊ की तस्लीमा संस्थान ने उस वर्ष का सर्वश्रेष्ठ संस्मरण घोषित कर मेरा उत्साहवर्धन किया। उसके बाद तो चीन की यात्रा पर तो मैंने *'चीन में सात दिन'* नामक पुस्तक तक लिख डाली, जो बाद में सन 2013 में यश-पब्लिकेशन्स से प्रकाशित हुई। इसी दौरान मुझे डॉ॰ विमला भंडारी का संस्मरणात्मक शैली में लिखा हुआ किशोर उपन्यास *'कारगिल की घाटी'* समीक्षार्थ प्राप्त हुई।

सात साल बाद मैं फिर से सीताकांत जी के इस पुस्तक को पढ़ने से रोक नहीं पाया और मन में जुनून पैदा हो गया और मन ही मन अनुभव करने लगा कि अगर यह काम शेष रह जाता तो शायद मुझे सुकून नहीं मिलता। जब मैंने अनुवाद करना शुरू किया तो बस करता ही चला गया। दो-अढ़ाई महीने कब बीत गए मालूम नहीं चला।टंकण,संशोधन और सम्पादन सब प्रक्रियाएँ एक ही साथ चल रही थीं। स्रोत भाषा की लक्ष्य भाषा में कोडिंग-डीकोडिंग इतनी गहनता से हो रही थ कि मुझे लगने लगा था मानो मैं भी सीताकांत जी की परछाई बनकर कैंब्रिज,बोस्टन,हार्वर्ड,न्यूयॉर्क, मेक्सिको सभी देशों की यात्रा कर रहा हूं, उनका अनुगमन कर रहा हूं,

विश्व के बड़े-बड़े साहित्यकारों से उनके साक्षात्कारों का प्रत्यक्षदर्शी बन रहा हूं, दर्शक-दीर्घा में बैठकर उनके व्याख्यानों पर करतल ध्वनि से आभार व्यक्त कर रहा हूं। ईश्वर समग्र विश्व भ्रमण का मौका राहुल सांस्कृत्यायन या सीताकान्त महापात्र जैसे बिरले भाग्यशाली व्यक्तियों को ही देता है।उनके लिपिबद्ध संस्मरण हमें विश्व की शिक्षा-संस्थानों की उत्कृष्टता के साथ-साथ सामाजिक,धार्मिक,राजनीतिक,सांस्कृतिक परिवेश का खाका प्रस्तुत करता है। राम मनोहर लोहिया की 'विश्व-भाषा,विश्व-लोकतंत्र' की अवधारणा की संपुष्टि करते हुए यह संस्मरण 'वसुधैव कुटुंबकम' उक्ति को चरितार्थ करने का आह्वान करता है। सीताकांत जी ने अपनी मूल कृति के प्रथम पृष्ठ पर जिन दो महाविद्वानों की उक्तियाँ उद्धृत की हैं, उनका भी मैं यहाँ उल्लेख करना समीचीन समझता हूं।लिन यूतांग लिखते है:- *"No one realises how beautiful it is to travel until he comes home and rests his head on his old familiar pillow."* तथा रोबर्ट लुइस स्टेवेंसों का कथन है, "There is no foreign lands. It is the traveller only who is foreign."

मैंने इस यात्रा-संस्मरण को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए डॉ॰ प्रसन्न कुमार बराल द्वारा ओड़िया भाषा में लिए गए उनके साक्षात्कार का मेरा हिंदी अनुवाद जोड़ा है। साथ ही साथ, हिंदी पाठकों को उनके समग्र कृतित्व और व्यक्तित्व के बारे में परिचित कराने के लिए भारतीय ज्ञानपीठ से प्रकाशित रवींद्र कालिया द्वारा संपादित ग्रंथ 'ज्ञानपीठ पुरस्कार(1965-2010)' में से उनका प्रशस्ति-पत्र,वक्तव्य एवं ओड़िया समालोचक हरप्रसाद दास द्वारा उनकी रचनधर्मिता पर लिखे आलेख का अनुवाद भी परिशिष्ट में जोड़ दिया गया है। आशा है, सीताकांत महापात्र के इस यात्रा-संस्मरण का हिंदी जगत में भरपूर स्वागत होगा।

दिनेश कुमार माली
तालचेर

अनुक्रमणिका

1. हार्वर्ड : चार सदी पुराना सारस्वत मंदिर

सन 1968-69 में मुझे भारत सरकार द्वारा मनोनीत होने पर इंग्लैंड के कैंब्रिज विश्वविद्यालय में एक साल पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ था।यह प्रशिक्षण कोलंबो योजना के अंतर्गत आता था, इंग्लैंड के ओवरसीज डेवलपमेंट स्टडीज द्वारा संचालित किया जाता था। उस साल कोलंबो योजना के तहत विभिन्न देशों के बीच अधिकारियों को आमंत्रित किया गया था। प्रत्येक देश अपनी तरफ से एक अधिकारी का चयन करता है। उस कोर्स में चार प्रमुख विभाग थे तथा प्रत्येक विभाग किसी न किसी विकास की समस्या से जुड़ा हुआ था जैसे-विकास का आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं प्रशासनिक दृष्टिकोण। साल के अंत में एक परीक्षा होती थी तथा डिप्लोमा सर्टिफिकेट प्रदान किया जाता था। उस परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर मुझे विश्वविद्यालय से पुरस्कृत किया गया था।

उसके लगभग बीस साल के बाद सन 1987-88 में मेरा हार्वर्ड विश्वविद्यालय में अध्ययन तथा अनुसंधान के लिए चयन हुआ। इस कोर्स की खासियत के बारे में पहले से बताना उचित रहेगा। इस दार्शनिक कार्यक्रम तथा कैंब्रिज के सारे कोर्स में ज्यादा अंतर विशिष्टता को लेकर था। कोर्स सेंटर फॉर इंटरनेशनल अफेयर द्वारा आयोजित किया जाता था। इस कार्यक्रम के लिए प्रति वर्ष बीस अधिकारियों का चयन किया जाता था, जिसमें प्रत्येक देश अपने एक प्रतिनिधि को भेजता है। प्रोग्राम का मुख्य उद्देश्य हार्वर्ड के मेमोरेण्डम में दिया हुआ था- *"हम उनका चयन करते हैं, जिन्होंने अपने देश के जनजीवन और समाज में अब तक कुछ किया है और भविष्य में भी वे बहुत कुछ कर सकते हैं तथा विशिष्ट दर्जे के अधिकारी हो सकते हैं।"* जिसमें सिविल-सर्विस के वरिष्ठ अधिकारी, विदेश विभाग के वरिष्ठ अधिकारी, विशिष्ट अर्थशास्त्री, राजनैतिक नेता, उद्योग-धंधों में नाम रोशन करने वाले उद्योगपति, पत्रकारिता के क्षेत्र में ख्याति प्राप्त संपादक इत्यादि की तालिका हार्वर्ड विश्वविद्यालय तैयार करता है। उदाहरण के तौर पर मेरे साथ थे, दक्षिण अफ्रीका में इंग्लैंड के राजदूत डैट्रिक मोबर्ली, सेनेगल में दक्षिण कोरिया के राजदूत सियंगली, इंटर-अमेरिकन बैंक के मुख्य अर्थशास्त्री रबर्टो टोस्कानो, अमेरिका के एडमिरल फिर मिडलैंड, मलेशिया के पूर्व उप-प्रधानमंत्री मुसाबिन हितम, स्वीडन के दूसरे स्थान के सैनिक अधिकारी उड़वार मिडकांडल, जर्मन के वरीय सिविल सर्विस अधिकारी जोहान वेंजल, अमेरिका के सुप्रसिद्ध उद्योगपति जुलियान सेविन, वेनेजुएला के शीर्ष स्थान के संपादक गुस्ताभो गोरिटि, यूरोपियन कम्यूनिटी के मुख्य अधिकारी जेम्स, स्पेन तथा सहयोगी देशों के शरणार्थी अनुष्ठान के वरीय अधिकारी लुइस डूक वोलेस्की।

हार्वर्ड जाते समय स्विट्जरलैंड तथा स्वीडन में भारत उत्सव आयोजन में भाग लेने के लिए पन्द्रह लेखकों के साथ मुझे भी निमंत्रण मिला था। पहले से ही मैंने आईसीसीआर को स्पष्ट बता दिया था कि मेरे हार्वर्ड पहुंचने की अंतिम तारीख 18 सितंबर, 1987 होने की वजह से सभी निमंत्रणों तथा प्रोग्रामों के सारे कार्यक्रमों में भाग लेना मेरे लिए संभव नहीं होगा। स्विट्जरलैंड के चार दिनों के आयोजनों (जुरिक, वासल और लुसर्ण में काव्य-पाठ और अभिभाषण) के अतिरिक्त स्वीडन की राजधानी स्टॉकहोम के तीन दिनों के प्रोग्रामों, जिनमें विश्वविद्यालय के आलोचना-सत्र, लेखक-संघ में काव्य-पाठ और शहर के सामान्य भ्रमण समेत वाइस-चांसलर और हमारे राष्ट्रदूत के साथ रात्रि-भोज में भाग ले सकता हूं। बाकी स्वीडन-भ्रमण के सात दिनों में भाग नहीं ले

सकता हूँ। भारत सरकार को मेरी इन हवाई यात्राओं के लिए कुछ भी खर्च नहीं करना पड़ा, क्योंकि मैं हार्वर्ड पहले से ही जा रहा था।

स्वीडन के आयोजन में पी.लाल, अनंत मूर्ति, अरूण कोलाटकर, अमृता प्रीतम, रघुवीर सहाय इत्यादि मेरे अतिरिक्त पन्द्रह जन थे। किन्हीं विशिष्ट कारणों की वजह से मेरे सिवाय बाकी सभी स्वीजरलैंड नहीं जा सके, वे सब केवल स्वीडन तक ही जा सके। तत्कालीन सभी राष्ट्रीय स्तर के अखबारों ने सरकारी व्यवस्था और नीति की कड़ी आलोचना की। मैं हार्वर्ड जाते समय एक दिन पहले ही ज्यूरिख में पहुंचा था। ज्यूरिख के रिड़बर्ग म्यूजियम के निर्देशक, विख्यात कलाविद डॉ. एवरहार्ड फिरार ने स्विस अखबार में इस बात की घोर आलोचना की थी। उन्होंने यह भी बात कही थी कि अखबार वालों ने आश्वासन दिया है कि आखिरकार एक कवि यहां पधारे हैं। स्विट्जरलैंड के ज्यूरिख, वासल, लूसर्ण में काव्य-पाठ और अभिभाषण समाप्त करने के बाद मैं स्टॉकहोम पहुंच गया। वहाँ बाकी लेखक बंधुओं से मेरी मुलाकात हुई।

स्टाकहोम में मेरे लिए सबसे ज्यादा खुशी की बात यह थी कि वहां काव्य-पाठ में स्वीडिश कवि थॉमस ट्रांसतोमर से मुलाकात होगी। स्वीडिश भाषा में अनूदित मेरा कविता-संग्रह (मार्टिन आलउड द्वारा अनूदित तथा स्वीडन में प्रकाशित) Dod Och Drom (मृत्यु और सपने) को थॉमस ने पहले से पढ़ रखा था। मैंने ओड़िया भाषा में जो तीन कविताएं पढ़ी थीं, उनका अनुवाद उन्होंने उसी किताब से स्वीडिश में पढ़ा। थॉमस स्वीडन के एक बड़े कवि थे, जिनका अनुवाद यूरोपीय भाषाओं तथा अंग्रेजी भाषा में सर्वाधिक हुआ है। इस स्वीडिश कवि के कविता-संकलन स्वीडन में सबसे ज्यादा प्रचलित है। मैं निश्चित तौर पर कह सकता हूं कि वे भारतीय तथा ओड़िया काव्य प्रेमियों में भी अच्छे खासे लोकप्रिय है।

वहां के बहुत पुराने विश्वविद्यालय के वाइस-चांसलर के साथ रात्रि-भोज के समय मुझे अनेक लेखकों, कवियों, चित्रकारों, संगीतज्ञों तथा अनेक विद्वानों के साथ मिलने का सुअवसर भी प्राप्त हुआ था। जिनमें एक कवि थे जेल एक्समार्क, जिनके कविता-संग्रह '*बैला बारटॉक एण्ड द थर्ड रेड़स*' ने (थॉमस के शब्दों में) स्वीडन में धूम मचाई थी।

वहाँ तीन दिन रहने के बाद मैंने सभी से विदा ली और न्यूयार्क चला गया, वहां से बोस्टन और फिर हार्वर्ड । हर फेलो को अपनी और स्कूली बच्चों को साथ में लाने तथा रखने की सुविधा प्रदान की जाती है। इसलिए मैं अपनी पत्नी तथा स्कूली बेटे सत्यकाम को साथ ले गया था। तीनों लड़कियाँ चूंकि कॉलेज जाने लगी थीं, इसलिए वे साथ नहीं आ सकीं। पत्नी और बेटे को न्यूयार्क में अपने रिश्तेदारों के पास छोड़कर मैं विश्वविद्यालय में एक साल रहने के लिए मकान खोजने गया। न्यूयार्क में रिश्तेदार स्वर्गीय कृष्ण मोहन दास (फूफाजी) और हार्वर्ड में मेरे मित्र विजय मिश्र (कवि मनमोहन मिश्र के पुत्र) तथा उनकी धर्मपत्नी सुवर्ण ने मकान खोजने में मेरी काफी मदद की। 6 नंबर, कॉनकॉर्ड एवेन्यु के छ मंजिले अपार्टमेंट के छठवें तल्ले पर एक मकान चुन लिया गया। रसोईघर, स्नानघर, इकट्ठे शयन कक्ष और बैठक कक्ष (पर्दे से विभक्त किया हुआ) पुस्तकें रखने के लिए एक बड़ा कमरा, अपार्टमेंट में पढ़ने की व्यवस्था थी। महीने का किराया 150 डॉलर था। ऐसा सुनने में आया कि विश्वविद्यालय और सीएफआईए पास-पास में होने तथा केम्ब्रिज शहर की वजह से किराया ज्यादा है, क्योंकि हार्वर्ड , एम आई टी, बोस्टन तीनों बड़े-बड़े विश्वविद्यालय होने की वजह से यहां किराए का मकान मिलना बहुत ही कष्ट दायक है। कैंब्रिज शहर के आस-पास के तीन-चार छोटे शहरों में भाड़ा जरूर थोड़ा कम था, मगर दूर होने की वजह से गाडी रखने की जरूरत नहीं होने पर भी मेट्रो में आना-जाना पड़ता था तथा इसके अतिरिक्त, समय भी ज्यादा लगता था। मेरा गाड़ी खरीदने का कोई इरादा नहीं था, भले ही उस देश में सेकेण्ड हैंड गाड़ियाँ काफी सस्ते में मिलती थीं। मगर मैं एक खराब ड्राइवर था। इसलिए मैंने वह जगह

चुनी, जहां से पैदल विश्वविद्यालय सेंटर तथा चार्ल्स नदी तक जाया जा सकता था। वहाँ हरदिन मुझे मेट्रो में आना-जाना करना पड़ता।

इस कोर्स के एक साल के भीतर प्रत्येक प्रत्याशी को दो बड़े शोध-आलेख सेमिनार के रूप में प्रस्तुत करने पड़ते थे। जिसमें सी.एफ.आई.ओ के सारे अध्यापकों तथा विश्वविद्यालय के अन्य वरीय अध्यापकों को आमंत्रित किया जाता था। एक सेमिनार प्रश्नोत्तर के साथ लगभग तीन घंटे चलता है। मेरे दोनों सेमिनारों के शीर्षक थे- इंटरनेशनल कल्चरल रिलेशन्स, टुडे एंड टुमारो एवं इंडियाज डिप्लोमेटिक रिलेशन इन साउथ ईस्ट एशिया।

दूसरा, सेमिनारों को छोड़कर अगर कोई शोधरत छात्र आपका निर्देशन अथवा सहायता चाहता है तो उनसे आपको मिला दिया जाता है। तीसरा, लगभग पूरे साल बाहरी आदमियों द्वारा सोलह अभिभाषणों की व्यवस्था की जाती है। इन अभिभाषणों को देने के लिए दो प्रकार के व्यक्तियों को आमंत्रित किया जाता है। अनेक निर्दिष्ट अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के उच्च पदस्थ अधिकारीगण जैसे यूरोपीय कम्यूनिटी के मुख्य श्री डोलोरस, जर्मनी के विदेशमंत्री, वर्ल्ड बैंक के प्रमुख इत्यादि। उनके अलावा सी.एफ.आई.ओ संकाय के रूप में काम करने वाले लगभग 10 वरीय अध्यापकों के साथ लंच और डिनर के समय एकत्रित होने पर बातचीत की जा सकती है। इन लंच अथवा डिनरों में भाग लेने वाले अधिकारी और संबंधित अध्यापकगण अपने घर अथवा फेकेल्टी क्लब में लंच/डिनर का आयोजन करते थे। इसी तरह सोलह अभिभाषण, जो बाहर से आमंत्रित किए गए व्यक्तियों द्वारा दिए जाते हैं, उनका आयोजन लंच और डिनर के साथ किया जाता है। अभिभाषण का परिवेश औपचारिक अथवा अनौपचारिक दोनों प्रकार का होता है। जैसे इसमें होती थी फ़ेलो स्टूडेंट्स की नाश्ते के दौरान बातचीत, जिनमें वे अपने-अपने देश के किसी विशिष्ट विषय पर प्रकाश डालते हैं।

एक साल के अंदर अनेक टूरों की व्यवस्था थी। पहले-पहल, अमेरिका के सक्रेटरी ऑफ स्टेट की तरफ से पन्द्रह दिनों के लिए अमेरिका भ्रमण, जिसमें स्टेट डिपार्टमेंट के वरीय अधिकारियों से मुलाकातें पेंटागन, उसके रिसर्च एंड डेवलपमेंट तथा अमेरिका के प्रमुख विश्वविद्यालयों तथा सांस्कृतिक केन्द्रों के दर्शन करना शामिल है। दूसरा, एक सप्ताह के लिए यूरोपीय कम्यूनिटी के आमंत्रण पर उसके मुख्यालय ब्रूसेल्स एवं ईसी (EC) के पार्लियामेंट के लिए रखा जाता है। तीसरा, कनाड़ा सरकार के आमंत्रण-क्रम में पन्द्रह दिनों के लिए उनके छह प्रमुख नगरों क्यूबेक, माट्रियम, राजधानी-ओटावा, टोरंटो, कालगारी, वाकूंबर इत्यादि के परिदर्शन तथा चर्चा सत्र की व्यवस्था की जाती है, चौथा उस वर्ष के कोर्स के शेष भाग में चीन, जापान और कोरिया सरकार के निमंत्रण पर उन सारे देशों में तीन सप्ताह भ्रमण तथा प्रत्यक्ष ज्ञान अर्जन की सुविधा भी उपलब्ध की जाती है।

इस कोर्स के लिए भारत सरकार आई.ए.एस और आई.एफ.एस अधिकारियों को एक-एक साल के अंतराल में भेजती है। अर्थात् मुझसे एक वर्ष पूर्व एक आइ.एफ.एस अधिकारी गए थे, मेरे बाद (1988-89) में भी एक आई.एफ.एस गए होंगे और उसके बाद (1989-90) में फिर एक आई.ए.एस अधिकारी का चयन किया होगा। पहले साल के दो सर्विस में इस फेलोशिप में भाग लेने वाले विश्ष्ट नामों को मैंने देख लिया था। कोर्स में भाग लेने वाले हम सभी को विश्वविद्यालय की अधिसूचना द्वारा ऐसोसिएट प्रोफेसर के रूप में नियुक्त किया गया था। कोर्स पूरा होने पर कोई डिग्री या डिप्लोमा नहीं दिया जाता था। केवल विश्वविद्यालय में उस वर्ष के फेलो होने का एक सर्टिफिकेट एक विशेष समारोह में दिया जाता था। यह फेलोशिप आजीवन के लिए होती है और कोई भी फेलो अधिक शोध अथवा अध्ययन के लिए किसी भी समय हार्वर्ड आ सकता है।

ऐसोसिएट प्रोफेसर के हिसाब से विश्वविद्यालय में फेकल्टी क्लब की सदस्यता मिलती है, जहां सभी प्रोफेसरों को चाय, कॉफी तथा आपस में बातचीत करने का अवसर मिलता है। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय की ओर से आयोजित होने वाले थिएटर, कन्सर्ट, कला-प्रदर्शनी, विशेष-संभाषण, (इस प्रकार की व्यवस्था सारे साल हार्वर्ड में चलती रहती है), इन सभी में उपस्थित होने के लिए स्वतंत्र भाव से निमंत्रण पत्र मिलता है। इसी तरह उत्सवों के लिए भी एक विशिष्ट स्थान होता है, जैसे थिएटर और कन्सर्ट के लिए साइंस थिएटर, कला प्रदर्शनी के लिए कारपेंटर सेंटर फॉर विजुअल आर्टस और फाग्ग आर्ट्स म्यूजियम, नाटक के लिए लोएब ड्रामा सेंटर, कविता पाठ और बाहर से आमंत्रित अन्य लेखकों (जैसे औपन्यासिक चिनुआ आचिवि, ओले स्त्रोयिंका, ओक्टावियो, पाज, डेरेक वालकट इत्यादि) को सुनने का अवसर सेंडर्स थिएटर हॉल अथवा लेमोंट लाइब्रेरी में प्राप्त होता है।

हार्वर्ड जाने से पूर्व मैंने पुराने फेलो से इस कोर्स के विषय पर बातचीत की थी, तभी से मेरे मन में एक विशद धारणा पैदा हो गई थी, आइ.ए.एस, श्री पी.एस.अप्पू तथा आई.एफ.एस, श्री ए.पी. वेंकटेश्वरन दोनों ने कहा था कि एक साल के अंदर चारों तरफ से इतनी ज्यादा ज्ञान-गरिमा, संस्कृति इस तरह पड़ी मिलेगी कि सारी चीजें ग्रहण करना मुश्किल हो जाएगा। मगर सीखने की दिशा सुदूर प्रसारी एवं व्यापक है। इसलिए हमेशा अपनी आंखें, कान और मन को खुला रखने की आवश्यकता है। साहित्य, कला, दर्शन अपने-अपने पाठ्यक्रम, शोध के विषय तथा लाइब्रेरी में पढ़ाई करना इत्यादि की वजह से यह फेलोशिप शायद सबसे ज्यादा आकर्षणीय है। उन्होंने कहा था कि इस फेलोशिप के लिए सर्वप्रथम विश्वविद्यालयों के बहुविध अनुष्ठानों से परिचित होना जरूरी है। उन्होंने यह भी कहा था अर्थशास्त्री मित्र एवं हार्वर्ड विश्वविद्यालय के नामी प्रोफेसर स्टीफेन मार्गलिन को मिलने से पहले उनकी पत्नी से मिले थे।

ऐसे परिचित वातावरण में मैंने सबसे पहले विश्वविद्यालय की बहुत बड़ी लाइब्रेरी के सिस्टम को जानने की चेष्टा की थी। दूसरे पर्याय में विश्वविद्यालय के म्यूजियम को घूमकर देखना. विश्वविद्यालय का मोटो या आदर्श था - "व्यक्ति के व्यक्तित्व की अभिवृद्धि के साथ ज्ञान के उपयोग हेतु सभी प्रकार के अवसर प्रदान करना"।

हार्वर्ड के अध्यक्ष डेरेक क्यटिस वोक (जिन्हें हार्वर्ड के सबसे विख्यात अध्यक्ष के रूप में जाना जाता है) के शब्दों में

" In serving Harvard we serve an institution with a remarkable capacity for human betterment, an institution that works continuously to discover the knowledge to illumine social problems, to prepare talented people for constructive lives ,to provide memorable experience to thousands of its students , to enlarge our comprehension of ourselves and our environment through writings and discoveries of lasting importance, and all in these ways, to set demanding standards of intellectual attainment that can help and inspire universities throughout the nation and abroad."

उसके बाद हार्वर्ड के म्यूजियमों, अन्य सांस्कृतिक अनुष्ठानों, विविध विभागों तथा पाठ्यक्रमों इत्यादि के संबंध में कुछ चर्चा। साल के अंत में मुझे यह आभास हुआ कि एक साल में मैंने बहुत कुछ सीखा है, बहुत कुछ पढ़ा है, संगीत-आर्केस्ट्रा का रसास्वादन किया है, थिएटर, फिल्म, चित्रकला प्रदर्शनी आदि देखी है, बहुत विद्वान, कवि लेखक और अमूल्य साथियों के संपर्क में आया हूं, जिनकी किसी से तुलना नहीं की जा सकती है। ये सारी चीजें जीवन भर मेरे ज्ञान भंडार में विशिष्ट अनुभूतियों का अंग बनकर रहेगी।

अर्थनीतिज्ञ, कवि, लेखकों के साथ की गई मुलाकातें, विभिन्न अमेरिकन विश्वविद्यालयों में उद्बोधन तथा काव्य-पाठ की यादें, अनेक देश तथा शहरों में घूमने आदि जैसे अनुभवों की बातें चर्चा के विषय हैं। पहले पहल सारे मित्रों और शुभेच्छुओं के अनुरूप हार्वर्ड के तरह-तरह अर्वाचीन अनुष्ठानों तथा उनके इतिहासों की जानकारी की बातें, उससे भी बढ़कर हार्वर्ड का परिवेश, शहर तथा मेट्रोपालिटन बोस्टन शहर की कहानियां चर्चित हैं।

2. कैंब्रिज शहर और हार्वर्ड : इतिहास एवं वर्तमान

सन् 1631 में आधुनिक केम्ब्रिज की स्थापना बोस्टन के तटीय इलाके में हुई। जगह अच्छी थी और अनेक शहर उपकंठ की तरह पहले उसका नाम था न्यूटाऊन। मैसेच्यूट के एक सर्वोच्च अधिकारी थे ग्रेट एंड जनरल कोर्ट नामक एक संस्था के। सात साल पश्चात अर्थात् सन् 1638 में उन्होंने रेमरेण्ड थॉमस सेपार्ड के पारिस अथवा धार्मिक स्थल में दो वर्ष पहले 1636 में प्रतिष्ठित की गई कॉलेज को अच्छी तरह से स्थापित तथा संचालित करने का निर्णय लिया।

न्यूटाऊन नाम बदलकर रख दिया गया केम्ब्रिज, इंगलैंड के इस प्रसिद्ध विश्वविद्यालय के नाम के अनुरूप मैसेच्यूट के अधिकांश नैतिकतावादी गवर्नर धर्म शिक्षा के लिए आते थे। मगर कॉलेज का नाम दे दिया गया हार्वर्ड । यह सम्मान उस व्यक्ति के नाम को दिया गया, जिसने अपने मरने के समय जायदाद का आधा हिस्सा और पूरी लाइब्रेरी कॉलेज के नाम कर दी। वे थे चार्ल्सटाऊन के कम उम्र के प्यूरिटान मंत्री जान हार्वर्ड । धीरे-धीरे केम्ब्रिज में अनेक शिल्प-संस्थान विकसित हुए। मगर हार्वर्ड और एम.आई.टी विश्वविद्यालय केम्ब्रिज शहर के प्राण-बिन्दु बन गए।

इस प्रकार प्लाईमाउथ में पिलग्रीम फादर इंग्लैंड से आने के पन्द्रह वर्ष बाद मैसेच्यूट उपसागर की बस्ती में हार्वर्ड कॉलेज की स्थापना हुई। सन् 1636 के अक्टूबर 28 तारीख को मैसेच्यूट प्रशासन कॉलेज को चार सौ पाऊंड देने के लिए राजी हो गया। अनुदान देने का मुख्य उद्देश्य यही था कि वह एक अच्छे स्कूल अथवा कॉलेज (schoale or colledge उस समय अंग्रेजी में ऐसा लिखा जाता था) के निर्माण में सहायक सिद्ध होगा। यह धनराशि सन 1987-88 में हार्वर्ड में रहते समय मुझे बहुत हास्यास्पद लगी। मगर हार्वर्ड के इतिहास में दिखाया गया है कि मैसेच्यूट प्रशासन के तत्कालीन वार्षिक आय का वह चौथा भाग था। उसके बाद शरद ऋतु में कॉलेज के लिए पहले बोर्ड ऑफ ओवरसियर्स की नियुक्ति की गई तथा उनकी सहायता करने के लिए छह मजिस्ट्रेट तथा छह पादरियों की नियुक्ति हुई। सन 1638 की ग्रीष्म ऋतु में कॉलेज का पहला बैच बारह छात्रों को लेकर आरंभ हुआ। उस समय एक मास्टर जी छात्रों की देख-रेख करते थे। एक बहुत छोटे से घर में कॉलेज चलता था। जिस हार्वर्ड यार्ड में घूमना मुझे इतना अच्छा लग रहा था, उस समय वह कॉलेज यार्ड हुआ करता था। उसके चारों तरफ स्थानीय लोगों की गुहालें या गौशालाएं हुआ करती थी।

कॉलेज का नाम हार्वर्ड पडने के कुछ दिन तक कॉलेज पहले की तरह चला। पहले कहा जा चुका है कि चार्ल्स टाऊन में इस वंदनीय व्यक्ति ने अपने मृत्युकाल के समय अपनी सारी किताबें और जमीन-जायदाद का आधा हिस्सा कॉलेज को दान किया था। बहुत अच्छे ढंग से कॉलेज चलने लगा। सन् 1640 में मैसेच्युट विश्वविद्यालय कोर्ट ने कॉलेज के प्रथम अध्यक्ष के हेनेरी डनस्टर को नियुक्त किया। डनस्टर थे एक किसान के बेटे। वह नौजवान स्पष्टवादी थे तथा इंगलैंड के कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से स्नातक थे। उन्होंने अंग्रेजी मेडल में कॉलेज कोर्स का खूब गंभीर नाम रखा था *द लिबरल आर्ट, द लर्नेड टंग्स एंड द थ्री फेलोसफीज*। उसके बाद उन्होंने छात्रों के लिए आवास और कक्षाएं खोलीं । डनस्टर की धारणा थी कि एक अच्छे कॉलेज के लिए संपूर्ण

आवासीय होना बहुत जरूरी है, जहाँ छात्र एक साथ में रहेंगे तथा एक दूसरे के संपर्क में आएंगे। हार्वर्ड कॉलेज में प्रथम कमेन्समेंट उत्सव (डिग्री प्रदान करने का) सन् 1642 में आयोजित किया गया, जिसमें नौ छात्रों को स्नातक डिग्री प्रदान की गई। इस समावर्तन समारोह में ग्रीक और लैटिन भाषा का इस्तेमाल किया गया। उस समारोह में 50 लोगों के रात्रि-भोज की व्यवस्था भी की गई। हार्वर्ड यार्ड में मैं कई बार पैदल घुमा हूं अथवा बैंच पर बैठकर जॉन हार्वर्ड की मूर्ति को निहारता रहा हूं। उस शीतल छाया के तले छुपा हुआ है तीन सौ साल का लंबा इतिहास, उस समय का प्रथम ग्रेजुएट बेच, मैसेच्यूट प्रशासन, जॉन हार्वर्ड , लुप्त हुए छोटे-छोटे घर, छात्रावास, चारों ओर का ग्राम्य-जीवन और गौशालाएं। ये सारे दृश्य आंखों के सामने उभर आते हैं। उसी रास्ते सन् 1987-88 (अर्थात् मेरे रहते समय) में असंख्य छात्र-छात्राएं अपने-अपने आवास स्थल से भिन्न-भिन्न लाइब्रेरियों, फेकेल्टी कक्षाओं या हार्वर्ड स्कवेयर में बने कॉफी सेंटर (जहां पैंतीस प्रकार की कॉफी मिलती है) अथवा सर्वाधिक पसंद चाइनीज या मेक्सिकॉन रेस्टोरेंट को खाना खाने जाते। बहुत प्राचीन किताबों की दुकान पर, जहां खूब सारी नई किताबें, मैग्जीन तथा बहुत पुरानी किताबें मिलती थी। फिर कई लोग जाते हार्वर्ड कॉपरेटिव स्टोर की तरफ, जहां सामान्य दर पर सारी चीजें (नित्य व्यवहार में आने वाली वस्तुएं जैसे हार्वर्ड विश्वविद्यालय की टाई, विशेष पोशाकें, समावर्तन समारोह के ड्रेस) बिकती थीं। यह विश्वविद्यालय द्वारा संचालित होता था। अनेक छात्र-छात्राएं रास्ते के किनारे पेड़ों की छांव में बैठकर किताबें अथवा पत्रिकाएं पढ़ते थे। हार्वर्ड यार्ड के एक तरफ रास्ते के किनारे छोटी-छोटी अनेक डोरमेटरी, दूसरी तरफ एक दूसरे के पीछे अनेक संकाय, जिसकी पहली पंक्ति में सुप्रसिद्ध हार्वर्ड चर्च और जॉन हार्वर्ड की सुंदर प्रतिमूर्ति, हार्वर्ड विश्वविद्यालय की लाइब्रेरियां, थोड़ा पीछे जाने से दायीं तरफ हेरी वाइडनर मेमोरियल लाइब्रेरी। यह हार्वर्ड विश्वविद्यालय के लाइब्रेरियों का प्राण-बिंदु है। जब टाइटेनिक जहाज समुद्र में डूबा, उसके मरने वालों में से अन्यतम हार्वर्ड विश्वविद्यालय के युवा छात्र का यह नाम था। वह थे अपनी वृद्धा माँ का एक मात्र पुत्र, जिनके पास बहुत सारी जमीन-जायदाद थी। बहुत सालों से एक पुरानी लाइब्रेरी थी। संपूर्ण लाइब्रेरी, अपना जीवन चलाने के लिए कुछ संपत्ति को छोड़कर सारा धन उसने दान कर दिया था, केवल एक शर्त पर कि उस लाइब्रेरी का नाम उसके बेटे के नाम पर रखा जाए। और वैसा ही हुआ। हमारे जगन्नाथ मंदिर की बाईस सीढ़ियों से भी ज्यादा, सीढ़ियों के बाद सीढ़ियां चढ़ते जाने के बाद रिसेप्शन काउन्टर आता है, जहां आठ-दस लोग रहते हैं पुस्तकें देने और लेने के लिए, जहां पर रखे हुए हैं बहुत सारे वर्णमालाओं में लेखकों तथा विषय-वस्तु से संबंधित केटालॉग। यह है धरती के सबसे बड़े विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी तथा अगर यू एस. लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस को छोड़ दें तो यह दुनिया की सबसे बड़ी लाइब्रेरी है। उस समय पुस्तकों की संख्या थी अड़तीस लाख तथा उसके अनुरूप बहुभाषी पत्रिकाओं का भी समावेश था।

अनेक विशिष्ट विभागों के अनुसार ये सारी पुस्तकें दस मंजिले स्टॉक में सजाई हुई थी तथा एक सुरंग द्वारा लामेंट तथा प्रूसे दोनों लाइब्रेरियों से जोड़ी गई थी जहां वाइड़न के अंश-विशेष रखे हुए थे। वाइड़न लाइब्रेरी के साहित्य और इतिहास विभाग की संपदा अतुलनीय तथा दुनिया की किसी भी लाइब्रेरी में नहीं मिलने वाली पुस्तकें यहां मिल जाती हैं । इसके अतिरिक्त हिब्रू और जुडाइक भाषा की किताबें, मध्य-प्राच्य और स्लोविक पूर्व यूरोपीय किताबों का सबसे ज्यादा व्यवहार होता है। यह लाइब्रेरी विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र, दर्शन तथा राजनीति-विज्ञान के शोध-कार्य का केन्द्र-स्थली है।

अगर सच कहूं तो जब मैंने पहली बार उस लाइब्रेरी में प्रवेश किया तो मैं खुद चकित रह गया और इस आश्चर्यजनक संस्था को देखने में मन ही मन एक अद्भूत आनंद भी आया। मेरे लिए यह एक विशेष

सौभाग्य था कि इससे पहले मुझे इंग्लैंड के सर्वप्राचीन और दुनिया की आधुनिकतम सुप्रसिद्ध केम्ब्रिज विश्वविद्यालय में एक साल पढ़ने का अवसर मिला था और उसकी लाइब्रेरी से पढ़ने के लिए पुस्तकें आने और लौटाने में विशेष आनंद का भी अनुभव किया था। वह लाइब्रेरी विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी की तुलना में बहुत बड़ी है, मगर वाइड़न लाइब्रेरी उससे भी ज्यादा बड़ी है, इस बात का मुझे दिल से अहसास हो गया था।

इस लाइब्रेरी की दूसरी खास बात है- संस्कृत पुस्तकें तथा पांडुलिपियों का होना। भारत पुरातत्ववेत्ता और संस्कृत अध्यापक विजेल धीरे-धीरे मेरे अंतरंग मित्र बन गए। वे डिपार्टमेंट ऑफ इंडियन स्टडीज के विभागाध्यक्ष थे।उनके मतानुसार हार्वर्ड में संस्कृत पुस्तकें दुनिया का अन्यतम सबसे बड़ा भंडार है।उनके इस मत को गुरुत्व न देने का मेरे पास कोई कारण नहीं था। उन्होंने पहले ही कहा था जर्मनी के ट्यूबंगेन विश्वविद्यालय के इंडोलोजी विभाग की संस्कृत पुस्तकों का उपयोग विश्व के अन्यतम समाहार में आता है। एक बार मुझे ट्यूबंगेन के संकलनों को देखने का मौका मिला था। मैंने वहां के अध्यापक हेनेरी स्टेटनक्रान के साथ कुछ दिन उस विश्वविद्यालय में बिताए थे, इसलिए अध्यापक विजेल का मत पूर्णतया प्रासंगिक था, इस बात का मुझे अहसास हुआ। हार्वर्ड में मेरे एक साल रहने के भीतर संस्कृत एस्थेटिक्स की प्रमुख पुस्तक आनंदवर्धन की "ध्वन्यालोक" और उसकी समीक्षा पर आधारित पुस्तक "लोचन" का अंग्रेजी में अनुवाद हो रहा था। जिसमें भारतीय संस्कृत विद्वान मुख्य रूप से भाग ले रहे थे। विजेल बीच-बीच में अपने सुझाव अनुवाद कार्य के लिए दे रहे थे। उसके बाद दो अंग्रेजी पुस्तकें '*द लाइट ऑफ सजेशन*' तथा '*द आई*' शीर्षक से प्रकाशित हुई। प्रकाशित होकर हार्वर्ड ओरिएन्टल सीरीज में जुड़ जाने पर अध्यापक विजेल की प्रसन्नता भरी चिट्ठी मिली। उन्होंने लिखा था कि हार्वर्ड शृंखला में यह अन्यतम अत्यंत मूल्यवान युगलबंदी पुस्तक बनकर मान्यता प्राप्त करेगी।

वाइडनेर के सिवाय हार्वर्ड विश्वविद्यालय के अन्य लाइब्रेरियों के बारे में अगर कुछ न कहा जाए तो समीक्षा अपूर्ण रह जाएगी। उनके अंतर्गत एक खास हार्वर्ड कॉलेज लाइब्रेरी भी है। यह कला और विज्ञान संकाय की लाइब्रेरी है और उसके चौवालीस भाग है। अन्य संकायों की तरह लाइब्रेरी और खासकर शोधकार्य में लगे विद्वानों के लिए छत्तीस लाइब्रेरियाँ हैं। हार्वर्ड में भर्ती होते ही छात्रों को परिचय पत्र दिया जाता है, जो विश्वविद्यालय की मुख्य लाइब्रेरियों का उपयोग के लिए पर्याप्त है। हमारे कोर्स अर्थात् सेंटर फॉर इंटरनेशनल अफेयर के फेलो को एसोसिएट प्रोफेसर के रूप में नियुक्त किया जाता है, जिसके लिए हमारे पास एक अलग से कार्ड होता है और किसी भी लाइब्रेरी से एक साथ तीस पुस्तकें ले जाने की सुविधा प्रदान की जाती है।

विश्वविद्यालय की तरफ से लाइब्रेरी विषय पर तथा उनके साधारण एवं शोध-कार्य के लिए दो पुस्तकें लाइब्रेरी के छात्रों को मिलती हैं। पहली- गाइड टू हार्वर्ड लाइब्रेरीज तथा दूसरी-रिसर्च सीरीज एट हार्वर्ड लाइब्रेरीज। कई लाइब्रेरी स्टॉफ सदस्यों के परिवार को भी कार्ड तथा पुस्तकें दी जाती है। हमारे कोर्स के सभी प्रत्याशियों को यह सुयोग मिलता है। हार्वर्ड की अन्यतम प्रमुख लाइब्रेरियों में एक हैं हाऊटन लाइब्रेरी, जिसमें पांच लाख है विरल पुस्तकें तथा पांडुलिपियों की संख्या चालीस लाख होगी । पूरे अमेरिका तथा विश्व की सबसे बड़ी पांडुलिपि लाइब्रेरी यह है। यहां मैंने देखे थे न्यू इंग्लैंड के लेखकों (एमसर्न, मेलविली, लंगफेलो, जेम्स इत्यादि) की पांडुलिपियों समेत अन्य यूरोपिय लेखकों की पांडुलिपियां। इसके अतिरिक्त सन 1501 से पहले प्रकाशित हुई पुस्तकों का भंडार। इन पुस्तकों को विश्वविद्यालय ने नाम दिया था इनकुनबाला।पहले ही कहा जा चुहा है कि वाइडन लाइब्रेरी के दो हिस्से हैं- लामेंट लाइब्रेरी और प्रूसे लाइब्रेरी। पहले भाग में आधुनिक

कविताओं (अंग्रेजी और यूरोपीय लेटिन अमेरिका, अफ्रीका, चीन, भारत इत्यादि) का विशाल भंडार और हर महीने यहां कविता पाठ किया जाता है। मेरा यह सौभाग्य रहा है कि एक बार मैंने भी अपनी कविता (मूल ओड़िया समेत अँग्रेजी अनुवाद) यहां सुनाई थी। मेरे रहते समय यहां सिआमस हिनी, डोनाल्ड हॉल, राबर्ट ब्लाई, थॉमस ट्रांस ट्रोमर इत्यादि ने भी अपना कविता-पाठ किया था।

पूरे लाइब्रेरी में हार्वर्ड के तीन सौ से ज्यादा पुराने आर्चिव, मानचित्र, थिएटर, संगीत कलेक्शन सभी देखने को मिलते हैं। इन प्रमुख लाइब्रेरियों के अतिरिक्त अंडर ग्रेजुएट छात्रों के लिए और छ लाइब्रेरी हैं और आखिर पन्द्रह खास लाइब्रेरी (कानून, फाइन आर्टस, डिजायन, इंजिनियरिंग इत्यादि) तथा डिवनिटी स्कूल की लाइब्रेरी तथा वूमेन स्टडीज लाइब्रेरी भी है।

कभी-कभी मुझे लगता है, वास्तव में हार्वर्ड की लाइब्रोरियों में सारे विश्व का सबसे बड़ा ज्ञान का भंडार है। बच्चों, छात्रों, अध्यापकों, शोधार्थियों को इतनी पुस्तकों और पत्रिकाओं की सुविधाएं कहीं और मिलती हैं, मेरी नजर में नहीं आई। अंत में इंग्लैंड की केम्ब्रिज और ऑक्सफोर्ड दो प्रमुख लाइब्रेरियों तथा अमेरिका के हार्वर्ड के अलावा और चार प्रमुख विश्वविद्यालयों की लाइब्रेरियों (येल, स्टेनफोर्ड, एमआईटी और शिकागो) के संबंध में मेरे कुछ प्रत्यक्ष अनुभवों के आधार पर मेरी यह धारणा बनी है।

विश्वविद्यालय के संग्रहालय

विश्वविद्यालय का सबसे बड़ा म्यूजियम है 'यूनिवर्सिटी म्यूजियम'। वास्तव में यह चार संग्रहालयों का समूह है। 'बाटोनिकल म्यूजियम' जिसमें अमेरिका के मुख्य खाद्य-पदार्थ वाले पेड़ (औषधि-पत्र और आदिवासी समाज के पेड़ों के साथ साथ पुराने और लुप्त होने वाले पेड़-पौधों का समूह) तथा आर्किड के हरबेरियम जिस पर शोध-कार्य चालू है, तीसरा, अलग-अलग श्रेणियों में बांटे गए सबसे बड़े पेड़ों की गवेषणा (केलोफोर्निया के असुरनुमा ऊंचे रेडवुड देखकर उनकी याद ताजा हो गई) और चौथा, पृथ्वी के सबसे बड़े प्लांट फॉसिल का संग्रह। इसके साथ-साथ है शोध-कार्य के लिए अमेरिका में पाए जाने वाले सभी प्रकार की लकड़ियों के नमूने और पृथ्वी के सबसे प्राचीन एल्जी हेल्जेलाइक वस्तुओं के जीवाश्म। उस संग्रहालय में मेरे लिए सबसे ज्यादा चित्ताकर्षक वस्तु थी- वेयर कलेक्शन ऑफ ग्लास मॉडल्स ऑफ प्लांटस, जिनका साधारण लोकप्रिय नाम है काँच के फूल। ये सारे खासकर 1887 सदी में हार्वर्ड के लिए जर्मनी में तैयार किए गए थे और उनको प्रस्तुत करने वाले तत्कालीन दो कलाकारों का नाम था लियोपाल्ड और रूडोल्फ व्लास्का।

उसके बाद खनिज पदार्थ का संग्रहालय, जो कि दुनिया का सबसे बड़ा एक आदर्श संग्रहालय जिसमें डेढ़ लाख नमूने संग्रहित और सुरक्षित रखे गए हैं। यहां पर सोने तथा यूरेनियम खनिज के बहुत सारे प्रकार दर्शाए गए हैं।

तीसरा है तुलनात्मक प्राणीविज्ञान का संग्रहालय, जिनमें असंख्य प्रदर्शित नमूनों के विशेष लक्षण, 1932 में आविष्कृत सी-सरपेन्ट , गोलापगोस द्वीप के विविध नमूने। मेरे लिए सबसे ज्यादा आकर्षणीय था लोलिता उपन्यास के रचयिता वाल्दमीर नबाकोव द्वारा अपने हाथ से पकडी हुई अलग-अलग तितलियों के जीवाश्म। शेष विषय पर मैं बाद में लिखूंगा। चौथे संग्रहालय का नाम ता पीबॉडी म्यूजियम ऑफ आर्यिओलॉजी एंड एथनोलॉजी। इसमें स्वाभाविक रूप से मेरी ज्यादा रूचि थी और वहां मैं कई बार गया था और उनके निर्देशक पुरातत्वविद श्रीमती मोनी एडाम्स मेरी व्यक्तिगत मित्र बन गई थी। इस संग्रहालय का ऑडिटोरियम बहुत बड़ा

था, जिसमें खास-खास भाषणों का आयोजन भी किया जाता था। हार्वर्ड पुरातत्व विभाग और उनके प्रमुख डेविज मे-वरि लुइस की अध्यक्षता में मैंने भी अपना एक भाषण दिया था, जिसका उल्लेख मैं बाद में करूंगा । इस संग्रहालय में पांच विशिष्ट मंजिलें हैं। यह सन् 1866 में स्थापित विश्व का सबसे पुराना पुरातत्व संग्रहालय है।

यूनिवर्सिटी संग्रहालय के नीचे एक और बहुत बड़ा संग्रहालय है- विलियम हेयस फॉग आर्ट म्यूजियम। संक्षेप में फॉग आर्ट म्यूजियम। प्राचीन पाश्चात्य कला की उत्पत्ति, अलग-अलग समय के चित्र, स्थापत्य और भास्कर्य कला का उल्लेखनीय प्रदर्शन यहां किया गया है। जिन चीजों ने मुझे इस संग्रहालय में सबसे ज्यादा आकर्षित किया वे हैं चाइनीज ब्रान्ज और जेड़, ग्रीक फूल दान, जिसे मैंने एलेन्स के संग्रहालय में देखा था - रोमन कलाकृति फ्रेंच उन्नीसवीं शताब्दी और इम्प्रेसनिष्ट पेंटिग में। एक साथ एक ही विश्वविद्यालय के संग्रहालय में इतने प्रकार और इतने ज्यादा सामान को संग्रहित कर प्रदर्शनी के रूप में काम में लाया जा सकता है, इस बात का मुझे आश्चर्य हुआ था। मन में तुलना के लिए भुवनेश्वर के स्टेट म्यूजियम का ख्याल आया था।

एक और दर्शनीय महत्वपूर्ण जगह है कारपेन्टर सेंटर फॉर विजुअल आर्ट। फॉग संग्रहालय के पास ली कारबुजीअर द्वारा इसका निर्माण किया गया है। विश्वविद्यालय के डिपार्टमेंट ऑफ विजुअल एनवायरनमेंटल स्टडीज़ केंद्र-स्थल है। यहां आक्टोविओ पॉज के काव्य-पाठ की चर्चा बाद में करूंगा ।

यहां केम्ब्रिज शहर के सबसे बड़ी आधुनिक चित्रकला और स्थापत्य कला के नमूने प्रदर्शित किए गए हैं।

उसके बाद एक दर्शनीय संग्रहालय, जो मुझे बहुत अच्छा लगा, जिसका नाम था बुश्य-रिसिंग का संग्रहालय। जहां मुक्त होती है भास्कर्य चित्रकला, डेकोरेटिव आर्ट, जो आस्ट्रिया, जर्मनी, स्कैंडनेविया, स्विटरजलैंड, नीदरलैंड और बेल्जियम की। यह संग्रहालय युक्तिसंगत तरीके से दावा करता है कि यह अमेरिका का इस विशिष्ट विषय का सर्वोत्कृष्ट संग्रहालय है।

फिर से मध्य-प्राचीन जमाने की बहुविध कलावस्तुओं को एकत्रित कर सेमेटिक संग्रहालय में खासकर 1889 से हार्वर्ड विश्वविद्यालय के विद्वानों के विभागीय एक्सपीडीशन और उत्खनन से प्राप्त कर रखा गया है। मध्य-प्राचीन की इतनी ज्यादा कला वस्तुओं को मैंने येरुशलम के विश्वविद्यालय संग्रहालय और येरुशलम शहर के संग्रहालय में देखा था। न्यूयार्क के मेट्रोपोलिटियन म्यूजियम ऑफ आर्ट के अधिकारियों के मतानुसार यह एक अति मूल्यवान संग्रह तथा प्रदर्शनी योग्य है।

हार्वर्ड कलानुष्ठान के बारे में एक और बात लिखना जरूरी है। वह लोएब ड्रामा सेंटर। जिसमें दो स्टेज और एक ऑडिटोरियम हॉल है। एक फ्लेक्जिबल स्टेज के साथ 556 विशिष्ट सीटें, दूसरा छात्रों के परीक्षामूलक नाटक एकांकी इत्यादि के प्रदर्शन के लिए 100 विशेष सीटें बनी हुई हैं। यहीं से अमेरिकन रिपारेटॉरी कंपनी अपने कार्यक्रम प्रस्तुत करती है, छात्र-छात्राओं को शिक्षा देती है, उनके सारे प्रोग्राम हार्वर्ड गजट, इंडिपेंडेंट क्रिमसन और आर्ट स्पैक्ट्रम में प्रकाशित होते हैं। बहुत अच्छे-अच्छे छात्र इन कार्यक्रमों में अपना नाम दर्ज कराते हैं। अपनी पढ़ाई के साथ साथ इस ज्ञान की निपुणता को भी प्राप्त करते हैं।

अलग-अलग भाषाओं की फिल्में देखने के लिए विश्वविद्यालय में बहुत अच्छी व्यवस्था है। जिसमें दुनिया के कई देशों की फिल्मों (विशेष रूप से हंगरी, जापान और स्वीडन के मिकलोस जानस्को, कुरोसावा और बर्गमान इत्यादि) को देखने का निमंत्रण, लगभग सारे मैंने स्वीकार किए हैं। विश्वविद्यालय के विज्ञापन के अनुरूप '*फॉर फॉरेन फिल्म और फिल्म क्लासिक एडिक्ट, या नथिंग शार्ट ऑफ पैराडाइज*'। सही मायने में फिल्में देखने का नशा मुझ पर सवार था और मैंने उन्हें देखकर स्वर्ग-तुल्य सुख पाया।

संगीत, आर्केस्ट्रा इन सब की व्यवस्था के लिए छात्रों द्वारा पांच-छह संस्थाएं चलाई जाती हैं। वे हैं- हार्वर्ड रेडक्लिफ आर्केस्ट्रा, हार्वर्ड यूनिवर्सिटी बैंड, रेडक्लिफ कोराल सोसायटी, कोलेजियम म्यूजिअम और हार्वर्ड ग्ली क्लब। साल भर चल रहे इन सारे आयोजनों में किसी के लिए भी पूरी तरह योगदान देना संभव नहीं है। मैंने पहले अर्थात् आर्केस्ट्रा ग्रुप और यूनिवर्सिटी बैंड के सब मिलाकर चार-पांच प्रोग्राम एक साल के भीतर देखे होंगे। उनमें से तीन विश्वविद्यालय के बच्चों का और दो बाहर से आए हुए दलों का।

सांडर्स थिएटर यूनिवर्सिटी का केंद्र स्थल है और यहां सारे वर्ष विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित होने वाले खूब सारे आर्केस्ट्रा, संगीत-संध्या, भाषण इत्यादि में मैंने भाग लिया है। यहां मैंने राजीव गांधी का भाषण सुना था। इसी तरह अनेक दूसरे लोगों का। विश्वविद्यालय की ओर से यहां पिओडी-मेसन म्यूजिक फाउंडेशऩ औऱ कैंब्रिज सोसाइटी फॉर अर्ली म्यूजिक ने कई बार उल्लेखनीय संध्याओं का आयोजन किया है।

हार्वर्ड विश्वविद्यालय में कई विख्यात वार्षिक लेक्चर सीरीज है एवं हार्वर्ड मैगज़ीन जैसी साहित्यिक पत्रिका है। उसके अतिरिक्त हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस और उनका प्रकाशन समूह भी है।

इन तीनों के विषय पर पृथक से कुछ लिखूंगा। मगर यहां यूनिवर्सिटी के इतिहास से और कुछ ।

हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस ने यूनिवर्सिटी के इतिहास की अनेक पुस्तकें प्रकाशित की हैं। उनमें से जो किताब मुझे सबसे ज्यादा मूल्यवान लगी, वह है सैमुअल इलियट मॉरिस कृत *थ्री सेंचुरी ऑफ हार्वर्ड , हार्वर्ड इन सेवनटीन्थ सेंचुरी* (दो भाग) तथा तीसरी *द डेवलपमेंट ऑफ हार्वर्ड यूनिवर्सिटी* (1869-1929), इसके अतिरिक्त क्लिटन के॰ सिप्टन रचित *न्यू इंग्लैंड लाइफ इन द एटीन्थ सेंचुरी*।

इन इतिहासों को पढने के बाद मुझे लगा कि हार्वर्ड के लंबे इतिहास में विश्वविद्यालय के पांच अध्यक्षों का कार्यकाल सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण रहा है। सबसे पहले, हेनेरी डनस्टर, जिन्होंने सन 1640 में कार्यभार ग्रहण किया था- उनके कार्यकाल में कुछ कक्षाएं तथा छात्रावासों का निर्माण हुआ था। दूसरे ख्याति प्राप्त अध्यक्ष रहे हैं जान लेवरेट,जिन्होंने सन 1708 में कार्यभार ग्रहण किया था। चार्ल्स विलियम इलियट (1869 में अध्यक्ष बने थे) और लारेन्स लायल (1909 में पदभार ग्रहण किया था)। उन दोनों को हार्वर्ड के इतिहास में सबसे ज्यादा समर्थ, कर्मठ और दूरदर्शी कहकर सम्मानित किया जाता है, जिनके कार्यकाल में सभी तरफ से हार्वर्ड की उन्नति हुई और उसके नाम को विश्व के अन्यतम प्रसिद्ध विश्वविद्यालय के रूप में मान्यता प्राप्त हुई। इलियट (इतिहासज्ञ मारीसन के शब्दों में) स्ट्रक्चरड़ द मॉडर्न यूनिवर्सिटी अर्थात् आधुनिक हार्वर्ड की रूपरेखा प्रदान की। पाठ्यक्रम, लाइब्रेरी, संकाय निर्माण, सबसे अच्छे-अच्छे छात्रों को एडमिशन देना- सभी तरफ से उन्हें नूतन हार्वर्ड के निर्माता के रूप में जाना जाता है। उनके समकक्ष और एक थे लारेन्स लोयल (1909), जिन्होंने अपने चौबीस साल के कार्यकाल के भीतर सौ मिलियन डॉलर का एण्डावमेंट तैयार किया। हार्वर्ड के 273 वर्ष के इतिहास में जितने भवन निर्माण हुए थे, उनके मात्र 24 साल के कार्यक्रम में

उनसे ज्यादा निर्माण कार्य हुआ। वर्तमान अध्यक्ष डेरेक कुर्टिस वाक (1971 से, केलिफोर्निया के पश्चिमी तट के रहने वाले, स्टेनफॉर्ड विश्वविद्यालय के स्नातक, हार्वर्ड लॉ स्कूल से 1954 में स्नातक) के समय में हार्वर्ड वास्तव में विश्व का प्रमुख शिक्षा केन्द्र बन गया। अपनी दूरदर्शिता से विश्व के सारे कुलपतियों के साथ अच्छे संबंध बनाकर उन्होंने हार्वर्ड में गैर-अमेरिकन छात्रों की संख्या को ज्यादा से ज्यादा बढ़ाया है। सन 1988 में सारे छात्रों की संख्या का यह एक तृतीयांश हुआ, जो दुनिया के किसी भी विश्वविद्यालय में संभव नहीं हुआ था। साल की शुरुआत हम सभी फेलों से वे एक छोटे से रिसेप्शन में मिले थे। तब व्यक्तिगत रूप से हमारा परिचय हुआ था। एक बार फिर मिलेंगे, कहकर उन्होंने अपनी खुशी जाहिर की थी। दूसरा, उनके समय में हार्वर्ड में मल्टी डिसप्लिनरी रिसर्च सेंटर के कार्य में काफी अभिवृद्धि हुई थी। केवल एमआईटी, येल या स्टेनफॉर्ड ही नहीं, विश्व के दूसरे अनेक विश्वविद्यालयों के साथ परिवेश, जनसंख्या नियंत्रण, एड्स रिसर्च, हार्वर्ड बिजनेस स्कूल के साथ आई॰आई॰एम, अहमदाबाद इत्यादि के साथ अनेक स्तर के कालोबरेटिव रिसर्च प्रोग्रामों को हार्वर्ड ने हाथ में लिया। परिमार्जित रुचि, ज्ञानी तथा खुले विचारों वाले मनुष्य वाली दृढ़ धारणा उनके प्रति प्रथम साक्षात्कार में बन गई थी।

हार्वर्ड में नौ संकाय हैं और प्रत्येक में एक एक डीन है। डिग्री प्रोग्राम और रिसर्च के 12 स्कूलों और कॉलेजो का संचालन होता है जिनमें प्रमुख हार्वर्ड कॉलेज तथा रेडक्लीफ़ कॉलेज सबसे पुराने हैं। ये दोनों विश्वविद्यालय शुरु से हैं। स्कूल का अर्थ हमारी स्कूलों की तरह नहीं है। प्रमुख स्कूले हैं- हार्वर्ड बिजनेस स्कूल, लॉ स्कूल, मेडिकल स्कूल, डिविनिटी स्कूल, केनेडी स्कूल ऑफ गवर्नमेंट एवं एक और स्कूल जिसका नाम है- सेंटर फॉर इंटरनेशनल अफेयर (सीआईएफ़ए)। इनमें से सबसे पुराना मेडिकल स्कूल (1780) है, उसके बाद डिविनिटी स्कूल (1811) तथा लॉ स्कूल (1817) है।

मैसेच्युसेट प्रशासन के ग्रांट से विश्वविद्यालय पहली बार शुरु हुआ था। पहला ग्रांट कितना कम मिला था, पहले लिखा जा चुका है। धीरे-धीरे विश्वविद्यालय आत्मनिर्भर होने लगे-एण्डावमेंट, प्राइवेट ग्रांट तथा भीतरी आय के द्वारा। इसलिए दोनों पक्षों (विश्वविद्यालय प्रशासन और मैसेच्युसेट प्रशासन) ने सन 1833 में आम सहमति द्वारा यह तय किया कि और विश्वविद्यालय को किसी भी प्रकार के ग्रांट की कोई आवश्यकता नहीं है, तब से बोर्ड ऑफ ओवरसीअर्स (विश्वविद्यालय प्रशासन), जो मैसेच्यूसेट प्रशासन द्वारा मनोनीत किया जा रहा था, वह कर दिया गया। हार्वर्ड डिग्रीधारियों ने इस हेतु चुनाव करना प्रारंभ किया अर्थात् सन् 1833 से (150 वर्ष पूर्व) हार्वर्ड आर्थिक तौर पर स्वावलंबी हो चुका था तथा वहां स्वायत्त शासन प्रारंभ हो गया था। मुझे ऐसा लगता है, सारे विश्व को, खासकर हमारे देश तथा ओड़िशा के लिए इससे कुछ सबक सीखने चाहिए।

विश्वविद्यालय के स्वाबलंबी होने तथा स्वायत्त शासन चलाने, दोनों एक दूसरे के संपूरक हैं, कहने का कोई अर्थ नहीं होगा। यहां एक छोटा-सा उदाहरण देना उचित समझता हूँ। मेरे अपार्टमेंट से थोड़ी दूरी पर कानकोर्ड ऐवन्यू में विश्वविद्यालय पुलिस का तीन मंजिला विशिष्ट मुख्यालय है। उनकी पोशाकें स्वतंत्र हैं। पुलिस अधिकारियों के भीतर हार्वर्ड डिग्रीधारी चालीस लोग हैं। विश्वविद्यालय के आंतरिक शांति, सुरक्षा और पुलिस संस्था का सारा खर्च विश्वविद्यालय उठाता है। उसके बाहर स्थानीय मेसेच्यूसेट खर्च करता है। मगर हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के आर्थिक समृद्धि का कारण बहुत सारे दानशील अनुष्ठान एवं व्यक्तियों के अर्थ उपहार (गिफ्ट) है। भूतपूर्व छात्रों, शोधार्थियों तथा अध्यापकों द्वारा ऐसे उपहार दिए जाते हैं, अनेकों फाउंडेशन खोली जाती हैं और बहुत सारा मूलधन विश्वविद्यालय के उस फंड में जमा करते हैं जिसके ब्याज से निर्दिष्ट

शोधकार्य, वृत्ति अथवा अन्य योजनाएं हाथ में ली जा सकती हैं। संक्षेप में सिविल सोसायटी के अवदान विश्वविद्यालय की समृद्धि का सबसे बड़ कारण है। हार्वर्ड की तरह अन्य विख्यात विश्वविद्यालयों (येल, एम.आई.टी, स्टेनफोर्ड, कर्कली, चिकागो, कर्णेल) में ऐसे ही अवदान मिलते हैं। मगर हार्वर्ड के ऐतिहासिक गुणात्मक उत्कर्ष के कारण सबसे ज्यादा धन मिलता है। अभी-अभी की बात है कॉरपोरेशन के मुख्य ने 115 अयुत डॉलर दान देने की प्रतिश्रुति दी थी। यह था विश्वविद्यालय के इतिहास में सबसे बड़ा दान। मगर विश्वविद्यालय के अध्यक्ष लारेन्स समर के इस्तीफा देने के कारण वे देने अथवा न देने के बारे में फिर एक बार सोच रहे हैं। लोरेंस समर उनका व्यक्तिगत दोस्त हैं और उनका इस्तीफा देने के कारण उन्होंने कहा था "there are fewer women than men in science because of intrinsic attitude "

विश्वविद्यालय का प्रमुख अध्यक्ष होता है। अध्यक्ष की सहायता करने के लिए उनकी अध्यक्षता में काऊंसिल ऑफ डींस बनाई जाती है जिसमें सभी फ़ैकल्टियों के डीन तथा रेडक्लिफ का अध्यक्ष सदस्य होता है। सभी प्रमुख स्कूलो के संचालन हेतु एक उच्चस्तरीय विजिटिंग कमेटी होती है सी.आई.एफ.ए के लिए जिस प्रकार से सदस्यों की समिति हैं और निर्देशक हैं सेमुअल हरिटन(संक्षेप में साम- हम सभी उन्हें इसी नाम से बुलाए, ऐसा उन्होंने अनुरोध किया है) तब तक उनकी बहुचर्चित पुस्तक *'द क्लास ऑफ सिविलाइजेशन'* नहीं लिखी गई थी। मगर उन्होंने जितने भी उदबोधन दिए या सेमिनार या बाहर प्रमुख वक्ता के रूप में सभापतित्व ग्रहण किया था, उनके भाषण में उनके ज्ञान, विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण की प्रशंसा करने के साथ-साथ मैंने उनके विरोधाभासी व्यक्तित्व की आलोचना भी की थी। निश्चित तौर पर उन्होंने इस बात पर ध्यान दिया था, नहीं तो मुझे नहीं कहते, " एस॰के॰ इज माय वेटेरन क्रिटिक "। अपनी आलोचना का भी वे स्वागत करते थे। स्पर्शकातर बिलकुल नहीं थे। सी.आई.एफ.ए की विजिटिंग कमेटी में बहुत उच्च स्तरीय कारपोरेट चीफ सदस्य हैं तथा चैयरमेन हैं जाने-माने विज्ञान हेनेरी स्लेशींजर (सेंटर फॉर स्ट्रेटेजिक एंड इंटरनेशनल स्टडीज के उपदेष्टा)। सदस्यों के भीतर प्रमुख फ्रेंक बाओस, स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय के प्रोफेसर ऑफ इंटरनेशनल रिलेशन्स, ग्राहम स्टूअर्ट, सुप्रसिद्ध वाशिंगटन पोस्ट अखबार के अध्यक्ष कैथेरिन ग्राहम, आई.बी.एम के सेवानिवृत वरिष्ठ उपाध्यक्ष डीन फाईपर्स, टोयाटो मोटर कंपनी के अध्यक्ष सोइचिरा टोयाडा, मोबिल ऑयल कंपनी के कानून विशेषज्ञ, केन्या में अमेरिका के पूर्व राष्ट्रदूत गेरालन थॉमसए, अपोलो टेक्नोलॉजी के अध्यक्ष इरा लूकिन, आर्थ ईस्टर्न विश्वविद्यालय के बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन के प्रोफेसर चार्ल्स वेकर, अमेरिका के डिप्टी सेक्रेटरी ऑफ स्टेट, ड्रेफस कारपोरेशन के सलाहकार वारेन मानसेल एवं ओईसीडी (ओर्गनाइजेशन फॉर यूरोपियन को-आपरेशन एंड डेवलपमेंट के पूर्व अमेरिकन राष्ट्रदूत हर्बट सालजमान। मोटा-मोटी विजिटिंग कमेटी बहु उच्चस्तरीय व्यक्तियों द्वारा गठित की जाती है। सभी को एक साथ मैं कभी नहीं मिला। बीच-बीच में उनमें से कईयों ने हमें रात्रि-भोज पर जरूर बुलाया है। अनेक संदर्भित विषयों, आर्थिक-नीति, राजनीति, शिक्षा और विश्वविद्यालय के विषय में चर्चा की है।

3. हार्वर्ड के चारों तरफ ऐतिहासिक बोस्टन नगरी

अगर बोस्टन नगर समझ में नहीं आया तो कैम्ब्रिज नगर समझ में नहीं आएगा और अगर कैम्ब्रिज नगर समझ में नहीं आया तो हार्वर्ड विश्वविद्यालय को बिल्कुल नहीं समझ पाओगे। यह एक पुराने जमाने से चली आ रही धारणा है। अमेरिका के शहरों में बोस्टन की एक स्वतंत्र सत्ता है, जो उसे शिकागो, न्यूयार्क, लॉसएंजिलस अथवा सेनफ्रेंसिस्को से पूरी तरह अलग कर देता है। इस स्वतंत्र सत्ता के संबंध में बहुत बार समीक्षा की गई है।

जिस समय बोस्टन ने अपने जीवन के दो सौ साल (1976) पूरे किये, उस समय अनेक पुस्तकें तथा समीक्षाएँ प्रकाशित हुई थीं ।

मुझे ऐसा लगता है, ये स्वतंत्र सत्ता दो वस्तुओं में निहित है। पहले बोस्टन नाम का उच्चारण करने से ही मन में आएगा कि लोगों की यह धारणा सही है कि यह शहर दूसरे शहरों की तरह नहीं है। एक असाधारण, अद्भूत जन-समागम वाला शहर है। दूसरा कारण आधुनिक अमेरिका का उदय बोस्टन से हुआ। सैम एडमस के बिना क्रांति संभव नहीं थी,जिस प्रकार स्वतंत्रता की घोषणा भी जॉन एडमस के बिना संभव नहीं थी। बोस्टन एक वैसा शहर है, जहाँ जगह व्यक्ति और संस्कृति में बदल जाती है।

केवल युद्ध नहीं, स्वाधीनता का आह्वान नहीं, पिलग्रीम फादर के चाय के बस्तों को समुद्र में फेंकना भी नहीं। बोस्टन टी पार्टी तो सहज में इतिहास का एक बड़ा अध्याय है। स्वाधीनता संग्राम के सूक्ष्म स्वर, जो धीरे-धीरे कॉनकॉर्ड में रण- दुंदुभि में बदल गई थी। बहुत सारे बगीचों में, विभिन्न शैलियों में तरह-तरह के लोगों ने अपना योगदान दिया है बोस्टन के निर्माण में, जो कि अमेरिका की सभ्यता की हृदय-स्थली है। बोस्टन चर्च से चानिंग, पार्क के॰ बिच और गेरिसन के दृढ़ संकल्प की घोषणा के बाद दास-प्रथा का उन्मूलन हुआ।उन्होंने दृढ़ भाव से दृप्त स्वर से चर्च का घोषणानामा जारी किया क्योंकि यह प्रथा क्रिश्चियन धर्म के विरुद्ध थी। *अंकल टाम्स केबिन* के लेखक हारिएट विचर स्तोए से मिलकर लिंकन ने कहा था कि तुम वही छोटी औरत हो, जिसने इतने बड़े युद्ध को आरंभ किया है ? जब-जब मैं बोस्टन शहर में घूमता हूँ, अकेले या यूनिवर्सिटी के दोस्तों के साथ, यह इतिहास मेरे मन में उभर कर सामने आता है।

बोस्टन का नाम मन में आते ही याद आने लगते हैं अमेरिका के सारे राष्ट्राध्यक्ष जॉन आडामस, जॉन क्विन्सि आडामस, जॉन फिंजगोराल्ड केनेडी और उनके समकक्ष तथा अमेरिका के जनजीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालने वाले अधिकारी बेन फ्रेंकलिन, डान वेबस्टर, आलिवर वेंडल होमस, मैसेच्यूट राज्य, कॉनकॉर्ड तथा बोस्टन आदि । अमेरिका के सर्वश्रेष्ठ दार्शनिक रोल्फ वाल्डो एमर्सन, सर्वश्रेष्ठ मुक्तिचिंतक हेनेरी डेविड थोरो और प्रथम महत्वपूर्ण उपान्यसकार नाथानिएल हथर्ण। इन तीनों ने अपना समय काटा है कॉनकॉर्ड, बोस्टन में तथा समाधि प्राप्त किए हैं कॉनकॉर्ड में।

और चित्रकार जैसे गिल्बर्ट स्टुआर्ट, सिंग्लटन लोप्ले, सिंगर सर्वेंट इत्यादि। इतिहासकार फ्रासिस पार्कमान, हिकलिंग प्रेस्कट और लोथप मोरले की नजरो में बोस्टन एक कविता है। दूसरी तरफ कवि लंगफेलो, व्हिटिअर, लोएल और वेंडल होम्स ने इसका इतिहास लिखा है।यहां कविता, चित्रकला, और इतिहास सभी मिलकर एकाकार हुआ है। मन से बोस्टन की उन महान नारियों को भी याद करना होगा जैसे लुइसा आलकट, रोज फिंजगोराल्ड, केनेडी, मेरी बेकर जिन्होंने क्रिश्चियन साइंस सेटर की स्थापना की।

बोस्टन था नए इंग्लैंड का प्राण-केन्द्र। जिन लोगों ने विद्रोह करके प्लीमथ में आकर शरण ली थी, वे पिलग्रीम फादर खासकर उच्च शिक्षित लोग थे। बोस्टन में रहते समय मजाक-मजाक में उन्हें बोस्टन का ब्राहमण कहा जाता था। विशेषकर दो उपनाम हुआ करते थे लोवल और काबोट। बोस्टन का मुख्य भोजन था बिन्स एवं कड़ मछह लियां। उससे एक लोकोक्ति बनी-

" In this land of bean and cod, the Lowells speaks only to Cabot and the Cabots speaks only to God." उस समय बोस्टन की जो भाषा थी,आज भी वैसी ही है। अग्रेजी, पायरिश और यांकी का अद्भूत सम्मिश्रण।

बोस्टन की धार्मिक आस्थाएं क्या थीं ? पहले जितने भी परिवार यहां आए तथा न्यू इंग्लैंड और बोस्टन को बसाया, उनका धर्म था Episcopalian,जिसके बारे में एर्मसन कहते हैं - The best diagonal line that could be drawn between the life of Jesus Christ and that of Boston Merchant. यह द्वैतभाव बोस्टन शहर के गिरजाघरों, बहुत ऊंचे हैंकॉक टावर, प्रूडेंसियल बिल्डिंग और मार्केट कांप्लेक्स में सहजता से देखा जा सकता है।

बोस्टन शहर में मेरी एक प्रिय जगह थी ट्रिनिटी चर्च। शहर के केन्द्र में कोप्ले स्केवयर में स्थित यह चर्च दुनिया का सबसे सुंदर स्थान है, जिसकी स्थापत्य तथा भास्कर्य कला बहुत प्रसिद्ध व चर्चित है। वाशिंगट के केथेड्रल चर्च ऑफ सैंट पीटर एवं सैंट पॉल, संक्षेप में नेशनल केथेड्रल के साथ इसकी तुलना की जाती है। मैंने देखे, रोम में वेटिकन सिटी का सुंदर एवं विशाल सेंट पिटर्स चर्च, लंदन का सैंटपाल, इंग्लैंड के कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के किंग्स कॉलेज के अपेक्षाकृत छोटा केथेड्रल तथा जर्मनी के कोलोन शहर का चर्च - ये चारों मेरी दृष्टि में बहुत ही सुंदर तथा स्थापत्य-भास्कर्य दृष्टिकोण से आकर्षक, काँच पर बाइबिल के चित्रों का सुंदर अंकन। उन सभी के साथ मैं बोस्टन के ट्रिनिटी को भी जोड़ता हूं। मुझे उसकी भवन-निर्माण तथा स्थापत्य-कला बहुत ही अच्छी लगी। जब भी मैं अमेरिका और हार्वर्ड आता हूं (एक साल रहने के बाद और तीन बार आया हूँ), तब मैं बोस्टन जरूर जाता हूँ ट्रिनिटी से मिलने। बोस्टन अमेरिकन रोमन कैथोलिक से भरा हुआ है। कम से कम एक हजार लोग संडे को यहां आते हैं। कभी-कभी बहुत दूर के न्यू हैम्पसायर और केपकड के पेरिस से भी। सुना था, पहले ज्यादातर वयस्क, विधवाएं और बूढ़े लोग आते थे। मगर अभी सपरिवार बहुत लोग आते हैं। ट्रिनिटी के चर्च स्कूल में पहले बहुत कम बच्चे पढ़ते थे,मगर अभी दो सौ से ज्यादा। ट्रिनिटी के कम्यूनिटी चर्च में अनेक प्रोग्राम होते हैं। वाशिंगटन के केथेड्रल में प्रतिदिन छह ह सर्विस और रविवार को सात होती थी।इसके अतिरिक्त बहुत सारे कन्सर्ट, विशेष अनुष्ठान एवं इवेंट का आयोजन होता रहता है।

बोस्टन शहर के डाऊन-टाऊन अर्थात् व्यापारिक केन्द्र और जनाकीर्ण अंचल से होते हुए हाइवे गया है लोगान अन्तरराष्ट्रीय हवाई अड्डे तक। पोताश्रय टनल से होते हुए यात्रीलोग एयरपोर्ट तक पहुंचते हैं। शहर की हृदय-स्थली के भीतर से जाने वाले इस द्रुतगामी ट्रेफिक भरे रास्ते ने शहरवासियों को परेशान कर दिया था। सौन्दर्य की दृष्टि से भी यह बहुत गंदा दिखता था। हाइवे के दोनों किनारों पर ऊंची दीवार उठाना भी संभव

नहीं था। काफी सोच-विचार करने के बाद मैसेच्यूसेट की राज्य सरकार तथा फेडेरल सरकार ने शहर के भीतर से जाने तथा एयरपोर्ट को जोड़ने के लिए एक लंबी प्रशस्त योजना बनाई थी। सन 1984 में यह योजना पारित हुई। योजना थी शहर के अंदर से हाइवे हटा देने के बाद बहुत सारी जगह पार्क बनाने के लिए मिल जाएंगी तथा शहर के सौंदर्य में अभिवृद्धि होगी। हाइवे उठ जाने पर शहर का इटालियन अध्युषित उत्तरांचल तथा पोताश्रय के किनारों का सुंदर water front अंचल शहर के दक्षिण अंचल से अलग नहीं रहेगा और सारा शहर सही मायने में एक शहर की तरह दिखेगा। हाइवे के कारण वास्तव में ऐतिहासिक बोस्टन, जिन दो भागों में बंटा हुआ दिख रहा है, पूरी तरह से बदलकर एक हो जाएगा।

व्यक्तिगत रूप से बोस्टन के साथ अच्छी तरह परिचित होने के कारण शहर की अलग-अलग जगहों तथा खासकर इटली के उत्तरांचल में ज्यादा घुमने की वजह से मुझे यह योजना बहुत अच्छी लगी। इसके अतिरिक्त, लोगान अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पहुंचने वाले पोताश्रय टनल वाले रास्ते में हमेशा ट्रेफिक जाम रहता था।यहां से मैं स्वयं जाता हूं सीआईएफ़ए के प्रोग्राम में अमेरिका, कनाड़ा, यूरोपियन कम्यूनिटी, फिर भाषण देने शिकागो, केलिफोर्निया, बर्मिंहम, मेरे परिवार पत्नी और बच्चों समेत मांट्रियल। पहले रास्तों की कमी की जानकारी होने के कारण बहुत लंबी-चौड़ी टनल जो बोस्टन शहर और पोताश्रय के 110 फुट नीचे से जाएगी, यह मेरे लिए खुशी की खबर थी। तीन बिलियन डॉलर वाली पांच साल में खत्म होने वाली योजना थी। सन 1988 में मेरा कैम्ब्रिज छोड़ते समय काम आरंभ हो रहा था। बेटी के पास वांशिंगटन में रहकर यह लिखते समय मैंने अखबार में पढ़ा था कि वह परियोजना एक साल के अंतर्गत समाप्त हो जाएगी। खर्च बढ़कर पन्द्रह बिलियन डॉलर तक पहुंच गया था। तब मैंने सोचा कि केवल हमारे देश में ही प्रोजेक्ट देरी से पूरे नहीं होते हैं। योजना कमीशन तथा योजना कार्यान्वयन मंत्रालय में काम करने की वजह हमारे कई प्रोजेक्टों के कार्यान्वयन में विलंब तथा उससे बढ़े खर्च की समस्या से मैं अच्छी तरह परिचित था। मैंने देखा, अमेरिका में भी इस समस्या का कोई समाधान नहीं है।भले ही, उनके प्रयास अधिक तथ्यमूलक, आंतरिक तथा हमेशा मार्जित होते हैं।

हार्वर्ड में रहते समय मैं केवल लोगान एयरपोर्ट से आना-जाना या बोस्टन में इटालियन अध्युषित उत्तरांचल ही नहीं, वरन शहर के पार्क, प्राचीन कोठे और घर (लुइसा आलकट, अनेक प्रेसीडेंटों के, लेखकों और कलाकारों के) तथा बोस्टन टी पार्टी के स्थानों पर अनेक बार घूमा हूं। बोस्टन विश्वविद्यालय के पुरातत्व विभाग में कई बार गया हूं। बोस्टन शहर के रहने वाले हमारे कोर्स के उद्योगपति फेलो जूलिएन सोबिन के साथ उनके घर गया हूँ। हमेशा याद रहेगा कि हार्वर्ड से विदा लेने से पहले जूलिएन ने सभी फेलो को अपने घर पर डिनर के लिए आमंत्रित किया था तथा चीनी कलाकारों के नृत्य-संगीत का प्रोग्राम भी रखा था। उनके अपने घर में एक बहुत बड़ा हॉल था, जिसमें वह अपने उद्योगपति दोस्तों तथा अर्थशास्त्र के विशारदों को पार्टी देते हैं । "हम" अर्थात् सारे फेलो वहां उपस्थित थे, मेरे जैसे कई फेलो बिना पत्नी के वहां अकेले आए थे।

4. ऐतिहासिक बोस्टन तथा उसके उत्तरांचल वासी

हार्वर्ड विश्वविद्यालय में एक साल रहने के समय मैं कई बार बोस्टन शहर की अलग-अलग जगहों पर घूमा हूँ। विश्वविद्यालय से जब भी बाहर जाता हूँ तो मुझे बोस्टन शहर की दो चीजें जरूर याद रहती हैं। पहली बोस्टन की चाय-पार्टी, जो आधुनिक अमेरिकन सभ्यता की एक नींव की ईंट है। दूसरी, वही नार्थ एंडर्स, जिसे छोटी सिसिली और इटली का छोटा रूप कहा जाता है, क्योंकि अति सरल, विशाल बोस्टन शहर की यह एक वर्गमील जगह ही मूलत: बोस्टन है कलकत्ता के सूतानटी की तरह। सन् 1630 सदी में यहां उत्तर सीमांत का निर्माण हुआ था। यूरोप से बहुत सारे लोग यहां आए थे। पहले-पहल अंग्रेज लोग, फिर अमेरिकन, उसके बाद आयरिश, फिर यहूदी। सन 1870 से इटली के लोग यहां प्रवास करने लगे। उसके पीछे कई कारण थे जैसे दक्षिण इटली में गरीबी का होना, रोग एवं अस्वास्थ्यकर परिवेश, प्राकृतिक विपदाएं, आर्थिक एवं राजनैतिक अत्याचार। अनेक इतिहासकारों का मानना है कि दक्षिण इटली से बोस्टन उत्तर-सीमांत की यह यात्रा एक प्रकार का बहिष्करण थी। सन 1876 से 1976 तक अर्थात् सौ साल के भीतर लगभग 250 करोड़ से ज्यादा लोग अपना देश छोड़कर बोस्टन शहर के उल्लेखनीय अंश बन गए।

सी.आई.एफ.ए में मेरे इटालियन मित्र ने मुझे इस जगह पर एक बार घुमाया था। इसलिए मैं उनका कृतज्ञ हूँ। संकरी गलियाँ, उपगलियाँ, प्रसिद्ध पाग्लिअका इटालियन रेस्टोरेंट, इटालियन खाने की सुगंध, इटालियन सिगार, वायोलिन, बैंजो पर इटालियन गाने, ताली बजाने में भाग ले रहे आदमियों को देखना मेरे लिए एक सौभाग्य की बात थी। अचानक एक आदमी गिटार या वायोलिन लेकर रास्ते में आ जाता है, धीरे-धीरे पहुंच जाते हैं उसके पीछे एक-दो, फिर होते-होते पंद्रह-बीस आदमी और औरतें। सभी के होठों पर गीतों की थिरकन, हाथों से तालियों का गुंजन और चेहरे पर खुशी के भाव। छोटे-छोटे ड्रम बजाते तथा अपने तरह-तरह की शारीरिक भाव-भंगिमाओं का प्रदर्शन करते। पुराने इतिहास को वे याद दिलाते हैं। बहुत बुजुर्ग लोग अपनी-अपनी अनुभूतियां तथा दूसरे अपने माँ, पिताजी, दादा-दादी से सुनी सुनाई कहानियों को दोहराते हैं। दक्षिण इटली के असहनीय परिवेश से वे यहां आए थे। यहां भी जीवन जीना उसके लिए घी अथवा मधु के समान नहीं था।पहले-पहल उन्हें अनेक कष्ट सहने पड़े हैं। केवल दूसरों का अत्याचार या शोषण नहीं था, बल्कि अपने आपको एक नए परिवेश में ढ़ालना तथा अपनी गोष्ठी की स्वतन्त्रता को बचाए रखना किसी काव्य-शैली से कम नहीं था। एक व्यक्ति के शब्दों में *"इस नई जगह पर अलग वातावरण में सभी इटालियन हो गए थे,मानो एक परिवार हो।"* सन 1930-40 के दशक के दौरान यहां लगभग 42000 लोग आए थे जिसमें से लगभग 40000 इटालियन थे। मेरे वार्तालाप (1987-88) तक यह संख्या घटकर लगभग 20000 तक रह गई थी। उसके अलावा अनेक टूरिस्ट थे. हमारी तरह के बाहरी दर्शक अथवा हार्वर्ड बोस्टन विश्वविद्यालय और एमआईटी से रेस्टोरेंट में खाना खाने का मजा लेने आते युवक-युवतियां।

बोस्टन पोताश्रय, अक्टूबर महीने की शुरुआती ठंड और बीच-बीच में चमकता सूर्य- इन सब चीजों को पीछे छोड़कर मैं कई बार हानोवर स्ट्रीट में गया हूं, बोस्टन के औपनिवेशिक ढाँचे से सनी बड़ी-बड़ी कोठियों में इटली-सिसली की महक को मैंने अनुभव किया है।किसी ने कहा- “अपने घर में हम सिसिलियन, भाषा भी वही, खाना भी वही-मगर बाहर में अमेरिकन-इस देश के साथ कदम से कदम मिलाकर चलते हैं।”

मेरे एक लेखक बंधु ने एक बुजुर्ग सिसिलियन का उदाहरण देते हुए हमें हंसाया था- “मैं इस खाने के टेबल के पास में मरना चाहूंगा, सामने पड़ी होगी बड़ी प्लेट भरी लासाग्ने और दोनों तरफ रखे होंगे बड़े-बड़े मांस-कबाव।”

हो सकता है वह और भी कुछ जोड़ सकते थे “दूर से सुनाई पड़ रहा होगा गिटार या वायोलीन पर इटालियन संगीत के स्वर”। होनोवर स्ट्रीट के जोहनी और गिनो हरी स्टाइलिंग दुकान पर मेरे मित्र तथा उनकी पत्नी ने एकाध बार बाल कटवाएं हैं। (शायद सजवाएं है, शब्द ठीक रहेगा)। मैंने हार्वर्ड में रहते समय सस्ती दुकानों पर ही बाल कटवाए हैं।

ग्रीष्म समारोह के समय यह उत्तर सीमांत अदभुत परीलोक की तरह सजता है। सेंट एंटानी तथा दूसरे संतों की पूजा-आराधना के साथ-साथ नाच-गीत से रास्ते भर जाते थे। कई दिनों तक वही तीसरी-चौथी पीढ़ी के सिसिली के निवासी उत्साह से कल्पना और सपनों में इटली का निर्माण करने लगते हैं। दूसरे विश्वयुद्ध में लडाई में भाग लिए कोई पुराने बुजुर्ग आनंद से ताश खेलते हैं, तमाशा देखते हैं, अपने देश की प्रसिद्ध वाइन पीते हैं और अपनी यादों को तरोताजा करते हैं।

उत्तर सीमांत अंचल में चार्ल्स नदी, बोस्टन का पोताश्रय और जॉन फिजगेराल्ड एक्सप्रेस वे द्वारा सीमाबद्ध है। लेखक इरला ज़्विंगल के शब्दो में “ The North End is a complex breed composed of Mediterranean emotion,Yankee drive, and seemingly limitless passion for their own ”

कापूचिनो, पोस्ता, लासाग्न, लम्बे-लम्बे वास्तानों ब्रेड, तरह-तरह के फल-केक, वाइन, गपशप, ताश, गीत और वाद्य। ‘शरीर भले यहां हो, मगर आत्मा इटली में।’ किसी ने कहा।

जो बूढ़े हो गए हैं, उनमें से कुछ सोचकर कहने लगे, “हम अपने भाग्य से सहन कर रहे हैं दो प्रकार के निर्वासन। पहला, हम अपने अतीत, देश और संस्कृति से कोसों दूर।दूसरा, हमारे अपने बच्चों के नूतन भविष्य को लेकर, जिसमें हम अपने आप को ढ़ाल नहीं पाते। मुझे उस समय ऐसा लगा, हो न हो, अमेरिका में बसे किसी बुजुर्ग भारतीय आदमी की भी यही दारुण आत्मकथा होगी।

अनेक लोगों की वेशभूषा में रेशमी टाई, शर्ट और इटालियन सूट, पतला, सुंदर तथा साधारण पेंट-शर्ट। सर्दी आने पर स्वेटर और ओवरकोट प्रयोग में लाने लगते हैं।

बोस्टन में सर्दी के दिन बड़े दुखद होते हैं। उत्तर से बहने वाली ठंडी हवाओं के कारण वहां का तापमान शून्य से बीस डिग्री नीचे तक चला जाता है। जिसे विंड चिल फेक्टर कहा जाता है। ओवरकोट, सूट, अंदर में शर्ट और ऊनी गंजी, मफलर लगाकर अपार्टमेंट से विश्वविद्यालय के तीन फलांग रास्ते में कई बार ठिठुरती ठंड से कांपा हूँ, आँखों से पानी गिरा है। उत्तर सीमांत बोस्टन के निवासी दक्षिण इटली भूमध्य सागरीय जलवायु तथा

सूरज को सर्दी की ऋतु में खूब याद करते हैं। स्थानीय लोगों की अंग्रेजी भाषा में नेपोलियन, सिसिलियान, वेनिसयान के स्वर ज्यादा ही विचित्र सुनाई देते हैं।

हाँ, एक वह भी समय था जब वे अंगूर खरीदकर वाइन बनाते थे, अपने लिए ब्रेड-केक तैयार करते थे।कभी-कभी दूसरों के साथ भयंकर लड़ाई भी हो जाती थी। इटालियन और आयरिशों में फिर आवेगपूर्ण, मेल-जोल वाले, साथी-प्रिय, क्रोधी व्यक्तियों पर नजर रखी जाती थी। एक वर्ष वहां रहते समय ऐसी खबरें 'बोस्टन ग्लोब' में कई बार पढ़ने को मिलती थी।

वे बुजुर्ग लोग बैठे-बैठे अपने अतीत को बहुत ज्यादा याद करते थे। अतीत कितना सुंदर था! वास्तव में, सारे सुख-दुख हमारे सामाजिक जीवन में होने के बाद भी हम आराम से दुख को भूल जाते थे तथा आमोद-प्रमोद से जीवन बिताते थे। अब अपने देश अर्थात् इटली जाने पर भी वहां के स्थानीय निवासी हमें अपना आदमी समझना तो दूर की बात, सोचने लगते हैं इटली घूमने आए हम अमेरिकन टूरिस्ट हैं। उत्तर-सीमात में रेस्टोरेंटों की संख्या में काफी बढ़ोतरी हुई है। रसोईघर में उनके खाना बनाने वाले इटालियन नहीं हैं, उत्तर अफ्रीका या मध्य-अमेरिका के लोग हैं। मेरा इटालियन दोस्त सिगार प्रिय था। कई बार 'बैला फुमा सिगार शॉप' पर रुकता था। उसके शब्दों में, इस सिगार की गंध दूसरे तरह की है।मैंने कहा, "ठीक, इटली के स्वप्नपरी की तरह है न ?"

5. हमारा सेंटर (सिफा): चार्ल्स नदी, कॉनकॉर्ड ऐवन्यू

हमारे सेंटर में भाषण के कार्यक्रम बहुत कम थे। हर सप्ताह बड़ी मुश्किल से एक भाषण का आयोजन होता था। सप्ताह में कभी-कभी दो भाषण। वक्तागण में हमारे भीतर थे सेंटर के डायरेक्टर सैमुअल हंटिटन, दूसरे शीर्षस्थ अध्यापक, विश्वविद्यालय के बाहर से आमंत्रित व्यक्ति तथा विश्व राजनीति और अर्थशास्त्र के क्षेत्र में नाम कमाने वाले व्यक्तिगण। उदाहरणस्वरूप यूरोपियन कमिशन के मुखिया, हमारे देश के प्रधानमंत्री राजीव गांधी, स्पेन के प्रधानमंत्री , अमेरिकन डेवलेपमेंट कमीशन के चेयरमैन, यूनेस्को के डायरेक्टर जनरल। इन सभी को भाषण देने के लिए आमंत्रित किया गया था। हर भाषण का आयोजन मध्यान्ह भोजन अथवा रात्रि-भोजन के साथ किया जाता था। इसके पीछे यह उद्देश्य होता था कि भाषण सुनने के बाद अनौपचारिक वातावरण में फेलो (अर्थात् हमसब) वक्ताओं के साथ बातचीत कर सकते हैं। अन्य विश्वविद्यालय से जो वक्तागण आये थे, उनमें जहां तक मुझे याद आ रही है, कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के प्रोफेसर लिच, शिकागो विश्वविद्यालय के बर्नाड कोन, येल विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग के प्रमुख और ऐसे बहुत सारे। सारे भाषण साधारणतया सेंटर के कुलिज हॉल अथवा कावट हॉल में आयोजित किये जाते थे।हार्वर्ड के दो विशिष्ट अर्थशास्त्रियों में जॉन केनेथ, गिलब्रथ तथा स्टीव मार्गलिन ने भाषण दिये थे। दोनों का परिचय देने का दायित्व मुझे सौंपा गया था। गिलब्रथ के भाषण का शीर्षक था- *थर्ड वर्ल्ड इकोनोमिक डेवलपमेंट* तथा स्टीव के भाषणका शीर्षक था- *द गोल्डन एज ऑफ कैपिटलिज्म 1946-70*। अपने भाषण में गिलब्रथ ने धनी पाश्चात्य देशों की असहयोग मनोवृति, वर्ल्ड बैंक एवं आईएमएफ़ के अतिशय व्यवसायी मनोभाव तथा सबसे ज्यादा तीसरे विश्व के देशों में कार्यदक्षताओं का अभाव- इन तीनों विषयों पर उन्होंने विशद भाव से व्याख्यान दिया था। स्टीव के मतानुसार 19वीं शताब्दी में सन् 1945 से पूंजीवाद ने एक नया रूप ग्रहण किया था और वह रूप सन् 1970 में खत्म हो गया। संक्षिप्त में पूंजीवाद के विवर्तन, अर्थशास्त्र के क्षेत्र में उसका प्रवाहमान तथा आधुनिक आवश्यक अनेक दृष्टिकोण पर उन्होंने अपने विचार व्यक्त किये थे। बदलते परिप्रेक्ष में पूंजीवाद अर्थशास्त्र के भविष्य के बारे में भी उन्होंने कुछ कहा था तथा उस अर्थशास्त्र के अवश्यंभावी बदलाव पर अपने सुझाव दिये थे। दोनों व्याख्यानों में बहुत सारे फेलो ने भाग लिया था तथा उन पर गंभीर चर्चा भी हुई थी। उपरोक्त व्याख्यानों को छोड़कर सेंटर में जितने दूसरे व्याख्यान दिये गये, उनमें से जो मुझे पसंद आये या जिसने मुझे आकर्षित किया, उनकी संक्षिप्त तालिका निम्न है :-

1) प्रोफेसर फ्रेंकलिन का व्याख्यान

Dominance and state power in Modern India

2) सर क्रिसपिन टिकेल (इंग्लैंड के UN में स्थायी प्रतिनिधि)

The value of Security Council in Today's World Affairs

3)यूरोपीयन कम्यूनिटी के सर रय डेनमान

European Community and U.S. Trade Issue

4. प्रोफेसर वाशब्रुक

Class Conflict, Popular Culture and Resistance in Colonial India

5) लारेंस फ्रिडमेन

Do we need Arms Control?

6) सैमुअल हांटिटन

American Strategy and How it is not made ?.

7) स्पेन प्रधानमंत्री फेलिप गंजालोस -

International Economic Co-operation and the European Community.

विश्वविद्यालय के बाकी सभी एकेडेमिक लेक्चरों में साहित्य संबंधित लेक्चरों की तरफ आपको ले जाना चाहता हूं। फ्लेचर स्कूल ऑफ डिप्लोमेसी में हम सभी निमंत्रित थे । विशेष तीन व्याख्यानो में लगभग हम सभी फेलो गये थे। व्याख्यान का परिवेश हर समय अनौपचारिक रहता है। अनेक बार ऐसा हुआ कि वक्तागण हमारे भीतर संपर्कित विषयों से अभिज्ञ फेलो साथियों को संबंधित विषय पर कहने के लिए अनुरोध करते थे। वक्तव्य को छोड़कर प्रत्येक फेलो को एक साल में दो विषयों पर भाषण देने पड़ते हैं। मैंने स्वयं ने जिन दो विषयों पर भाषण दिया था। वे हैं -

1) अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम, यूनेस्को तथा विश्वशांति

2) अंतरराष्ट्रीय अर्थनीति में सहयोग-द्विपक्षीय एवं बहुपक्षीय सहयोग की रूपरेखा।

व्याख्यान तथा समीक्षा के एक सत्र पूर्व वक्तव्य की प्रतिलिपि प्रस्तुत करके बाँट दी जाती थी। व्याख्यान संबंधित मेरे दोनों आलेखों में पचास के आस-पास पृष्ठ थे।दूसरे सभी फेलो के भाषण भी व्याख्या के अनुरूप शिक्षणीय थे तथा उनकी भी जमकर समीक्षा हुई। भारतवर्ष में शोधकार्य कर रहे तीन शोधार्थियों से अलग-अलग समय पर मेरा वार्तालाप हुआ। एक साल रहने के अंदर प्रत्येक फेलो अपनी जानकारी से संबंधित विषयों पर जिस प्रकार शोधार्थी अपना काम करते हैं, को उनकी सहायता करने के लिए कहा जाता था।इसे छोड़कर अन्य अमेरिकन विश्वविद्यालयों में फेलो को भी वक्तव्य देने के लिए आमंत्रित किया जाता था। सेंटर में हर शुक्रवार चार बजे चीज एवं वाइन की पार्टी आयोजित की जाती है। उसमें सेंटर के सारे अध्यापक, अन्य कर्मचारी और सारे फेलो भाग लेते हैं। इस अवसर पर फेलो के प्रोग्राम विश्वविद्यालय की दूसरी कई बातें, अध्यापकों के शोध विषयों पर अनौपचारिक भाव से समीक्षा की जाती है।

सेंटर की लाइब्रेरी बहुत ही बड़ी है।उसमें अंतरराष्ट्रीय राजनीति, अर्थनीति, संस्कृति, आमदनी, व्यवसाय से संबंधित विषयों पर खूब सारी पुस्तकें एवं पत्र- पत्रिकायें पढ़ने की सुविधा मिलती है।संक्षिप्त में कहने से सेंटर में पढने-लिखने, अलोचना करने तथा अध्यापकों से मिलने के सारे कार्य अत्यंत आनन्ददायक होते थे।एक जगह मैंने कहा है कि सेंटर में मेरा जो कमरा है,उसके ठीक बगल वाले कमरे में बैठते थे मेक्सिको के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार कार्लो फूएन्टेस। सेंटर में लंच के समय हम दोनों अधिकांश बार एक साथ खाते थे। कमरे में एक साथ कॉफी बना कर पीते थे। उसके बाद साहित्य, भारत और मेक्सिको का इतिहास, कला, अर्थनीति सभी विषयों पर विचार-विमर्श करते थे। मध्याह्न भोजन के समय कैंटीन में लगभग सभी लोग देखने को मिलते हैं। जो

विश्वविद्यालय से थोड़ी दूरी पर रहते थे और जिनके पास गाड़ी थी, वे सभी अपने घर जाकर मध्यान्ह भोजन करके लौट आते थे।

एक बार कैनेडी स्कूल के Mason Fellows, फ्लेचर स्कूल के फेलो और हम लोग- इस प्रकार से तीन गोष्ठियों ने इकट्ठी होकर दो दिन के सेमिनार का आयोजन किया था। जिसमें हांटिटन, फ्लेचर स्कूल ऑफ लॉ तथा डिप्लोमेसी के प्रोफेसर थॉम्पसन तथा अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया था। तीसरी दुनिया के विकास की समस्या, सामाजिक वैषम्य तथा न्याय, गणतन्त्र एवं विकास, सांस्कृतिक परम्परा और विकास, अंतरराष्ट्रीय अर्थनीति के प्रभाव आदि विषयों पर इस सेमिनार में अच्छी तरह चर्चा हुई। सेंटर के तीन प्रोफेसर श्री कूपर, श्री हागार्ड तथा ओरनन आदि के सयुंक्त व्याख्यान If not Gatt, What ? भी शामिल है। इसके अतिरिक्त एशिया पेसेफिक अर्थनीति संबंधित दो दिन के सेमिनार, एक दिवसीय यूनेस्को तथा विश्व-संस्कृति संबंधित सेमिनार (उसके लिए यूनेस्को डायरेक्टर जनरल आये थे) एवं संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी पुनर्वास संबंधित दो दिन का सेमिनार बहुत ही ज्यादा गुणात्मक एवं शिक्षणीय हुआ था। सेंटर में लंच करने का प्रायः अभ्यास हो गया था। विभिन्न खाद्य-पेयों में से अपनी आवश्यकता अनुसार ट्रे में लेकर बिल देना पड़ता था और भीतर के डायनिंग हॉल में बैठकर खाने की सारी सुविधा मिलती थी। अनेक दोस्तों के साथ एक साथ लंच करने तथा गपशप करने में बहुत ही आनंद आता था । उस समय मेरे पास मेक्सिको के उपन्यासकार कार्लो फूएंटेंटस , आयरिश कवि सियामस हिनी, तीन महीनों के लिए शिकागो से हार्वर्ड आये हुए मेरे दोस्त ए.के रामानुज बैठते थे।

मैं रहता था विश्वविद्यालय के सबसे नजदीक कॉनकॉर्ड एवेन्यू की छः मंजिला अपार्टमेंट की सबसे ऊँची कोठरी में। इस बड़ी कोठरी की पार्टिशन कर दो भाग कर दिये गये थे। एक भाग में ड्राइंग रूम तथा दूसरे में बेडरुम। स्नानघर रसोईघर दोनों बहुत छोटे थे। रसोई घर में गैस तथा बिजली हीटर से लेकर सारी चीजें यहाँ तक कि प्लेट, चाकू, चम्मच इत्यादि उपलब्ध थी। यह बात अलग है कि मैंने अपनी आवश्यकता के अनुसार कुछ अतिरिक्त सामान खरीदा था।

टेलिविजन नहीं होने के कारण मैंने एक टेलिविजन खरीदा था क्योंकि बर्फ गिरते समय तथा अन्य किसी खाली समय टेलिविजन की खबरें तथा प्रोग्राम देखने की बहुत इच्छा होती थी। उस समय बाहर जाना संभव नहीं था।

अपार्टमेंट ब्लॉक में धीरे-धीरे बहुत सारे दोस्त भी दिखने लगे। ग्राउंड फ्लोर पर एक लाउंज तथा टीवी था। अधिकतर समय हम लोग वहीं पर इकट्ठे होते थे। मेरे बैठक रूम से हमारे सेंटर तक पैदल जाने में लगभग दस मिनट लगते थे। ओवर कोट सिर पर टोपी, कंधे पर मफ़लर, हाथ में ग्लोव्स पहनने के बावजूद शीत के प्रभाव को ज्यादा अनुभव किया जा सकता है। खासकर दिन में ठंडी हवा बहती है, आखों से आँसू निकलना शुरु हो जाते हैं। मेरे अपार्टमेंट के रास्ते की तरफ एक बालकॉनी है, जहाँ पर कुर्सी लगाकर मैं कई बार किताब पढ़ता था। बर्फ गिरते समय हवा के साथ ओले उड़कर बालकॉनी से एक-दो फूट दूरी पर जमा होने लगते थे। ठंड में मैं लगभग चार बजे सेंटर छोड़ देता था क्योंकि उस समय अंधेरा होने लगता था। कमरे में लौटते ही पहले चाय, कॉफी या गर्म सूप जब तक नहीं पी लेता था तब तक कुछ भी अच्छा नहीं लगता था।

रहने के दौरान मैंने हर फेलो दोस्त तथा अध्यापकों को एक बार खाने पर घर में बुलाया था। जो फेलो वहां के रहने वाले थे, उनके घर में रात्रि-भोजन के समय उनके देश का खाना खाने का अवसर मिला था।अकेले होने के कारण मैंने रात्रि-भोज फेकल्टी क्लब में दिया था, इसलिए वहां भारतीय खाद्य खिलाना संभव नहीं हुआ। बीच-बीच में अपने परिवार के साथ रहने वाले फेलो के घर भी मुझे आमंत्रित किया गया था, जिसमें मुख्य थे दक्षिण कोरिया, इटली, जर्मनी और यूरोपियन यूनियन के चार दोस्त। इनके घर मुझे बहुत बार आमंत्रित किया गया था। मुझे आज भी याद है, सबसे स्वादिष्ट भोजन मिला था मेरे स्वीडिश दोस्त के घर में। सही पूछा जाए तो मुझे स्वीडन के खाने के बारे में इतनी जानकारी नहीं थी। मुझे खाने के टेबल पर रखी सारी चीजों का नाम पूछह ना पड़ा था। स्वीडिश दोस्त की लंबाई थी 6 फीट 2 इंच, हम सारे फेलो में वह सबसे ऊंचा था। उसका नाम था मिटकाशल। मजाक-मजाक में हम उसे कैंडल-स्टीक कहकर पुकारते थे। सबसे कम ऊंचाई वाला दोस्त था जापान का सोटारो याचिंकर।

कॉनकॉर्ड ऐवन्यू तथा हमारे सेंटर से चार्ल्स नदी पास में थी। नदी के दोनों किनारे रास्ते और रास्तों से नदी के पानी तक घास के लॉन लगे हुए थे। नदी के पुल पार कर थोड़ी दूर जाने पर पड़ता था बोस्टन विश्वविद्यालय का कैम्पस। हमारे विश्वविद्यालय के पास नदी के किनारे आधा किलोमीटर दूरी तय करने पर आता था मैसेच्यूट इंस्टीच्यूट ऑफ टेक्नॉलॉजी। तीनों विश्वविद्यालय के अध्यापकों में से उस समय 9 अध्यापक नोबल पुरस्कार विजेता थे। हार्वर्ड और एमआइटी दोनों विश्वविद्यालय दुनिया भर में सुपरिचित हैं । किसी एक विश्वविद्यालय में जब कभी किसी एक विशिष्ट विषय पर लेक्चर होता है, तब दूसरे विश्वविद्यालय के फेकल्टी सदस्यों को भी निमंत्रण-पत्र मिलता है।

चार्ल्स नदी के किनारे भ्रमण, वहां बेंच पर देर समय तक बैठना और पढ़ना, छोटी-छोटी नौकाओं में बैठकर नदी में विहार करना, ये सारी बातें हमेशा याद रहेगी। अप्रेल और मई महीने में लॉन के फूलों का प्राचुर्य मन को मोहित करता है।

विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं के व्यायाम के दौरान दौड़ते समय कानों में सोनी वॉकमेन लगाकर गाने सुनते हुए देखना आम दृश्य था। हार्वर्ड स्केवयर और वहां से दोनों तरफ जाने वाले रास्तों में किताबों की खूब सारी दुकानें पड़ती हैं। एक ही जगह पर इतनी सारी किताबों की दुकानें तथा किताबों का संग्रह मैंने अन्यत्र बहुत ही कम देखा है। इस तरह की दुकानें तथा किताबों का संग्रह कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय और कॉलेज के सामने यहां की तुलना में पांचवा हिस्सा भी नहीं होगा, ऐसी मेरी धारणा है।अनेक किताबों की दुकानों में पढ़ने के लिए अलग से कमरा भी बना हुआ होता है, लाइब्रेरी की तरह। मैंने अपने देश में किताबों की दुकानों में ऐसी व्यवस्था कहीं नहीं देखी है। एक किताब की दुकान पर प्राचीन जमाने की किताबों का विशेष अंश संग्रहित है। सत्तरहवीं और अठारहवीं सदी की पुरानी किताबों तथा कई पुराने संस्करण वहां देखने को मिलते हैं। किताबों की दुकानों के बीच हार्वर्ड विश्वविद्यालय के प्रेस का शोरूम एक बहुत बड़ी दुकान में लगा हुआ है। हार्वर्ड स्केवयर में पत्रिका की दुकान से लेकर दुनिया के किसी भी कोने में अंग्रेजी में प्रकाशित सारी पत्रिकाएं वहां उपलब्ध होती है। स्केवयर से थोडी दूरी पर तरह-तरह के रेस्टोरेंट बने हुए हैं, उनमें से मुझे चाइनीज और मेक्सिकोन रेस्टोरेंट बहुत अच्छे लगते थे। उसके आगे था एक बहुत बड़ा कॉफी हाऊस। यहां पर दुनिया के विभिन्न अंचलों की तरह-तरह कॉफियों में से कम से कम बीस तरह की कॉफियो का मैंने यहां रसास्वादन किया है। स्केवयर से थोड़ी दूरी पर एक सिनेमा घर बना हुआ है, जिसकी प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैली हुई थी, क्योंकि उसमें दुनिया

के सबसे बड़े निर्देशकों की फिल्में प्रदर्शित होती हैं । पढ़ाई समाप्त होने के बाद शास्त्रीय संगीत सुनना तथा अच्छी फिल्में देखना मेरा सबसे बड़ा शौक था। एक साल के वहां रहने के दौरान कम से कम चालीस अच्छी फिल्में देखने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

हमारे सेंटर की तरह केनेडी स्कूल ऑफ गवर्नमेंट भी बहुत विख्यात था। वहां दुनिया के अलग-अलग देशों के अपेक्षाकृत कनीय सरकारी अधिकारी, अर्थशास्त्री तथा राजनीतिज्ञ सभी पढ़ने आते हैं। हमारे सेंटर तथा केनेडी स्कूल परस्पर काफी संश्लिष्ट थे। बहुत सारे अध्यापक दोनों जगहों पर पढ़ाते हैं। मेरे सेंटर के बाहर अर्थशास्त्र-विभाग, पुरातत्व विभाग और फाईन आर्ट विभाग में मैं कई बार गया हूं। अर्थशास्त्र विभाग में मेरे मित्र स्टीव मार्गलीन के साथ रूम में बैठकर बहुत सारे विषयों पर चर्चा करते थे। उनके रूम से सटकर एमरिटस अध्यापक गिलब्रेथ का रूम था, वे विभाग में बहुत ही कम समय आते थे। सिर्फ उनसे मेरी दो बार मुलाकातें हुईं। पुरातत्व विभाग के प्रोफेसर डेविड मेचूटीलुइस के साथ मेरी ज्यादा दोस्ती थी। वे विभागाध्यक्ष थे और दक्षिण अमेरिका के ब्राजिल के विभिन्न अंचलों खासकर अमेजन नदी के अववाहिका अंचल में विकास-योजना की प्रभावशालीता तथा पारंपरिक सामाजिक सांस्कृतिक व्यवस्था के अवक्षय के संबंध में खास ज्ञान रखते थे। प्रोफेसर डेविड के साथ कई बार उनकी फेकल्टी में बैठकर बातचीत करने में बहुत अच्छा लगता था।

ऐसे फाइन आर्ट विभाग तथा उससे जुड़े कारपेंटर सेंटर में साहित्य, कला और संगीत इत्यादि विषयों पर मैंने कई बार वक्तव्य दिए हैं। अंग्रेजी विभाग में सिआमस हिनी के आने के बाद मेरा उनसे गहरा जुड़ाव हो गया। हमारे विभाग की ओर से लेमेंट लाइब्रेरी में महीने में एक बार कविता पाठ का आयोजन होता है। वहां एक बार मुझे भी कविता पाठ करने का सुअवसर मिला। हिनी की सांध्य-कविता पाठ में मैंने हिस्सा लिया था। तब उन्हें साहित्य का नोबल पुरस्कार नहीं मिला था। मगर उनकी कविताएं विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग में बहुत ज्यादा चर्चित हो गई थी। विश्वविद्यालय में सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ वर्ल्ड रिलीजन एक अन्यतम प्रसिद्ध अनुष्ठान है। इस संस्था के निर्देशक मोनी एडामस अफ्रीका की धार्मिक परंपरा पर विशेष ज्ञान रखते हैं।उनकी अफ्रीका के पारंपरिक धर्म तथा कला विषयों पर खूब सारी पुस्तकें लिखी हुई है। मेरे मित्र ए.के. रामानुजन वहाँ तीन महीने के लिए आमंत्रित हुए थे। कुछ दिनों के लिए भारत के दार्शनिक मतिलाल आए थे। प्रोफेसर विमल मतिलाल तब ऑल सॉल कॉलेज, ऑक्सफोर्ड में थे Spading Professor of Eastern Religions and Ethics थे, ओड़िशा के दर्शन शास्त्र के सुप्रसिद्ध अद्यापक श्री जितेन मोहंती की रचनाओं का उन्होंने संपादन किया था। यही नहीं, अमेरिका तथा इंग्लैंड के जाने-माने दर्शन-शास्त्र के अध्यापकों में उन्हें गिना जाता था। विश्वविद्यालय में रहने के दौरान मैं हार्वर्ड बिजनेस स्कूल तथा हार्वर्ड मेडिकल स्कूल देखने गया था, क्योंकि उनकी ख्याति न केवल भारत में वरन् सारे विश्व में फैली हुई थी। एम.आई.टी॰ का अर्थशास्त्र विभाग तथा बोस्टन विश्वविद्यालय का पुरातत्व विभाग भी बहुत ही नामी विभाग है। बोस्टन के पुरातत्व विभाग में मुझे एक बार लेक्चर देने के लिए आमंत्रित किया गया था।

सेंटर की प्रशासनिक संस्था बहुत ही दक्ष मगर छोटी थी। सारे फेलों के हार्वर्ड में पहुंचने से पहले उनके पूर्व सूचित निवास-स्थान में रहने के लिए गृह उपयोगी सहायता से लेकर स्वास्थ्य, सोशियल सिक्योरिटी आईडी नं., कोपरेटिव सोसायटी के सदस्य के रूप में जोडने, विभिन्न बाहर की यात्राओं की सुविधा करने, विभिन्न अनुदान (स्वास्थ्य, पुस्तक-क्रय, घर पहुंचने के बाद गृह प्रवेश अनुदान) और सिफा के बजट इत्यादि के लिए कई अधिकारी थे। इटालियन फाइनेंसिल उपदेष्टा माइकल टियोरानो बहुत ही कौतूहल-प्रेमी इंसान थे, सभी के साथ

हंसी-मजाक करके उन्हें खुश कर देते थे। श्रीमती जॉन सेक्रेटरी थी तथा उनके दो सहायक थे इवा और करोल। लेस ब्राउन फेलो प्रोग्राम के डायरेक्टर थे। इन पांच व्यक्तियों के हाथों में हमारे प्रोग्राम का सारा दायित्व था। चेयरमैन थे सैमुअल हंटिटन हमारे 'सैम'। सिफा में अनेक विशेष प्रोग्राम उल्लेखनीय थे। उनमें से कुछ का मैं यहां उल्लेख कर रहा हूं :-

राकेल कारसन तथा साइलेंट स्प्रिंग (1962) की रौप्य-जयंती :-

राकेल कारसन ने सन 1962 में अपनी नामी पुस्तक *'साइलेंट स्प्रिंग'* लिखी थी। बड़े आदर के साथ मैंने वह किताब पढ़ी थी, मुझे बहुत अच्छी लगी थी। पर्यावरण वैज्ञानिक, विकास, अर्थशास्त्री, विभिन्न देशों के योजना बनाने वाले अधिकारीगण तथा कॉलेज, विश्वविद्यालय स्तरीय छात्रों एवं अध्यापकों में वह किताब बहुत चर्चित तथा प्रशंसित हुई थी। अमेरिका में इस किताब को बहुत ही आदर की दृष्टि से देखा गया। अमेरिका के जनसामान्य को उन्होंने पर्यावरण प्रदूषण संबंधित खतरों से अवगत कराया था। समय रहते अगर सावधानी नहीं बरती गई तो वह समय दूर नहीं है जब बसंत ऋतु आने पर कोयल की कूक सुनाई नहीं देगी, गीत गाने वाली चिडियां नहीं होगी। उस "नीरव बसंत" में हम जिंदा रहेंगे।

इस किताब के प्रकाशित होने के ठीक दो साल बाद अर्थात् 1964 में राकेल कैंसर से मर गए। सन् 1987 में उनकी *'साइलेंट स्प्रिंग'* पुस्तक की रजत जयंती मनाई गई। हार्वर्ड में सेटर फॉर इंटरनेशनल अफेयर की तरफ से कई परिचर्चा-चक्रों का आयोजन किया गया। इसके 25 साल बाद राकेल की स्मृति में कोर्स में भाग लेने वाले हमारे देश में उसके प्रभाव और साधारण भाव से पर्यावरण परिस्थिति के संबंध में परिचर्चाएं होने लगीं । राकेल की शोध पुस्तक मुख्यत: रासायनिक प्रदूषण के बारे में थी। इस विषय पर परिचर्चा करने के लिए स्थानीय अध्यापकों तथा दूसरे गणमान्य लोगों को भी बुलाया गया था। आमंत्रित अतिथियों में थी पर्यावरणविद राकेल जी की मित्र और शोधार्थी श्रीमती शिरले ब्रिगस। उस समय उनकी उम्र 69 वर्ष थी। वह थी रॉकेल कारसन काउंसिल की एक्जूकिटिव डायरेक्टर। ब्रिगस और रॉकेल, दोनों ने चौथे दशक में *'यू.एस. फिश एंड वाइल्ड लाइफ सर्विस'* में एक साथ काम किया था। रॉकेल के शोधकार्य में उनका बहुत सहयोग था। उनकी मौत के उपरांत श्रीमती ब्रिगस ने एक काउंसिल का निर्माण करके अमेरिका के जनसाधारण को रासायनिक प्रदूषण खासकर विषैले रासायनिक द्रव्यों के प्रयोग के संबंध में जानकारी देने की कोशिश की थी। इस काउंसिल के बहुत बडे-बड़े ज्ञानी लोग सदस्य थे। कीड़े मारने की दवाइयां तथा रासायनिक वस्तुओं के उपयोग के संबंध में यह काउंसिल अमेरिका में सबसे ज्यादा काम करती है। लंच के समय ब्रिगस से मुलाकात करके मैंने उनसे काफी बातचीत की। रॉकेल के संबंध में अपने व्यक्तिगत अनुभूतियों के बारे में उन्होंने बहुत बताया था।

इस काउंसिल के अलावा श्रीमती ब्रिगस औडोबोर्न नेचुरलिस्ट सोसायटी से साथ प्रगाढ़ तरीके से जुड़ी हुई थी, इसलिए वे अमेरिका की अनेक नेचुरल सोसायटी को देख चुकी थीं और उनके बारे में उन्होंने बताया था । इस संदर्भ में इस सोसायटी के प्रकाशनों के संपादन का सारा दायित्व उनके कंधे पर था। पर्यावरण संरक्षण पर संकलन करने के अलावा बांधों के निर्माण, हाइवे द्वारा चिड़ियों पर पड़ने वाले प्रभाव के बारे में बर्ड काउंट स्टडी का कार्यक्रम प्रारंभ किया था। बातचीत के दौरान उन्होंने मुझसे कहा कि सन् 1962 में जब स्टर्लिंग चिड़ियाँ की गणना शुरु हुई थी, वाशिंगटन-पोस्ट के संवाददाता के प्रश्न का उत्तर देते हुए मैंने कहा था -

You do not know how many of those little rascals there are until you stand and count them on a cold night.

राजनीति शास्त्र के सुप्रसिद्ध प्रोफेसर ब्रिशत की बेटी शिरले आवा विश्वविद्यालय की छात्रा थी, स्थपति विद्या में एम.ए. पास किया था। उसके बाद वह Smithsonian के नेशनल म्यूजियम ऑफ नेशनल हिस्ट्री के साथ जुड़ गई। इस रौप्य जयंती (रॉकेल कारसेन के साइलेंट स्प्रिंग) सेमिनार और उसमें हिस्सा लेना मेरे हिसाब से बहुत ही शिक्षाप्रद और उपयोगी था। खासकर कई देशों के और अमेरिका के पर्यावरण प्रदूषण के संबंध में विशेष ज्ञान रखने वाली श्रीमती ब्रिगस के साथ साक्षातकार एवं व्यक्तिगत बातचीत करने का अवसर मिला था।

फेलों के ब्रेकफास्ट तथा लंच मीटिंग :-

हर महीने के दूसरे सप्ताह में हम लोग एक फेलों-ब्रेकफास्ट का आयोजन करते थे। वहां हम सभी अपने निजी जीवन, परिवार, व्यक्तिगत अभिरुचियों तथा प्रोफेशनल जीवन के विषय में संक्षेप में बताते थे। कोर्स समाप्त होने से पहले तीन दोस्तों को कहीं जाना था, इसलिए उन्हें पहले कहने का अवसर दिया गया। दक्षिण अफ्रीका में इंग्लैंड के राष्ट्रदूत सर पैट्रिक मोबर्ली ने पहले अपने विचार रखे। मुझे उनके विचार बहुत अच्छे लग रहे थे।

दक्षिण अफ्रीका में रहने के दौरन उनका नेलसन मंडेला के साथ साक्षात्कार के अनुभव जीवंत लग रहे थे। वह 'सर' उपाधि प्राप्त बहुत सीनियर थे। विदेशी सेवा में कार्यरत होने के बाद भी लिखने का कुछ काम करते थे। दूसरे मलेशिया के भूतपूर्व उप-प्रधानमंत्री डातु मूसा बिन हातम ने अपने देश, संस्कृति, राजनीति तथा अपने राजनैतिक अनुभवों के बारे में बहुत कुछ बताया। तीसरे जॉन कोलान जिनका विशेषज्ञ के रूप में योगदान देना निश्चित हो गया था। उन्होंने अमेरिका की राजनीति और धर्म के समानान्तरता तथा अमेरिका, यूरोप की तुलना में किस प्रकार ज्यादा धार्मिक है, इस विषय पर अपने व्याख्यान दिया था। एक गैल-अप पोल में 70 प्रतिशत अमेरिकन अपने को धर्मविश्वासी मानते थे, 60 प्रतिशत गिरजाघरों में मास (Mass) तथा रविवार को पूजा करते हैं, इस संबंध में उन्होंने ज्यादा तथ्य-परक भाषण दिया था। हमने अपने व्यक्तिगत जीवन तथा कर्मक्षेत्र के इतिहास के बारे में बताया। कितने सारे तथ्य, कितने विचार, कितने देशों के समाज, संस्कृति, इतिहास, राजनीति और अर्थनीति की स्थिति का आकलन आंखों के सामने आया था। अनौपचारिक तौर पर ब्रेकफास्ट के दौरान फेकेल्टी क्लब के एक अलग कमरे में ये सारी जानने का अवसर मिला था, वह आज भी शिक्षणीय, उपभोग्य तथा अविस्मरणीय होकर मन में समाई हुई है। हमारे द्वारा दिए गए पेपर (सी.आई.एफ.ए कोर्स की अन्यतम मुख्य दिशा) बहुत ही उपभोग्य तथा ज्ञानवर्धक थे, जिसमें सी.आई.एफ.ए के सीनीयर प्रोफेसरों तथा शोधकर्ताओं ने योगदान दिया था। उनके अलावा जो अपने पेपर प्रस्तुत करते हैं, वे जिन्हें चाहें उन्हें आमंत्रित कर सकते हैं। जैसे मैंने अपने पेपर के लिए स्टीव मार्गलिन को आमंत्रित किया था, दो पेपर सभी को देने थे। मगर समय के अभाव के कारण सभी को एक पेपर पढ़ने का ही अवसर दिया गया। यह सारा कार्यक्रम सी.आई.एफ.ए के सेमिनार हॉल में हुआ। पहले-पहल प्रत्येक श्रोता और वक्ता पास के सेल्फ सर्विस केफेटेरिआ से अपना लंच लेकर आते हैं। बैठने की व्यवस्था एक विशाल दीर्घवृत्तीय टेबल के कोने में वृताकार भाग में खाने के समय अनौपचारिक तरीके से बातचीत शुरु करने के लिए की गई थी। अपरिचित आगंतुक अपना परिचय देते हैं। पेपर पहले से ही दिया जाता है। लंच खत्म होने के बाद वक्ता आंधे घंटे के भीतर अपना वक्तव्य प्रस्तुत करता है, उस पर एक घंटे तक चर्चा होती है।

पेपर निम्न विषयों पर आधारित थे :-

मध्यप्राच्य, चीन-जापान संबंध, अमेरिका-जापान संबंध, अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक संबंध तथा यूनेस्को, अमेरिका में उच्च शिक्षा की स्थिति और (समस्याएं, अंतरराष्ट्रीय युद्ध समस्या, शरणार्थी समस्या की सामग्रिक समस्या और विश्व-शांति का भविष्य, मानवाधिकार को नई दिशा, अंतरराष्ट्रीय विकास सहयोग में गैर-सरकारी संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका इत्यादि।अंत में, सुप्रसिद्ध अध्यापक आर्केस्ट वोगेल ने सुदूर प्राच्य (फार ईस्ट) के बारे में अपने विचार रखे। उन्होंने इस विषयों के पारंगत फेलों के चीन-जापान-कोरिया जाने से पूर्व सी.आई.एफ.ए. में यह आयोजन किया था।

फेलों के लंच तथा आलेख-पाठ तथा ब्रेकफास्ट के दौरान अनौपचारिक चर्चाएं बहुत ही शिक्षाप्रद होती थीं ।

6. हार्वर्ड में पहला कदम:अकेलेपन के वे दिन

जब मैं अपने भीतर झाँकता हूँ तो लगता है कि मैं गृहासक्त हूँ। जब मैं घर-परिवार और दोस्तों की परिधि के बाहर निकलता हूँ तो मेरी अवस्था पानी से बाहर निकलने पर तड़पती मछह ली की तरह होती है।अवश्य, ऐसी भावना लगभग सार्वभौमिक है, मगर मेरे भीतर कुछ ज्यादा ही है। धीरे-धीरे उस शून्य को भरने के लिए नए-नए तरीके मिल जाते हैं, नहीं तो कभी-कभी उन तरीकों का आविष्कार भी करना पड़ता है। मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ।

विजय बाबू और मैंने बोस्टन हवाई अड्डे पर मेरी पत्नी (वासंती) और बेटे (सत्यकाम) को छोड़ दिया। वे पहले मॉन्ट्रियल गए। वहाँ हमारे संबंधी अशोका (मेरी पत्नी के मौसा नवकिशोर मोहंती की बेटी) और उनके पति दिलीप हरिचंदन रहते थे। अशोका मॉन्ट्रियल के मैकगिल विश्वविद्यालय में काम करती थी और दिलीप वहाँ वरिष्ठ अधिकारी थे। उनके साथ मेरी पत्नी और बेटे ने टोरंटो और बफेलो के रास्ते कनाड़ा की तरफ से नियाग्रा देखा था। उनके मॉन्ट्रियल प्रवास के अंतिम चरण में सीफा के तत्त्वावधान में कनाड़ा सरकार के निमंत्रण पर दो सप्ताह कनाड़ा घूमने का अवसर प्राप्त हुआ था, जिसका पहला ठहराव था मॉन्ट्रियल। मॉन्ट्रियल के महापौर ने होटल 'फोर सीजन्स' में हमारा स्वागत किया। अगले दिन स्थानीय अधिकारियों के साथ विचार-विमर्श, उसके बाद हम सेंटलॉरेंस नदी के तट पर स्थित कनाड़ा के सबसे पुराने और उत्तरी अमेरिका के सबसे सुंदर शहर क्यूबेक गए। अशोका और दिलीप से फिर मेरी मुलाक़ात हुई। बेटे सत्यकॉम की नियाग्रा अनुभूति का वर्णन अधूरा रह गया था। मैंने उसे सलाह दी, *"घर जाकर नियाग्रा समेत जो कुछ अपनी आंखों से देखा है, उसे अपनी कॉपी में लिखना। घर लौटकर मैं उसे देखूंगा।"*

वे मॉन्ट्रियल से ओहियो के काउंटी (हमारे करीबी गनी बाबू यहाँ रहते थे) से होते हुए कैलिफोर्निया के सैनहोज़ गए, जहां स्वर्गीय गोपीनाथ मोहंती और उनकी पत्नी (सगे मामा-मामी) की बेटी डॉ॰ अंजलिका (अंजली) और दामाद वरिष्ठ आईबीएम अधिकारी सूर्य रहते थे। मुझे नहीं पता था कि मैं सैनहोज़ में फिर से जाऊँगा और उनके साथ कुछ दिन बिताऊंगा। कैलिफोर्निया की कॉलेजों के डीन और समाजशास्त्र के प्रोफेसर सुसान सीमोर ग्राहम ने मुझे वहाँ व्याख्यान देने और कविता पाठ करने के लिए आमंत्रित किया था। सैनहोज़ स्टेट यूनिवर्सिटी के नृतत्त्वविद जेम्स फ्रीमन ('अनटचेबल' के प्रसिद्ध लेखक) ने भी मुझे वहाँ व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया था। मैं व्याख्यान की चर्चा बाद में करूंगा। लेकिन मैंने यहाँ की फाइजर कॉलेज में आठ दिन बिताए थे। उन आठ दिनों में सूर्य और मामा के साथ हम विभिन्न स्थानों पर गए। हम सैनफ्रांसिस्को में दो बार गए, एक बार स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी, उसका परिसर और वहां की विशाल किताबों की दुकानें देखने के लिए। हार्वर्ड, येल के अतिरिक्त स्टैनफोर्ड अमेरिका का प्रमुख विश्वविद्यालय है। इसका परिसर सुंदर है। विश्वविद्यालय के प्रवेश द्वार पर सड़क के दोनों किनारों पर घने खजूर के पेड़ मन मोह रहे थे। इसके बाद खुले गगन के तले कांस्य स्थापत्य की प्रतिमाएँ नजर आईं । वे प्रतिमाएँ अमेरिका के व्यक्तियों और मानवीय गुणों की स्वतंत्रता का प्रतिनिधित्व कर रही थीं। मैंने अमेरिकन इंडियन की कई पुस्तकें और बांसुरी-वादन की चार कैसेट खरीदी। हम कैलिफोर्निया के बर्कले विश्वविद्यालय के परिसर में भी गए। स्टैनफोर्ड की

तुलना में बर्कले का परिसर कुछ संकीर्ण था,मगर पर्यावरण ज्यादा हरा-भरा था। हरे-भरे लॉन और फूलों की क्यारियाँ भरी हुई थीं । दूसरी बार हमने सैन फ्रांसिस्को का गोल्डन गेट ब्रिज और मछुआरा-घाट देखा।वहाँ तली मछह ली खाकर हम समुद्र तट पर घूमने लगे। फिर हम सैन फ्रांसिस्को की प्रसिद्ध सड़क से नीचे गए। ऊपर से नीचे ले जाने वाली सड़क में कई मोड़ थे और प्रत्येक मोड पर सुंदर-सुंदर फूलों की क्यारियाँ सजी हुई थीं।

सैनफ्रांसिस्को के बाद हम 'मोंटेरी बे' गए। बहुत ही सुंदर जगह थी। मैं मोंटेरी बे और रेडवुड पेड़ों के बारे में बाद में लिखूंगा। उस दिन मेरी पत्नी और बेटा,मामा-मामी के साथ सिंगापुर-कोलकाता के रास्ते घर लौट गए। उसके बाद मेरा एकाकीपन शुरू हुआ।

फाइजर कॉलेज से विमान द्वारा सैनहोज पहुंचने में आधा घंटा लगता है। कॉलेज लॉस एंजेल्स शहर के बाहरी इलाके में था। तीनों परिसर एक-दूसरे के आस-पास थे। वहां के व्याख्यान और कविता-पाठ के बारे में बाद में लिखूंगा। यहाँ मैं अपने व्यक्तिगत दुर्भाग्य के बारे में थोड़ा-बहुत कहूँगा। उस समय शरद ऋतु समाप्त हो चुकी थी। कैलिफ़ोर्निया में सर्दी बहुत कष्टप्रद नहीं थी। वहाँ बहुत ठंड नहीं पड़ती थी। इसलिए एक स्वेटर से काम चल जाता था। सभी कार्यक्रमों के पूरा होने के बाद मैं विमान से बोस्टन लौट आया। बोस्टन हवाई अड्डे पर विमान उतरने से ठीक पहले घोषणा की गई थी: *'रन-वे पर काफी बर्फ है। यहाँ कल से बर्फ़ गिर रही है। रन-वे साफ किया जा रहा है। इसलिए दस मिनट लगेंगे।'* हमारा विमान तब तक आकाश में चक्कर काटता रहा। अंत में, नीचे उतरा। टैक्सी के लिए मैं भी बाकी यात्रियों के साथ कतार में खड़ा रहा। जब तक मैं जिंदा रहूँगा, तब तक मैं उसे भूल नहीं पाऊँगा। जब तक टैक्सी नहीं आई, तब तक मैं खुले में खड़ा रहा। मेरी आंखों और नाक से पानी बहने लगा। मेरे कान मानो फट जा रहे थे। मैंने अपनी उंगलियों से अपने कान बंद कर दिए थे। टैक्सी लेकर मैं अपार्टमेंट पहुंचा। उस रात मुझे 104 डिग्री सेल्सियस का बुखार आया। ठंड से कंप-कंपी छूटी, बिस्तर से उठकर बाथरूम जाते समय मेरा सिर भयंकर रूप से घूमने लगा। मेरा फोन पाते ही विजय वहाँ पहुंचे। वह अपने परिवार के साथ चैन्सी स्ट्रीट पर रहते थे, मेरे अपार्टमेंट से सात मिनट की पैदल दूरी पर। वह कहने लगे, "आप अकेले हैं । यूनिवर्सिटी के अस्पताल में भर्ती हो जाना ठीक रहेगा।" मैंने वैसा ही किया। अस्पताल में पहले मेरे रक्तचाप की जांच की गई। वह सामान्य था।

प्रारंभिक चिकित्सकीय राय यह बनी, भयानक ठंड के कारण मुझे चक्कर आ रहे हैं। डरने की जरूरत नहीं है। मुझे अस्पताल में तीन दिन रहना पड़ेगा, पूरी जांच के लिए। मैंने वैसा ही किया। मुझे बुरा लगा कि मेरी पत्नी के जाने के बाद मैं बीमार हो गया। अगले दिन मैंने अस्पताल से भुवनेश्वर अपने घर फोन कर बता दिया कि मैं ठीक हूँ। मैंने फोन इस उद्देश्य से किया था कि कल अगर वे मेरे अपार्टमेंट में फोन करते हैं और उन्हें कोई जवाब नहीं मिलता है तो वे चिंतित होंगे।

मेडिकल जांच खत्म हो गई। रक्त परीक्षण, ईसीजी और यहां तक कि ब्रेन स्कैन भी।आखिरकार निष्कर्ष यह निकला कि अत्यधिक ठंड के कारण दोनों कानों की नसें बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गई हैं। हियरिंग एड लगाना पड़ेगा, जो आज तक बाएँ कान में लगा हुआ है। लेकिन नसें खराब हो जाने से भविष्य में स्पष्ट नहीं सुन पाऊँगा। हियरिंग एड केवल ध्वनि को बढ़ाता है,सुनने के लिए। कान के गहवर का माप लिया गया और मुझे हियरिंग एड पहनाया गया। ईएनटी विशेषज्ञ नीग्रो की मधुर बातें आज भी याद हैं। मैं अपार्टमेंट वापस आ गया। ये सारी बातें अब मेरा इतिहास बन गई हैं।

एकाकी रहने के दिन शुरू हुए।मेरी पत्नी ने फ्रिज में सब्जी, मछ्ह ली और मांस भर दिया था। मुझे समय निकालकर खाना बनाना सीखना पड़ेगा। विजय की पत्नी सुवर्ण ने मुझे कुछ खाना पकाना सिखा दिया था। उसका बेटा गिटार बजाता था। दिन बीतते चले गए। मैंने अपनी पसंद के सभी तरह के सूप खरीदकर रख लिए थे। सूप के मामले में विशेषज्ञ बन गया था मैं। सूप बनाना आसान था। इसके अलावा, मैं सूप का बहुत शौकीन था। मेरा दूसरा मुख्य भोजन चिकन पैरों का पैकेट था, उसका नाम था 'ड्रम स्टिक' (सजना की छिमी की तरह दिखता था)। दही, उपयुक्त मसालों के साथ मिश्रित कर मैं फ्रिज में रख देता था, फिर जरूरत पड़ने पर उसका तंदूरी चिकन तैयार करता था। लंच करता था सिफ़ा के स्वयं सेवा वाले कैंटीन में, नहीं तो हार्वर्ड स्क्वायर के चीनी या मैक्सिकन रेस्तरां (उस क्रम में) में। पच्चीस किस्मों वाले कॉफ़ी हाउस में कॉफी पीता था। अपने प्रवास के दौरान मैंने बीस किस्मों की कॉफी का स्वाद लिया था। सबसे अच्छी लगी कोलंबिया की कॉफी। दक्षिण भारत की मिश्रित कॉफी को भी कई लोग पसंद करते थे। तुर्की कॉफी बहुत कड़वी होती थी, उसमें न तो दूध डाला जाता था और न ही शक्कर, मुझे वह कॉफी बिलकुल पसंद नहीं आती थी। फिर भी एक बार मैंने इसे चखा था। जब ज्यादा सर्दी होती थी, सड़कों पर हिमपात होने लगता था,तब मैं जल्दी से अपार्टमेंट में जाकर खाना पकाने लगता था। खाने के बाद संगीत सुनता था या फिर टीवी देखने बैठ जाता था या फोन पर दोस्तों से बात करने लगता था।खालीपन धीरे-धीरे भरने लगा था।

बीच-बीच में सुवर्ण मुझे भारतीय या पाकिस्तानी दुकान में ले जाती थी। वहाँ सारी चीजें थीं। कंदमूल से लेकर केले तक। मुझे उनमें कोई दिलचस्पी नहीं थी। मेरा उन चीजों से क्या लेना-देना? उनके घर भूनी मछ्ह ली और तरकारी खाता था। मशरूम बनाता था रसोईघर में। चिकन करी के रेडीमेड मसालें खरीदकर एक दिन उसने मुझे चिकन करी बनाना सिखाया। मेरा पहला प्रयास भयंकर तरीके से विफल रहा। बाद में मुझे पता चला कि जिस बर्तन का मैंने इस्तेमाल किया था, वह इलेक्ट्रिक स्टोव के लिए नहीं था। चिकन करी की खुशबू का आनंद लेते समय तेज आवाज के साथ बर्तन के टुकड़े-टुकड़े हो गए, चिकन स्टोव पर गिर गया, मेरे लिए बच गया रसोईघर की सफाई का काम।

फिर भी, मैंने धीरे-धीरे बहुत कुछ सीखा। पास की दुकान से दो बड़े बैग में सभी आवश्यक सामान लेकर आता था और उन्हें फ्रिज में रख देता था। आलसवश मैंने स्नो-बूट नहीं खरीदे थे। एक दिन जब मैं शॉपिंग कर अपार्टमेंट लौट रहा था, बर्फ पर फिसल गया था।जैसे-तैसे सामान लेकर मैं अपार्टमेंट पहुंचा। इस तरह से मेरे दिन कट रहे थे। बीच-बीच में कई दिन खाना पकाने से राहत मिल जाती थी। कोर्स के विविध टूर, अन्य विश्वविद्यालयों का भ्रमण, दोस्तों के घर खाने का आमंत्रण मिल जाता था।

देखते-देखते हार्वर्ड में दिन पार हो रहे थे। सब-कुछ धीरे-धीरे अपनी जगह ले रहा था। विश्वविद्यालय के हर व्यक्ति को सामाजिक सुरक्षा कार्ड प्राप्त करना पड़ता था। अमेरिका में हर नागरिक के लिए सामाजिक सुरक्षा आवश्यक है। मुझे अपने प्रवास के पहले महीने में कैम्ब्रिज शहर जाकर निर्धारित सोशल सिक्योरिटी ऑफिस से यह कार्ड लेना पड़ा था। अमेरिका के नागरिकों के लिए सामाजिक सुरक्षा पद्धति और उसके लिए वार्षिक देय, सीमित दिनों के लिए बाहर से आए हुए लोगों की सुरक्षा पद्धति और उसके लिए वार्षिक देय बिलकुल अलग है। मगर अमेरिका में रहने वाले हर आदमी को अपने साथ यह कार्ड रखना पड़ता है।

हार्वर्ड यूनिवर्सिटी की अपनी स्वास्थ्य सेवा है। बहुत बड़े अस्पताल में विधिबद्ध वार्ड, ऑपरेशन थिएटर, पोषण तथा विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ हैं। स्वास्थ्य सेवा के लिए पंजीकरण कराना आवश्यक है। अपेक्षित शुल्क जमा करने के बाद एक स्वास्थ्य कार्ड मिलता है। बेशक, फ़ेलोशिप की व्यवस्था करने वाला संगठन ही ऐसी फीस का भुगतान करता है। फोर्ड फाउंडेशन ने मेरे फैलोशिप की सिफ़ारिश की थी। विश्वविद्यालय के सभी प्रोफेसरों, छात्रों और दोस्तों को एक निर्दिष्ट डॉक्टर के साथ जोड़ा जाता है। हर किसी को स्वस्थ हाल में पहली बार अपने डॉक्टर से मिलना आवश्यक था। संबंधित चिकित्सक व्यक्ति का इलाज करता है और यदि आवश्यकता पड़ती है तो अन्य विशेषज्ञों की सलाह भी लेता है। विश्वविद्यालय स्वास्थ्य सेवा के लिए आवश्यक दवाइयाँ खुद को खरीदनी पड़ती है। वहाँ के अधिकांश चिकित्सक हार्वर्ड मेडिकल स्कूल से प्रशिक्षित हैं। मुझे देखने का प्रभार डॉ॰कस्तूरी नागराज को सौंपा गया था। वे 1978 से यूनिवर्सिटी की स्वास्थ्य सेवाओं से जुड़ी हुई थीं । दिल्ली से एमडी करने के बाद वे लेडी हार्डिंगे मेडिकल कॉलेज में सहायक प्रोफेसर के पद पर थीं । बाद में, उन्होंने 1978 में हार्वर्ड स्वास्थ्य सेवा में शामिल होने से पहले हार्वर्ड मेडिकल स्कूल से प्रशिक्षण प्राप्त किया था।

रोगियों के प्रति उनका व्यवहार और दृष्टिकोण बेहद अच्छा था। जब उन्हें पता चला कि मैं भारत के ओड़िशा राज्य से हूं तो वे अक्सर अपने डाक्टरी अनुभवों तथा अपने परिवार के बारे में मुझे बताती थीं । उनके पति का नाम श्री शिव नागराज था और उनके तीन बच्चे थे। दो लड़कियां थीं, अर्चना और ज्योति। सबसे छोटा लड़का था, जिसका नाम आधि था। सबसे बड़ी अर्चना, जिसकी उम्र, सोलह साल थी।

अलग-अलग समय पर मैंने उनसे मुलाकात कर चिकित्सा-सलाह और उपचार प्राप्त किया। मुझे याद है कि एक दिन सुबह ग्यारह बजे मुझे उनसे मिलना था। उससे पूर्व मुझे शाम को भुवनेश्वर से मेरी मौसी के निधन का समाचार मिला। वह ज्यादा बूढ़ी नहीं थी। वह मुझे और मेरी पत्नी को माँ की तरह प्यार करती थी। मैं अपनी पत्नी से टेलीफोन पर यह खबर सुनकर बेहद दुखी हुआ था। दूसरे दिन सुबह सबसे पहले मैं सेंटर गया,जैसे मैं हर दिन जाया करता था। मैंने हर रोज की तरह लेटर-बॉक्स से अपने पत्र लिए, पुस्तकालय में कुछ समय पढ़ाई की और दोस्तों के साथ गपशप करने लगा। कमरे में चाय पीकर सभी अपने-अपने काम में लग गए। उस दिन मेरे लेटर-बॉक्स में एक पत्र था। यह बीजिंग विश्वविद्यालय से आया था। मैंने लिफाफा खोला और देखा, मेरे पत्र के साथ एक छोटा नोट लिखा हुआ था। पत्र बीजिंग विश्वविद्यालय के नृतत्व विभाग के प्रोफेसर का था, जिनसे मेरा लगभग दस सालों से घनिष्ठ संबंध था। संयोग से, हार्वर्ड आने से पहले उनसे मेरी दिल्ली में भी मुलाक़ात हुई थी। उन्हें दिल्ली विश्वविद्यालय में अतिथि संकाय के तौर पर आमंत्रित किया गया था। मेरे पत्र के साथ लगे छोटे नोट पर लिखा हुआ था, 'हमारे प्रोफेसर मित्र की दिल का दौरा पड़ने से अचानक मृत्यु हो गई।' इसलिए मेरा पत्र मुझे लौटा दिया गया। मुझे अपनी मौसी की मौत की खबर शाम को पहले मिल चुकी थी। एक और मौत की खबर से मुझे गहरा दुख हुआ। कुछ समय सेंटर में रहकर मैं 11 बजे डॉ॰ कस्तुरी नागराज से मिलने के लिए अस्पताल गया। मैं नियमानुसार पहले उनके सचिव से मिला।उसने कहा, "डॉ॰ महापात्रा, शायद आपको पता नहीं हैं। दिल का दौरा पड़ने से आज सुबह कुछ समय पहले ही श्रीमती नागराज का निधन हो गया है और कल 12.30 बजे यूनिवर्सिटी के मेमोरियल चर्च में उनके लिए शोक-सभा का आयोजन होगा।"

अपने जीवन में मैंने कई मौतों का सामना एक साथ कभी नहीं किया था, उसके बाद एक साथ तीन अत्यंत करीबी लोगों की मृत्यु। दुखी मन से सेंटर लौट आया। वहां कुछ समय तक रहा। फिर अपने अपार्टमेंट चला गया। सोते-सोते पंडित जसराज के भजन सुनने लगा, कुछ हद तक अपने आपको आश्वस्त किया। मैंने बाहर खाने की बजाय घर पर कुछ सूप बनाया। सूप पीकर चार्ल्स नदी के तट पर चला गया। वहां कुछ समय बैठा और फिर अपार्टमेंट लौट आया। हार्वर्ड के एक साल प्रवास में 24 मार्च, शुक्रवार मेरे लिए सबसे दुखद दिन था। अगले दिन मैं मेमोरियल चर्च में शोक-सभा में गया। मैं वहां पहली बार उनके पति श्री शिव नागराज और उनकी सबसे बड़ी बेटी अर्चना से मिला। उससे पहले उनके घर में उनकी छोटी बेटी और बेटे से मिल चुका था।

एक ही दिन, एक के बाद तीन मौतों की खबर ने मुझे विचलित कर दिया था। दो-चार दिन किसी भी चीज में मेरा मन नहीं लग रहा था। कुछ समय बाद मुझे एक अन्य चिकित्सक के साथ जोड़ दिया गया। वह अमेरिकी नीग्रो थे और कस्तूरी नागराज को बहुत अच्छी तरह से जानते थे। अक्सर स्वर्गीय नागराज के बारे में मेरी उनके साथ चर्चा होती थी। उनके सहयोगी के हिसाब से वे भी अपने अनुभव सुनाते थे।

7. विश्वविद्यालय की वार्षिक व्याख्यान-माला

हार्वर्ड विश्वविद्यालय में अनेक वार्षिक व्याख्यान मालाएं आयोजित की जाती हैं। उनमें सबसे महत्वपूर्ण चार्ल्स नॉर्टन व्याख्यान माला है, जिसका नाम *Norton Professorship of Poetry* है, परंतु कविता की परिभाषा इस परिप्रेक्ष्य में इतनी व्यापक है कि इसमें कला-संगीत भी शामिल है। हार्वर्ड विश्वविद्यालय में किसी प्रख्यात लेखक, कलाकार या संगीतकार द्वारा दिए गए व्याख्यानों को यूनिवर्सिटी प्रेस द्वारा पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया जाता है। इसके अलावा,सुविधानुसार संपृक्त फ़ैकल्टी निर्धारित कार्यालय में बीच-बीच में आते हैं। उस समय विश्वविद्यालय के प्रोफेसर और शोधकर्ता उनसे पूर्व नियुक्ति लेकर मिलते हैं।

सन 1926 में विश्वविद्यालय ने चार्ल्स नॉर्टन पीठ आरंभ की है। इसका महत्व पूर्व महान लोगों के नाम से स्पष्ट होता है। उनमें टी॰एस॰ इलियट, रॉबर्ट फ्रॉस्ट, इगोर स्ट्रैविन्स्की (विश्व प्रसिद्ध संगीतकार), उपन्यासकार थोरटन वाइल्डर, संगीत समीक्षक एरॉन कॉपलैंड, कवि ई॰ई॰ कमिंग्स, आलोचक लियोनेल ट्रिलिंग, कवि ओक्टेविओ पाज़, संगीतकार लियोनार्ड बर्नस्टेन, बेन साण, जॉर्ज लुई बोर्के (अर्जेंटीना के कवि और लेखक), पॉल हिंडेमिथ, नॉर्थोफ़ फ्राय और बकिंनिस्टर फुलर आदि शामिल हैं । मैंने सुना है कि इटालो कैल्विनो को सन 1985-86 में पीठ की नियुक्ति मिली थी, लेकिन व्याख्यान-माला शुरू होने से पहले उनका निधन हो गया था।

मेरे प्रवास के सन 1988 में नॉर्टन प्रोफेसर थे हेरोल्ड ब्लूम, प्रसिद्ध साहित्यिक आलोचक। उनकी व्याख्यान माला का सामान्य शीर्षक 'कविता और विश्वास' था, जिसमें उनके तीन व्याख्यान थे। पहला 'हिब्रू भाषा में बाइबिल' दूसरा 'होमर से लेकर दांते तक' और तीसरा 'शेक्सपियर' था। हार्वर्ड के चार्ल्स इलियट नॉर्टन प्रोफेसर के रूप में नियुक्त ब्लूम येल विश्वविद्यालय में मानविकी के स्टर्लिंग प्रोफेसर थे। वह येल से हार्वर्ड एक साल के लिए आए थे।

मैं ब्लूम के बारे में बहुत कुछ जानता था। मैंने उनकी रचनाओं को भी पढ़ा था। उन्होंने बहुत सारी पुस्तकें लिखी थीं । इसके अलावा, वह प्रख्यात संपादक और आलोचक भी थे। वह साहित्यिक आलोचना के चेल्सी हाऊस पुस्तकालय के महासचिव थे। इस माला में कई विशिष्ट खंड थे और बियोवुल्फ़ के समय से अंग्रेजी-अमेरिकी साहित्यिक आलोचकों के सारे विषयों पर प्रकाश डालना था।दूसरा, उन्होंने कई खंडों में आलोचनाओं के निर्दिष्ट संग्रह को संपादित कर उसका सामान्य परिचय लिखना था। तीसरा, वह आलोचनाओं की दो पुस्तकों के संपादक थे और उनकी भूमिका लिख रहे थे। इन पुस्तकों के शीर्षक *'मॉडर्न क्रिटिकल इंटरप्रिटेशन'* (कुछ निर्दिष्ट पुस्तकों की आलोचनाएं) और *'क्रिटिकल कॉस्मॉस'* (विविध समय और साहित्य के विभिन्न वर्गों का सामग्रिक दृष्टिकोण से तुलनात्मक अध्ययन)।

मैंने पहले कहा है कि ब्लूम ने तीन विषयों पर नॉर्टन व्याख्यान दिया था। उनमें हिब्रू बाइबिल पर उनका व्याख्यान मुझे सबसे ज्यादा अच्छा लगा। विशद व्याख्यान की पृष्ठभूमि में उनकी मुख्य अभिव्यक्ति यह थी कि वह बाइबल केवल 'ऐतिहासिक समय का वर्णन' नहीं है। इसमें हमारे समय का उपयोगी मानवीय दृष्टिकोण मिलता है। इस बात की पुष्टि करने की उनकी शैली आकर्षक और प्रभावी थी। उस नए दृष्टिकोण के संदर्भ में उनके व्याख्यान का सामान्य विषय यह था कि समस्त उच्च कोटि के साहित्य की रचना एक निर्दिष्ट कालखंड में हुई थी। फिर भी उनकी सार्वभौमिकता और सर्वकालीनता ने उन्हें अमर बना दिया। हर काल में मनुष्य ने उनके नए अर्थ खोजे। इस संबंध में, ब्लूम ने कहा, "Each generation searching for and finding in it new metaphor for living and dying."

मैंने मिलने के लिए उनसे समय मांगा था। अपने आखिरी व्याख्यान के दो दिन बाद उन्होंने मुझे समय दिया। उनके साथ मेरे विचार-विमर्श और मेरे सवालों के उचित उत्तरों ने मुझे बहुत आनंद दिया। मैंने विशेषकर उनके द्वन्द्वात्मक और व्यक्तिगत दृष्टिकोण की सन 1973 में प्रकाशित पुस्तक *'द आंकजाइटी ऑफ इंफ्लूएन्स : ए थ्योरी ऑफ पोएट्री'* में कविता में प्रतिपादित रचनात्मकता के स्रोत पर कुछ सवाल पूछे थे।

चार्ल्स इलियट नॉर्टन वार्षिक व्याख्यान माला के अतिरिक्त विश्वविद्यालय में अलग से हर साल छह ह अन्य व्याख्यान मालाओं का आयोजन करता था। वे निम्न थीं:-

(i) गडकीन व्याख्यान माला, जिसकी सन 1930 में एक एन्डोमेंट के आधार पर स्थापना की गई थी और इसका निर्दिष्ट शीर्षक *'स्वतंत्र सरकार की अनिवार्यता और नागरिकों के कर्तव्य'* था। केनेडी स्कूल ऑफ गवर्नमेंट अब इसे आयोजित करता है।

(ii) विलियम जेम्स व्याख्यान माला, जो दर्शनशास्त्र और मनोविज्ञान पर आधारित है।

(iii) इरास्मस व्याख्यान माला, जो नीदरलैंड की 'सभ्यता' पर आधारित है, जिसके लिए नीदरलैंड से अर्थशास्त्र, इतिहास, साहित्य और कला के विद्वानों को आमंत्रित किया जाता है।

(iv) एडवर्ड डनहम व्याख्यान माला,जो चिकित्सा-क्षेत्र के नए शोधों से संबंधित है और अन्य देशों से इस क्षेत्र के विशेषज्ञों को इस कार्यक्रम के तहत आमंत्रित किया जाता है।

(v) विलियम बेलडेन नोबेल व्याख्यान माला,जिसमें प्रख्यात धर्मविदों को अपने धार्मिक अनुभव के विशेष पहलू पर व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया जाता है।

(vi) केनेडी स्कूल ऑफ गवर्नमेंट की आर्को फोरम व्याख्यान माला,जिसमें उच्च स्तरीय राजनेताओं को व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया जाता है।

नॉर्टन व्याख्यान माला के अलावा छह व्याख्यान मालाएं और बाहर के कई अन्य व्याख्यान मुझे आश्चर्यचकित कर रहे थे- इन सभी से,पत्र-पत्रिकाओं से, विविध प्रदर्शनियों आदि से कोई कितना ज्ञान ग्रहण कर सकता है? ज्ञान के भंडार हर तरफ उन्मुक्त उपलब्ध है! अपनी शक्ति सामर्थ्य और विभाग के हिसाब से यह सब चुनना पड़ता है। विश्वविद्यालय की प्रमुख साहित्यिक द्विमासिक पत्रिका *'हार्वर्ड मैगज़ीन'* थी। इस पत्रिका में विश्वविद्यालय के प्रोफेसरों और छात्रों की सृजनशील कविताएं, निबंध, कहानियां और शोध लेख प्रकाशित होते थे। सामान्यतः संपादक फ़ैकल्टी का कोई प्रोफेसर हुआ करते थे, तो कभी-कभी बाहर के प्रख्यात लेखक।मेरे प्रवास में प्रसिद्ध अमेरिकी कवि डोनाल्ड हॉल संपादक थे। इस पत्रिका के एक अंक में मेरी दो कविताएं प्रकाशित हुई थीं और दूसरे अंक में मेरा एक निबंध प्रकाशित हुआ था। उसके बाद संपादक से आत्मीयता

बढ़ती गई। मैं कवि ए॰के॰रामानुज के साथ एक बार फ़ैकल्टी क्लब में उनसे और उनकी पत्नी से मिला था (जिनका राज्य में बहुत नाम था और उनका कविता-संकलन ‘लेट इवनिंग कम' आलोचकों में चर्चा का विषय बना था)। मैं उन्हें बाद में उनके निवास पर भी मिला था। दोनों ‘अमेरिकी लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस’ के तत्वावधान में इंडिया इन्टरनेशनल सेंटर में आयोजित काव्य-पाठ में भाग लेने भारत आए थे। मुझे उस कार्यक्रम की अध्यक्षता करने का अनुरोध किया गया था। उनकी पत्नी जेन केन्यन ने ‘लेट इवनिंग कम' तथा डोनाल्ड ने अपना सर्वश्रेष्ठ कविता-संग्रह 'ओल्ड एंड न्यू पोएम्स' मुझे भेंट किया था। जिसमें डोनाल्ड ने लिखा था: *‘For SK, with pleasure; again drinking tea, again talking poetry, again in Delhi’ — Donald Hull, 4th September, 1993’.*

इस संकलन में उनकी 1947 से 1990 की कविताएं संग्रहित हैं। ' किकिंग द लिव्ज़ '(1978) नामक कविता-संग्रह की बहुचर्चित मार्मिक शीर्षक कविता, जो उनकी पारिवारिक जीवन की स्मृतियाँ है, की कुछ पंक्तियाँ (लंबी होने पर भी) यहाँ उद्धृत करने का लोभ-संवरण नहीं कर पा रहा हूँ:-

1. I kick at the leaves, making a sound I remember as the leaves
swirl upward from my boot, and flutter, and I remember
****** ****
on a dirt road in New Hampshire; kicking the leaves,
autumn 1995 in Massachusetts, knowing
my father would die when the leaves were gone.

2. Kicking the leaves today, as we walk home together
from the game, among crowds of people.
with their bright pennants, as many and bright as leaves.
my daughter’s hair is the red-yellow colour
of birch leaves, and she is tall like a birch.
growing up, fifteen, growing older; and my son
flamboyant as maple, twenty.

3. This year the poems came back, when the leaves fell,
kicking the leaves, I heard the leaves tell stories,
remembering, and therefore looking ahead, and building
the house of dying, I locked up into the maples
and found them, the vowels of bright desire.
I thought they had gone for ever
while the bird sang I love you, I love you
and shook its black head.

4. Kicking the leaves, I uncover the lids of graves,
My grandfather died at seventy-seven, in March
When the sap was running; and I remember my father
twenty years ago,
Coughing himself to death at fifty-two in the house
in the suburbs, oh, how we flung
Leaves in the air! How they tumbled and fluttered around us,
like slowly cascading water, when we walked together.

उनकी एक अन्यतम कविता का शीर्षक है 'कविता'। इसमें कविता के प्रति उनका आभिमुख्य बहुत सुंदर ढंग से परिलक्षित हुआ है। मुझे यह कविता बहुत पसंद आई। उन्होंने एक बार हार्वर्ड फैकल्टी क्लब और दूसरी बार इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में इस कविता का पाठ किया था।पूछह ने पर उन्होंने बताया कि यह उनकी खास पसंदीदा कविता है। छोटी-सी इस कविता को नीचे दिया गया है:-

The Poem

It discovers by night
What the day hid from it.
Sometimes it turns itself
into an animal.

In summer it takes long walks
by itself where meadows
fold back from ditches.

Once it stood still
in a quite row of machines
Who knows
What it was thinking?

डोनाल्ड हॉल बारह वर्ष की आयु से कविता लिख रहे थे। *'ओल्ड एंड न्यू पोएम्स'* संकलन में उनकी पुरानी और नई 179 चुनिंदा कविताएं हैं। सन 1989 में नेशनल बुक क्रिटिक्स अवार्ड प्राप्त उनकी लंबी कविता 'द वन डे' इसमें शामिल नहीं है । वह न्यू हैम्पशायर के ग्रामीण इलाके में रहते थे, जहां उनका परिवार सौ सालों से भी अधिक समय से रहता आ रहा था, वहाँ के भौगोलिक और सांस्कृतिक वातावरण पर स्व-चयनित कविता-संग्रह आधारित है। आलोचक इस संग्रह के बारे में लिखते हैं:-

'a garland and a delight; as one of the foremost anthologies earthier and more passionate utterance.'

उनकी कवि-पत्नी जेन केन्योन की 'लेट इवनिंग कम' के संकलन से पहले तीन अन्य कविता-संकलन प्रकाशित हुए थे। जिनके नाम हैं:- *(i) The Boat of Quiet Hours, (ii) From Room to Room and (ii) Twenty poems for Anna Akhmatova.*

ये जेन डोनाल्ड की छाया में पल्लवित हो रहे पौधें नहीं हैं । वे अपनी कविताओं के लिए अमेरिकी पाठकों और आलोचकों में बहुचर्चित एवं प्रशंसित हैं । उनके प्रथम कविता-संग्रह 'लेट इवनिंग कम' की मुझे अच्छी लगने वाली दो कविताओं के कुछ अंश नीचे दिए गए हैं:-

1. Let the fox go back to its sandy den,
Let the wind die down, let the shed
go black inside. Let evening come,
……………………………………
……………………………………..
Let it come, as it will, and don't
be afraid, God does not leave us
Comfortless. So let evening come.

2. Through the screen door
I hear a hummingbird, inquiring
For nectar among the stalwart
…………………………………….
……………………………………..
The sky won't darken in the West
Until then, Where shall I turn
This light and tired mind?

डोनाल्ड द्वारा संपादित 'हार्वर्ड मैगज़ीन' का एक नियमित हिस्सा 'जॉन हार्वर्ड जर्नल' होती है,जिसमें विश्वविद्यालय के छात्रों के बारे में विभिन्न तथ्य प्रस्तुत किए जाते हैं। यह पत्रिका विश्वविद्यालय के संस्थापक जॉन हार्वर्ड के समय से चल रही है। एक समय टी॰एस॰इलियट इस पत्रिका के स्नातक उप-संपादक हुआ करते थे।

इस पत्रिका के अलावा अन्य छह ह नियमित पत्रिकाएं प्रकाशित होती थी। एक थी हार्वर्ड एडवोकेट और दूसरी हार्वर्ड लैंपून। पहली साहित्यिक पत्रिका है और दूसरी हास्य-पत्रिका है। दोनों छात्रों द्वारा संपादित की जाती हैं। तीसरी साप्ताहिक पत्रिका 'हार्वर्ड इंडिपेंडेंट' है,जिसमें प्रकाशित समकालीन साहित्यिक आलोचना पाठकों द्वारा सराही जाती है। अन्य तीन हैं:-

1. *'हार्वर्ड यूनिवर्सिटी गैजेट'* (साप्ताहिक पत्रिका),जिसमें संकायों की विभिन्न गतिविधियां, कार्यक्रम, विशेष व्याख्यान आदि प्रकाशित किए जाते हैं।
2. *'बैलून'* (मासिक पत्रिका), जिसमें फ़ैकल्टी और स्टाफ सदस्यों के निबंध और समस्याओं की चर्चा होती है।
3. *'हार्वर्ड क्रिमसन' (*छात्रों द्वारा प्रबंधित), जिसमें स्नातक और अधो-स्नातक छात्रों के निबंध और प्रमुख तथ्य प्रकाशित होते हैं।

मेरी जानकारी में इतनी सारी पत्र-पत्रिकाएं किसी अन्य विश्वविद्यालय से प्रकाशित नहीं होती हैं। सभी पत्रिकाओं की प्रतियां हार्वर्ड स्क्वायर की स्टाल में टाइम और न्यूज़वीक के साथ उपलब्ध हैं।

इसके अलावा, साल में एक बार बसंत के समय राष्ट्रपति की रिपोर्ट और विभागों की रिपोर्ट (जिसे 'ग्रे बुक' कहा जाता है) विश्वविद्यालय प्रकाशनों द्वारा प्रकाशित की जाती है। सहयोगी प्रोफेसर के रूप में नियुक्त होने के कारण मुझे ये रिपोर्ट और सभी अन्य पत्रिकाएं डाक से मिलती थीं ।

इलियट शताब्दी और विश्वविद्यालय प्रेस

हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस (एचयूपी) अमेरिका का सबसे पुराना और सबसे बड़े प्रकाशन गृहों में से एक है। केवल शिकागो यूनिवर्सिटी प्रेस और येल यूनिवर्सिटी प्रेस अमेरिका में इसके साथ प्रतिस्पर्धा करती हैं। इंग्लैंड में इसके समानांतर दो प्रमुख विश्वविद्यालय प्रेस हैं, अर्थात् ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस (ओयूपी) और कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस। हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस (एचयूपी) एक साल में लगभग 200 सौ पुस्तकें प्रकाशित करता है। ये किताबें प्रमुख विद्वानों की रचनाएँ होती हैं। ऐसा अनुमान है कि इन पुस्तकों में से एक तिहाई विश्वविद्यालय के प्रोफेसरों की रचनाएँ होती हैं और बाकी दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों के विद्वानों की। नए प्रकाशनों की सूची हर

साल शरद और बसंत सेमेस्टर में जारी की जाती है। प्रेस में संपादक सहित केवल सत्तर कर्मचारी हैं। एचयूपी के प्रकाशन बहु-मंजिला सुंदर इमारत से निकलते हैं। मुझे लगभग चार हजार प्रकाशित पुस्तकों पर नज़र डालने,पढ़ने और उनके पृष्ठों को पलटने में बहुत खुशी मिली थी। मैंने चार्ल्स नदी में नौकायन करते समय और कमर पर वॉकमेन टाँगकर नदी के तट पर जॉगिंग करते वक्त किताबें पढ़ते हुए बहुत सारे दोस्तों को देखा हैं।

टी.एस. इलियट की जन्म शताब्दी सन 1988 में विश्वविद्यालय में प्रवास के दौरान आई थी। उनका जन्म 26 सितंबर 1888 को सेंट लुइस में हुआ था। उन्होंने सन 1906 में हार्वर्ड में दाखिला लिया था और 1909 में स्नातक हो गए। वाल्टर लिपमान, स्टुअर्ट चेज़ और जॉन रीड उनके सहपाठी थे। मैंने पहले ही लिखा है कि इलियट 'हार्वर्ड एडवोकेट' के साहित्यिक पत्रिका के अधो-स्नातक संपादक थे। वे कई साहित्यिक संगठनों और हार्वर्ड के सामाजिक क्लबों के सदस्य थे।उन्होंने अपने दीक्षांत समारोह के लिए कविता 'क्लास ओडे' लिखी थी।

विश्वविद्यालय द्वारा शताब्दी उत्सव के उपलक्ष में कई गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा था। शताब्दी व्याख्यान हाउटन पुस्तकालय में आयोजित किए गए थे और वहाँ इलियट की कविताओं और निबंधों की पांडुलिपि की प्रदर्शनी लगाई गई थी। उन्हें देखने में मुझे खूब आनंद आया था। मैंने व्याख्यान-माला में से पांच व्याख्यान सुनने की योजना बनाई थी। उनमें से एक व्याख्यान था आयरिश कवि सिआमस हिनि का, जो विश्वविद्यालय में *Visiting Boylston Professor of Rhetoric and Oratory* के रूप में एक वर्ष के लिए आए थे। उनके व्याख्यान का शीर्षक 'लर्निंग फ्रॉम इलियट' था। मैं किसी दूसरे अध्याय में हिनि के साथ मेरी दोस्ती के बारे में लिखूंगा। सिआमस को उस समय तक नोबेल पुरस्कार नहीं मिला था। उनके व्याख्यान का आभिमुख्य था:- समकालीन आलोचनाओं में इलियट विरोधी स्वर होने के बावजूद आधुनिक कवि-कविता इलियट की इतनी ऋणी क्यों है ? और प्रत्येक कवि को उनसे क्या सीखना चाहिए? दूसरे चार व्याख्यान थे: हेलेन वेंडरर (हार्वर्ड विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग के मुख्य आलोचक) 'द वैस्टलैंड', डेविड प्रस्किन का 'इलियट्स क्रिटिकल प्रोज़', डब्ल्यू.जे.बेट्स का 'फोर क्वार्ट्स' और विलियम अल्फ्रेड का 'ऐश-वेडनेस डे'। हॉल हमेशा खचाखच भरा रहता था। हॉल के बाहर बैठे श्रोताओं के लिए माइक लगाए जाते थे। प्रत्येक व्याख्यान के बाद खूब जीवंत और द्वन्द्वात्मक आलोचना होती थी। व्याख्यानों को मैंने अपनी डायरी में 'इंटेलेक्ट्चुयल फीस्ट' के रूप में उल्लेख किया है। प्रत्येक व्याख्यान के बाद रिसेप्शन आयोजित हुआ करता था।

इस संबंध में मुझे याद आता है कि हार्वर्ड और मैसाचुसेट्स के अटलांटिक महासागर के चट्टानी उपकूलों ने इलियट की कविताओं को किस हद तक प्रभावित किया है, खासकर समुद्र से संबंधित 'मरीना', 'फोर क्वार्टेट्स' और ऐसी ही कुछ   अन्य कविताएं।उनकी डायरी की पांडुलिपि हमें बताती है कि चट्टानी तट और उनके मुहानों से टकराती लहरों से वह बहुत प्रभावित थे। शायद उन्हें समुद्र की आवाज़ में सुनाई पड़ रही थी *'mermaids singing each to each'*

इलियट सन 1914 में इंग्लैंड में रहने लगे और उन्होंने सन 1927 में ब्रिटिश नागरिकता ग्रहण कर ली। सन 1932 में चार्ल्स इलियट नॉर्टन प्रोफेसर ऑफ पोएट्री के रूप में एक वर्ष के लिए वे फिर से हार्वर्ड आए थे। विश्वविद्यालय प्रति वर्ष व्याख्यान-माला की पुस्तक प्रकाशित करता है। उनके व्याख्यान 1934 में 'आफ्टर स्ट्रेंज गॉड' शीर्षक से प्रकाशित हुए थे। सन 1950 में फिर से हार्वर्ड आए थे, थियेटर से संबंधित थियोडोर स्पॉन्सर स्मारकी व्याख्यान माला का उद्घाटन करने के लिए। मैंने देखा, अंग्रेजी और अमेरिकी साहित्य विभाग

दोनों उन पर गर्व अनुभव करते हैं। वे अंग्रेजी काव्य-जगत के प्रमुख प्रवर्तक थे। उन्होंने कविता में एक नए युग की शुरुआत की। जिसका समकालीन कवियों, आलोचकों और विद्वानों पर गहरा प्रभाव पड़ा। दोनों साहित्यिक विभागों द्वारा उनके शताब्दी-समारोह के अनुपालन के अवसर पर मैंने लोगों में बहुत उत्साह देखा।

8. पुनश्च ओक्टेविओ, पुनश्च कविता और वास्तुकला की जुगलबंदी

मुझे ऑक्टेविओ का मैक्सिको सिटी के उनके पते से लिखा गया पत्र मिला कि यूनिवर्सिटी के कार्पेंटर सेंटर ऑफ विजुअल आर्ट्स में उनका कविता-पाठ होगा। इस बार उनका कविता-पाठ अलग शैली में होने की उम्मीद थी।कुल बीस कविताएं पढ़ी जाने वाली थीं। उनकी पृष्ठभूमि में दस कविताएं थीं और बाकी दस अलग-अलग लोग पढ़ेंगे। ये बीस कविताएं ओक्टेवियो और मैक्सिको के प्रसिद्ध आधुनिक चित्रकार और वास्तुकार ब्रायन निसेन दोनों ने चुनी थी। प्रत्येक कविता के लिए निसेन एक या एक से अधिक पेंटिंग दर्शक-श्रोताओं के सामने प्रस्तुत करते थे, जिन्हें उनके सामने रखा गया था।

कविता पाठ के लिए मुझे विशेष निमंत्रण प्राप्त हुआ था। थोड़ा जल्दी आकर मैंने निसेन को अपना परिचय दिया। ऑक्टेविओ ने स्वयं अपना परिचय दिया। वे उसी सुबह न्यूयॉर्क से आए थे। न्यूयॉर्क के मेट्रोपॉलिटन म्यूजियम ऑफ आर्ट (एमओएमए) में आयोजित *'मैक्सिकन कला के 2000 साल'* प्रदर्शनी के लिए कैटलॉग तैयार करने की उनकी जिम्मेदारी थी। इस काम के संबंध में उन्हें अचानक न्यूयॉर्क जाना पड़ा। इसलिए उनसे मैक्सिको सिटी में मुलाक़ात नहीं हो पाई। मैक्सिको सिटी में जब मैं होटल पहुंचा तो उनका संक्षिप्त पत्र मेरा इंतजार कर रहा था।

कविता-पाठ अच्छी तरह से सम्पन्न हुआ। मैंने दर्शकों में सीमस हिनि, यूनानी कवि स्ट्रैटीस हविआरास (वे लैमोंट लाइब्रेरी में कविता पाठ के संयोजक थे), डोनाल्ड हल और उनकी पत्नी जेन केन्यॉन आदि को देखा। निसेन अत्यंत समझदारी से ओक्टेवियो की कविताओं की आत्माओं को दृश्य-काव्य में रूपायित कर प्रस्तुत कर रहे थे, अगर उन्हें कोई प्रत्यक्ष नहीं देखेगा तो विश्वास नहीं कर पाएगा। मुझे पहली बार ओक्टेविओ के अपनी कविताओं का अंग्रेजी अनुवाद सुनने का अवसर मिला था। उनकी आवाज़ गंभीर और नियंत्रित थी। प्रत्येक शब्द के उच्चारण काव्य-विभा का स्वरूप बदल रहा था और ब्रायन निसेन का दृश्यकाव्य काव्य-रूप में और जान फूँक रहा था।

इस बेहद मनोरंजक कार्यक्रम के अंत में फैकल्टी क्लब में हमें ओक्टेविओ और निसेन के साथ डिनर पर आमंत्रित किया गया था। अगले दिन ओक्टेवियो न्यूयॉर्क चले गए।

बाद में *मेट्रोपॉलिटन म्यूजियम ऑफ आर्ट (एमओएमए)* में हुए ***'मैक्सिकन कला का 2000 साल'*** प्रदर्शनी के उद्घाटन में मुझे ओक्टेविओ द्वारा तैयार, संपादित विशाल सूची को देखने का अवसर मिला था, जिसमें मैक्सिको के सामग्रिक कला-इतिहास और परिवेषण की उल्लेखनीय शैली के बारे में उनका प्रभूत ज्ञान परिलक्षित हो रहा था। लेकिन उन्होंने मुझे यह कहते हुए एक पत्र लिखा था, *'अब तक सबसे बड़ी सूची तैयार करने की बदनामी मुझे मिली है।'*

ओक्टेविओ के साथ मेरा संबंध बहुत पुराना था। छह ठे दशक में जब वह भारत में मेक्सिको के राजदूत थे, उस समय से। तकक्षी शिवशंकर पिल्ले को ज्ञानपीठ पुरस्कार मिलने के समारोह (सन 1985) में वे मुख्य अतिथि थे । उस समय मैं ज्ञानपीठ पुरस्कार की चयन समिति का एक अन्यतम सदस्य था। उनका परिचय देते समय उनकी कविता 'शिव-पार्वती' के अंग्रेजी और हिंदी अनुवाद पढे गए थे। बाद में उन्होंने कहा कि वह अपनी कविता से बहुत खुश हैं। इसलिए नहीं कि कविता भारत में उनके प्रवास के दौरान लिखी गई थी,बल्कि यह उनकी पसंदीदा कविताओं में से एक थी। कविता इस प्रकार है:-

" शिव और पार्वती
वह महिला जो मेरी पत्नी है, और मैं
नहीं मांगते कुछ   भी
उसके बारे में
जो दूसरी दुनिया से आता है;
केवल इतना रहने दो
प्रकाश समुद्र वक्ष पर
नंगे पांव पर प्रकाश
निद्रित धरती और समुद्र के ऊपर।"

(शिव और पार्वती)

पुरस्कार समारोह के बाद मैंने उनसे इस कविता के प्रेरणा-स्रोत के बारे में पूछा। उन्होंने कहा कि इस कविता के दो स्रोत थे। पहला स्रोत था, हार्दिक प्रार्थना, दूसरा मेरी विदायी के अनुभव। कविता भारत से लडेरा एस्टे (उनकी पूर्व भूमि) लौटने से ठीक पहले ही बनाई गई थी। उस समय उन्होंने मैक्सिको सिटी के छात्रों पर मैक्सिकन सरकार के फायरिंग के विरोध में भारत के राजदूत के पद से इस्तीफा दे दिया था। कविता पढ़ते समय मेरी आँखों के सामने फिर से एलीफेंटा नाचने लगी। शिव-पार्वती के विवाह की सुंदर तस्वीर एलीफेंटा की गुफाओं में अभी भी अक्षुण्ण है।मुझे निम्न पंक्तियां याद आ गईं, जो मेरे अंदर प्रतिध्वनित हो रही थीं :-

"हे जगन्नाथ, मैं तुमसे कुछ नहीं मांगता,
न धन मांगता हूँ, न जन,
मांगता हूँ सिर्फ हाथ भर श्रद्धा बालू । "

हमें पता था कि उन्होंने भारत में अपने प्रवास के दौरान कई जगहों ('वृंदावन', 'हिमाचल प्रदेश', 'ऋषिकेश') पर कविताएं एवं समय और घटनाओं के बारे में लिखा था । भारत उनकी नजरों में प्रिय भूमि थी, जो इतिहास की निर्जनता में खो गई थी। उन्होंने मुझसे कहा था कि उनकी किताब *'इन दी लाइट ऑफ इंडिया'* उनके कर्ज को चुकाने का एक छोटा प्रयास था। भारतीय आत्मा का द्वंद्व और विरोधाभास, जिन्हें उन्होंने देखा था, उनकी पुस्तक में साफ झलकते हैं। एक बार बातचीत के दौरान उन्होंने कहा था, "*मैक्सिको का भी यही हाल है। हम मेक्सिकोवासी एक-दूसरे और दुनिया के लिए अबोध्य हैं। "*

इस पुस्तक में, मैं उनके साथ अपने रिश्ते के लंबे इतिहास के बारे में नहीं लिख पाऊँगा। खास-खास बातें लिख रहा हूँ।

मैंने हार्वर्ड कारपेंटर सेंटर में कविता-पाठ के बारे में पहले कहा है। निसेन की प्रदर्शनी का नाम था *"ओक्टेविओ पाज़ की ऑब्सीडियन तितली"* । उनकी कविताओं में कई जगहों पर मैक्सिकन सभ्यता की परंपरा का चित्रण है,इसलिए मैंने उनसे और निसेन से कहा था कि प्रदर्शनी का शीर्षक वास्तव में काफी सोच-समझकर रखा गया है।

पठित कविताओं में सामग्रिक भाव से कविता और मेक्सिको के बारे में उनका दृष्टिकोण था। हमेशा कवि का भाग्य ऐसा ही होता है। उन्हें अपने समाज और समय के साथ बहुत करीबी रिश्ता बनाए रखने पर भी अपने आपको इतिहास के बोझ और उसके कोमल अत्याचार से बचाना पड़ता है। कवि और उनके उच्चारित शब्द एक और अभिन्न होने पर ही उच्च कोटि की कविता बनती है।उनकी भाषा में कविता एक परित्यक्त आँगन है। मेरे मन पसंद की तीन कविताएं उदधृत हैं :-

यौवन :-
तरंगों की उछह लकूद
और..... श्वेत-धवल
समय-समय पर अधिक हरा
दिन-ब-दिन और बचपना
मृत्यु

रचना:-
ये सारे अक्षर लिखता हूँ मैं
जैसे दिन आँकता है अपनी छह बियाँ सारी
फिर फूँक मारकर मिटा देता है
और आता नहीं वापस

संगीत:-
ऊपर नीला अंबर
नीचे पेड़ों के झुंड
रास्ते भर हवा
सुनसान कुआं
काली बाल्टी
स्थिर पानी
पानी
उतर आता है पेड़ों पर
आसमान
छा जाता है होठों पर

मैंने उनसे कुछ समय के लिए चित्रकार जे॰ स्वामीनाथन और कवि श्रीकांत वर्मा के बारे में बात की थी। वे दोनों हमारे दोस्त थे और दोनों इस दुनिया से विदा हो गए। स्वामीनाथन ने मेरे कविता-संग्रह 'चढ़ेईरे तू कि जाणू' के हिंदी अनुवाद 'चिरईरे तू क्या जाने' के लिए उनके द्वारा चयनित एक पेंटिंग की स्लाइड तैयार करके भेजी थी, मुझे याद आ गया। मुझे स्वामीनाथन के साथ मेरी पुरानी दोस्ती और उनकी मृत्यु शैय्या के शेष दिन याद आने लगे।

इस तरह सब-कुछ खो जाता है। मृत्यु का कोहरे हर किसी को डूबा देता है - उसके बाद कुछ भी दिखाई नहीं देता। जब मुझे ऑक्टेविओ की दारुण मृत्यु की खबर मिली तो मेरा मन छह टपटाने लगा था। अनजाने में इस दूर स्थित दोस्त के लिए मेरी आँखें नम हो गई थीं । एक बार वह अमेरिकी शिखर समिति की बैठक में भाग लेने के बाद चिली से विमान द्वारा लौट रहे थे। मुझे उनकी कविता ओब्सीडियन तितली याद आई, जिसे मिट्टी और फूलों की सुगंध से प्यार था फिर अपने पंखों को हिलाते हुए दूर चली गई। मुझे उनकी कविता 'शिव पार्वती' भी याद आई। क्या यह मृत्यु भी सभी से 'विदाई, विदाई' कहने की शैली नहीं है?

ओक्टेवियो स्मृति और प्रेम के कवि थे। उनकी कविता *'सन स्टोन'* की कुछ पंक्तियां नीचे उद्धृत है:

मैं अपनी उंगलियों से देखता हूं:
मेरी आँखें क्या छूती हैं:
दुनिया की छाया पर छाया डालती हैं।
मैं दुनिया को आकर्षित करता हूँ।
मैं दुनिया को छाया के साथ छिन्न-भिन्न करता हूँ।

मैक्सिको के राष्ट्रपति अर्नेस्टो ज़ेडिलो ने ओक्टेविओ की मौत की खबर पर संवेदना व्यक्त की थी, *"उनकी मृत्यु समकालीन विचार और संस्कृति के लिए एक अपूरणीय क्षति है, न केवल लैटिन अमेरिका के लिए बल्कि पूरे विश्व के लिए।"*

उनकी मृत्यु में कविता ने खो दिया है उस कवि को, जिसने सूनसान एस्प्लेनेड से हमें दुखद समय में कविता और कला के सूक्ष्म स्वर सुनाए थे। क्लांतिहीन पथिक बनकर, जिसने हमें चहुंमुखी निराशा और अवक्षय के भीतर आशा और नए सपनों का संचार किया था।सारा जीवन वह अथय यात्री थे, लौटना चाहते थे "*प्रारम्भ के विस्मृत शब्दों में"*

उन्होंने अपनी पुस्तक *"द लिब्रिन्थ ऑफ सॉलिट्यूड"* में एज़्टेक- माया सभ्यताओं और मेक्सिको के इतिहास और परंपरा के बारे में बहुत कुछ लिखा है। टेनोचिट्लान के खंडहरों पर स्थित ढाई करोड़ लोगों की दुनिया की सबसे बड़ी बस्ती मैक्सिको सिटी है, जिसके चारों तरफ पहाड़ ही पहाड़ है, जिसकी वजह से वह दुनिया का सबसे प्रदूषित शहर है। बारबाटी के खंडहरों पर स्थित कटक शहर और क्या है!

पेंगुइन से प्रकाशित अपना कविता-संग्रह मुझे उपहार देते समय उन्होंने स्पैनिश में दो पंक्तियां लिखीं: 'ए सीताकान्त दी पोएटा ए पोएटा' (सीताकांत को, कवि से, कवि को)। जब मैं अपनी पुस्तक के पन्नों को पलटता हूं तो उनकी ये पंक्तियाँ याद आती है:-

"लेखक को एकांत में रहना चाहिए। यह अभिशाप भी है तो आशीर्वाद भी। इसलिए हम लेखकगण सीमांत पर होते हैं।"

9. कार्लो फुएंटेस - अजन्मा क्रिस्टोफर

मैक्सिको के प्रसिद्ध उपन्यासकार, लेखक, आलोचक और राजदूत कार्लो फुएंटेस सेंटर फॉर इन्टरनेशनल एफेयर (सीएफआईए) के कूलिज हॉल की छह ठवीं मंजिल पर मेरे पड़ोसी थे। हम प्रायः कैंटीन में चाय या लंच के समय साहित्य पर चर्चा करते थे। वह भी एक वर्ष के लिए सीफा में लैटिन अमेरिकन स्टडीज के प्रोफेसर रॉबर्ट एफ कैनेडी के पास आए थे। उनका साल पूरा होने जा रहा था। उन्होंने एक साल पहले कैंब्रिज यूनिवर्सिटी में साइमन बॉलीवर प्रोफेसर के रूप में काम किया था। हार्वर्ड वाले कैंब्रिज विश्वविद्यालय को कैंब्रिज कहते है,क्योंकि हार्वर्ड में स्थित छोटे शहर कैंब्रिज और हार्वर्ड की स्थापना इंग्लैंड के कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी के शिक्षित लोगों ने की थी।

हम अक्सर उनके कमरे में या मेरे कमरे में एक-दूसरे से बातें करते थे। हमारी बातों के भीतर ओक्टेविओ पाज़ आ जाते थे। मैक्सिको के विश्व प्रसिद्ध कवि और हम दोनों के दोस्त थे। अक्सर हम विभिन्न विषयों पर जैसे तीसरी दुनिया के आर्थिक विकास के साथ जुड़ी समस्याएं, पश्चिमी देशों की उदासीनता, भारत और मेक्सिको जैसे देशों की प्राचीन संस्कृति और आधुनिक समय में होने वाले परिवर्तनों के साथ परंपरा के समायोजन से संबंधित समस्याएं, इतिहास और उपन्यासों के बीच घनिष्ठ संबंध, अंग्रेजी अनुवाद में उनके द्वारा पढ़ी हुई मेरी कविताएं, ओड़िशा के आदिवासी लोगों की मौखिक कविताओं पर मेरा अनुवाद, अभी-अभी पूरे हुए उनके उपन्यास '*क्रिस्टोफर अनबॉर्न*' और उनके निबंध संग्रह '*माईसेल्फ विद अदरर्स*' (जिन्हें वह पूरा करने जा रहे थे) चर्चा करते थे।

कार्लो को पढ़ाई से प्यार था। मुझे भी ऐसा ही महसूस हुआ। वे रचनात्मक लेखन और अध्यापन की निम्न शब्दों में तुलना करते है: *"लेखन अत्यंत अकेला व्यवसाय है; आप अपने आपमें बहुत ज्यादा हैं। यह हवा में होने जैसा है। अध्यापन युवा लोगों के संपर्क में रहने का एक अच्छा तरीका है, उनके विचारों से अपने रसों को फिर से प्रवाहित करने के लिए।"*

कार्लो कहते हैं कि स्पैनिश साहित्य पर सर्वेंट्स का काफी प्रभाव है। उन्होंने कहा कि '*क्रिस्टोफर अनबॉर्न*' में डॉन कुइज़ोटेस की 'ला मांचा' परंपरा का पालन करने की भरपूर कोशिश की है, जो स्टीम, दिइडो आदि की रचनाओं में परिलक्षित होती है। इसके अतिरिक्त, स्टेंडहॉल, बाल्ज़ैक और दोस्तयोवेस्की की रचनाओं में व्याप्त वाटरलू परंपरा को आत्मसात करने का भी प्रयास किया था। मैंने गौर किया है कि जितना मैं दोस्तयोवेस्की के उपन्यासों का सम्मान करता हूँ, उतना वे भी। उन्होंने आधुनिक उपन्यासों के अवक्षय के बारे में अपनी राय दी। उनके अनुसार इसके तीन कारण हैं: कथावस्तु का क्षयमान संकुचन, शैली में सांद्रता का अभाव और महाकाव्यों में दृष्टिकोण की कमी। शायद ये तीनों कारण एक दूसरे से जटिलता से जुड़े हुए हैं। इस संबंध में उनके कई अनुत्तरित सवाल हैं।

"वर्तमान साहित्य क्षणिक चीजों के साथ ही क्यों जुड़ा रहेगा ? भविष्य के सपने ,विगत युग के घाव और उत्साह के पीछे क्यों नहीं देखेगा? हम अपने समय के प्रतीक क्यों नहीं खोजेंगे ? क्या उसके लिए उचित कथा-वस्तु और भाषा-शैली की खोज नहीं करेंगे ? हम इतने कम में क्यों संतुष्ट हैं? हमारे सामने बड़ा कैनवास, पृष्ठभूमि कहां है? "

मैं उनसे पूरी तरह सहमत हूं। लेकिन मुझे आश्चर्य है कि अनंत काल हमेशा हमारे पहुंच से परे है। क्या काम्यू का *'महामारी'* या हेमिंग्वे का *'द ओल्ड मैन एंड द सी'* हृदयस्पर्शी उपन्यास नहीं है ? क्या कोएडीसी ने 'डिसग्री' जैसे उपन्यास नहीं लिखे हैं? यह सच है कि होमर से कज़ानजाकिस, टॉल्स्टॉय से गार्सिया मार्केज़ *(द हंड्रेड इयर्स ऑफ सोलीट्यूड)* और मारिया वर्गास *(द फिस्ट ऑफ द गोट)* के उपन्यासों में महाकाव्य की परंपरा मिलती है। वह भी मेरे विचारों से पूरी तरह सहमत हुए। मगर क्षणिक अनन्त के आह्वान के लिए दक्षता की आवश्यकता है। इसके लिए बहुत से लोगों ने पहले कोशिश की थी, मगर विफल रहे। कार्लो स्पेनिश उपन्यास के क्षेत्र में प्रसिद्ध कारवेंटस पुरस्कार से पुरस्कृत थे, अपने समग्र उपन्यास और अन्य रचनाओं के लिए। मैंने उनके नवीनतम उपन्यास के अंतिम मसौदे को पढ़ा था। हमने उस पर भी कुछ चर्चा की थी।

वह मेरी राय से सहमत थे कि उनका उपन्यास महत्वाकांक्षा पर आधारित एवं सामान्य स्पेनिश उपन्यासों के प्रवाह का व्यतिक्रम था। उपन्यास का नायक अजन्मा शिशु है। उपन्यास में नौ अध्याय हैं। बच्चे के गर्भ के नौ महीनों के लिए एक-एक अध्याय समर्पित है। *"यह एक अलग दृष्टिकोण से मैंने कथावस्तु के प्रवाह में मैक्सिको के विगत पांच सौ वर्षों के इतिहास को बहुत ही सूक्ष्म तरीके से प्रयोग में लाया है।"* एक हल्के स्वर में षड्यंत्रकारी की तरह वे कहने लगे, *"क्या हम सभी क्रिस्टोफर नहीं हैं? क्योंकि हमने अभी तक कोई जन्म नहीं लिया है। अभी तक हम इतिहास के अंधेरे से, माँ के गर्भ से पृथ्वी के विशाल आंगन पर नहीं आए हैं। उपन्यास में मैं कुछ कहना चाहता हूँ, मानो सपने में, हमारे इतिहास के साथ, हमारे पूर्वजों के साथ, हमारे माता-पिता के साथ और हमारे जीन्स के साथ है।"*

उन्होंने आगे कहा कि इस पुस्तक का औपचारिक विमोचन अमेरिका में कोलंबस के आगमन के पांच सौ वर्ष के अवसर पर किया जाएगा। मैंने उनसे पूछा, " क्या आपने क्रिस्टोफर कोलंबस के नाम पर उपन्यास के नायक का नाम तो नहीं रखा है?" मुस्कराते हुए उन्होंने मना किया और कहा कि यह केवल संयोगवश है।

मैंने उन्हें अंग्रेजी में अनूदित मेरा एक कविता-संग्रह और *भारतीय आदिवासियों की मौखिक कविताएं* भेंट किया था। बाद वाला संकलन मेरे द्वारा अनूदित एवं संपादित था, जिसका शीर्षक *'द अवेकन्ड विंड'* था। जिसमें आदिवासी जीवन का सार्वभौमिक दृष्टिकोण, व्यक्ति, समूह, पूर्वज, प्रकृति, देवता सभी को याद करते हुए एज़्टेक, इंका और पूर्व संस्कृतियों की इतिवृत दर्शाया गया था।उनकी जीवन-शैली में निर्बाध शांति की तलाश के महत्व, परिवार और गांव की बड़ी सत्ता जो सीमित व्यक्तिगत सत्ता को मजबूत बनाती है, मौत के प्रति स्वाभाविक दृष्टिकोण सभी उनके आराध्य आदर्श थे। उनका मानना था कि आधुनिक समाज को इनका पालन करना चाहिए। ये सब मेक्सिको की सांस्कृतिक परंपरा में भी ध्यान देने योग्य हैं। राजनीतिक-आर्थिक परिवर्तन की वजह से यह परंपरा निश्चित रूप से आहत हुई है। लेकिन यह अभी भी जीवित है और इसे जीवित रखना चाहिए। सन 1591 में हर्नेंड कॉर्टिज के आगमन और मेक्सिको के स्पेनिश साम्राज्य का हिस्सा बनने से पहले मेक्सिको उस उच्च सांस्कृतिक समुदाय का एक हिस्सा था, जिसमें चीन, जापान, भारत, इक्वाडोर, पेरू, पोलिनेशिया आदि शामिल थे। उस समय मेक्सिको का टियोतिहुआकन दुनिया का सबसे बड़ा शहर था और सबसे विकसित संस्कृति का प्रतीक भी। शहर में दो लाख लोगों की आबादी थी। जब मैंने उनसे मेरे टियोतिहुआकन जाने के बारे में बताया तो उन्होंने मेरे साथ इस बारे में व्यापक चर्चा की। सूर्य पिरामिड, चंद्र पिरामिड और दोनों के संयोग से अल्प-दैर्ध्य मृत्यु के रास्ते की बात, उत्खनन के बाद प्राचीन सभ्यता चर्चा के विषय बने। सूर्य-

आराधना के लिए एक जवान आदमी की बलि देकर उसका खून छाया और उजाला देखकर सूर्य भगवान को अर्पित किया जाता था। पृष्ठभूमि इस प्रकार थी: एज़्टेक के सामूहिक विचार थे कि सूर्य हमें रोज किरणें देते हैं। वह सभी अनाजों (विशेष रूप से मक्का, जो वहाँ पैदा होता था) के जनक हैं। वह हर सुबह उगते हैं और हर शाम को अस्त हो जाते हैं। लेकिन किरण बांटते-बांटते किसी दिन सूर्य किसी दिन बहुत कमजोर हो गया और कभी पूर्व में नहीं उगा तो हर जगह अंधेरा छा जाएगा और पृथ्वी पर जीवन असंभव हो जाएगा। कहीं ऐसी घटना नहीं घट जाए इसलिए, समुदाय के सबसे सबल युवक के खून से उन्हें तर्पण देना उचित है। सभी सूर्य पिरामिड के नीचे एकत्र होते हैं। पुजारी युवक के साथ शीर्ष पर इंतजार करता है। उगते हुए सूर्य को नरबलि देकर अपने कर्तव्य का पालन कर हर्षोल्लास के साथ वे लोग घर लौटते हैं।

उन्होंने मारिया स्तोत्र और आदिवासी लोगों की नर-बलि प्रथा के बारे में पढ़ा था।उन्होंने कहा, "वे लोग सूर्य को नरबलि देते थे और आपके कंध धरती को, बस फर्क इतना ही है।" जहां आज मैक्सिको है, वहाँ कभी टेनोचिट्लान शहर झील के बीचोबीच हुआ करता था। वहां सड़कें थीं। अच्छी संचार सुविधा थी। वे मानते थे कि उनका शहर पृथ्वी के केंद्र में स्थित है। उनका यह भी विश्वास था कि स्पेन के कार्टेज की साजिश से वह सभ्यता नष्ट हो गई थी। स्पेनिश सभ्यता, एज़्टेक सभ्यता और आदिम आदिवासी प्राचीन सभ्यताओं के खंडहरों पर स्थापना की गई थी उस शहर की, दुनिया का सबसे बडे शहर पुराने मैक्सिको सिटी की तरह, वह आज उस झील में दफन है। शहर पहाड़ियों से घिरा हुआ था। इसलिए शहर के धुआं-धूल निष्कासित नहीं हो पाते थे,लोगों की आँखें जलती थीं, रोग फैल रहे थे। कार्लो ने मज़ाक में कहा, "मैंने इस शहर का नाम 'मेक-सिक-ओ-सिटी' रखा है। अर्थात् यह सिटी बीमार करती है। जब मैं शहर से दूर रहता हूं, तो मुझे घर की याद आने लगती है,मगर लोगों की अपसंस्कृति और व्यवसायी मनोभाव मुझे दुखी करते हैं।"

हमारी प्राचीन परंपरा अब नई जिंदगी की तलाश कर रही है। अग्निस्नान और जल-स्नान द्वारा धूल-धूसरित स्थिति उबरकर प्राणदायी संस्कृति में बदल जाएगी। कार्लो की याद आने से उनके लिए लिखी गई हमारे प्रसिद्ध कवि-मित्र ओक्टेवियो पाज़ की कविता '*कॉनकॉर्ड*' याद आ जाती है:-

पानी के ऊपर
तालपेड़ों के नीचे
सड़कों पर पवन ,
प्रशांत बाल्टी से
झरने का काला पानी
नीचे गिरता हुआ
पेड़ों तक और
होठों तक उठता आकाश।

वे इससे सहमत हैं कि नई सभ्यता निश्चित रूप से किसी दिन आएगी, पुरानी जमीन के आकाश ऊपर उठकर होंठों तक पहुँच जाएगा।

10. नाबोकोव और नीली तितली

"सात साल की उम्र से आयताकार तस्वीर वाले सूर्य-प्रकाश के बारे में मेरा जो कुछ अनुभव है, उसमें केवल एक ही जुनून हावी था। यदि सुबह मेरी पहली नज़र सूर्य पर पड़ती थी, तो मेरे मन में मेरा पहला विचार आता था उन तितलियों के बारे में, जो उसके लिए खतरा हो सकती थी। "

उपरोक्त कुछ पंक्तियाँ प्रसिद्ध रूसी उपन्यासकार व्लादिमीर नाबोकोव की आत्मकथा *'स्पीक मेमोरी'* से ली गई हैं। मुझे यकीन है कि नाबाकोव के मेरे जैसे कई अन्य पाठकों और प्रशंसकों को यह नहीं पता होगा कि लोलिता और कई अन्य उल्लेखनीय रचनाओं के सर्जक नाबोकोव का तितलियों के लिए प्रति अपरिमित अमर आकर्षण था। यह आकर्षण खींच लाया उन्हें बीसवीं सदी के चौथे दशक में छह वर्षों तक हार्वर्ड के *म्यूजियम ऑफ कम्पेरेटिव जूलॉजी* में अनुसंधान सहयोगी के रूप में काम करने के लिए। जीव वैज्ञानिकों में अलग-अलग राय थी, उनके तितलियों के संग्रहण, वर्गीकरण, विश्लेषण के तरीकों और उनके बारे में लिखे गए अनुसंधान लेखों के बारे में । कुछ जीव वैज्ञानिक उन्हें उच्च कोटि के विज्ञान-सम्मत और शोध-आधारित आलेख मानते हैं। तो कुछ उन्हें शौकिया काम का दर्जा देते हैं। दो प्रख्यात शोधकर्ताओं ने 1981-82 में नाबोकोव के अनुसंधान क्षेत्र को 'पथ-प्रदर्शक' मानते हुए उनके सम्मानार्थ नीली तितलियों की एक विशेष प्रजाति का नाम 'मेडेलिनिया लोलिता' दिया।

यूनिवर्सिटी के *म्यूजियम ऑफ कम्पेरेटिव जूलॉजी* में मेरे एक साल प्रवास के दौरान "नाबोकोव की तितलियां" नामक एक बड़ी प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था जिसमें उनके संग्रहीत अध्ययन,गवेषणा,वर्गीकरण के नमूने प्रदर्शित किए गए थे। उनके सभी शोध लेख भी वहाँ रखे गए थे। यह प्रदर्शनी मेरे लिए एक यादगार थी।

अपनी आत्मकथा में, नाबोकोव ने कहा है, *"मैंने बहुत सारे देशों की अलग-अलग जलवायु में विभिन्न परिधानों में जैसे कभी नाविक की टोपी तो कभी निकर पहने सुंदर बच्चे तो फ्लैनेल बैग और सिर पर बेरेट पहने सर्वदेशीय और देश निष्कासित पतले आदमी तो कभी टोपीविहीन हाफपैंट पहने मोटे बूढ़े आदमी के रूप में तितलियों का अन्वेषण किया है।"*

मैंने अपने आईएससी के दौरान चौथे वैकल्पिक विषय के रूप में जूलॉजी का अध्ययन किया था। लेकिन मैंने एक प्राणी के रूप में तितली का अध्ययन नहीं किया था। मैं बचपन से तितलियों को प्यार करता था और वे अपने रंग-उड़ान के साथ मेरी कविताओं में आई थीं। समझ में नहीं आने के बावजूद भी मैंने प्रदर्शनी के बीस शोध पत्रों पर अपनी निगाहें डालीं। जीव-विज्ञान प्रयोगशाला में आईएससी छात्र के रूप में 1953-55 की प्रेक्टिकल क्लास में मैंने मेंढक को इधर-उधर काट दिया तो ट्रे का पानी रक्ताक्त हो गया था और ईसा मसीह की तरह क्रूस पर चढ़े मेंढक के प्रति मेरे मन में दया-भाव आ रहा था।यह सारा दृश्य मेरे स्मृति-पटल पर तरोताजा हो गया था। मुझे रेवेन्सा कॉलेज के जूलॉजी के प्रोफेसर बसंत कुमार बेहुरिया भी बहुत याद आने लगे।

प्रदर्शनी ने मुझे नाबोकोव की बहुत पहले पढ़ी हुई एक कविता याद दिला दी। कविता का शीर्षक था 'ऑन डिस्कवरिंग ए बटरफ्लाई'। कविता इस प्रकार थी:-

The features it combines mark it
as new to science, shape and shade the special tingle
akin to moonlight, tempering its blue
the dingy underside, the checkered fringle
I found it and named it, being versed
in taxonomic Latin
I thus became
godfather to an insect and its first
describer — and I want no other fame."

मुझे इस कविता ने मंत्रमुग्ध कर दिया था। मुझे यह कविता विचित्र लग रही थी।
" मुझे कुछ भी यश नहीं चाहिए।चाँदनी की तरह विशिष्ट आभा खेल रही थी उसके पेट के नीचे।"

क्या सचमुच में यह तितली-प्रेमी लेखक कह सके कि तितली के सिवाय यश नहीं चाहिए ? अन्य लोगों की तरह मैंने भी बचपन में कई रंग-बिरंगी तितलियों को देखा था। मैं उनके पीछे भागता था और उनके जीवन के विभिन्न चरणों को नजदीक से देखता था। नाबोकोव की कविता पढ़ने के बाद मैंने नीली तितलियों को नए दृष्टिकोण से देखा। मैं इस मायने में बहुत भाग्यशाली था कि मेरे भुवनेश्वर के सत्यनगर घर में कुछ नीली तितलियां (निश्चित रूप से कम से कम एक या दो) दिखाई पड जाती थीं। मुझे अपने लॉन पर एक बार उनका एक नीला पंख मिला था, जो किसी अप्सरा के पंख की तरह था। मैंने अकारण घर के लड़के को डांटा , "तो तुमने इस तितली को मार डाला!" विनम्र तरीके से सिर हिलाने के सिवाय वह क्या कर सकता था! मैंने उस नीले पंख को उठाकर अपनी डायरी में रखा। वह अभी भी डायरी में है। कई बार पन्ने टटोलते समय वह पंख मिलता है तो मेरी स्मृतियाँ आसमान में उड़ने लगती हैं।

हार्वर्ड में अनुसंधान सहयोगी के रूप में अपनी कार्यकाल पूरा करने के बाद, नाबोकोव वेलेस्ले कॉलेज में अंशकालिक प्रोफेसर बने। बाद में वे कॉर्नेल विश्वविद्यालय में पूर्णकालिक प्रोफेसर बन गए। हालांकि, उन्होंने सन 1977 में अपनी मृत्यु तक तितलियों पर अनुसंधान कार्य जारी रखा।

प्रदर्शनी में मुझे नाबोकोव की रचनाएं, समालोचनाएं और पत्र आकर्षित कर रहे थे। आलोचक लेखक जॉन वायेन ने 21.12.59 के 'न्यू रिपब्लिक' में लिखा था: "वास्तविक जीवन में श्री नाबोकोव एक प्रसिद्ध लेपिडोपिस्टिस्ट (तितली विशेषज्ञ का वैज्ञानिक नाम) हैं और उन्होंने उनसे एक आदत सीखी है। वे एक सीधी रेखा में उड़ नहीं सकते हैं । तितली के जीवन का उद्देश्य आपके जितना गंभीर हैं,उतना मेरे लिए भी, मगर इसकी सुरक्षात्मक उड़ान को भोलेपन कहकर निंदा की जाती है।" वेन ने नाबोकोव की रचनाओं की भाषा-शैली में बहु-रैखिक (रैखिक नहीं) और वक्र-रैखिक गतिशीलता को निश्चय देखा होगा, तभी ऐसी टिप्पणी दी है।

5 जुलाई, 1977 को नाबोकोव के निधन पर 'टाइम्स' में आया था ,

"उनकी मुख्य आवर्ती कथावस्तु मनुष्य का विषय है, जो अपने पर्यावरण से अलग होकर संतुष्टि प्राप्त करता है, वास्तविक प्रसन्नता के रूप में, किसी दृढ़ खोज में, चाहे वह कला हो, शतरंज हो, साहसिक यौनता या

आश्चर्य की बात क्यों न हो .... " शायद नीले रंग की तितली इस आनंद की आखिरी खोज थी- "आश्चर्य की क्षणिक प्रस्तुति।"9 नंबर चंसी स्ट्रीट

नाबोकोव हार्वर्ड में क्रेगि सर्कल के अलावा 9 नंबर चंसी स्ट्रीट में भी रहे थे। 9 नंबर चंसी स्ट्रीट मेरे 7 कॉनकॉर्ड एवेन्यू के निवास से पांच मिनट की पैदल दूरी पर थी। मैं अक्सर वहाँ अपने दोस्त विजय मिश्रा से मिलने जाता था।

नाबोकोव ने सन 1945 में हार्वर्ड से अपनी बहन ऐलेना सिकारोस्की के नाम कई पत्र लिखे थे। पत्रों के क्रमांक भी लिखे गए थे। 26 वें पत्र का एक अंश उनकी भाषा में: "प्रिय ऐलेना, तुमने मुझे अपनी दिनचर्या के बारे में पूछा। मैं आठ या आठ बजे के आस-पास जागता हूं, और हमेशा एक आवाज सुनकर जैसे मित्युशेंका (नाबोकोव का पुत्र) बाथरूम जा रहा हो। कहीं स्कूल के लिए देर न हो जाए, सोचकर वह विषादग्रस्त हो जाता है। 8.40 बजे स्कूल बस उसे मोड से उठा लेती है। वेरा (नाबोकोव की पत्नी) और मैं खिड़की से उसे जाते हुए देखते हैं। वह मोड पर इधर-उधर देखता है, बहुत दुबला-पतला लग रहा है, धूसर सूट पहन रखा है। सिर पर लाल जॉकी कैप और कंधे पर झूल रहा है नीले रंग का स्कूली बैग। लगभग नौ-साढ़े नौ बजे मैं भी अपने दोपहर का भोजन (दूध फ्लास्क और दो सैंडविच) लेकर बाहर निकल जाता हूँ। पंद्रह मिनट में संग्रहालय आता है (हम हार्वर्ड के उपनगर में रहते हैं), फिर विश्वविद्यालय टेनिस कोर्ट...... फिर मेरे संग्रहालय में - पूरे अमेरिका में प्रसिद्ध (और जैसा यूरोप में हुआ करता था) *म्यूजियम ऑफ कम्पेरेटिव ज़ूलॉजी* , हार्वर्ड विश्वविद्यालय का वह हिस्सा, जो मेरा नियोक्ता है। मेरी प्रयोगशाला 4 वीं मंजिल के आधे हिस्से में फैली है। इसमें से ज्यादातर तितलियों की स्लाइडिंग अलमारियों की पंक्तियाँ हैं। मैं इस शानदार संग्रह का संरक्षक हूं। हमारे पास सन 1840 से आज तक की दुनिया भर की तितलियाँ हैं। मैं अपना व्यक्तिगत शोध कर रहा हूं, और दो साल से अधिक समय के अमेरिकी 'ब्लूज़' पर मेरा काम टुकडों-टुकड़ों में प्रकाशित हुआ है, मुझे काम करने में मजा आ रहा है,लेकिन मैं पूरी तरह से थक जा रहा हूँ। मेरी आँखें खराब हो गई हैं और मैंने मोटे-मोटे नंबर वाले चश्मे पहन लिए हैं।"

उसके बाद उन्होंने लिखा," माइक्रोस्कोप के चमत्कारिक क्रिस्टलीय दुनिया में, जहां नीरवता का राज्य है, अपने ही क्षितिज से घिरे, एक अंधेरे सफेद में।"

" रॉकी पर्वत में हमारी यात्रा के दौरान यूटा (नाबोकोव के बेटे) मेरे साथ शिकार पर चलता है, मगर उसके पास तितलियों के प्रति कोई जुनून नहीं है।"

"लगभग पांच बजे सर्दी के नीले अंधेरे से पहले मैं घर आ जाता हूं, शाम के अखबार पढ़ने के समय। स्कूल से मित्युशेंका (नाबोकोव के बेटे) भी इसी समय घर आता है।"

नाबोकोव के बारे में दो और पंक्तियां। उन्होंने स्विट्जरलैंड से दो पत्र लिखे थे। पहला, 6 जनवरी,1969 को अपने मित्र फ्रैंक टेलर को लिखा था और दूसरा, 15 अप्रैल, 1975 को अपनी पत्नी वेरा को (अपनी मृत्यु से दो साल पहले)। उन्होंने पहले पत्र के पहले पेज पर तितली का स्केच बनाया था और दूसरे पत्र के अंत में, जो दूसरे प्रकार की तितली थी।

11.जॉन केनेथ गालब्रेथ : सामूहिक दारिद्र्य का स्वरूप और धनाढ्य समाज

मैंने हाल ही में सुना कि प्रसिद्ध हार्वर्ड अर्थशास्त्री जॉन केनेथ गालब्रेथ का सत्तानवें साल की उम्र में निधन हो गया है। मेरी स्मृति मुझे 1987-88 के हार्वर्ड यूनिवर्सिटी की ओर ले गई, जहां मैंने एक साल बिताया था। उस समय वे यूनिवर्सिटी के इकोनॉमिक्स डिपार्टमेंट में एमेरिटस प्रोफेसर थे और मैं उनसे लिटवार हॉल के रूम नंबर 207 में दो-तीन बार मिला था। मैंने उनके घर 30, फ्रांसिस एवेन्यू में कई बार मुलाकात भी की थी, जो देश-विदेश के अर्थशास्त्रियों, आर्थिक समाचारों के विश्लेषकों, छात्रों और अमेरिका और अन्य देशों के प्रतिष्ठित लोगों के लिए एक आकर्षक जगह थी। मैं अक्सर अर्थशास्त्र के वरिष्ठ प्रोफेसर स्टीफन मार्गलिन से मिलने लिटवार हॉल में जाया करता था। जिनका कमरा गालब्रेथ के कमरे के पास था, जो अधिकतर बंद रहता था। मैंने सुना था कि वे वहां बहुत कम आते हैं । इसलिए जितनी जल्दी हो सके मैं उनसे मिलना चाहता था। मैं पहले से ही उनकी पुस्तकें पढ़ चुका था। वे भारत में अमेरिका के राजदूत थे और जॉन एफ॰ कैनेडी उनका बहुत सम्मान करते थे।

मैंने उनके कमरे में उनसे मिलने की इच्छा व्यक्त करने छोटा पत्र छोड़ दिया था। पत्र में मैंने अपना पता और संक्षिप्त परिचय लिख दिया था। चार दिन बाद मुझे उनका पत्र मिला। वे एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका द्वारा पुरस्कृत होने के लिए मुख्यालय से बाहर जा रहे थे। उन्होंने मुझे अपने पत्र में लिखा है कि जब वे मुख्यालय लौटेंगे, तब उनसे संपर्क करें। वास्तव में, वापस आते ही उन्होंने मुझे अपने निवास पर मिलने के लिए समय दिया।

विश्वकोश ब्रिटैनिका के विशेष पुरस्कार की खबर स्थानीय अख़बार बोस्टन ग्लोब और राष्ट्रीय समाचार पत्रों जैसे न्यूयार्क टाइम्स और वाशिंगटन पोस्ट तथा हार्वर्ड यूनिवर्सिटी गैजेट में प्रकाशित हुई थी। यह पुरस्कार उन्हें व्यापक स्तर पर सर्व-साधारण के लिए आर्थिक सिद्धांत विषय पर उनके काम के लिए दिया गया था।

वह हार्वर्ड के विद्वानों और राष्ट्रीय स्तर पर उन्हें 'कैम्ब्रिज का कैसंड्रा' कहा जाता था। उनकी अद्यतन प्रकाशित पुस्तक का नाम था, 'परिप्रेक्ष्य में अर्थशास्त्र' । मुझे लगता है कि इस विश्व प्रसिद्ध अर्थशास्त्री के बारे में संक्षिप्त में कुछ कहना ठीक रहेगा।उनका जन्म 15 अक्टूबर 1908 को कनाड़ा के ओन्टारियो प्रांत में हुआ था। यह यू.एस.ए. और कनाड़ा की सीमा पर स्थित है। वह लंबे समय तक अमेरिकी आर्थिक संघ के अध्यक्ष थे। वह कई वर्षों तक अमेरिकी राष्ट्रपति के औपचारिक और अनौपचारिक सलाहकार थे। वह दुनिया भर के कई विश्वविद्यालयों में एक विजिटिंग प्रोफेसर थे। कई विश्वविद्यालयों ने उन्हें मानद डिग्री प्रदान की थी। वह राष्ट्रपति कैनेडी के कार्यकाल के दौरान भारत में अमेरिका के राजदूत थे। उन्होंने कई किताबें लिखी हैं। वे अर्थशास्त्र की कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय समितियों के सदस्य थे। उन्होंने लंबे समय तक हार्वर्ड विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य किया है। हार्वर्ड में पॉल एम॰ वारबर्ग प्रोफेसर के रूप में थे।उन्होंने मुख्य रूप से चार प्रमुख विश्वविद्यालयों में पढ़ाया था। जिनमें स्थानीय गुलेफ़ विश्वविद्यालय, कैलिफोर्निया

विश्वविद्यालय, इंग्लैंड के कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय और अंत में हार्वर्ड में शामिल थे। उनकी चर्चित पुस्तकों में थी 'द एफीलुएंट सोसाइटी', 'द ग्रेट क्रैश', 'द कल्चर ऑफ़ द कंटेनमेंट', 'द नेचर ऑफ द मास पोवर्टी' आदि।

वे एडम स्मिथ के एक बड़े प्रशंसक थे। उन्हें स्मिथ की 'थ्योरी ऑफ मॉरल सेंटिमेंट' पढ़ने में आनंद आता था। उन्होंने अर्थशास्त्र में नैतिकता के बारे में एक लंबा निबंध लिखा था (अमर्त्य सेन के लेखन में भी परिलक्षित होता है), जो मुझे बहुत अच्छा लगा था। उन्होंने इस निबंध में लिखा था कि समकालीन आत्म-स्वार्थ अथवा सुविधाओं को ध्यान में रखकर बहुत समय से आर्थिक नीतियां बनाई जा रही हैं, जिनकी करताली से सराहना की जाती है, मगर वास्तविकता के साथ उनका कोई संबंध नहीं होता है।

उन्होंने एक बार ऐडम स्मिथ के बारे में लिखा था कि उनके प्रशंसकों ने उनके प्रति सबसे ज्यादा अन्याय किया है, क्योंकि उनमें से बहुत से उन्हें ठीक से पढे भी नहीं थे।

गालब्रेथ ने समकालीन अर्थशास्त्र की गंभीर आलोचना की थी क्योंकि ज्यादातर लोकप्रियता और राजनीतिक लाभ के लिए उन्हें तैयार किया जाता है। उन्होंने ऐसे दृष्टिकोण और नीतियों को 'पारंपरिक ज्ञान' कहा। वास्तव में, उन्होंने खुद इस वाक्यांश को गढ़ा था और आजीवन इस पारंपरिक ज्ञान की आलोचना करते रहे थे।

अमेरिका की समकालीन आर्थिक नीतियों के संदर्भ में उनका मानना था कि धनिकों पर कम कर लगाकर आर्थिक विकास नहीं लाया जा सकता था। इस तरह की नीति उन लोगों द्वारा सराही जाती है, जिन्हें इससे लाभ होता है। लेकिन यह राष्ट्र के आर्थिक विकास के लिए अनुकूल नहीं है।

जिस दिन उन्होंने मुझे मिलने का समय दिया था, उसी समय मैं उनके घर पहुंचा। उनका घर मेरे एपार्टमेंट से ज्यादा दूर नहीं था। फिर भी मैं निर्धारित समय से पहले वहाँ पहुंच गया। कॉलिंग-बेल बजाने पर एक आदमी मुझे उनके ड्राइंग रूम   के भीतर ले गया। उनका अध्ययन कक्ष ड्राइंग रूम से जुड़ा था, जिसमें कई रैक किताबें थीं। वह आदमी एशियाई लग रहा था।   मैंने उसका परिचय पूछा। मुझे आश्चर्य हुआ, जब उस आदमी ने मुझसे हिंदी में उलटा प्रश्न पूछा, भारत में मेरा घर कहाँ है? बाद में पता चला कि गालब्रेथ के दिल्ली प्रवास के समय से उनके साथ है। वह कहने लगा, " साहिब मेरे ऊपर इतना भरोसा करते हैं और मेरे ऊपर पूरी तरह से निर्भर है। मैं साहिब के परिवार के सदस्य की तरह हूँ। मैं उन्हें छोड़कर और कहीं जाने का सपने में भी नहीं सोच सकता।मैंने अपने जीवन में कभी भी ऐसा अच्छा इंसान नहीं देखा।"

उनके घर की दीवारें भारत की तस्वीरों और कला वस्तुओं से भरी हुई थीं। चारों तरफ भारतीयता की महक थी । मुझे तो पहले अपना ही घर लगा। दीर्घकाय गालब्रेथ ने ड्राइंग रूम   में प्रवेश करते ही मुझे पूछा, " चाय लोगे या कॉफी?' मैंने कहा, "चाय " तो उन्होंने कहा," मुझे भी चाय ज्यादा पसंद हैं।" मैंने उन्हें पुरी के रेलवे होटल (जब अमेरिकी राजदूत के रूप में पुरी गए थे) के विशेष रूप से उनके लिए किए गए सात फुट बिस्तर के बारे में याद दिलाया। मैंने उन्हें बताया कि उस बिस्तर को अभी भी एक स्मृति-चिन्ह के रूप में होटल में रखा गया है। हँसते हुए उन्होंने कहा, "जब मैं होटल छोड़ रहा था, तो होटल वाले मुझसे उस बिस्तर को नई दिल्ली भेजने के लिए पूछह रहे थे। मैंने उत्तर दिया कि क्या आप लोग नहीं चाहते कि मैं फिर से पुरी आऊँ। तब जाकर मामला खत्म हुआ था।"

उन्होंने मुझे हार्वर्ड की असहनीय सर्दी, शून्य से नीचे तापमान और हाड़कंपाती उत्तरी ठंडी हवा के बारे में पूछा। वे कहने लगे , "तुम्हें बहुत कष्ट हो रहा होगा। क्योंकि ओड़िशा में सर्दियों का मौसम लगभग नहीं के बराबर है।" उन्होंने मुझे पहले पांच मिनट में सहज कर दिया। उन्होंने दिल्ली में अपने प्रवास, नेहरू के संबंध और ओड़िशा सहित भारत के आस-पास की यात्राओं के बारे में बातचीत की। उन्होंने कहा, "आई जस्ट लव इंडिया एंड चेरिश माय मेमोरिज ऑफ इंडिया।"

हमने अमेरिकी अर्थव्यवस्था, फेडरल बैंक, राष्ट्रपति केनेडी के कार्यकाल, नई दिल्ली में श्रीमती गांधी के साथ उनकी मुलाकात, उनकी पुस्तकें आदि के बारे में कई विषयों पर चर्चा की। मैं कई मामलों में उनकी राय जानना चाहता था, लेकिन मुझे एहसास हुआ कि यह हमारी पहली बैठक में संभव नहीं होगा। मेरा बायोडाटा पहले से ही जानने के कारण भारत के आर्थिक विकास, सरकारी नीतियों, सामूहिक दारिद्रय, गरीबी रेखा आदि विषय पर पूछह ने के लिए उनके पास भी बहुत सारे सवाल थे। हर विषय पर इधर-उधर से सवाल पूछह रहे थे। मुझे लगा कि उन्हें हर विषय पर सम्यक ज्ञान है और वे ज्यादा जानने के लिए उत्सुक हैं। इस प्रकार मैंने इस बैठक में बहुत कुछ कहा। मैंने यह भी कहा था कि मैं अधिक समय के लिए फिर से मिलना चाहूंगा। उन्होंने स्वीकृति दे दी।

उन्होंने मेरे सवालों के बहुत ही उचित उत्तर दिए थे। उनकी आवाज गंभीर थी, उनके वाक्य नपे-तुले शब्दों और संयमित भाषा में गठित थे। उन्होंने कहा, "समग्र पुस्तक लेखन की तुलना में द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान कीमतों में नियंत्रण रखने के लिए नियुक्त कमेटी के अध्यक्ष के रूप में मेरा काम सबसे संतोषजनक और शायद सबसे महत्वपूर्ण है। इसकी तुलना में प्रथम विश्व युद्ध के समय फेडरल बैंक ने जो काम किए थे, वे काम बिलकुल संतोषजनक नहीं थे।"

मैंने देखा कि उनकी फेडरल बैंक और उसके नीति-निर्धारण प्रणाली के बारे में मजबूत राय थी। उन्होंने सामान्य तरीके से एलन ग्रीनस्पैन (फेडरल बैंक के प्रमुख) की प्रशंसा की। मगर उन्होंने यह भी कहा, "हमने उनके जैसी नाटकीयता कभी नहीं देखी।"

मैंने उनसे पूछा, “क्या आपने अमेरिकी सरकार को कई मुद्दों पर,विशेषकर निवेश संबंधित मुद्दों पर सलाह दी थी?” उन्होंने कहा, "मोटामोटी नहीं। कारण हर कोई अच्छी सलाह को भूल जाता है। मगर गलत सलाह रहती है और उनकी तारीफ की जाती है।"

उनके कहने के अंदाज से मुझे याद आ गया कि उनकी रचना-शैली की अद्भूत सादगी, सुंदरता और तीक्ष्णता है। अर्थशास्त्र जैसे कठिन विषय पर इतना स्पष्ट रूप से लिखा जा सकता है, यह जानकर समकालीन अर्थशास्त्री आश्चर्यचकित भी थे और ईर्ष्या भी करते थे।

'द एफीलुएंट सोसाइटी' उनकी बहुचर्चित किताब थी। जब मैंने उनसे इसके बारे में पूछा, तो उन्होंने उत्तर दिया, "आपने किताब में 'अवकाश के लिए आवंटित वाक्यांश' का प्रयोग देखा होगा। अभी का समय बहुत खराब हैं। अगर मैं इसे फिर से लिख सकता तो मैं उस किताब का नाम 'द डिप्रेस्ड इकोनॉमी' रखता। तो बहुत ज्यादा पुस्तक प्रेमियों के पास पहुंचती। अब इस पुस्तक की मांग नहीं है।"

उन्होंने आगे कहा," मैंने 'इकोनोमी इन पर्सपेक्टिव' पुस्तक में अर्थशास्त्र और राजनीति के उचित आत्मसात के बारे में चर्चा की है। रोज़गार को कम करने और मांग को कम करने के बीच तालमेल नहीं है।"

मैंने पूछा," मतलब क्या दोनों घटक एक-दूसरे के विपरीत हैं? मांग कम करने के लिए रोजगार का स्तर घटाना पड़ेगा? " उन्होंने कहा," मैं आपको दो चीजें बताऊंगा। सबसे पहले, हम केनेसियन अर्थशास्त्र में देख सकते हैं कि बेरोजगारी (जब मांग में वृद्धि हुई है) और मुद्रास्फीति (जब मांग कम करने के प्रयास किए गए हैं) एक-दूसरे से संबंधित होते हैं। दूसरी, हम दूसरे विश्व युद्ध के समय से ध्यान नहीं दे रहे हैं। राजनीतिक दृष्टिकोण से मांग बढ़ना अपेक्षाकृत आसान है, यह तब संभव है जब कर की दरें कम हो जाती हैं और सरकारी खर्च बढ़ जाते हैं। परंतु उसका उल्टा काम करना राजनैतिक दृष्टिकोण से बहुत ज्यादा कष्ट-साध्य है।"

उन्होंने एक और वाक्य पर बल दिया, 'समस्याएं आंशिक तौर पर अर्थशास्त्र की हैं तो आंशिक रूप से विचारधारा की। मैं जो सुझाव दे रहा हूं वह राजनीतिक रूप से मुश्किल है, लेकिन मजदूरी और कीमतों को बाजार में छोड़ने की मजबूत विचारधारात्मक प्रतिबद्धता भी है।"

उन्होंने अपनी पुस्तक 'द नेचर ऑफ द मास पोवर्टी' पर हस्ताक्षर कर मुझे देते हुए कहा, " यह मेरी पसंदीदा किताब है। अर्थशास्त्री के रूप में मेरी सबसे बड़ी विफलता यह है कि दुनिया में व्यापक गरीबी के कारणों और उपचारों का निदान करने में वे अक्षम थे।" उन्होंने विराम लेते हुए कहा, "यह पूरी तरह से अर्थशास्त्र की विफलता है। हमें इतने सारे सिद्धांतों का दावा करना चाहिए? हमें बहुत सलाह देनी चाहिए? हमें इतनी बड़ी-बड़ी बयानबाजी करनी चाहिए?"

फिर से रुककर कुछ कहने लगे," जब मेरी पत्नी ने तुलनात्मक साहित्य में पीएचडी कर रही थी तब उसने मुझे कहा कि कैनेस के सेमिनारों पर गुस्से से कहा था- तुलनात्मक साहित्य की 'जनरल थ्योरी' की प्रस्तावना में कैनेस ने कहा था कि कुछ ऐसे अन्य विषय भी हैं, जिसके बारे में उन्होंने अच्छी तरह से सोचा नहीं है।प्रस्तावना पढ़ने के बाद मैंने किताब बंद कर दी और निर्णय लिया कि कैनेस के इस विषय पर सोचने के बाद ही मैं इसे पढ़ूँगी।"

मैं गालब्रेथ के हास्य-विनोद के बारे में जानता था और मुझे अच्छा लगता था। मैंने उनकी पुस्तक 'चाइना पैसेज' की दो घटनाओं के बारे में याद दिलाया।तीन सदस्यीय आर्थिक प्रतिनिधिमंडल के प्रमुख के रूप में चीनी सरकार के निमंत्रण पर गालब्रेथ बीजिंग गए हुए थे। उन्होंने लिखा, "मैंने देखा है कि हमें हवाई अड्डे से होटल तक ले जाने के लिए आया हुआ आदमी बार-बार मुझे सिर से पाँव तक देख रहा था। फिर अपनी छोटी कार की तरफ उदास आँखों से देख रहा था। उसके दुख को दूर करने के लिए मैंने तुरन्त कहा, 'आई एस्योर यू आई एम क्वाइट कोलेप्सेब्ल।' मैंने उन्हें 'चाइना पैसेज' की एक और घटना याद दिलाई। चीन की यात्रा के दौरान वह बीमार हो गए थे। एक चीनी डॉक्टर उन्हें देखने आया और उनसे कई सवाल पूछे। जैसे गर्म चीजें अच्छी लगती हैं या ठंडी? कौन-सी करवट सोना अच्छा लगता है? इत्यादि। सब-कुछ सुनने के बाद उसने मुझे आश्वस्त किया कि मैं बच जाऊंगा। इस घटना को याद कर वह हंसते हुए कहने लगे, "तुम्हारी याददाश्त बहुत तेज है।" कई अमेरिकी राष्ट्रपति रूजवेल्ट से लेकर कैनेडी तक विशिष्ट मुद्दों पर गालब्रेथ की सलाह मांगते थे। उन्होंने जेएफके के बारे में कहा, "शुरू में, वह समस्या संबन्धित समाधान के बारे में फोन से पूछह ते थे। बाद

में पूछह ते कि मैं क्या कर रहा हूं, मैं क्या देखता हूँ, भारत के बारे में क्या सोचता हूँ। अंत में, न तो उन्होंने मुझे फोन किया और न ही मैंने। उसके बाद हम दोनों ने सुरक्षित दूरी बना ली।"

उनके साथ किताबों से भरे उनके ड्राइंग रूम में एक घंटा बीत चुका था। उनके स्टेनो ने उन्हें याद दिलाया कि एक मैक्सिकन पत्रकार उनकी पांच से सात मिनट से प्रतीक्षा कर रहा है। जैसे ही मैं उठना चाह रहा था, उन्होंने मुझे रोक दिया, "एक मिनट और।" वह अंदर गए और वापस लौटे एक किताब के साथ। हस्ताक्षर कर वह किताब मुझे दी। शीर्षक था 'द स्कॉच'। हँसते हुए कहने लगे, "इस किताब का व्हिस्की से कोई संबंध नहीं है।यह मेरे जीवन की वह कहानी है, जब तक विश्वविद्यालय में मेरा आगमन नहीं हुआ था। कनाड़ाई हमें इसी नाम से बुलाते थे। 'स्वांत सुखाय' के मैंने यह किताब लिखी थी। यह अर्थशास्त्र की किताब नहीं है।"

एक दिन फिर आऊँगा, कहकर मैं उनके घर (30, फ्रांसिस एवेन्यू) से रवाना हुआ।

12. अमर्त्य सेन: कल्याण विकास अर्थशास्त्र के नए क्षितिज और स्टीव मार्गलिन

स्टीव मार्गलिन अमेरिकी अर्थशास्त्री के रूप में चिर-परिचित नाम है।उन्होंने ऑर्गेनाइज़ेशन ऑफ कोपरेशन एंड डेवलपमेंट (ओईसीडी) के लिए कई योजनाएं तैयार की हैं। विभिन्न देशों में उन्हें लागू करवाकर आर्थिक विकास के नए-नए रास्ते प्रशस्त किए हैं। उनका कमरा लिटवार हॉल में गालब्रेथ के कमरे के पास था। गालब्रेथ और मार्गलिन एक-दूसरे की प्रशंसा करते नहीं थकते थे।

स्टीव मार्गलिन विश्व बैंक द्वारा भारत में सिंचाई के क्षेत्र की कई परियोजनाओं की मार्गदर्शक एवं जनक हैं। वे माइक्रो-इकोनॉमिक्स पर आधारित नई परियोजनाएं तैयार कर कार्यान्वयन करवाने में सफल हुए हैं। इस संबंध में उनका ज्ञान विश्व बैंक और ओईसीडी द्वारा अत्यधिक सराहा गया है। ओईसीडी के लिए उन्होंने कई तथ्य-आधारित दस्तावेज तैयार किए हैं।

वह लंबे समय से मेरे निजी दोस्त हैं। उस समय मैं योजना आयोग के विशेष सचिव के रूप में जल संसाधन प्रभाग का कार्य देख रहा था। विश्व बैंक के माध्यम से हम एक-दूसरे के करीब आए। उन्होंने विश्व बैंक की टीम के सदस्य बतौर कई बार सिंचाई (विश्व बैंक द्वारा वित्त पोषित) से संबंधित योजना के कार्य का निरीक्षण किया था।

मेरे हार्वर्ड में प्रवास के समय स्टीव *'डोमिनेटिंग नॉलेज'* नामक पुस्तक का संपादन कर रहे थे। इस संकलन में वे अपने निबंध में इस तथ्य पर बल दे रहे थे कि अनेक अर्थव्यवस्थाओं में निजी आय महत्वपूर्ण उत्स नहीं है। कभी-कभी उसके साथ जड़ित रहती है समुदाय के प्रति सामूहिक जिम्मेदारी और कभी-कभी समुदाय के ऊपर अधिक शक्ति के अस्तित्व में दृढ़ विश्वास। निबंध का नाम था 'म्युचुअल रिलेशनशिप ऑफ टेक्ने एंड एपिस्टेम-मैंने जमेंट एंड कॉन्फ्लिक्ट'। निबंध मुख्यतः ओड़िशा के नूआपाटना के बुनकरों पर आधारित था। स्टीव ने व्यापार के प्रति बुनकरों के दृष्टिकोण, उनके सामाजिक संबंधों और धार्मिक मान्यताओं के बारे में अध्ययन करने के लिए बहुत बार नूआपाटना आए थे। उनके निबंध की मुख्य बात थी कि प्रौद्योगिकी के उदय, विकास और व्यावहारिक क्षेत्र में इसका इस्तेमाल व्यक्ति, समाज और विश्वास की अनदेखी करके नहीं किया जा सकता है। उन्होंने नूआपाटना के बुनकरों का उदाहरण दिया, जो अपने ताँतों (चरखों) को भगवान मानते हैं, वे अपने परिवार के पालन-पोषण में सहायक बुनाई-कला के अस्तित्व को बड़े वरदान के रूप में मानते हैं।

स्टीव ने नूआपाटना से एक छोटी किताब खरीदी,जिसमें बुनकरों की अपने कार्यों में वस्त्र-चयन पद्धति में सर्वोच्च देवता को आह्वान करने वाली प्रार्थना लिपिबद्ध थी। यह विश्वास से संबंधित है, जिसने व्यक्ति और समुदाय के व्यावहारिक ज्ञान,कर्म-कौशल, आर्थिक दृष्टिकोण सभी को प्रभावित

किया है। यह सब विश्वास, ज्ञान, व्यावहारिक दृष्टिकोण, सामाजिक संबंध और अपने से वृहत्तर स्थिति के आह्वान से मिलकर बनता है।सामग्रिक रूप से, उन्होंने इसे एपिस्टेम कहा,जो तकनीकी(टेक्ने) से संबन्धित दूसरा पक्ष है। जब तक यह बात समझ में नहीं आएगी,तब तक उत्पादन प्रक्रिया को सही ढंग से समझा नहीं जा सकता है। उन्होंने अपने निबंध को अंतिम रूप देने के बाद मुझे अपनी लिखित राय देने का अनुरोध किया था और मैंने वैसा ही किया। पुस्तक प्रकाशित होने पर निबंध की शुरुआत में उन्होंने मेरी राय का स्पष्ट उल्लेख किया था। मुझे हार्वर्ड से लौटने के दो साल बाद अर्थात् सन 1990 में वह पुस्तक मिली। स्टीव इस किताब में निम्न पंक्तियाँ लिखकर मुझे भेजी थी: ' सीताकान्त के लिए, जो सांख्य और योग का समान समानता के साथ अभ्यास करता है' पुस्तक में शामिल सभी निबंध सामूहिक रूप से विकास अर्थशास्त्र के कई नए क्षितिज खोलते हैं। इस पुस्तक का विशेष रूप से दुनिया के विकास अर्थशास्त्रियों ने भरपूर स्वागत किया।

मेरे प्रवास के दौरान अमर्त्य सेन कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी ऑफ इंग्लैंड से हार्वर्ड में लामोंट प्रोफेसर के रूप में आए। उन्हें अर्थशास्त्र और दर्शन विभाग में प्रोफेसर नियुक्त किया गया था। उन्होंने अर्थशास्त्र में नैतिकता पर कई महत्वपूर्ण पुस्तकें और निबंध लिखे हैं। दोनों स्टीव और मैं उनकी नियुक्ति से बहुत खुश थे। कारण विश्वविद्यालय में ऐसी दोहरी नियुक्ति मिलना बहुत दुर्लभ था।

श्री सेन के लिटवार हॉल में अपने कमरे में बैठने के बाद स्टीव एक बार मुझे उनके पास ले गए और मेरा उनसे परिचय करवाया। वे मेरी पूर्व नौकरियों, कैंब्रिज में मेरे एक साल प्रवास में विकास अर्थशास्त्र का अध्ययन और विकास के सामाजिक पहलुओं पर मेरी पीएच.डी॰ के काम के बारे में विस्तार से जानना चाहते थे।

मैं उनसे कई बार लिटवार हॉल में मिला था और कई विषयों पर चर्चा भी की थी।

उनकी पहल पर एक आलोचना गोष्ठी का गठन किया गया था। जिसका उद्देश्य दुनिया के विभिन्न जगहों के वास्तविक परिपेक्ष्य और उदाहरणों द्वारा नियमित रूप से विकास अर्थशास्त्र के बारे में चर्चा करना था। हर महीने की आखिरी शुक्रवार शाम को लिटवार हॉल के छोटे सम्मेलन कक्ष में गोष्ठी की बैठक करने का निर्णय लिया गया। इसमें शामिल होने का आमंत्रण पाकर मैं बहुत खुश हुआ था। श्री सेन, स्टीव, रिचर्ड हैरिस और तीन अन्य अर्थशास्त्र संकाय से, डेविड मेबरी-लुईस, नृतत्व विभाग के प्रमुख और अन्य तीन , केनेडी स्कूल ऑफ गवर्नमेंट से दो और मैसाचुसेट्स प्रौद्योगिकी संस्थान (एमआईटी) से तीन और बोस्टन विश्वविद्यालय से एक अर्थशास्त्री इस बैठक में भाग लेते थे। मुझे विशेष रूप से डेविड मेबरी-लुईस का निबंध याद है, जो अमेज़ॅन नदी के रेन-फॉरेस्ट के अंचलों में सड़कों के निर्माण और अन्य विकास प्रक्रियाओं के सामाजिक प्रभाव के बारे में था। मुझे भारत में अकाल के लंबे इतिहास के संदर्भ में अर्थशास्त्र और विकास के प्रयासों के विभिन्न पहलुओं पर श्री सेन का आख्यान भी याद है। मैं बड़े समुदाय के अंदर अवरुद्ध छोटे से आदिवासी समाज में विकास के प्रयासों के विभिन्न पहलुओं, विशेषकर उनकी सामाजिक स्थिति, शिक्षा और धार्मिक

विश्वासों के बारे में एक निबंध पढ़ चुका था। मैंने संथाल समाज का विशद अध्ययन किया था। मैंने अपने निबंध का शीर्षक रखा "विकास एवं रीति-रिवाज"।

हर महीने संगोष्ठी के समापन पर एक रात्रि-भोज का आयोजन किया जाता था, किसी प्रोफेसर के घर में या फ़ैकल्टी क्लब में। स्टीव हार्वर्ड में नहीं रहते थे। वह सप्ताहांत में दो सौ मील दूर अपने घर लौट जाते थे, क्योंकि उनकी पत्नी वहां के स्थानीय कॉलेज में पढ़ाती थीं।

अमर्त्य सेन ने अपने निबंध के प्रारम्भ में मैक्स लूचाड़ो का उद्धरण दिया था। यह इस प्रकार था: *"The people who make a difference are not the ones with credentials but the ones with the concern." (And the Angels Were Silent)*

अमर्त्य सेन के वक्तव्य का मूल था, विकास अर्थशास्त्र में मानव जिम्मेदारी प्रमुख है। यह केवल विकास ही नहीं बल्कि इसके पीछे वास्तविक समता है। यह केवल साम्य ही नहीं, बल्कि उस साम्य का गुणात्मक पहलू है। वे सशक्तिकरण के बारे में भी बोले। सशक्तिकरण अर्थात् आम आदमी को अपनी सामाजिक और आर्थिक स्थिति पर निर्णय लेने की स्वतंत्रता, शक्ति और सभी संभावित अवसरों को प्रदान करना है।

उन्होंने अक्सर चर्चा के दौरान कहा, "क्या अर्थशास्त्र डिस्मल साइंस बना रहेगा? क्या यह केवल गणितीय समीकरणों और आंकड़ों की थ्योरी तक सीमित रहेगी ? क्या यह केवल इकोनोमेट्रिक विश्लेषण में ही काम आती रहेगी, जो विशेषकर पश्चिमी अर्थव्यवस्थाओं के लिए व्यावहारिक उपयोगिता के कारण महत्वपूर्ण है, परंतु तीसरी दुनिया की दयनीय आर्थिक स्थिति, सामाजिक मूल्य, अकाल, भूखमरी, गरीबी रेखा और सरकारी मशीनरी की अक्षमता को समझने, निराकरण करने और इन समस्याओं को सुलझाने में यह बहुत उपयोगी नहीं है।

उस समय तक वैश्वीकरण के विचार ज़ोर नहीं पकड़े थे। अर्थशास्त्रियों को अभी तक इस विचार से बहकाया जाता है। लेकिन अमर्त्य सेन के अनुसार एक ओर बाजार अर्थशास्त्र की कमजोरियों को दूर करने और दूसरी ओर राज्य-नियंत्रित विकास कार्यक्रमों की अक्षमताओं को ध्यान में रखते हुए भविष्य में निर्णय लिए जाने चाहिए।

उनका मानना था कि अगर किसी को ठीक से 'चिंता' नहीं है, अगर कोई प्रेम और स्नेह नहीं है (आम आदमी के लिए, विशेषकर उपेक्षित हैं या निचले तबके वाले) तो अर्थशास्त्र की आंकड़े-आधारित सारी थ्योरी अर्थहीन हो जाएगी, जो अब तक होता आ रहा है और इस वजह से आर्थिक दृष्टिकोण से विकसित देशों और तीसरी दुनिया के बीच दूरियाँ बढ़ गई हैं। उनके और जीन ड्रेज द्वारा अकाल पर किए गए शोध ने अर्थशास्त्रियों की आँखें खोल दीं। अमर्त्य सेन की भाषा में, आज का सवाल बहुत विशिष्ट है: *"... सरकार के अधिक या कम होने का नहीं, बल्कि सुशासन का; सामाजिक सुरक्षा और सशक्तिकरण का सवाल है ।"*

यही वजह थी कि उन्होंने भारत में शिक्षा और स्वास्थ्य पर हो रहे अत्यंत कम खर्च की गंभीर आलोचना की थी। उन्होंने इन दोनों विभागों पर अधिक व्यय किए जाने की वकालत की थी।

उनका मानना है कि " अकाल भोजन की कमी के कारण नहीं, बल्कि प्रशासन की कमी के कारण पड़ते हैं।" अमर्त्य सेन के बारे में समकालीन अर्थशास्त्रियों के विचार ध्यान देने योग्य है।

" वे स्मिथ, रिकार्डो, मार्क्स, कैनेस और कालेकी जैसी ही लीग में हैं ... वे ऐसे मुद्दों पर काम करते हैं,जिन पर अर्थशास्त्र को काम करना चाहिए..... यह मानव दर्शन है जो डिस्मल साइंस की अंतरात्मा है।"

मुझे मालूम नहीं कि अर्थशास्त्र को डिस्मल साइंस क्यों कहा जाता है। लेकिन अमर्त्य से पहले अर्थशास्त्र गणित, सांख्यिकी और विभिन्न थ्योरी (मांग, आपूर्ति, बाजार आदि) तक ही सीमित था। अर्थशास्त्र ने पहली बार मनुष्य का चेहरा देखा, गरीबी और समाज में आम आदमी के स्थान पर सवाल खड़े किए। अब यह राजनीतिक अर्थव्यवस्था तक सीमित न रहकर कल्याणकारी अर्थशास्त्र के मूलसूत्रों को खोजने लगी।

सभी नोबेल पुरस्कार विजेता रॉबर्ट सोलो की राय से अवगत हैं । उन्हें 'आर्थिक पेशे का विवेक रक्षक' कहा जाता है। अमर्त्य को अर्थशास्त्र की पारंपरिक परिधि की बहुत ज्यादा जानकारी है। वह इकोनॉमिक थ्योरी के विशेषज्ञ है। दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स, ऑक्सफ़ोर्ड, कैम्ब्रिज और हार्वर्ड आदि में अर्थशास्त्र के क्षेत्र में अपना अमूल्य योगदान दिया है। लेकिन उन्हें पूछी जाने वाली समस्याओं में हैं: दुर्भिक्ष के कारण, आर्थिक विकास के साथ व्यक्तिगत स्वतंत्रता के संबंध, प्रत्येक की आत्मोन्नति के लिए सुविधाएं प्रदान करना, सशक्तिकरण और अर्थशास्त्र में नैतिकता- अर्थशास्त्र के इन नए-नए पहलुओं को सुलझाने में वे अग्रणी थे। जीन ड्रेज़ उनके साथ थे, अकाल के बुनियादी कारणों का निर्धारण करने में उनका दाहिना हाथ थे। अमर्त्य आर्थिक विकास में शिक्षा और स्वास्थ्य के महत्व पर जोर देते रहे हैं। उन्होंने भारत सरकार को प्राथमिक शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की अनिवार्यता पर चेताया। उन्होंने गरीबी की नई परिभाषा दी है। उनका मानना है कि विकास कार्यों में सुशासन की कमी है,संसाधनों की नहीं। वे कहते हैं, *"..सवाल सरकार के अधिक या कम होने का नहीं है, बल्कि सवाल है सुप्रशासन का, सवाल केवल समानता का नहीं है बल्कि समानता के प्रकार का है।"* वास्तव में 'डिस्मल साइंस' के क्षेत्र में वे एक महान विकल्प हैं।

मेरे और स्टीव के साथ चर्चा करते समय अमर्त्य हमेशा परोक्ष रूप से 'हार्ड बॉयल्ड इकोनॉमिक थ्योरिस्ट' को वर्तमान स्थिति का जिम्मेदार मानते है। जब उन्हें नोबेल पुरस्कार मिला था तो प्रसिद्ध अर्थशास्त्रियों ने कहा था:"वे स्मिथ, रिकार्डो, मार्क्स, कैनेस और कालेकी के बराबर लीग के थे।"

पूर्व आयोजित आलोचना गोष्ठी के उनके निबंध के पहले पैराग्राफ को उद्धृत करते हुए यह अध्याय समाप्त करूंगा: "बाजार, राज्य और आर्थिक विकास, सार्वजनिक वित्त और नीति-निर्धारण में उनका

हस्तक्षेप, विकास के मॉडल-निर्माण सिद्धांत आदि गरीब, वंचित, अकाल-ग्रस्त लोगों के लिए क्या मायने रखते हैं? विकास और सामाजिक न्याय, समता और कल्याण, दुर्भिक्ष और कु-प्रशासन और सामाजिक मूल्यों के अवक्षय के बारे में 'डिस्मल साइंस' के पास कुछ कहने को है या इसे सिर्फ वित्त के सीमित क्षेत्रों के कम और कम से ज्यादा और ज्यादा निकालने में महारत हासिल है?"

13. सिआमस हिनि, थॉमस ट्रान्स्ट्रोमर, चिनुआ आचिबि और जोसेफ ब्रोडस्की

सिआमस हिनि और आयरिश परंपरा

आयरिश कवि सिआमस हिनि एक साल के लिए अंग्रेजी विभाग में बोयलस्टोन प्रोफेसर ऑफ रेटोरिक एंड लेंग्वेज के रूप में आए थे। वह एक और हॉल में रहते थे, जो सीएफआईए हॉल के करीब था। वह भी मेरी तरह अकेले रहते थे। उनका परिवार आयरलैंड में था। मैं शुरु में उनके पद के बारे में भ्रमित था। 'भाषा' अर्थात् लेंग्वेज सही है। मगर शब्द 'रेटोरिक' का प्रयोग अपमानजनक अर्थ में किया जाता है। मेरा मानना था कि जब कविता में इस शब्द का इस्तेमाल किया जाता है तो वह खराब हो जाती है। बाद में सिआमस के साथ इसके बारे में चर्चा करने पर वास्तविक अर्थ समझ में आया।

पहली बार फोन करते समय वे नहीं थे। वे आयरलैंड चले गए थे क्योंकि आगे छुट्टियां थीं। बाद में फोन पर बातचीत हुई और हम एक-दूसरे से मिले। मैं लामोंट हॉल में उनके काव्य-पाठ की संध्या पर उपस्थित था। इसी तरह वे भी उपस्थित थे मेरे काव्य-पाठ के समय। स्वीडिश कवि थॉमस ट्रान्स्ट्रोमर जब अपने कविता-पाठ के लिए लामोंट हॉल में आए थे, उस शाम हम दोनों उपस्थित थे। लामोंट पुस्तकालय के पास वाले हॉल में नियमित कविता-पाठ होता रहता था।

उनके साथ कई विषयों पर चर्चा हुई। खासकर डबल्यू.बी.यीट्स की कविताओं पर। उन्होंने कहा, " यीट्स की कविताएं विरोधाभासी हैं, मगर उनकी काव्य-वस्तु और भाषा-शैली प्रभावशाली है।फिर भी सामान्य जीवन को अतिक्रम कर अन्य सांसारिक अवस्था में ले जाने वाली उनकी कविताएं कुछ अप्राकृतिक-सी लगती हैं।" मैंने पूछा, "क्यों? क्या आप पूरी तरह से नास्तिक हैं? दैनिक सांसारिक जीवन को पार कर किसी अन्य वास्तविकता तक पहुंचना संभव नहीं है? बेशक, इस शब्द का वास्तविक अर्थ नहीं हो सकता है हालांकि, असत्य भी नहीं है। एक व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में पूरी तरह से तुच्छ हो सकता है,मगर कभी-कभी उसका सांसारिक अस्तित्व के ऊपर या उसके पीछे दिखाई देने वाली दूसरी वास्तविकता का स्वरूप आँखों में नहीं पड़ता है? क्या हम इसे वास्तविकता का एक विस्तारित या नया क्षितिज नहीं कह सकते?" वे मेरे तर्कों से पूरी तरह सहमत नहीं थे लेकिन वे ऐसी वास्तविकता के अस्तित्व से इंकार भी नहीं कर सकते थे। उनकी राय में विभिन्न प्रकार की वास्तविकता (या साधारण वास्तविकता के ऊपर या उसके पीछे की वास्तविकता) निम्न वास्तविकता से उत्पन्न होती है। दूसरे शब्दों में, कविता रोजमर्रा की जिंदगी पर निर्भर है,मिट्टी से जुड़ी हुई होती है। उसके भीतर सब-कुछ खोजना पड़ेगा, जीवन के सारे रंग-रूप,सब रंगहीनता और रूपहीनता की स्थिति,हमारे सपने और स्वप्न-भंग के अद्भूत सम्मिश्रण की इतिवृति,स्वर्ग और नर्क के येट्सनीय आपोकालिप्स और हमारे जीवन की क्षण-भंगुरता की चिरंतनता के भीतर।

उन्होंने संक्षेप में बताया कि वे वामपंथी दृष्टिकोण वाली कविताओं के प्रति उदासीन हैं, भले ही उनमें मानवीय पक्ष क्यों नहीं हों। उनका मानना था कि कविता लिखते समय कोई भी पूर्व निर्धारित दृष्टिकोण नहीं होना चाहिए, क्योंकि इस वजह से कवि के मौलिक अनुभव व्याहत होने की ज्यादा संभावना है।कवि के लिए इतिहास 'अनुपस्थित' घटनाएं और उनका विश्लेषण सब गौण हैं। मुख्य है निरुता स्वयं-अनुभूत अनुभवों के विविध स्वरूप। उनके अनुसार काव्य-पुरुष अनुभवों को बहुत सारे स्तरों पर खुद समझने की चेष्टा करता है : मानसिक अथवा चिंतन स्तर पर,हृदय या प्राण या आवेग स्तर पर,सम्पूर्ण असंकलित रक्त-स्रोत,स्नायु और सारे इंद्रिय अनुभवों में। सब मिलकर बनता है उसका अनुभव। मैंने पूछा था, आप कहीं दूसरे शब्दों में एलिअटीय 'स्पीनोजा एंड द स्मेल ऑफ कुकिंग' के समीकरण तो नहीं बता रहे हैं? वे लगभग सहमत हुए थे। हम दोनों इस बात से सहमत थे कि अनुभव में,किसी के भी अनुभव में,बहुरूप को सम्पूर्ण रूप में करायत करना,चेतना और हृदय में लिपिबद्ध करना अत्यंत ही कठिन है। उससे भी ज्यादा कठिन है उसे भाषा में पिरोना, सही शब्दों की तलाश करना। मेरा सवाल था कि अनैतिहासिक अथवा इतिहास की अनुपस्थिति की आवश्यकता पर बल देने पर भी भाषा-इतिहास से संग्रहीत कर तिनकों से बने घोसलें में असंकलित इतिहास अपरोक्ष रूप से क्या कविता के भीतर नहीं आएगा ? इसलिए इतिहास से चिंतन स्तर पर खुद को मुक्त करने का प्रयास करने पर अनुभव के आत्म-प्रकाश स्तर पर इतिहास दूसरे रास्ते से मुड़कर लौट नहीं आता है ?

उन्होंने अपनी कविताओं से बहुत सारे अंश पढ़कर अपने दृष्टिकोण, अपने काव्य-दर्शन के विविध विभाव प्रतिपादित किए थे। काव्य-जगत के सामूहिक रूप के विषय पर उनके प्रगाढ़ अध्ययन और ज्ञान ने मुझे बहुत खुशी प्रदान की। फ़ैकल्टी क्लब में या उनके अपार्टमेंट में या मेरे अपार्टमेंट में कई बातों पर साहित्यिक चर्चा हुई थी। हम दोनों एक-दूसरे को बेहतर ढंग से समझने लगे। मुझे उनकी विनम्रता और खुलापन बहुत पसंद आया। उस समय तक उन्हें नोबेल पुरस्कार नहीं मिला था। परंपरा के प्रति उनका दृष्टिकोण नीचे लिखी कविता में देखा जा सकता है। कविता बहुत प्रसिद्ध है और सिआमस ने लामेंट हॉल में कविता स्वयं पढ़ी थी। अनुवाद का कुछ अंश नीचे दिया गया है:-

<u>खुदाई</u>

मेरी उंगली और मेरे अंगूठे के बीच
बंदूक की तरह मेरी कलम आराम कर रही थी।
तभी मेरी खिड़की के नीचे से
सुनाई पड़ी एक स्पष्ट आवाज
कंकड़ मिली मिट्टी में कुदाल धँसने की :
मैंने नीचे देखा

मेरे पिता मिट्टी खोद रहे थे।

छोटे-छोटे फूलों की क्यारियों पर
पिता के हाथों से चलती कुदाल
बीस साल पहले छंद-बद्ध होकर
जैसे वे आलू खोद रहे थे ।

अपने मैले जूतों पर बैठकर
कुदाल-धार को घुटनों के आगे दृढ़ता से ,
चलाते थे। ऊंची-ऊंची सूखी लताएँ
ढ़क देती थी कुदाल की तेज धार को
नए आलू को ऊपर खींचकर,
हम कड़े आलू की शीतलता को हथेली से अनुभव करते।
हे भगवान! एक बूढ़ा इतनी कुदाल चलाता है !
जैसे उसके बूढ़े पिताजी चलाया करते थे !!
हर दिन मैं
मेरे दादा के लिए
गाँव के किसी आदमी से
दूध-बोतल पर कागज की ठीपी देकर
लाता था।वह सीधे खड़े होकर
दूध पीकर फिर खुदाई में जुट जाते थे।
मेरी उंगली और मेरे अंगूठे के बीच
विश्राम करती कलम से
मैं खुदाई करूंगा।

सिआमस की कविता में परंपरा की उपजाऊ मिट्टी खुदाई करने के बहुत स्पष्ट संकेत है।

मैंने पहले कहीं कहा है कि मैं हार्वर्ड आते समय स्टॉकहोम में दो दिन रुका था और पहली बार साहित्य-संध्या में थॉमस ट्रान्स्ट्रोमर से मिला था। उन्होंने मेरी कविताओं का स्वीडिश भाषा में अनुवाद किया था। मैंने ओड़िया में मेरी दो कविताएं पढ़ी थीं, स्टॉकहोम की साहित्य-संध्या में।उन्होंने 'मृत्यु और स्वप्न' का अनुवाद पढ़ा था। मैंने थॉमस पेंगुइन की आधुनिक यूरोपीय कवि श्रृंखला में पहले पढ़ा था। सन 1974 में उस संकलन में थॉमस और फिनलैंड के कवि पावो हबीकोको की कविताएं एक साथ प्रकाशित हुई थीं। वे स्वीडन के शीर्षस्थ कवि हैं और उनकी कविताओं के कई अंग्रेजी अनुवाद अमेरिका में प्रकाशित हुए है। उन्हें अमेरिका में साहित्यिक संगठनों द्वारा नियमित

रूप से काव्य-पाठ के लिए आमंत्रित किया जाता है। अमेरिका में उनके कई प्रशंसक हैं, जो नियमित रूप से उन्हें पढ़ते हैं। मैं यूनानी कवि स्ट्रैटिस हविरस (लमोंट की काव्य-संध्या के संयोजक) से पता चला कि उनका शीघ्र ही लमोंट लाइब्रेरी में काव्य-पाठ होने जा रहा है। उसके बाद मुझे थॉमस की चिट्ठी भी मिली। वह हार्वर्ड में अपने दोस्त के घर में रह रहे थे। वहाँ कई स्थानीय कवि, सिआमस हिनि, डोनाल्ड हॉल और उनकी पत्नी कविता जेन कैन्यन आदि कविता पाठ में आए थे। लमोंट लाइब्रेरी और थॉमस की यात्रा के प्रायोजक (नाम याद नहीं है) ने काव्य-पाठ के बाद फ़ैकल्टी क्लब में एक रात्रिभोज का आयोजन किया था। उनसे मिलने का मुझे फिर से मौका मिला है। उस दिन उनकी पढ़ी हुई छह ह कविताओं में से मैंने दो का अनुवाद किया है (जो मेरे अनूदित कविता-संकलन में शामिल हैं)। उनकी कविताओं की विशेषता और गुणवत्ता के बारे में किसी भी पाठक को स्पष्ट अनुमान हो सकता है।

<u>रेलपथ</u>

चांदनी रात के दो बजे
रेलगाड़ी रुकी
खेतों के किनारे
शहर में रोशनी की कतारें
शीतल, टिमटिमाती
बहुत दूर क्षितिज पर।

जैसे खोया हुआ
एक आदमी गहरे सपने में
फिर जब लौटा अपने कमरे में
उसे याद नहीं कि
वह कहाँ गया था।

अथवा किसी भयंकर बीमारी से
परेशान मनुष्य सारे दिन
छह टपटाता हो जैसे
निष्प्रभ शीतल दिगंत में।
ट्रेन सम्पूर्ण गतिहीन
रात दो बजे : विपुल चांदनी में
कुछ सितारें।

<u>आमने-सामने</u>

फरवरी में जीवन

चलने में असक्षम

अनिच्छा से उड़ते खग
चेतना टकराती भूचित्र से
बंधी हुई नौका जैसे
शक्तिहीन होती पोल से।

मेरी तरफ पीठ किए
खड़ी थी वृक्षावली
गिरे हुए सूखे पत्ते
गहरी बर्फ पर
और उस पर पाद-चिह्न ।
एक-दूसरे की तरफ कूद पड़े हम ।

लामेंट लाइब्रेरी में आयोजित कविता पाठ के दूसरे दिन फ़ैकल्टी क्लब में मैंने उनके साथ दोपहर का भोजन किया था। हम दोनों ने दो-दो कविताएं अपनी मूल भाषा और उनके अंग्रेजी अनुवाद में सुनाने का तय किया। उन्होंने मूल कविताओं पर इसलिए जोर दिया क्योंकि उन्हें स्टॉकहोम के काव्य-पाठ में मेरी कविताओं का ओड़िया उच्चारण पसंद आया था। वह उनकी पुनरावृत्ति चाहते थे। मुझे उनकी मूल स्वीडिश कविता पसंद नहीं आई थी, फिर भी मैं ध्यान से सुन रहा था। कहने की जरूरत नहीं है, कविता में अंतर्निहित संगीत उसका अन्यतम विशिष्ट गुण है। उस दिन उनके द्वारा पढ़ी हुई दो कविताओं में से एक का ओड़िया अनुवाद करने का लोभ-संवरण नहीं कर पाया।

दंपति

वे बत्ती बुझा देते हैं।
पूरी तरह बुझने से पहले
एक पल के लिए श्वेत-आभा झलकती है।
उसके बाद ग्लास के अंधेरे में
बिन्दु बन लुप्त हो जाती थी;
होटल की दीवारें आकाश में
ऊपर उठती जाती थीं ।

प्रेम की गतिशीलता
खत्म हो जाती
और उनकी सारी गुप्त चिंताएं
आपस में मिल जाती हैं।
जैसे एक स्कूल के बच्चे की
कॉपी में बने चित्र के रंग गीले होने पर
मिल जाते हैं।

अंधेरा,नीरवता।
शहर की सारी चीजें
अधिक से अधिक निकट आ जाती है। तृषित
खिड़कियों की तृष्णा अब गायब हो जाती है।
सारे घर आस-पास। इकट्ठे ऐसे
भावहीन चेहरों की तरह
मनुष्य की उस भीड़ से मिलने को आतुर।

ट्रान्स्ट्रोमर का जन्म सन 1931 में स्टॉकहोम में हुआ था। वह पेशे से मनोवैज्ञानिक थे। वह अपनी पत्नी और दो बेटियों के साथ वास्तार्स नामक एक छोटे शहर में रहते थे। तब तक उनके सात कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके थे। तेईस साल की उम्र में उनके कविता संग्रह *'सत्रह कविता'* ने स्वीडिश कविता प्रेमियों को एक शक्तिशाली नूतन स्वर प्रदान किया था। उनकी कविताओं में अपने छोटे शहर का अंधेरा, बर्फ से भरी सर्दी और गर्मी के शुरुआती दिन परिलक्षित होते हैं। आज लिखते समय मुझे पता चला है कि 'स्ट्रोक' के कारण विगत नौ सालों से चल-फिर नहीं पा रहे हैं। वे व्हीलचेयर पर अपना जीवन बीता रहे हैं। कविता नहीं लिख पाने के कारण वे बोल देते हैं। जैसे मेरे एक और कवि-मित्र बैंगलोर के जयनगर में रहने वाले गोपालकृष्ण आडिगा भी ऐसा ही करते थे।

मार्टिन एल्वुड ने मेरी कविताओं का स्वीडिश भाषा में अनुवाद किया है। वह एक कवि, नाटककार, कहानीकार और सर्वोपरि अनुवादक संकलक हैं। दोनों अंग्रेजी और स्वीडिश-फिनिश भाषाओं में सिद्धहस्त एल्वुड द्वारा अनूदित और संपादित *'मॉडर्न स्कैन्डिनेवियन पोएट्री'* बहुत प्रशंसित संकलन है। अमेरिका के प्रसिद्ध प्रकाशक *न्यू डायरेक्शन* ने इस पुस्तक को प्रकाशित किया है। इसमें नॉर्वे, स्वीडन, फिनलैंड, डेनमार्क, आइसलैंड, ग्रीनलैंड और एस्किमो समुदाय 'सामी' की लोक कविताएं संकलित हैं। एल्वुड और उनके मित्र फ्रेडनहोम ने अंधे स्वीडिश कवि लेनार्ट दाहल की कविताओं का अनुवाद किया है,जिसका शीर्षक *है 'द हाउस ऑफ डार्कनेस'* । लेनार्ट दाहल लघु कहानी संग्रह 'द फुलनेस ऑफ

टाइम' और 'सिक्स प्लेज' के प्रसिद्ध लेखक हैं। 'द हाउस ऑफ डार्कनेस' में संकलित कविताएँ काफी हृदयस्पर्शी हैं।

दोनों ने स्वीडिश कवि नील्स फेर्लिन का कविता-संग्रह *'विद प्लेण्टी ऑफ कलर्ड ल्यार्ट्न'* के बहुत सारे अनुवाद संकलित किए है। मार्टिन ने अन्य स्वीडिश कवियों का अंग्रेजी में भी अनुवाद किया है। मैं बहुत भाग्यशाली था कि ऐसे बुद्धिमान और प्रसिद्ध साहित्यिक ने स्वीडिश भाषा में मेरी कविताओं का संग्रह तैयार किया था। उन्होंने कविता-संग्रह का नाम 'डेथ एंड ड्रीम' (डोड ओच ड्रम) रखा था। उन्होंने मुझे लिखा, "मैंने तुम्हारी कविताओं में दो चिरंतन सत्य की जुगलबंदी पाई है इसलिए मैंने इस किताब का यह नाम देने का फैसला किया है। मुझे आशा है कि आप किताब के इस शीर्षक से सहमत होंगे।" पेर्ज़ोना प्रेस ऑफ स्वीडन ने सन 1985 में इस कविता-संग्रह प्रकाशित किया था और इसकी प्रस्तावना आलोचक और कवि हेलमैन लैंग ने लिखी थी। एल्वुड ने इसे समीक्षार्थ थॉमस ट्रान्स्ट्रोमर के पास भेजा। थॉमस ने मुझे इस पुस्तक के बारे में लिखा*:"स्वीडिश अनुवाद में आपकी कविताएं जीवंत, रंगीन और 'विदेशी' लग रही हैं, लेकिन मेरी स्वीडिश कल्पना की तुलना में अधिक विदेशी नहीं है! मुझे लगता है कि अनुवाद में बहुत कुछ खो जाता है लेकिन कथावस्तु बनी रहती है और मुझे आपकी कविताएँ पढ़कर बहुत खुशी हुई।"*

जब मैं इन दिनों का यह पत्र पढ़ता हूं, तो मुझे स्टॉकहोम और हार्वर्ड में उनके कविता-पाठ,उज्ज्वल चेहरा और अंतरंग स्वर -सब याद आने लगते है। मैंने पहले भी अन्यत्र कहा है स्टॉकहोम समारोह में जिस कविता को मैंने ओड़िया में पढ़ा, थॉमस ने उसी कविता का स्वीडिश अनुवाद पढ़ा था। कविता 'मौत और सपने' संकलन में है। 'विदूषक' और 'मुर्गों की लड़ाई' दो कविताएं पढ़ी गई थीं। जब मैं हार्वर्ड में था,तब मुझे नियमित रूप से थॉमस के पत्र मिलते थे। उन्होंने एकाधिक बार मुझे लिखा था कि उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता है।अंत में, उनके साथ दो-तीन बार मुलाक़ातें, काव्य-पाठ और बातचीत उनके हार्वर्ड आने के कारण संभव हुई थीं। बाद में जब मुझे पत्र से उनके स्ट्रोक की खबर मिली तो मुझे बहुत दुख हुआ था। मैं उन्हें कवि के रूप में प्यार करता था। पेंगुइन यूरोपीय कवि श्रृंखला में थॉमस और पावो हाविको के कविता-संग्रह का मैं पहले ही उल्लेख कर चुका हूँ। मगर थॉमस के एकक कवि के रूप में दो कविता संग्रह भी उस समय प्रकाशित हुए थे। रॉबिन फुल्टन द्वारा अनूदित पहला कविता-संग्रह *'सलेक्टेड पोएम्स' (1987)* था। जब मैं हार्वर्ड में था, तब यह संकलन प्रकाशित हुआ था। लेकिन मुझे स्टॉकहोम में उनसे यह संकलन मिला था। दूसरे संग्रह का शीर्षक भी *'सलेक्टेड पोएम्स(1945-86)'* था। इसे रॉबर्ट हास और छह ह अन्य द्वारा संकलित और अनूदित किया गया था।यह भी सन 1987 में प्रकाशित हुआ था।

मैं अपने परिवार के साथ स्टॉकहोम से होते हुए हार्वर्ड गया था। मैं स्टॉकहोम में केवल तीन दिन बिता सकता था। मैं स्वीडन के अन्य शहरों में अपने भारतीय साहित्यिक मित्रों से नहीं मिल पाया

था। क्योंकि मुझे निर्दिष्ट तिथि तक हार्वर्ड जाना था। अन्य भारतीय लेखकों में प्रोफेसर पी लाल, अयाप्पा पानिककर, कुर्तुलेन हैदर, अरुण कोलटकर, अनंत मूर्ति और कुँवर नारायण शामिल थे। अब जब मैं इन नामों पर नजर डालता हूं तो पता चलता है अयप्पा, कुर्तुलेन और अरुण इस दुनिया में नहीं हैं। अरुण दोनों मराठी और अंग्रेजी में कविता लिखते थे। उनका अँग्रेजी कविता-संग्रह 'येजुरि' अत्यधिक प्रशंसित रहा है।

स्टॉकहोम में तीन कार्यक्रम थे। मेरे दोस्त थॉमस ट्रान्स्ट्रोमर ने तीनों में भाग लिया था। पहला था 'आधुनिक भारतीय साहित्य में परंपरा का नवीनीकरण- कथावस्तु और भाषा' । हम सभी ने इस सत्र में अपने विचार व्यक्त किए थे। यह स्वीडिश लेखक संघ द्वारा आयोजित किया गया था,जिसमें कई स्वीडिश लेखकों ने भाग लिया था। उन्होंने कई सवाल पूछे थे। थॉमस द्वारा पूछे गए प्रश्न सबसे अधिक व्यावहारिक थे। जिससे उनके दूरदर्शिता और साहित्यानुरागी व्यक्तित्त्व की झलक मिलती है। क्या सचेतनता लेखक का इच्छाकृत उद्यम है या बचपन के परिवेश, सामाजिक रीति-रिवाजों और मूल्यों से उत्पन्न होकर वह उनके तंत्रिका-तंत्र, धमनी-शिरा, हृदय और मस्तिष्क में घोंसला बना लेता है ? उन्होंने कहा कि उनका दूसरे विकल्प में दृढ़ विश्वास है। उन्होंने यह भी बताया कि स्वीडिश लोककथाओं, लोक-संस्कृति, शास्त्रीय स्वीडिश कविता और इंगमर बर्गमैन की कई फिल्मों में यह बात प्रतिबिंबित हुई हैं। अपनी बात साबित करने के लिए उन्होंने अपनी कुछ कविताओं के अंग्रेजी अनुवाद पढे थे। मैं उनकी राय से पूर्णतया सहमत था। दो अन्य सत्र कविता-पाठ के लिए आयोजित किए गए थे। एक लेखक संघ द्वारा अपने संस्थान में तो दूसरा स्टॉकहोम यूनिवर्सिटी में। इन दोनों सत्रों में थॉमस और कवि जेल एस्पामार्क ने अंग्रेजी अनुवाद के साथ अपनी कविताएं पढ़ी थीं।

चिनुआ आचिबि: 'एंट हिल्स ऑफ़ सवाना'

चिनुआ आचिबि तीन दिनों के लिए हार्वर्ड आए थे। वह मैसाचुसेट्स कॉलेज में उस समय पढ़ा रहे थे। वह अपने उपन्यासों के कुछ   अंश पढ़ने और उन पर प्रकाश डालने के लिए सपरिवार वहाँ आए थे। चिनुआ आचिबि नाइजीरिया के प्रमुख उपन्यासकार हैं। नोबेल पुरस्कार प्राप्त नाइजीरिया के ओले सोयिंका ने मुख्यतः कविता और नाटक लिखे थे, मगर आचिबि ने उच्च-श्रेणी के उपन्यासों जैसे *'थिंग्स फाल अपार्ट',' एरो ऑफ गॉड ', 'नो लोंगर एट एज' और 'एंट हिल्स ऑफ़ सवाना'* की रचना की थी। उनके दो कविता संग्रह भी प्रकाशित हुए थे: *'बीवायर सोल ब्रदर'* और *'क्रिसमस इन बी-आफ़्रा'*। उनके *'द ट्रबल विद नाइजीरिया'* और *'होप्स एंड इम्पेड़ीमेंट'* नामक दो निबंध-संग्रह, लघु कहानी-संग्रह *'गर्ल्स ऑफ वॉर एंड अदर स्टोरीज'* प्रकाशित हुए थे। अफ्रीकी लेखकों ने सहकारी आधार पर एक प्रकाशन संस्था का गठन किया है। जो पेंगुइन प्रकाशन के नक्शेकदम पर अफ्रीका के विभिन्न देशों की कविता, उपन्यास और नाटक प्रकाशित करता है। इस संस्था के गठन में आचिबि ने सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। अधिकांश अफ्रीकी लेखक अंग्रेजी में लिखते हैं। इसलिए वहाँ अनुवाद की

समस्या नहीं हैं। कुछ   लेखक, जो अफ्रीकी भाषाओं में लिखते हैं,यह संस्था उनके अंग्रेजी-अनुवाद करने की जिम्मेदारी लेता है। इस प्रकार से विभिन्न अफ्रीकी देशों के प्रमुख लेखकों की दो सौ से अधिक पुस्तकें इस प्रकाशन संस्था द्वारा प्रकाशित हुई हैं।

इस संस्था का यूरोप और अमेरिका के प्रमुख प्रकाशन-गृहों के साथ लेन-देन का संबंध है। मैंने आचिबि के उपन्यास *'थिंग्स फाल अपार्ट', और 'नो लोंगर एट एज'* बहुत पहले पढे थे। दूसरे उपन्यास का नायक विदेश में कई साल बिताने के बाद अपने देश लौटता है।वह अपने देश, समाज और संस्कृति से प्यार करता था। लेकिन वह अपने परिवर्तित स्वरूप और समकालीन राजनीतिक-आर्थिक दृष्टिकोण से बदले हुए समाज के साथ तालमेल नहीं बैठा पा रहा था। इस उपन्यास में मानसिक संघर्ष के साथ-साथ सांस्कृतिक संघर्ष को अच्छी तरह से दर्शाया गया है। मगर उनका उपन्यास *'थिंग्स फाल अपार्ट'* दोनों पाठकों और आलोचकों द्वारा अत्यधिक सराहा गया है। सन 1959 में इसके प्रकाशित होते ही यू.एस.ए. में बीस लाख से अधिक प्रतियां बिक गई थी। इस उपन्यास का पचास भाषाओं में अनुवाद हुआ और एक करोड़ से अधिक प्रतियों की बिक्री हुई थी। यह चिंनुआ की सबसे अच्छी कृति है। कुछ आलोचक इस उपन्यास की तुलना ग्रीक त्रासदी से करते हैं। मैंने दूसरों से सुना था और उन्होंने चर्चा के दौरान सहमति भी जताई कि अमेरिका में प्रति वर्ष कम से कम एक लाख प्रतियां बिकती हैं।

एक दुर्घुष शक्तिशाली चरित्र ओकोन्को के चारों तरफ यह उपन्यास घूमता है। उसका जीवन मुख्यतः भय और क्रोध से परिचालित होता है। संक्षेप में, विद्रूप और सहानुभूति के दृष्टिकोण से **चिनुआ** जीवंत चरित्र बनाने में सफल हुए हैं, जिसे समझना मुश्किल है और जिसकी आत्महत्या पाठकों को दुखी कर देती है। यह उपन्यास अफ्रीकी जीवन से ओत-प्रोत है, मगर देश,काल,पात्र की सीमा
पारकर उपन्यास का चरित्र ओकोन्को कालजयी बन गया है। दक्षिण अफ्रीका के उपन्यासकार नादीम गार्दीमोरे की भाषा में, "*चिनुआ आचिबि को जीवंतता, उदारता और महान प्रतिभा का जादू यशस्वी उपहारस्वरूप मिला है।*"

'थिंग्स फाल अपार्ट 'उनका सबसे पसंदीदा उपन्यास है। उनका कहना है कि इस उपन्यास में वे खुद को सबसे शक्तिशाली और स्पष्ट तरीके से अभिव्यक्त कर पाए हैं। मैंने उन्हें बताया था कि यह उपन्यास मुझे भी बेहद प्रिय है। उन्होंने कहा कि 'बिवयार सोल ब्रदर' और 'क्रिस्मस इन बी-आफ्रा' उनके दो प्रिय कविता-संकलन हैं। *'एंट हिल्स ऑफ़ सवाना'* सन 1987 में बुकर पुरस्कार के अंतिम चरण तक पहुंचा था और उनका उपन्यास 'एरो ऑफ गॉड' को न्यू स्टेटमैन-कैम्पबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ था। अन्य नाइजीरियाई पृष्ठभूमि वाले उपन्यासों की तुलना में *'एंट हिल्स ऑफ़ सवाना'* समग्र अफ्रीका के इतिहास और वर्तमान के आधार पर लिखा गया है। साहित्यिक आलोचकों का मानना है कि समकालीन उपन्यास जगत में यह उच्च कोटि की रचना है। मैंने हार्वर्ड प्रवास के दौरान यह

उपन्यास पढ़ लिया था और मुझे यह बहुत अच्छा लगा था। लेकिन उनका उपन्यास *'थिंग्स फाल अपार्ट'* ही मेरा सबसे पसंदीदा था। मैं कविता-पाठ के बारे में जानता था, लेकिन उपन्यास-पाठ कैसे होता है,मैं यह जानने के लिए उत्सुक था। आचिबि ने पहले उपन्यास की कथा-वस्तु पर प्रकाश डाला, फिर उन्होंने उपन्यास की रचना-प्रक्रिया और उसके बारे में अपने दृष्टिकोण के बारे में विमर्श किया और अंत में उन्होंने कुछ चयनित अंश पढ़े । उसके बाद प्रश्नोत्तर के लिए कुछ समय निर्धारित था, उसमें आचिबि ने कोएट्ज़े और नादीम गारडिमोरे (दो अफ्रीकी उपन्यासकार) के उपन्यासों पर चर्चा की थी।उपन्यास-पाठ के बाद फ़ैकल्टी क्लब में रात्रिभोज था, उसमें आचिबि ने मेरे कुछ विशिष्ट प्रश्नों का उत्तर दिया। मुझे लगा कि आचिबि नाइजीरिया के नोबल पुरस्कार विजेता ओले सोयिंका की कृतियों पर विशेष अनुकूल भाव प्रदर्शित नहीं कर रहे थे। उनकी टिप्पणी इस प्रकार थी: " केवल सोयिंका ही क्यों, अफ्रीका के कई नामी लेखक पश्चिमी पाठकों को अपने बारे में समझाने का असाधारण प्रयास करते हैं। ऐसे प्रयासों से मुझे बहुत दुख होता है। ऐसा लगता है कि वे केवल पश्चिमी पाठकों के लिए ही लिखते हैं, न कि संसार के समस्त साहित्य प्रेमियों के लिए।"

आचिबि मुख्यतः उनके उपन्यासों के लिए जाने जाते है, लेकिन मैं उनकी कविताओं को पसंद करता हूं। बी-आफ्रा के गृहयुद्ध, उसकी भयावहता,अनाहार और अकाल की बर्बरता के परिप्रेक्ष्य में आता है क्रिसमस। आचिबि एक रोमन कैथोलिक थे। वह कुछ हद तक आस्तिक थे। कविता-संग्रह *'बी-आफ़्रा में क्रिसमस'* ने मेरे दिल को छुआ था। टाइम्स पत्रिका में प्रकाशित अधमरी मां की गोद में मरते हुए बच्चे की तस्वीर मुझे याद आने लगी। उस चित्र का शीर्षक *'पिएटा ऑफ बी-आफ्रा'* था। ईसा के सूली पर चढ़ने के बाद उनकी माँ मरियम की गोद में लेटा हुआ ईसा मसीह की तस्वीर। ओड़िशा के 'न अंक' अकाल के दृश्य जिसे मैंने नहीं देखे थे (मुझे फकीर मोहन की आत्मकथा से ही पता चला था) ने मुझे मर्मांतक पीड़ा दी। आचिबि अपनी पत्नी के साथ रहते थे। उन्होंने कहा, "मेरे चार बच्चे हैं,वे चार उपन्यास हैं।" चिनुआ का जन्म 1930 में नाइजीरिया में ओगिडी नामक गांव में हुआ था।स्नातक होने के बाद वे एक्सटर्नल ब्रॉडकास्टिंग के निदेशक बने थे। बाद में उन्होंने नाइजीरिया विश्वविद्यालय में सीनियर रिसर्च फ़ेलो का काम किया। व्याख्यान देने के लिए कई विश्वविद्यालयों में उन्हें आमंत्रित किया था।

उन्होंने कहा कि सन 1972-76 एवं 1987-88 में मासाचुसेट विश्वविद्यालय में एवं एक साल कनेकटिके में हार्वर्ड बहुत परिचित और प्रिय क्षेत्र था । लंदन के संडे टाइम्स ने उन्हें 'बीसवीं शताब्दी के 1000 मीटर की लाइफलाइन' कहा था। इसका कारण यह था कि वे आधुनिक अफ्रीकी साहित्य (जो वास्तव में अफ्रीकी था) के प्रवक्ता थे।

उन्होंने कहा कि उन्होंने बच्चों के लिए कुछ लिखा है। मैंने कहा, "आपका बाल-साहित्य मैंने नहीं पढ़ा है।" वे अफ्रीका के अन्य तीन नोबेल पुरस्कार विजेताओं को जानते थे और उन्होंने उन्हें पढ़ा भी

था। नादिम गार्डिमोर के उपन्यास उनके प्रिय थे। उन्होंने सोयिंका के नाटक और कविताएं भी पढ़ी थीं । उन्हें नाटक ज्यादा समझ में नहीं आते थे। उनके अनुसार नाटक केवल प्रदर्शन वाली कला है। चिनुआ सपत्नीक हार्वर्ड आए थे, अपना उपन्यास-पाठ,उन पर चर्चा और साक्षात्कार करने के लिए। हार्वर्ड में तीन दिन रहने के बाद वे न्यूयॉर्क लौट गए। उनके काव्य-पाठ और रात्रिभोज में कार्लो फ्यून्टेस और सिआमस हिनि भी आए थे। मैंने पहले ही कहा है कि कार्लो और सिआमस मेरी ही तरह एक साल के फ़ेलोशिप पर हार्वर्ड आए थे।

जोसेफ ब्रोडस्की का कविता-पाठ

15 फरवरी, 1988। यह जगह अमेरिकी रिपॉर्टर थिएटर था। हार्वर्ड में जिसे आर्ट कहते थे। ,
सन 1987 की 15 फरवरी को साहित्य में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित यूसुफ ब्रोडस्की का वहाँ कार्यक्रम आयोजित किया गया था, 'एक शाम ब्रॉडस्की के नाम' ।कार्यक्रम 8 बजे शुरू हुआ। हार्वर्ड के विजिटिंग प्रोफेसर सिआमस हिनि ने ब्रोडस्की का परिचय दिया। मैंने पहले कहा है कि वे रेटोरिक एंड लैंगवेज़ के प्रोफेसर थे। सिआमस हिनि के साथ नजदीकियाँ बढ़ने के बाद मैंने उनसे मज़ाक में कहा था कि आम तौर पर, हम रेटोरिक और ओरेटरी दोनों को गैर-साहित्यिक मानते हैं। उन्होंने मुस्कराकर कहा, "भगवान का शुक्र है कि मैं इन दोनों गुणों से बहुत दूर हूं।" ब्रोडस्की को सुनने के लिए थियेटर खचाखच भर गया था। टिकटों की कीमत 15, 20 और 25 डॉलर थी। मेरे मित्र हिनि ने मुझे कंप्लीमेंटरी टिकट लेने का प्रस्ताव दिया। लेकिन मुझे पता चला कि उस शाम के टिकटों की बिक्री से हुई आय का थिएटर के विकास में प्रयोग किया जाएगा। इसलिए मैंने 20 डालर का टिकट खरीदने का निर्णय लिया और वह बात मैंने हिनि को बता दी। ब्रोडस्की ने अपनी कवितायें रूसी और अंग्रेजी दोनों में पढ़ी। उन्होंने लेनिनग्राद में कुछ   दिन पहले लिखी हुई अपने बचपन की स्मृति के कुछ   अंश भी पढे। इसके अलावा उन्होंने अपने एकमात्र नाटक 'मार्बल्स' के भी कुछ   हिस्से पढे। मैंने उस समय तक इस नाटक को नहीं पढ़ा था। मुझे पता चला कि उस समय तक वह नाटक मंच पर भी नहीं खेला गया था। नाटक की सारी घटनाएं जेल के अंदर की थीं। जेल का आकार, ब्रोडस्की की भाषा में, एक अविवाहित युवक के छोटे बिखरे कमरे की तरह और आंशिक रूप से अनिश्चित भविष्य वाले अंतरिक्ष यान के केबिन की तरह था। नाटक को पढ़ते हुए उन्होंने कहा, "यह अनिश्चित समय अभी से दो शतक बाद आएगा।" एक तरह से यह नाटक कुछ हद तक ब्रोडस्की की आत्मकथा है। एक बार उन्हें साइबेरिया में एक छोटे गांव कोर्सेक में पांच साल के लिए एक कैदी के रूप में भेजा गया था। उत्तर ध्रुव से वह गांव तीन सौ मील दूर था। पांच साल जेल काटने के बाद उन्हें रूस से निर्वासित किया गया था। उन्होंने इस नाटक के बारे में संक्षेप में बताया: " जेल एक ऐसी जगह है जहां रहने के लिए बहुत कम जगह है,मगर वहाँ सोचने के लिए बहुत समय मिलता है। नाटक की अंतर्निहित कहानी में मनुष्य के जीवन के साथ समय, व्यक्तित्व और रचनात्मक भावनाओं का आपसी संबंध दर्शाया गया है।"

ब्रोडस्की को सन 1972 में रूस से निर्वासित किया गया था। तब उनका कविता-संग्रह "ए पार्ट ऑफ स्पीच"(1980) और निबंध-संग्रह 'लेस देन वन' (1986) बहुचर्चित किताबें थीं। वेस्ट इंडीज कवि डेरेक वाल्कोट ने भी शाम के कार्यक्रम में भाग लिया था। उन्होंने ब्रोडस्की की पांच अंग्रेजी अनूदित कविताएं पढ़ीं। अभिनेता वालेस सन ने ब्रोडस्की के नाटक का एक दृश्य पढ़ा। उन्होंने वुडी एलेन की दो फिल्मों में अभिनय किया था। वे दो फिल्में थीं *'मैनहट्टन'* और *'न्यू हैम्पशायर होटल'* । मैंने हार्वर्ड में फिल्म 'मैनहट्टन' देखी थी। बाद में मुझे पता चला कि सन ने स्वयं अपने दोस्त के साथ फिल्म 'माय डिनर विद आंद्रे' की स्क्रिप्ट लिखी है। उस फिल्म में उनका अभिनय अत्यंत ही उच्च कोटि का हुआ था। सन 1950 में अमेरिकन रिपोर्टरी थिएटर की स्थापना हुई थी। कैम्ब्रिज में रहने वाले अनेक कवि मित्रों ने इस थिएटर की स्थापना की थी। जिसमें वरिष्ठ कवि रिचर्ड विलबर, जॉन सिआरदी और रिचर्ड एवरहार्ट तथा हार्वर्ड विश्वविद्यालय से स्नातक लेखक डोनाल्ड हॉल, जॉन ऐशरी और फ्रैंक ओ'हारा के नाम उल्लेखनीय हैं। लेखिका नोरा सीयर ने थिएटर पर एक छोटी पुस्तक *'मेमोरिज ऑफ द फिफ्टीज'* लिखी थी, जिसका उद्देश्य यह था कि यदि संभव हो तो, कवि भी अभिनय करेंगे, निर्देशन देंगे, थिएटर चलाएंगे और टिकट भी बेचेंगे। मगर पहले वे यह सुनिश्चित कर लें कि इन सभी का उनकी रचनात्मक क्षमता पर कोई बुरा असर नहीं पड रहा हैं। थियेटर में कई कार्यशालाएं आयोजित की जाती थी, जहां नाट्यकार अपने नाटक के अपूर्ण दृश्यों को कुछ चर्चा के बाद बदल सकते थे। संक्षेप में कहने का उद्देश्य था अमेरिकन वर्स थियेटर बनाना अर्थात् अमेरिकी काव्य थियेटर।

प्लेवर मोली मानिंग ने इस थिएटर की स्थापना की थी।उन्होंने थिएटर के उद्देश्य के बारे में कहा था: "अब शब्दों से इतना डर है कि हमारा लक्ष्य है शब्दों को वापस लाना।" ऐसे एक आदर्श थिएटर की मदद के लिए थोड़ी-बहुत सहायता कर पाया, वह मेरे लिए खुशी की बात थी।

ब्रोडस्की की कविताएं बीसवीं सदी की कविता का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। मुझे उनका नेटिविटी पोएम्स कलेक्शन बहुत अच्छा लगता है, जो उनके द्वारा क्रिसमस के अवसर पर हर साल लिखी गई कविताओं का संकलन है। उन्होंने इन कविताओं में ईसा को बहुदृष्टिकोण से वर्तमान समय के परिप्रेक्ष्य में साधारण दुखी, जीवंत और सहानुभूतिशील मनुष्य के रूप में चित्रित किया है। अब उनका ‘कविता-समग्र’ प्रकाशित हो चुका है,जिसकी बिक्री भी बहुत अच्छी है।ब्रोडस्की की गद्य-रचनाएँ भी उच्च श्रेणी की हैं।

मेरे मन में केवल एक ही चीज़ याद आ रही है। ब्रोडस्की निर्वासित होकर अमेरिका के पूर्वी तट के एक विश्वविद्यालय में प्रोफेसर बन गए थे।एक साल भी नहीं हुआ होगा कि वे अमेरिका के पोएट लोरिएट बने और तीन साल होने से पहले-पहले उन्हें नोबेल पुरस्कार मिल जाता है। सोवियत संघ और कम्युनिस्ट शासन का थोड़ा-बहुत विरोध करने वाले लेखकों को नोबेल समिति द्वारा ज्यादा

महत्त्व देने के इतिहास के दृष्टिकोण से सोलगेनित्सिन और ब्रोडस्की स्वाभाविक रूप से मन में आने लगते हैं। मैंने दोपहर के भोजन के दौरान कार्लो फुएंटेस से इस बात पर चर्चा की थी। कार्लो ने कहा , “हाँ, उन्हें नोबेल पुरस्कार मिलता,मगर इतनी जल्दी नहीं।" काम्यू की तरह ब्रोडस्की को बहुत कम उम्र (50 से कम) में नोबेल पुरस्कार मिला था।

14. अमेरिका की स्वतंत्रता की प्रसवशाला-कॉनकॉर्ड

मैं हार्वर्ड के जिस अपार्टमेंट में एक साल रहा, वह कॉनकॉर्ड एवेन्यू पर स्थित था। यह एवेन्यू कैंब्रिज सिटी का मुख्य रास्ता था। इसका नाम उस छोटे से शहर (वास्तव में, यह एक बड़ा गांव है) से लिया गया है, जो हार्वर्ड से कार द्वारा लगभग आधे घंटे की दूरी पर है। कॉनकॉर्ड अमेरिकी इतिहास, साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण नाम है। यह स्वतंत्रता संग्राम का मुख्य केंद्र था। स्वतंत्रता संग्राम के समय यह सबसे उत्तेजक और निर्णायक स्थान था।यह वह जगह है, जहां थोरो, इमर्सन और हॉथोर्न रहते थे।

मैंने लेक्सिंगटन और कॉनकॉर्ड के चारों ओर घूमने में दो पूरे दिन बिताए थे। कॉनकॉर्ड से पहले लेक्सिंगटन आता है। दोनों छोटे कस्बे हैं। कॉनकॉर्ड ज्यादा प्रसिद्ध है।

कॉनकॉर्ड अमेरिका की स्वतंत्रता संग्राम की पवित्र भूमि है। पिल्ग्रिम फादर इंग्लैंड से यहाँ आए थे और मैसाचुसेट्स में न्यू इंग्लैंड नामक उपनिवेश की स्थापना की थी। नई सभ्यता, नई संस्कृति और नए समाज की स्थापना की गई थी। हार्वर्ड जैसे विश्व प्रसिद्ध विश्वविद्यालय की स्थापना हुई थी। यहाँ का भूगोल ब्रिटिश द्वीपों से अलग था, लेकिन ब्रिटेन के शहरों और कस्बों के नाम पर इन इलाकों का नामकरण किया गया है। उदाहरण प्लायमाउथ, कैम्ब्रिज, ऑक्सफ़ोर्ड, सुंदरलैंड, ग्लॉसेस्टर, वॉर्सेस्टर इत्यादि। इंग्लैंड के उच्च शिक्षित और दूरदर्शी लोगों ने समकालीन समाज और राजनीति के खिलाफ विद्रोह किया था और वे अमेरिका में आए थे। लेकिन उन्होंने अपने पुराने देश की स्मृति को जीवित रखने के लिए इन जगहों के नाम ऐसे रखे थे। इंग्लैंड का राजा प्रोटेस्टेंटिज्म धर्म को मानता था, इसलिए वह इस नई उपनिवेश का धर्म बन गया और न्यू इंग्लैंड के पूरे क्षेत्र में व्याप्त हो गया था। उन्हें इस बात की संतुष्टि थी कि उन्होंने पुरानी इंग्लैंड की प्राचीन सभ्य परंपरा को नया रूप दिया था। अपने प्राचीन देश ने उन्हें त्याग दिया था इसलिए उन्होंने सभी पुरानी चीजों का नवीनीकरण किया था। यह प्रक्रिया केवल पुराने स्थानों के नए नाम देने तक ही सीमित नहीं थी। इंग्लैंड की सुगंध सारे सामाजिक आचरण, रीति-रिवाजों, शिक्षा (हार्वर्ड की शिक्षा प्रणाली, इंग्लैंड के दो प्रमुख विश्वविद्यालयों, जैसे ऑक्सफ़ोर्ड और कैम्ब्रिज पर आधारित थी) में पाई जाती थी। ऐसा कैसे नहीं होता ? जो लोग उपनिवेश की स्थापना में अग्रणी थे, उनमें से ज्यादातर कैम्ब्रिज और ऑक्सफोर्ड के पुराने छात्र थे !!

किसी इतिहासकार ने कहा है, "इतिहास हमेशा एक त्रासदी है, नाटक नहीं।" यह कथन पूरी तरह से अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम के लिए लागू होता है। उपनिवेश में रहने वाले लोगों का इंग्लैंड की रानी या राजा का विरोध करने का कोई मतलब नहीं था। उनका क्रांतिकारी रवैया धीरे-धीरे समय के साथ समाप्त हो गया था। इस प्रकार, इंग्लैंड के अधिकांश निवासियों में उपनिवेश के लोगों के लिए बहुत अधिक सहानुभूति और स्नेह था। वे आखिर अपने लोग थे! इस प्रकार स्वतंत्रता संग्राम जरूरी नहीं था। ब्रिटिश प्रशासन और उपनिवेश के बीच रिश्ता तब तक अच्छा था, जब तक इंग्लैंड के राजा ने इस पर कुठाराघात नहीं किया था। इतिहासकारों का मानना है कि राजा और ब्रिटिश प्रशासन की दूरदर्शिता की कमी के कारण उपनिवेशवासी स्वतंत्रता संग्राम के लिए मजबूर हुए। स्वतंत्रता के घोषणा-पत्र में इंग्लैंड के राजा की अत्यंत कठोर भाषा में आलोचना की गई है। किंग जॉर्ज व्यक्तिगत स्तर पर एक स्नेही व्यक्ति थे। एलन बेनेट ने अपनी पुस्तक *'मैडनेस ऑफ किंग जॉर्ज'* में उनकी विरोधाभासी मानसिकता को दर्शाया है। उनके द्वारा नियुक्त प्रधान मंत्री लॉर्ड नॉर्थ को बेनेट ने आलस्य-परायण और हठी के रूप में वर्णित किया था।संक्षेप में कहें, दोनों में दूरदर्शिता और नेतृत्व की कमी थी। जब उपनिवेशवासी कुछ हद तक विरोधी बन गए, तो उन्होंने यह पता लगाने की कोशिश नहीं की कि ऐसा क्यों हो रहा है और स्थिति का समाधान करने के लिए कौनसे कदम उठाए जाएं। इसके विपरीत, उस विद्रोह को

दबाने के लिए कई कठोर कृत्य प्रयोग में लाए गए, जबकि वे इससे सम्बंधित नहीं थे। अटलांटिक महासागर के उस पार सेना भेजी गई। पिट द एल्डर, इंग्लैंड के पूर्ववर्ती युद्धकालीन नेता ने इसका विरोध किया था, जिन्हें बाद में लॉर्ड चैथम के नाम से जाना जाने लगा। उन्होंने इंग्लैंड के इस पदक्षेप का विरोध किया था। उन्होंने कहा, " अब खोने के लिए समय नहीं है; हर आंदोलन खतरों से भरा हुआ है। नहीं, जब मैं बोल रहा हूँ, तो निर्णायक कदम उठाने होंगे। "

उसकी बात मान ली गई। उसके इस बयान के कुछ ही हफ्तों बाद पूरे मैसाचुसेट्स (न्यू इंग्लैंड) क्षेत्र में स्थिति विस्फोटक हो गई। एक रिपोर्ट ब्रिटिश गवर्नर जनरल थॉमस गाग के पास आई कि मैसाचुसेट्स कांग्रेस और सुरक्षा समिति ब्रिटेन के विरोध के लिए तैयार हो रही हैं। ब्रिटेन के साथ युद्ध करने के उद्देश्य से हथियार एकत्र किए जा रहे हैं। सबसे दुखद बात थी कि गवर्नर की उपनिवेश के प्रति कोई विद्वेष नहीं था, उनकी पत्नी औपनिवेशिक अमेरिकन थी। लेकिन उन्हें हथियारों को जब्त करने के निर्देश दिए गए थे।

जब यह समाचार मिला कि ब्रिटिश सेना युद्ध की तैयारी कर रही है, बोस्टन के प्राचीन नॉर्थ चर्च से ब्रिटेन को चेतावनी दी गई थी और उपनिवेशवासियों को संगठित होने का आह्वान किया गया। उपनिवेशवासियों के दो प्रसिद्ध नेताओं में विलियम डोयस और पॉल रिवर लेक्सिंगटन कॉनकॉर्ड में चारों तरफ घूमकर स्थानीय निवासियों को ब्रिटिश के खिलाफ लड़ने का आह्वान किया। लेक्सिंगटन में पहला संघर्ष और रक्तपात शुरू हुआ। इतिहासकारों का मानना है कि इतिहास में यह आजादी का पहला औपचारिक युद्ध था, जिसकी गूंज दुनिया भर में सुनाई पड़ी। जब ब्रिटिश सेना लेक्सिंगटन पहुंची, स्थानीय सेना (मिनिटमैन) लेक्सिंगटन कॉमन में इकट्ठी हुई थी। ब्रिटेन के सभी गांवों में विलेज कॉमन होता है। उसी मॉडल को बाद में उपनिवेशवासियों ने अपनाया था। इस युद्ध में आठ उपनिवेशवासियों की बलि चढ़ी। ब्रिटिश सेना कॉनकॉर्ड की ओर बढ़ने लगी।

कॉनकॉर्ड लेक्सिंगटन से केवल 9 किलोमीटर दूर था। सड़क का नाम है *बेटल रोड ट्रेल* है, जहां पर कोलोनियल इन होटल सन 1716 में बनी हुई है, रास्ते में आती है। यह होटल 281 साल पुरानी थी, जब मैंने इसे देखा था। यह इन अब तक अपने मूल आकार में मौजूद है। मोनूमेंट स्ट्रीट थोड़ी देर बाद आती है, जो इमर्सन, थोरो, नथानियल, हॉथोर्न और एल्कोट जैसे कॉनकॉर्ड के प्रसिद्ध साहित्यकारों की यादें समाई हुई हैं । थोरो का वाल्डेन तालाब इस जगह से बहुत दूर नहीं है। रास्ते में पहले आता है -ओल्ड मानसे, जिसे राल्फ वाल्डो एमर्सन के दादा ने बनाया था। हॉथोर्न भी कभी यहाँ रहा करते थे। ओल्ड मानसे जाने के बाद मैं सड़क के बाईं तरफ उत्तरी ब्रिज पर आया, जहां ब्रिटिश सेना को गंभीर झटका लगा था। मिनिटमैन कोई खास सेना नहीं थी, उन्होंने अप्रचलित राइफलों का इस्तेमाल किया। लेकिन उनमें बहुत उत्साह था और वे लेक्सिंगटन में अपने आठ भाइयों की मौत का बदला लेना चाहते थे। ब्रिटिश सेना ने जल्दबाजी में पीछे हटने के लिए उनका मुकाबला नहीं किया। उत्तरी ब्रिज के दोनों किनारों पर भयंकर लड़ाई हुई थी। ब्रिटिश सेना के दो सौ चौहत्तर सैनिक मारे गए या घायल हो गए। वे कॉनकॉर्ड छोड़कर बोस्टन में अपने मुख्यालय में वापस जाने के लिए मजबूर हो गए। उत्तरी ब्रिज पर उन आठ मिनटमैन सैनिकों के सम्मानार्थ एक पत्थर की मूर्ति का निर्माण किया जा रहा है, जिन्होंने लेक्सिंगटन में अपने प्राण नयौछावर कर दिए थे। मूर्ति एक मिनटमैन की है, जिस पर खुदा हुआ है '1775 अप्रैल 19' जो अमेरिकी के स्वतंत्रता संग्राम का दिन था तथा ब्रिटिश शासन के खिलाफ उनके संघर्ष का सबसे सफल दिन था। स्तंभ के दूसरी तरफ निम्नलिखित चार पंक्तियां अंकित की गई हैं:

"वे तीन हजार मील दूर आए और मर गए
अपने सिंहासन के अतीत को बनाए रखने के लिए;
सागर के ज्वार से परे, अनसुना
उनकी अंग्रेजी मां ने उन्हें विलाप करवाया। "

मैंने एक दिन में लेक्सिंगटन और कॉनकॉर्ड के सभी महत्वपूर्ण स्थानों का दौरा किया था। इनमें युद्ध स्मारक और हॉथोर्न, एमर्सन और एल्कोट परिवार की समाधियाँ भी शामिल हैं। मैंने थोरो के वाल्डेन तालाब और आस-पास उनके छोटे घर का दौरा करने के लिए एक पूरा दिन अलग से रखा था।

15. अमेरिका के दर्शन, साहित्य और संस्कृति की प्रसवशाला-कॉनकॉर्ड

लेक्सिंगटन और कॉनकॉर्ड नामक दो छोटे शहर हार्वर्ड और बोस्टन से थोड़ी दूरी पर स्थित हैं। इतिहासकार दोनों शहरों को एक रूप में देखते हैं। दोनों कस्बों की भूमिका अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम में बेहद महत्वपूर्ण थी। कॉनकॉर्ड में बहुत रक्तपात हुआ था,जिसे देखने के लिए स्वतंत्रता संग्राम के कई जीवित स्मारक हैं।कॉनकॉर्ड में हर जगह स्वतंत्रता संग्राम के विभिन्न चरणों का इतिहास दर्ज किया गया है।

कॉनकॉर्ड न केवल अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम का मूक दर्शक है,बल्कि अमेरिका के दर्शन, उपन्यास, सरल जीवन शैली और मानवता की परंपरा यहाँ पैदा हुई थी। इमरर्सन, अमेरिका का पहला महत्वपूर्ण दार्शनिक था। जो यहां लंबे समय अर्थात् पचास वर्षों तक रहा था और इस जगह पर उन्होंने अपने सभी मूल ग्रंथों की रचना की थी। इमर्सन ने अमेरिका के एक साधारण इंसान में असाधारण शक्ति, आत्म-सम्मान, गौरव, स्वाभिमान और समाजिकता की स्पष्ट तस्वीर खींची। यह तस्वीर उनके विश्वास-बोध की अभिव्यक्ति थी। यह अब तक दुनिया के लिए अमेरिका का सबसे बड़ा उपहार रहा है। उनका 'द स्कार्लेट लेटर', युगांतरकारी उपन्यास कॉनकॉर्ड में लिखा गया था। इस उपन्यास में मानव मनोविज्ञान के कई चरणों का विश्लेषण कर ऐसे पात्र का निर्माण किया है, जो उपन्यासों के इतिहास में अद्‌वितीय और अविस्मरणीय है। उपन्यासकार नथानियल हॉथोर्न को उपन्यासों के जादूगर कहा गया है। सामान्य पाठकों के लिए श्रीमती लुइसा अल्कोट द्‌वारा कई उपन्यास कॉनकॉर्ड में लिखे गए थे। अल्कोट के पिता उस समय के प्रसिद्‌ध दार्शनिकों में से एक थे और इमर्सन द्‌वारा स्थापित 'शनिवार क्लब' के सदस्य थे। कॉनकॉर्ड की धरती अमेरिकी समाज के सामाजिक मूल्यों और आध्यात्मिकता की पृष्ठभूमि बनी। सरल जीवन शैली में थोरो की जीवन-शैली अनोखी थी। यह उनकी साहित्यिक कृतियों से स्पष्ट जाना जा सकता है। उन्होंने स्वेच्छा से खुद को दो वर्षों तक जन-साधारण से दूर रखा और प्रकृति के सानिध्य में रहकर उन्होंने कुछ पुस्तकें लिखीं, जिसने ने केवल अमेरिका का पथ-प्रदर्शन किया,बल्कि महात्मा गांधी और मार्टिन लूथर किंग जैसे महानुभावों को भी असाधारण मंत्र दिया, जो मानव जाति के इतिहास में एक महत्वपूर्ण अध्याय साबित हुआ। कॉनकॉर्ड अमेरिकी इतिहास में दर्शन और स्वतंत्रता-संग्राम के क्षेत्र में अद्‌वितीय है।

<u>राल्फ वाल्डो इमर्सन</u>

इमर्सन अमेरिका के सबसे महत्वपूर्ण दार्शनिक हैं । उनके जीवन ने विभिन्न तरीकों से अमेरिकी दार्शनिक परंपरा और साहित्य को प्रभावित किया है। दर्शन और चिंतन की विशाल परिधि के बाहर, उन्होंने मिसिसिपी नदी पर पुरानी शैली में बनी नौकाओं के आस-पास रहने वाले किसानों और व्यवसायियों के जीवन का अध्ययन करने में काफी समय बिताया। उन्होंने अमेरिका के उत्तर-पूर्व और मध्य-पश्चिम के विभिन्न क्षेत्रों में चालीस वर्षों तक भाषण दिया था। उन्होंने अपने व्याख्यानों के नोटों के आधार पर अपने प्रसिद्‌ध निबंध प्रकाशित किए थे।उनका 'आत्मनिर्भर' नामक निबंध अमेरिकी साहित्य में एक उज्ज्वल रत्न है। उनकी भाषा में, "एक प्रतिभा को अपने विचारों पर विश्वास होना चाहिए। केवल छोटा आदमी दूसरों की सभी बातों पर सहमत होने के लिए तैयार रहता है।एक असली आदमी को हर वक्त और हर चीज में 'हाँ' नहीं कहना चाहिए।"

इमर्सन ने अपने बचपन में अपने पिता को खो दिया था। उनकी विधवा मां को अपने पांच बेटों में से इमर्सन के भविष्य के प्रति कोई उच्च आंकांक्षा नहीं थी। बचपन में वह स्वस्थ लड़का नहीं था और अक्सर विभिन्न

बीमारियों से पीड़ित होता रहता था। सब कोई यही सोचता था कि इमर्सन बहुत बुद्धिमान नहीं है,उसकी कल्पना-शक्ति प्रखर नहीं है।स्कूल में भी उसका अच्छा प्रदर्शन नहीं था। वह ग्रीक और गणित में बहुत कमज़ोर था। उनके स्वयं के शब्दों में, "स्कूल में पढ़ना एक अमानवीय काम था"।वह हमेशा स्कूल से डरते थे। मगर जब वह स्कूल छोड़कर हार्वर्ड चले गए तो उनके छात्र-जीवन का एक नया अध्याय शुरू हुआ।उनके प्रोफेसरों ने देखा कि इमर्सन में विश्व के कई दार्शनिकों और लेखकों को पढ़ने की बहुत लिप्सा थी। वह हार्वर्ड स्क्वायर में जिस छात्रावास में रहते थे, वहाँ सर्दी में गर्म रखने की कोई व्यवस्था नहीं थी। ठंड से खुद को बचाने एक से अधिक कंबल का इस्तेमाल करते थे और उस कंबल के अंदर घुसकर प्लेटो का दर्शन-शास्त्र पढ़ते थे। यहाँ इस बात का उल्लेख करना आवश्यक है कि प्लेटो की रचनाओं से वह बहुत प्रभावित थे।

जब वे स्कूल में पढ़ रहे थे तब से उनकी चाची श्रीमती मेरी उन्हें बहुत पसंद करती थी।उन्हें उम्मीद थी कि इमरर्सन एक दिन महान दार्शनिक बनेगा। हार्वर्ड से स्नातक होने के बाद कुछ समय के लिए उन्होंने एक शिक्षक के रूप में काम किया। उन्होंने कुछ समय के लिए एक चर्च में 'मिनिस्टर' का भी काम किया था।स्नातक होने के बाद उनकी शादी हुई, लेकिन शादी से उन्हें कोई संतोष नहीं मिला।

सन **1835** इमर्सन के जीवन का उल्लेखनीय वर्ष था। उस वर्ष उन्होंने दूसरी शादी की और यह निर्णय लिया कि वह अपना सम्पूर्ण जीवन आत्म-चिंतन और लेखन में बिताएंगे। उन्हें पूरा भरोसा था कि वह अपने आलेखों से जीवित रहने के लिए पर्याप्त कमा सकेंगे। कॉनकॉर्ड में एक छोटे से घर में वह रहने लगे। उस घर में उन्होंने पचास वर्षों तक अपनी रचनाएं लिखीं, उनकी उन रचनाओं ने न केवल अमेरिका, बल्कि पूरे विश्व को चकित कर दिया।उनकी रचनाओं और दर्शन में कई नई चीजों,समकालीन मूल्यों के विरूद्ध उनके क्रांतिकारी विचारों के कारण आज भी उन्हें अमेरिका का सबसे बड़ा दार्शनिक माना जाता है।

बचपन से हर रोज **5** बजे उठने की उनकी आदत थी। उठने के बाद एक घंटे तक जर्नल लिखते थे, अपने विचारों की अभिव्यक्ति के लिए। जिसे वे अपना 'बचत बैंक' जर्नल कहते थे। उनकी अधिकांश रचनाएं इस पत्रिका से निकली हैं।

उनके दृष्टिकोण में निम्नलिखित विचार महत्वपूर्ण थे:-

1. आनंद के लिए मनुष्य जीवन बना है। उनका मानना था कि इस दुनिया में हर जीवित वस्तु में भगवान की चेतना मौजूद है। इसलिए निराशा और दुख क्षणिक हैं। उनका अतिक्रम करते हुए मनुष्य को आनंद के पवित्र स्रोत की तरफ बढ़ना चाहिए।

2. वह आश्वस्त थे कि पूरी दुनिया एक ही रस्सी से बंधी हुई है। यह रस्सी हमारे चारों ओर की प्रकृति है। उनका मानना था कि प्रकृति परमेश्वर की अभिव्यक्ति है और वह प्रकृति का ही ध्यान करते थे। कॉनकॉर्ड के पास स्थित वाल्डेन तालाब और सन्निकट जंगल में वह हर दिन जाते थे। वह बहुत समय तक झील, घास और पेड़ों को निहारते रहते थे, जिसे उन्होंने अपनी पत्रिका में लिखा है। 1848 में फ्रांसीसी क्रांति के समय क्रांतिकारियों ने कई पेड़ों को काटकर सड़कों को ब्लॉक करने के लिए उनका इस्तेमाल किया। उन्होंने अपने जर्नल में निम्नलिखित प्रश्न उठाया था: "क्या क्रांति पेड़ों की कीमत पर उचित थी?"

3. उनका मानना था कि हर किसी को अपने बल की तुलना में अपने आप में ज्यादा विश्वास होना चाहिए। उत्कलमणि गोपबंधु की तरह, उनका मानना था कि एक आदमी का जीवन केवल साल और महीनों से नहीं मापा जाना चाहिए। इमर्सन की भाषा में, "हम किसी आदमी के वर्षों की गिनती नहीं करते हैं, जब तक उसके पास गिनने के सिवाय कुछ नहीं हो।" उनका मानना है कि गहरे आत्म-विश्वास की भावना किसी भी आदमी को निर्भयतापूर्वक अपनी शर्तों पर अपना जीवन जीने में मदद करता है।उनकी भाषा में, "हमें खतरनाक तरीके से जीवित रहना चाहिए।" वह पूरी तरह गुलामी के खिलाफ थे। जब अमेरिकी कांग्रेस ने **1850** में फ्यूजिटिव स्लेव लॉ को पारित किया, तो इमर्सन ने कहा, "भगवान की कसम, मैं इसे नहीं मानता।" उनका दृढ़ विश्वास था कि मनुष्य असीम है। उनका यह भी दृढ़ विश्वास था कि हर व्यक्ति के भीतर विवेक और विचार बुद्धि सन्निहित होती है।

4. उनका मानना था कि मनुष्य को अपने जीवन में भौतिकवादी नहीं होना चाहिए और न ही भोग-विलास के प्रति दुर्बलता । उन्होंने एक प्रश्न उठाया, " घर और खलिहान के आराम हेतु स्टारलाईट रेगिस्तान में घूमने का तुम्हारा अधिकार क्यों छोड़ना चाहिए?" वह पूरे जीवन मितव्ययी थे। वह गरीब भी थे। उन्होंने लुइसा अल्कोट के पिता और थोरो को कुछ वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए अतिरिक्त श्रम किया। प्रसिद्ध अमेरिकी कवि वॉल्ट व्हिटमैन ने एक कवि के रूप में अपनी प्रगति के लिए इमर्सन के योगदान को सुंदर ढंग से स्वीकार किया है, **"I was Simmering, Simmering, Simmering. Emerson brought me to a boil. "**

इतिहास शनिवार क्लब के लिए भी इमर्सन को याद करता है। जिस दिन यह क्लब शुरू हुआ था, तत्कालीन सभी महत्वपूर्ण लेखक और चिंतक इस क्लब के सदस्य थे। इनमें प्रमुख थे थोरो, एच॰ लोंगफेलो, जे॰आर॰लोवेल,हॉथोर्न,ओलिवर वेन्डेल्स होम्स और कई अन्य। अमेरीका के इस प्रसिद्ध दार्शनिक का सन **1862** में **79** वर्ष की आयु में निधन हो गया। अपने अन्य दोस्तों के साथ कॉनकॉर्ड में एक ही जगह पर समाधि दी गई। उनकी मृत्यु के बाद उनके विचारों और दर्शनों पर कई पुस्तकें लिखी गई । मेरा मानना है कि उनमें तीन पुस्तकें महत्वपूर्ण हैं।

पहली पुस्तक *'इमर्सन एंड कंडक्ट ऑफ़ लाइफ'* के लेखक डेविड रॉबिन्सन ने लिखा है कि इमर्सन धीरे-धीरे आधिभौतिक या रहस्यवाद से दूर होते गए। यह सच है कि इमर्सन की प्रसिद्धि उन्नीसवीं शताब्दी के तीसरे और चौथे दशकों के अपने निबंधों और व्याख्यानों पर निर्भर करती है। उन्होंने इनमें आदर्शवाद और रहस्यमय विचारों पर बल दिया था। मगर समय के साथ उन्होंने नैतिकता, कर्मदक्षता और समाज के अन्य व्यक्तियों के लिए कुछ करने की आवश्यकता पर अधिक बल दिया। रॉबिन्सन दूसरे चरण में इमर्सन के कामों के बारे में अपने दो प्रमुख निबंध-संग्रहों का उदाहरण देते हुए बताते हैं। वे *'सोसाइटी एंड सॉलिट्यूड'* और *'द कंडक्ट ऑफ लाइफ'* हैं अर्थात् 'समाज और निर्जनता' एवं 'जीवनचर्या'। रॉबिन्सन इस चरण में इमर्सन के कार्यों के बारे में कहते हैं, *"मैं उस आदमी को पसंद नहीं करता जो सोच रहा है कि वह कैसे अच्छा बनेगा;लेकिन उस आदमी को पसंद करता हूँ जो अपने काम को पूरा करने की सोच रहा है।"* रॉबिन्सन का मानना था कि जीवन के इस चरण के दौरान वह धीरे-धीरे रहस्यवाद से यथार्थवाद की तरफ मुड़ रहे थे। इमर्सन ने इस दौरान रहस्यवादी विचारों से सामाजिक कर्तव्यों और नैतिकता को अधिक महत्वपूर्ण माना।

दूसरी पुस्तक *"इमर्सन और लिटरेरी चार्ज"* है,जो डेविड पोर्टर द्वारा लिखी गई और हार्वर्ड यूनिवर्सिटी द्वारा प्रकाशित हुई। पोर्टर की राय में, इमर्सन अमेरिकी साहित्य में आधुनिकता के पूर्वज थे। उन्हें इस दृष्टिकोण से अमेरिकी साहित्य के इतिहास में सबसे बड़ा माना नहीं जा सकता है, लेकिन अमेरिकी साहित्य और कविता के क्षेत्र में वह एक अपरिहार्य निर्णायक और प्रभावशाली लेखक थे। परवर्ती कवियों में वालेस स्टीवंस, विलियम कार्लो, एमिली डिकिन्सन, आदि पर उनका स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है। इमर्सन अपने आलेखों में चिंतन और कर्म, व्यक्ति और समाज, परंपरा और आधुनिकता आदि को एक साथ लाने में सक्षम थे। उनकी साहित्यिक रचनाएँ एक नए साहित्यिक युग के प्रादुर्भाव का संकेत दे रही थीं । उनकी पुस्तक 'समाज और निर्जनता' इस दोहरी प्रक्रिया का प्रमाण है। एक ओर, उच्च कोटि के साहित्य की रचना तब तक संभव नहीं है जब तक कि समाज के साथ लेखक के व्यक्तिगत और घनिष्ठ संबंध न हो। दूसरी ओर, समाज के साथ इस तरह के रिश्तों से उत्पन्न होने वाला अनुभव लेखक की निर्जन आत्मा और एकाकीपन में अपनी अंतिम अभिव्यक्ति पाता है। इसलिए साहित्य समाज की जिम्मेदारी तक सीमित नहीं है। इसी तरह यह आत्मनिरीक्षण तक भी सीमित नहीं है। दोनों के बीच एक अच्छा संतुलन उच्च कोटि के साहित्य की रचना में मदद करता है।

इमर्सन थोरो के अकेले जीवन के अनुभवों को आदर की दृष्टि से देखते थे। उनका मानना था कि लेखक को समाज से कुछ हद तक दूरी बनाए रखकर, अपने स्वयं के अनुभवों और सामाजिक गतिविधियों का गहन पर्यवेक्षण करना चाहिए। 'वाल्डेन पॉन्ड' उनके लिए लेखकीय जीवनशैली का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था। इसके अलावा, उन्होंने यह भी महसूस किया कि हर व्यक्ति की समाज के प्रति ज़िम्मेदारी है। उनके जीवन के दूसरे चरण के आलेखों में यह पहलू अधिक प्रभावशाली था।

रॉबिन्सन और पोर्टर के अलावा, इमर्सन के बारे में तीसरी सबसे महत्वपूर्ण पुस्तक एडवर्ड वॅकेंप्पेट द्वारा लिखित *'द बैलेंस्ड मैन'* है। उपर्युक्त चर्चा की पृष्ठभूमि से यह स्पष्ट होता है कि इमर्सन एक बहुत ही संतुलित व्यक्ति थे, जो अपने जीवन में और अपने आलेखों में दर्शन और कर्म के बीच एक अच्छा संतुलन लाने में सिद्धहस्त थे। यह अमेरिकी साहित्य और दर्शन की सबसे महत्वपूर्ण बात है।

हेनरी डेविड थोरो

हेनरी डेविड थोरो (1817-1862) अमेरिका के सबसे प्रसिद्ध दार्शनिकों और लेखकों में से एक हैं, जिन्होंने व्यक्तियों के अलग-अलग अस्तित्व और प्रकृति के साथ अंतरंग सह-अस्तित्व पर अपनी प्रगाढ़ आस्था व्यक्त की थी। उन्होंने अपने हाथों से एक छोटी-सी झोपड़ी बनाकर मैसाचुसेट्स के कॉनकॉर्ड निकट वाल्डेन नामक जगह पर पूरे दो साल अकेले बिताए थे। थोरो कॉनकॉर्ड में पैदा हुए थे और हार्वर्ड में शिक्षित। 1830 के दशक के अंत से 1840 के दशक की शुरुआत तक स्कूल में पढ़ाने के साथ-साथ निजी ट्यूशन में व्यस्त थे। थोरो 1841 और 1843 के बीच प्रसिद्ध अमेरिकी दार्शनिक और निबंधकार राल्फ वाल्डो इमर्सन के घर में रहते थे।उस समय अमेरिका में इमर्सन के मार्गदर्शन में 'ट्रांसिडेंटलिस्ट' या 'उत्तरणवाद' सामाजिक दर्शन के रूप में प्रसिद्ध हो गया था। इस दार्शनिक दृष्टिकोण के अनुसार- 'भगवान प्रकृति के प्रत्येक वस्तु में मौजूद है'। उनका यह भी विश्वास था कि दिव्य शक्ति हर व्यक्ति के अंदर मौजूद है और वह अपनी अंतरात्मा की आवाज के अनुसार काम करके मानसिक शांति प्राप्त कर सकता है। इमर्सन, थोरो, शिक्षाविद् और दार्शनिक ब्रॉन्सन अल्कोट

के अलावा, सामज सुधारक मार्गरेट फुलर और साहित्यिक आलोचक जॉर्ज रिकली ने भी इस दृष्टिकोण पर विश्वास किया। 'उत्तरणवाद' में परंपराओं, अच्छे सामाजिक संबंध और व्यक्तिगत चेतना की एक संतुलित अभिव्यक्ति के बारे में एक नया दृष्टिकोण शामिल था। मैंने थोरो के बारे में पहले बहुत कुछ पढ़ा था। मैं जानता था कि गांधी उनके जीवन से कैसे प्रभावित हुए थे। इसलिए मैं थोरो के वाल्डेन पॉन्ड के किनारे पर दीर्घ समय तक बैठकर उस व्यक्ति के बारे में सोचने लगा, जिसने अपनी जीवन यात्रा में कुछ नया खोजा, सम्पूर्ण व्यक्तिगत जीवन यापन करने के लिए। थोरो 1945 से इस झील या तालाब (वाल्डेन) के किनारे पर अपने हाथ से बने कुटीर में दो साल तक रहे थे। उन्होंने अपनी डायरी में अपनी कार्यावली का विशद विवरण लिपिबद्ध किया था। अपनी कार्यावली के अलावा, उन्होंने प्रकृति की विभिन्न वस्तुओं को भी देखा और आध्यात्मिक ध्यान-धारणा को भी इस डायरी में दर्ज किया।अपने वहाँ रहने के दौरान उन्होंने साग-सब्जियां उगाई, तालाब से मछह लियां पकड़ी और विभिन्न जीव-जंतुओं और आकाश में उड़ते पक्षियों का अवलोकन किया। दिन-रात और ऋतु चक्र के परिवर्तन का आनंद लेते थे और अपने अनुभवों को लिखते थे। समाज में दूसरों के साथ अच्छे संबंध रखने में विश्वास करने वाले थोरो इन दो वर्षों के दौरान पूर्ण रूप से आत्म-निर्भर होकर अत्यंत सामान्य जीवन जीने की कोशिश कर रहे थे। इस अवधि में जो कोई उनसे मिलने आया तो उन्होंने उनको अच्छा आतिथ्य प्रदान किया। अकेले जीवन जीने वाले ऐसे एक दार्शनिक और लेखक के लिए वास्तव में एक विरल घटना है! मगर उन्होंने कहा कि इन दो साल की अवधि के दौरान उन्हें कभी अकेलापन महसूस नहीं हुआ। उनका विश्वास था कि हर प्राकृतिक वस्तु में जीवन है और इन वस्तुओं ने उनका साथ दिया था। भले ही, वह वस्तु तालाब में तैरती हुई मछली हो, आकाश में उड़ती चिड़िया हो,फूलों से लदालद जंगली पौधें हों, अपने हाथों से उपजाई हुई बगीचे की बीन्स हो या अन्य वनस्पति पौधे हों ।

वाल्डेन को इस दृष्टि से दुनिया की सर्वश्रेष्ठ पुस्तकों में स्थान मिला। वाल्डेन छोड़ने के बाद उन्होंने कुछ समय बिताया इमर्सन के घर में और बाद में अपने पिता के पास। वाल्डेन में रहने से पहले उन्होंने 1839 में अपने भाई के साथ नाव से यात्रा की थी। यह यात्रा मेरिमैक नामक एक छोटी-सी स्थानीय नदी में की गई थी।इस नौका-यात्रा के थोरो के अनुभवों के अलावा, कई प्राकृतिक वस्तुओं के बारे में उनके दार्शनिक विचार और टिप्पणियां *'कॉनकॉर्ड और मैरिमैक नदी में एक सप्ताह'* नामक पुस्तक में दर्ज है। यह पुस्तक 1849 में प्रकाशित हुई थी, जब थोरो जीवित थे। उनके द्वारा लिखी गई अन्य पुस्तकें उनकी मृत्यु के बाद संपादित और प्रकाशित की गई हैं। थोरो को 1846 में जेल हुई थी, जब उन्होंने मेक्सिको के साथ अमेरिका के युद्ध का विरोध किया था। उन्होंने अपने प्रसिद्ध निबंध *'सिविल डिसोबेडिएन्स*(सविनय अवज्ञा)' में अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। महात्मा गांधी इस निबंध से काफी प्रभावित हुए थे। अमेरिकन नीग्रो को सामाजिक न्याय दिलाने की दिशा में काम करने वाले बहुत सारे व्यक्ति एवं अनुष्ठान भी निबंध से प्रभावित हुए थे। थोरो द्वारा लिखित छह ह पुस्तकें उनकी मृत्यु के बाद 1862 में प्रकाशित हुईं थीं। इन चारों को उन्नीसवीं सदी में प्रकाशित किया गया था, अर्थात् 'Excursion(भ्रमण)' (1863), 'The Maine woods(द मेन वुड्स)' (1864), 'A café cod (ए कैफे कॉड)' (1865) और 'A onkyee in Canada (ए ओंक्यी इन कनाड़ा)' (1866)। एक लंबे समय के बाद उनकी दो और पुस्तकें प्रकाशित हुईं। वे थी 'Faith in a seed (बीज में विश्वास)' और 'Wild Fruits (जंगली फल)' । थोरो ने अपने जीवन-दर्शन को बहुत ही कम वाक्यों में इस प्रकार लिखा है: -

"आपको वर्तमान में रहना होगा, हर लहर पर अपने आपको लांच करना होगा और प्रत्येक क्षण में अपने अनंत काल को देखना होगा। मूर्ख लोग अपने अवसर के द्वीपों पर खड़े होकर किसी दूसरी जमीन की ओर देखते हैं।कोई अन्य जमीन नहीं है; इसके सिवाय कोई दूसरा जीवन भी नहीं है।"

थोरो ने अपनी जीवनचर्या से कई उदाहरणों का हवाला दिया है,जिससे मनुष्य अपने जीवन में खुशी और संतोष कैसे प्राप्त कर सकते हैं। मैंने इस बारे में लगभग सारी चीजें पढ़ी हैं। जिस दिन मैं वाल्डेन और उनका घर (जो अब एक संग्रहालय है) देखने गया था, साथ में लेकर गया था थोरो की कुछ रचनाओं को, उस पवित्र भूमि पर बैठकर, उस सुंदर हृदयस्पर्शी वातावरण में पढ़ने के लिए। उसके बारे में कुछ कहने का मतलब उनकी भाषा के उच्चारण को लिपिबद्ध करने के सिवाय कुछ और संभव नहीं है।

क्या दो साल अकेले रहकर उन्होंने अकेलेपन का सामना किया था ? हम में से बहुत से लोग अकेलापन महसूस करते हैं, भले ही,हम घनी आबादी वाले क्षेत्रों में रहते हैं। वास्तव में उनके अनुभव सीखना कितना आवश्यक है! वह अपनी भाषा में कह रहे है। मैं उसे अनुवाद करने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ ...। "मैं अकेला नहीं हूं ... .. एक डंडेलायन, एक मक्खी, एक मधुमक्खी की तुलना में। मैं उत्तर तारा, दक्षिण हवा, अप्रैल की बूँदाबाँदी या नए घर में पहली मकड़ी की तुलना में अकेला नहीं हूं।"

वह हर किसी के करीब था: अप्रैल की बूँदाबाँदी, एक उत्तर तारा या दक्षिण हवा।

"ज्यादातर पुरुष ... जीवन के बेहद कठोर परिश्रम तथा आलतू-फालतू चिंताओं से ऐसे जकड़े हुए है कि वे जीवन के सूक्ष्म फलों को नहीं तोड़ सकते है। "

" मैं जंगल में गया था क्योंकि मैं जीना चाहता था .. और मैंने देखा कि उससे क्या सीखना था, और क्या नहीं, जब मैं मरने लगा था, तब पता चला कि मैं जीवित नहीं हूँ।"

जादुई काव्यात्मक भाषा में उनकी कुछ पंक्तियों पर फिर से गौर कीजिए:

" समय है,मैं जिस धारा में मछह ली पकड़ने जाता हूँ। इसकी पतली धारा दूर ले जाती है लेकिन अनंतकाल बना रहता है। मैं और गहराई से पानी पीता हूं, आकाश में मछह लियां पकड़ता हूँ, जिसका धरातल सितारों से भरा हुआ है।"

" केवल उस दिन ही प्रभात होती हैं,जिस दिन हम जागते हैं। प्रभात होने के लिए बहुत दिन हैं। सूरज तो एक सुबह का तारा है।"

" मैं चिंतित हूं ... .. दो अनंत-काल, भूत और भविष्य के संगम पर खड़े होते हुए, जो सूक्ष्मता से वर्तमान क्षण ही है।"

“मुझे अपने जीवन में एक व्यापक अंतर पसंद है।"

यह उनका दृढ़ संकल्प था (दो साल तक वाल्डेन में स्वेच्छा से अकेले रहने का अर्थ था) कि जीवन का मार्जिन खूब प्रशस्त रहें। इसे खाली पड़ा रहने दो, मगर इसमें बकवास नहीं भरी होनी चाहिए। हम उन दोनों चरम सीमाओं के मिलन बिंदु पर जीवन जीना सीखते हैं, अतीत और भविष्य के मिलन बिंदु वर्तमान पर।

"इतने शरद ऋतु और सर्दियों के दिन बिताए ...।

हवा को सुनने और उसे साथ ले जाने की कोशिश करते हुए ।"

एक कवि, खुद में खोया हुआ कवि। थोरो! जिसने खेती करने की कोशिश की, फसल उगाने की कोशिश की और तालाब में मछह ली पालने की कोशिश की! लेकिन जिनके कान हमेशा सुनने को तत्पर थे, कि शीत ऋतु में हवा क्या कहती है !

हम जानते हैं कि थोरो हार्वर्ड से 1837 में स्नातक हुए थे, 1845 तक इधर-उधर काम किए, इमर्सन के घर में 1841 से 1843 तक रहे थे और वाल्डेन तालाब के तट पर कुटीर में 1844-45 बिताए। उन्होंने 1841 में वाल्डेन जाने के लिए अपना मन बनाया था। 24 दिसंबर, 1841 को, उन्होंने अपनी डायरी में लिखा:

"मैं जल्द ही जाना चाहता हूं और तालाब के साथ जीऊँगा ... .. मेरे दोस्त मुझसे पूछह ते हैं कि मैं वहां क्या करूंगा? क्या मौसम के कार्यक्रमों को देखना किसी रोजगार से कम है? "

उन्होंने यह कहने के लिए नहीं कहा था। उन्होंने अपनी अंतरात्मा की आवाज सुनी होगी। आधुनिक समाज और दग्ध जीवन के लिए अमृत की तलाश कर था वह। उन्होंने दुनिया को त्याग नहीं किया, वह वर्तमान में रहते थे। उन्होंने हर समय अपनी जीवन को दूसरों के जीवन की प्रकृति के साथ एकात्म करने का प्रयास किया। उनकी मृत्यु के कई सालों बाद प्रकाशक ह्यूटन मिफ्लिन ने 1907 में अठारह संस्करणों में उनकी समग्र रचनावली को प्रकाशित किया। इस संकलन का नाम *'द राइटिंग ऑफ़ थ्योरम'* है। इस तरह के ऋषि प्रतिम व्यक्ति के कॉलेज (जो हार्वर्ड यार्ड पर चलते हैं) में अध्ययन करने और उनके कुटीर के पास बैठना मेरे लिए किसी दिव्य अनुभव से कम नहीं था!

नथानियल हॉथोर्न (1804-1864)

हॉथोर्न अमेरिका के सर्वप्रथम प्रसिद्ध उपन्यासकार थे।उनका उपन्यास *'द स्कार्लेट लेटर'* भविष्य के अमेरिकी समाज,चिरंतन मूल्यबोध और वर्तमान समय के संघर्ष और जीवन स्वप्न के अप्रत्याशित परिणति की प्रभावी व्याख्या करता है।उनका जन्म 1804 में न्यू इंग्लैंड के उत्तरी क्षेत्र में स्थित सालेम के एक कुलीन परिवार में हुआ था। सालेम सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दियों में जादू-टोने के लिए कुख्यात था। चुड़ैलों को सज़ा देने के लिए विशेष अदालतें स्थापित की गई थीं और उनके लिए न्यायाधीशों की नियुक्ति की गई थी। हॉथोर्न के पूर्वजों (शायद उनके परदादा) में से एक ऐसा न्यायाधीश था,जिनके दरबार में कई चुड़ैल-प्रसंगों की सुनवाई हुई थी।रिकॉर्ड के मुताबिक वह 1692-93 में एक न्यायाधीश थे और उनके द्वारा दिए गए निर्णयों को संरक्षित रखा गया है। हॉथोर्न ने उन निर्णयों को विस्तारपूर्वक पढ़ा था, जिस पर उनका प्रसिद्ध उपन्यास *'द स्कार्लेट लेटर'* आधारित था। जब वे केवल चार वर्ष के थे, तब उनके पिता की सुरीनाम के समुद्र में डूबने से मृत्यु हो गई थी। नाना के घर उनका बचपन बीता और प्राथमिक शिक्षा भी वहीं हुई। उन्होंने कहा है कि उनका प्रारंभिक जीवन कई कहानी पुस्तकों को पढ़ने, छोटी-छोटी काल्पनिक कथा-वस्तुओं की खोज करने,अपने घर और पास-पड़ोस के युवाओं को कहानियां सुनाकर मनोरंजन करने में प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत हुआ। ऐसी पृष्ठभूमि और परिवेश से उपन्यासकार और कथाकार होने की प्रवणता उनके हृदय में बलवती हुई। मां अपने बेटे के मन को समझ गई थीं,इसलिए उसने उसे प्रोत्साहित किया। उसने आशा व्यक्त की कि उसका बेटा एक दिन एक महान

लेखक होगा। पितृविहीन हॉथोर्न जब सत्रह वर्ष का था,तो उसने ननिहाल स्थित एक कॉलेज में तीन साल तक अध्ययन किया था। कॉलेज में उनके दो अंतरंग मित्र बने। एक कवि लॉन्गफेलो थे और दूसरे फ्रैंकलिन पियर्स, जो अमेरिका के चौदहवें राष्ट्रपति हुए। हॉथोर्न ने अपनी कॉलेज की शिक्षा समाप्त कर लगभग दस वर्षों तक पत्रिकाओं में लघु कथाएं लिखीं।उनका मित्र सुलिवन *'डेमोक्रेटिक रिव्यू'* नामक एक पत्रिका प्रकाशित करता था। हॉथोर्न ने उस पत्रिका के लिए 25 से 30 कहानियां लिखीं, जिसका उसे कुछ पारिश्रमिक भी मिला था। उन्होंने अपनी लघु कथाओं का शीर्षक *'सेवन टेल्स ऑफ माय नेटिव लैंड'* से संकलन कर कई प्रकाशकों को भेजा। दुर्भाग्यवश, किसी भी प्रकाशक ने इसे स्वीकार नहीं किया। हॉथोर्न ने निराशा और गुस्से में इस पांडुलिपि को जला दिया। उन्होंने 1828 में अपना पहला उपन्यास छह द्म नाम से अपने खर्च से प्रकाशित किया। उपन्यास का नाम *'fanshawe'* था। उन्होंने अपने दोस्तों को उपहार-स्वरूप कुछ प्रतियां भेंट कीं। उन्होंने अपने इस प्रथम उपन्यास में कॉलेज जीवन के बारे में लिखा था। उपन्यास की एक भी प्रति नहीं बिकी। अनबिकी किताबें उनके घर में पड़ी हुई थीं। निराशा से उन्होंने फिर से उन सभी अनबिकी प्रतियों को आग लगा दी।

सतही तौर पर देखा जाए तो, एक लेखक के रूप में उनका जीवन बहुत ही निराशाजनक ढंग से शुरू हुआ था और इससे उन्हें बहुत दुःख हुआ था। एक प्रकाशन-संस्था के लिए 1836 और 1841 के बीच उन्होंने कुछ बाल-साहित्य लिखा और अमेरिकी समकालीन साहित्य पर कुछ निबंध भी। हॉथोर्न के जीवन में 1842 में वास्तविक परिवर्तन हुआ। इस वर्ष के दौरान उन्होंने इमर्सन और थोरो से मुलाकात की और कॉनकॉर्ड में भी रहने लगे। उसी वर्ष उनका विवाह भी हुआ। उन्होंने महसूस किया कि साहित्य की कमाई से घर चलाना मुश्किल था। इस संदर्भ में उन्होंने कहा, "मेरा साहित्य और मेरी ज्ञान-गरिमा, घर-परिवार चलाने के लिए मुझे पर्याप्त कमाई नहीं दे पा रही है।" कॉनकॉर्ड में घर चलाने के लिए उन्हें धन उधार लेना पड़ा। अपना कर्ज़ चुकाने के लिए सालेम बन्दरगाह पर उन्हें तीन साल के लिए सर्वेक्षक का काम करना पड़ा। मन लगाकर काम नहीं करने के कारण बंदरगाह के अधिकारियों ने उन्हें नौकरी से निकाल दिया । इस प्रकार उन्हें लंबे समय तक कई विफलताओं का सामना करना पड़ा। सन 1850 में प्रकाशित *'द स्कार्लेट लेटर'* उनके साहित्यिक जीवन की पहली पुरस्कृत कृति थी। उसके बाद *'द हाउस ऑफ सेवन गैबल्स'* दूसरा सफल उपन्यास अगले वर्ष प्रकाशित हुआ।

हॉथोर्न मनुष्य के जीवन के अंधेरे पक्ष के बारे में अधिक जागरूक थे, शायद अपने जीवन के अनुभवों की वजह से। वे कॉर्कशायर के लेनॉक्स में कुछ समय हर्मन मेलविले के साथ रहे थे। मेलविले उन्हें बहुत प्यार करते थे,इसलिए उन्होंने न केवल उनका उपन्यासों की दुनिया में स्वागत किया था, वरन उन्हें सभी प्रकार की सहायता भी प्रदान की थी। यहाँ तक कि अपना प्रसिद्ध उपन्यास *"मोबी डिक"* को उन्हें समर्पित किया था। मेलविले के दृष्टिकोण, जीवन के प्रति आभिमुख्य और लेखन-शैली ने स्पष्ट रूप से उन्हें प्रभावित किया था।

हॉथोर्न ने कुछ समय तक सरकारी काम भी किया था। वे सात साल तक इटली में रहे। लेकिन उन्होंने अपनी नोटबुक में कुछ चीज़ों को लिखने के अलावा इस अवधि में कोई उपन्यास या कहानी नहीं लिखी थी। वे 1860 में अमेरिका लौट आए। उन्होंने 1860 में अपना अंतिम उपन्यास *'द मार्बल फ़ौन'* लिखा था। कॉनकॉर्ड में उन्होंने अपने घर का नाम *'द वेसाइड'* रखा था अर्थात् रास्ते का किनारा। उस समय उन्होंने कुछ अच्छे निबंध लिखे, जिसका संकलन 1863 में *'अवर ओल्ड होम'* शीर्षक से प्रकाशित हुआ। उनकी पत्नी ने उनकी मृत्यु के बाद कई डायरी और नोट्स संपादित कर प्रकाशित किए थे। अपने दोस्त फ्रैंकलिन के साथ एक पहाड़ी इलाके में सफर करते समय उनका निधन हो गया था।

'द स्कारलेट लेटर' निस्संदेह उनकी सबसे अच्छी रचना है।इस उपन्यास में कुछ प्रतीकों का बार-बार उपयोग किया गया है, जो पाठक का ध्यान आकर्षित करते हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं के बारे में कहा, *"मेरी रचनाएँ वे फूल हैं जो छाया में खिलते हैं।"* परवर्ती लेखक उन्हें उच्च कोटि का उपन्यासकार मानते थे। आलोचकों का मानना है कि उनके प्रतीकों का अर्थ व्यापक है। वे कहते हैं कि हॉथोर्न की रचनाओं में क्रूर वास्तविकता और आदमी के सपने,आवेग,अभीप्सा परस्पर एक-दूसरे के विरोधी हैं, और ज्यादातर मामलों में, वास्तविकता की ही दूसरों पर विजय होती है। कुछ आलोचकों ने उनकी तुलना परवर्ती अनन्य उपन्यासकार हेमिंग्वे और काफ्का से की है। वे कॉनकॉर्ड के लेखक, दार्शनिक परिवार के मुख्य व्यक्ति थे।

लुइसा अल्कोट

लुइसा मे अल्कोट उपन्यास *'लिटिल वुमेन'* की लेखिका हैं,जो कॉनकॉर्ड की निवासी थीं । उन्होंने कॉनकॉर्ड ऑर्चर्ड हाउस में यह उपन्यास लिखा था। जिस छोटे घर के पास वे बैठकर लिखती थी, वह घर अब तक अच्छी तरह से संरक्षित है। उन्होंने और उनकी बहनों ने बोस्टन के लुईसबर्ग में अपने जीवन काल का अधिकांश हिस्सा बिताया था। लुइसा की मृत्यु 6 मार्च, 1888 को हुई थी। कॉनकॉर्ड जाने से पहले मैंने बोस्टन में उनका तथा उनकी बहनों अन्ना और एलिजाबेथ के घरों को देखा था।

अल्कोट परिवार ने कॉनकॉर्ड के ऑर्चर्ड हाउस में अपने जीवन का दीर्घ काल व्यतीत किया था। उस घर में उनका लेखन टेबल ही नहीं,वरन उनके सेल्फ में संग्रहीत एवं हस्ताक्षरित किताबें अभी भी मौजूद हैं। मुख्यतः चार्ल्स डिकेंस, जॉर्ज इलियट, गोएटे और हॉथोर्न की पुस्तकें रखी हुई हैं। खिड़कियों के बाहर के दृश्य (जो 'लिटिल वुमेन' में कई जगह वर्णित हैं) बहुत सुंदर हैं। घर के सभी फर्नीचर भी अच्छी तरह से संरक्षित रखे गए हैं। मुझे नहीं पता था कि लुइसा अल्कॉट अमेरिकी युवा पाठकों में बहुत लोकप्रिय थी। जिस दिन मैं वहां गया था, उस दिन मैं उस घर के सामने लगी लंबी कतार से उनकी लोकप्रियता का अनुमान सहज लगाया जा सकता था। तीन गाइड थे, जो उस जमाने के कपड़े पहने हुए थे। ऑर्चर्ड हाउस जाने वाली सड़क पर ज्यादा यातायात नहीं था। दर्शकों के अलावा ज्यादा भीड़ नहीं थी। उनकी कब्र घर के नजदीक थी। घर से कब्र तक जाने का रास्ता बकाइन फूलों से लदा हुआ था, उन फूलों की खुशबू हवा में तैर रही थी।

अचानक मेरी उस जगह पर हमारे इस कोर्स के एक सहपाठी दोस्त से मुलाकात हो गई। जूलियन सोबिन, उद्योगपति तथा उनके साथ उनकी पत्नी, दो बेटियां और एक भतीजी से। जूलियन ने बताया कि उनकी बेटियां और भतीजी लुइसा के लेखन के पीछे पागल है। बाद में पता चला कि जूलियन और उनकी पत्नी के साथ वे कई बार लुइसा के घर आ चुकी हैं। वास्तव, में लुइसा की अमेरिकी युवा पीढ़ी में लोकप्रियता देखकर मैं अचंभित था। मेरी राय में, *'लिटिल वुमेन'* उपन्यास पढ़ना सुखद है,इसमें चरित्र चित्रण भी सुंदर है।ऐसा कहा जाता है कि इस उपन्यास के कई पात्र लुइसा की बहनों और अन्य संबंधियों पर आधारित हैं। संक्षेप में, इसे एक स्वच्छ और आकर्षक रोमांटिक उपन्यास कहा जा सकता है।

लुइसा अपनी रचनाओं के लिए जितना लोकप्रिय थीं,उतनी ही अपने परिवार और जीवन के लिए। उनका चरित्र काफी जटिल था। उनके पिता आदर्शवादी और एक शुभचिंतक दार्शनिक थे, जो अपनी आय के प्रति पूरी तरह उदासीन थे। पिता, लंबे समय से बीमार चल रही मां, बहनें, भतीजे और भतीजी वाले बड़े परिवार को चलाने का दायित्व लुइसा के ऊपर था। इसलिए शायद अपने परिवार को चलाने हेतु पैसे कमाने के लिए उन्होंने कई

साधारण उपन्यास और लघु कथाएं लिखी थीं। उनका लेखन समकालीन नैतिकता के प्रति बेहद उदासीन एवं विरोधाभासी था। छह तीस वर्ष की उम्र में उन्होंने जिस 'लिटिल वुमन' उपन्यास की रचना की थी,जो शीघ्र लोकप्रिय ही नहीं हुआ,बल्कि समीक्षकों द्वारा भी अत्यधिक सराही गई । उनके जीवनी लेखक के अनुसार कई बार प्रशंसकों से बचने के लिए वह अपना घर छोडकर बोस्टन चली जाती थी।

ऑर्चर्ड हाउस जाने से पूर्व आल्कोट परिवार का प्राचीन घर 'हिल साइड' लेक्सिंगटन रोड पर ऑर्चर्ड हाउस के निकट स्थित था। उन्होंने अपने इस घर को नाथनीएल हॉथोर्न को बेच दिया था और हॉथोर्न ने उस घर का नाम 'द वे साइड' में बदल दिया। हॉथोर्न, इमर्सन, थोरो, मार्गरेट फुलर और कुछ अन्य प्रसिद्ध लेखक अल्कोट परिवार से पड़ोसियों के रूप में सामाजिक और साहित्यिक स्तरों पर जुड़े हुए थे। उनकी एक सांस्कृतिक साहित्यिक गोष्ठी थी। अवश्य, थोरो कुछ समय बाद वाल्डेन पॉन्ड के नजदीक छोटे कुटीर में चले गए, वह तालाब और थोरो दोनों दुनिया भर में प्रसिद्ध हो गए। उनके आदर्श, सरल जीवन शैली और अकृत्रिम प्रकृति प्रेम ने कई बुद्धिमान लोगों को प्रभावित किया। यह सर्वविदित है कि महात्मा गांधी भी उनका तथा उनके आदर्शों का बहुत सम्मान करते थे।

‘हिलसाइड' घर में वे केवल तीन साल रहे। उस समय लुइसा केवल बारह साल की थी, मगर *'लिटिल वुमन'* की मूल कथावस्तु उनके दिमाग में जन्म ले चुकी थी। उपन्यास की पात्र अपने परिवार से थी, उसकी बहन। लुईसा लेखिका बन गई।यह घर छोड़ने से पहले उनकी पहली पुस्तक *'फ्लॉवर फैबेल्स'* प्रकाशित हुई थी। उनकी बहनों में एलिजाबेथ पियानोवादक बन गई और *'मे'* चित्रकार। तीन बहनों ने एक साथ मिलकर *‘पिलग्रीम प्रोग्रेस'* में अभिनय किया था।

एलिज़ाबेथ की ऑर्चर्ड हाउस में मृत्यु हो गई। एलिज़ाबेथ के स्मारक भवन में उनके पिता ने दैनिक काम बाँट दिए थे, अपनी बेटियों को ऊपरी मंजिल में एक लटकते बोर्ड पर लिखित निर्देश देकर। यह निम्नानुसार था :

(1)सुबह 5.30 बजे - बिस्तर त्यागना, स्नान और ड्रेस अप होना

(2) सुबह 9.00 बजे - अध्ययन,

(3) दोपहर 2 बजे - सिलाई का काम

(4) शाम को 4 बजे - कोई भी काम,जो बताया जाए।

लुइसा के कमरे की दीवार पर लिली का एक सुंदर चित्र टंगा हुआ था। उसकी चित्रकार बहन ‘मे’ का उद्देश्य था, लुईसा बिस्तर से उठते ही उसे देखकर आनंद अनुभव करे। उस समय तक अमेरिकी सिविल युद्ध के दौरान नर्स का काम कर रही लुइसा आजीवन अपंग हो गई थी, किसी गलत चिकित्सा के कारण। उनका परिवार 1877 में थोरो से खरीदे हुए नजदीकी घर में चला गया। वर्तमान समय में दर्शकों को घर के अंदर जाने की अनुमति नहीं है, क्योंकि यह किसी का निजी आवास बन गया है। लेकिन ‘हिलसाइड' या 'ऑर्चर्ड हाउस' की तुलना में यह घर बहुत बड़ा और बहुत सुंदर है।

कॉनकॉर्ड रास्ते में पड़ने वाले इन सारे घरों को देखते हुए मैं अन्य पर्यटकों के साथ कुछ दूर चला गया। सड़क के अंत में आया-स्लीपी होलो सेमेटेरी। इसके अंदर देवदार पेड़ के विशाल वृत्त में स्थित है- आथर रिज। इमर्सन, हॉथोर्न, थोरो और अल्कॉट परिवार के सदस्यों की यहाँ समाधि बनी हुई है। ऐसा कहा जाता है कि वे सभी कॉनकॉर्ड शहर में अपने प्रिय मित्रों के बीच समाधि लेना चाहते थे। स्थानीय लोगों ने वहाँ देवदार पेड़ के साथ-

साथ कई फूलों के पौधे लगाए हैं। कई पर्यटक इस जगह की यात्रा करते हैं। आज यह अमेरिका का अन्यतम तीर्थ-स्थल बन गया है।

16. हार्वर्ड से बहुदिगंत आनुष्ठानिक भ्रमण

सीफा पाठ्यक्रम की अन्यतम विशेषता सीफा द्वारा आयोजित अनेक आनुष्ठानिक भ्रमण थे, जिसका उद्देश्य संबंधित सरकारों, उनके वरिष्ठ अधिकारियों और अन्य संगठनों के साथ उच्च स्तरीय चर्चाओं का आयोजन करना था। इस कार्यक्रम के तहत हम निम्नलिखित स्थानों पर भ्रमण करने गए।

न्यू हैम्पशायर राज्य के शरद ऋतु में पतझड़ देखने के साथ-साथ हमने उस वर्ष के राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार माइकल डकाकिस से मुलाक़ात की और हमने अमेरिका की चुनाव प्रक्रिया की प्रत्यक्ष जानकारी प्राप्त की। यह कार्यक्रम विश्वविद्यालय ने खुद आयोजित किया था। इसके अलावा, हमने औपचारिक निमंत्रण प्राप्त कर तीन देशों की विधिवत यात्रा की। सबसे पहले, हमने अमेरिकी सरकार के निमंत्रण पर वॉशिंगटन, मिनियापोलिस - सेंट पॉल, न्यू ऑरलियन्स, जैक्सन और ऑरेंज काउंटी का भ्रमण किया।

दूसरे, हम यूरोपीय संघ के निमंत्रण पर एक सप्ताह स्ट्रासबर्ग के केंद्रीय संसद में गए थे। हमने ब्रसेल्स में संघ के केंद्रीय सचिवालय का भी दौरा किया और वहां के अधिकारियों के साथ चर्चा की।

तीसरे, कनाड़ा सरकार के निमंत्रण पर बीस दिनों के लिए हमने कनाड़ा के छह प्रमुख शहरों (क्यूबेक, मॉन्ट्रियल, ओटावा, टोरंटो, कैलगरी और वैंकूवर) का दौरा किया। हमने ओटावा में स्थानीय संसद सदस्यों, बड़े महानगरीय निगमों के अधिकारियों और राज्य प्रशासन के अधिकारियों के साथ चर्चा की।

अंत में, हमने पंद्रह दिनों के लिए जापान, कोरिया और चीन सरकार के निमंत्रण पर उन देशों के कुछ शहरों का दौरा किया। निजी कारणों से मैं इस यात्रा में सरीक नहीं हो सका था।

ये सब हमारे हार्वर्ड पाठ्यक्रम का औपचारिक हिस्सा थे। इसलिए हमने इन स्थानों पर एक साथ यात्रा की है। यूनिवर्सिटी द्वारा आयोजित कार्यक्रम और अमेरिकी शहरों के यात्रा-वृतांत पर इस अध्याय में चर्चा की गई है। जबकि यूरोपीय समुदाय और कनाड़ा के यात्रा-वृतांत परवर्ती अध्याय में दिए गए है।

न्यू हैम्पशायर, चुनाव एवं पतझड

सर्दी में कैंब्रिज, बोस्टन में बहुत ठंड पड़ती है।

सीधे कनाड़ा से उत्तरी हवा ठंड लेकर आती है। मैंने बोस्टन की हड्डी-कंपाने वाली ठंड बर्दाश्त की है। एस्किमो वेश में कॉनकॉर्ड एवेन्यू में अपने घर से सीफा तक थोड़ी दूरी पर चलना बहुत कष्टप्रद था। मुझे बर्फ पर बर्फीले जूते पहनकर चलने का भी अनुभव है। हार्वर्ड में सितंबर में शरद ऋतु की शुरुआत हो जाती है। शरद ऋतु में पेड़ों के रंग लाल, पीले, नारंगी और कई मिश्रित रंग हो जाते हैं-ऐसे शोभावन की सुंदरता जिसने नहीं देखी हो; वह उसकी कल्पना भी नहीं कर सकता है। हार्वर्ड आने से पहले मैंने भी ऐसा अनुभव नहीं किया था। मैंने शरद ऋतु में लेनिनग्राद के बाहरी इलाके वाले जंगलों में कुछ ऐसे पेड़ों को देखा था। बाद में मुझे पता चला कि उत्तरी अक्षांश में शरद ऋतु जल्दी आती है और जल्दी समाप्त हो जाती है।वहाँ सर्दी दीर्घ समय तक रहती है।

सीफा ने हमारे लिए हार्वर्ड के उत्तर में स्थित न्यू हैम्पशायर में शरद ऋतु के जंगलों की शोभा देखने की व्यवस्था की थी। हम सभी एक वातानुकूलित बस में वहाँ गए। अमेरिका में लगभग सभी सड़कें बहुत चौड़ी हैं, साधारण रास्तों से राजमार्ग, अंतरराज्यीय सड़कें, बेल्टवेज़ और टर्नपाइक मार्ग और भी चौड़े हैं। वहाँ वाहनों की रफ्तार **100** किलोमीटर प्रति घंटे से अधिक होती है। कम गति वाले वाहन सड़क के किनारे और सबसे तेज गति वाली गाड़ियाँ सड़क के मध्य में चलती हैं। इसलिए हम लगभग दो घंटों में ही न्यू हैम्पशायर पहुंच गए।वहाँ के दृश्य देखने के लिए पहले से व्यवस्था की गई थी। एक छोटी पहाड़ी, जो नीचे से लगाकर ऊपर तक पेड़ों से भरी हुई थी। और क्या वर्णविभा! क्या रंग-महोत्सव!! केवल भगवान ही ऐसे रंगों को संयोजित कर सकते हैं। कोई चित्रकार या आधुनिकतम वसन शिल्प-कारीगर भी इतने सारे रंगों और उनके मिश्रण के बारे में नहीं सोच सकते हैं।फिर पहाड़ी जैसे विस्तृत कैनवास पर मिश्रण का उपयोग करना प्राय: असंभव है !

न्यू हैम्पशायर के अधिकारियों द्वारा हमारे लिए व्यवस्था की गई थी। कुर्सियां रखी हुई थीं, चाय, कॉफी और स्नैक्स तैयार थे। मैं चाय पीते हुए उस शानदार दृश्य का आनंद लेने लगा। किसी ने मानो हृदय पर वह दृश्य अंकित कर दिया हो। जो अविस्मरणीय है, और रहेगा। सत्रह वर्ष के बाद अभी जब मैं उसके बारे में लिख रहा हूँ तो मेरे मानस पटल पर वह दृश्य उभर कर सामने आने लगता है। मैंने सुना है शरद का वर्णाढ्य आगमन दस-बारह दिन पहले हुआ है और यह पन्द्रह-बीस दिन तक रहेगा। बीस दिन के बाद पेड़ धीरे-धीरे अपने आभूषणों को जमीन पर गिरा देंगे। अलग चरण शुरू होगा। दु:ख से पेड़ पत्तियों को अलविदा कहेगा। लोहे के तारों की तरह डालियाँ, शाखा-प्रशाखाएं अप्रैल तक ऐसे ही खड़ी रहेगी बसंत के इंतजार में, वे जानते है कि शीत ऋतु को रंगों की सुंदरता पसंद नहीं है। मृत्यु तुल्य शीतल परिवेश केवल श्वेत बर्फ का स्वागत करती है। इसलिए उन्होंने रंगीन कपड़े त्याग कर विधवा वस्त्र धारण किया है।

देखते-देखते एक घंटा बीत गया। वापस जाने का समय आ गया। बाद में, मैंने हार्वर्ड की सर्दियों में पेड़ों का ध्यान-मग्न तपस्वी रूप देखा।

वहाँ से वे अधिकारी हमें डुकाकीस के मुख्य चुनाव कार्यालय में ले गए। न्यू हैम्पशायर शहर राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार माइकल डुकाकीस का अपना क्षेत्र था।वहाँ उनका बहुत प्रभाव था। चारों तरफ उनके पोस्टर, प्रचारपत्र, टेलीविज़न, समाचार पत्र, टेलीफोन, ईमेल, विज्ञापन आदि के माध्यम से चुनाव प्रचार पर लाखों रूपए खर्च किए गए थे। तब मुझे पता चला कि अमेरिकी चुनाव कितने महंगे होते हैं ! कितना अनाप-शनाप पैसा खर्च होता है! पार्टी बहुत पैसा खर्च करती है, दोस्तों,शुभचिंतकों, संगठनों आदि से बड़ी मात्रा में धन भी प्राप्त किया जाता है। डुकाकीस पार्टी के कार्यकर्ताओं ने हमें सब कुछ समझाया। अमेरिका के राष्ट्रपति का चुनाव प्रत्यक्ष वोट से होता है। पोपुलर वोट इलेक्टोराल कॉलेज वोट में बदल जाते है। प्रत्येक राज्य में ऐसे विशिष्ट संख्या में वोट होते हैं, जिनमें दो भाग होते हैं। एक कांग्रेस में सदस्यों की संख्या है,जो संबंधित राज्य की जनसंख्या द्वारा तय की जाती है। दूसरा, प्रत्येक राज्य सीनेट के दो सदस्यों का चुनाव करता है। राज्य का इलेक्टोरल कॉलेज बनाने के लिए दोनों को मिलाया जाता है। अमेरिका में कुल इलेक्टोरल कॉलेज के वोट 538 है, जिसका अर्थ है कि अगर किसी को 270 मत मिल जाए तो राष्ट्रपति के रूप में उनका चयन हो जाता है। उदाहरण के लिए, जॉर्ज बुश को 286 वोट मिले और 2004 के चुनावों में उनके प्रतिद्वंदी जॉन केरी को 252 वोट मिले। बुश रिपब्लिकन पार्टी (जिसका दूसरा नाम **GOP** या ग्रैंड ओल्ड पार्टी है) और कैरी डेमोक्रेट दल का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। एक राज्य में बहुमत प्राप्त करने वाले उम्मीदवार को राज्य के सभी इलेक्टोरल कॉलेज के वोट मिलते हैं। उदाहरण के

लिए, कैलिफोर्निया में 55 मत हैं, टेक्सास में 34 वोट हैं और न्यूयॉर्क स्टेट में 31 वोट हैं (ये तीनों आबादी के दृष्टिकोण से पहले, दूसरे और तीसरे नंबर पर हैं)। केरी को कैलिफोर्निया और न्यूयॉर्क में अधिक पोपुलर वोट मिले, जबकि बुश को 2004 के चुनावों में टेक्सास में अधिक पोपुलर वोट मिले।

डुकाकीस पार्टी और निर्वाचन अधिकारियों ने अमेरिका की चुनाव प्रक्रिया, न्यू हैम्पशायर में उनकी संभावना, चुनाव प्रचार के विभिन्न पहलुओं और चुनाव के लिए धन जुटाने के तरीकों के बारे में विस्तार से बताया। ऐसे विशिष्ट संगठन हैं, जो कुछ उम्मीदवारों के लिए बड़ी मात्रा में अनुदान देते हैं। उदाहरण के लिए, अरबपति जॉर्ज सोरोस ने जॉन केरी के चुनाव निधि में 200 मिलियन डॉलर का योगदान दिया था। अधिकारियों ने हमें निजी टेलीविज़न और सार्वजनिक वाद-विवाद के प्रचार अभियान के बारे में बताया, जो कि प्रमुख उम्मीदवारों की प्रस्तावित नीतियों का बयान करती है। इसके बाद हमें विपक्षी उम्मीदवार के चुनाव कार्यालय ले जाया गया। विपक्षी शिविरों के लोगों ने हमें उनके दृष्टिकोण के बारे में बताया कि वे कैसे डुकाकियों से लड़ने जा रहे हैं। उन्होंने दो दृष्टिकोण समझाए, अर्थात् विदेश नीति और घरेलू नीति। मैं इस विषय पर ज्यादा नहीं कहना चाहता।

आखिरकार, डुकाकीस से हमारी मुलाक़ात हुई। उन्होंने अपने, अपने परिवार, अमेरिका के लिए उनके सपने और इन सपनों को साकार करने की उनकी योजनाओं के बारे में संक्षिप्त प्रकाश डाला। सीफा के निदेशक लेस ब्राउन ने पहले हमारा व्यक्तिगत परिचय करा दिया था। उन्होंने हमारे देशों की चुनाव प्रक्रियाओं के बारे में पूछा। उन्होंने हमारे सवालों का जवाब भी दिया। मैंने उनसे भारत के संबंध में उनकी पार्टी की नीति के बारे में पूछा था।

चाय-नाश्ता करने और एक ग्रुप फोटो लेने के बाद हम हार्वर्ड लौट आए। हमने सारे रास्ते अमेरिकी चुनावों पर चर्चा की। हमने लेस ब्राउन से पूछा कि उनके हिसाब से अमेरिका का राष्ट्रपति कौन होने जा रहा है। उन्होंने अपनी राय देने के साथ-साथ संभाव्य मत भी दिया। उन्होंने द्विपक्षीय चुनावों की विशिष्ट सुविधाओं के बारे में विस्तार से बताया। बाद में केनेडी स्कूल ऑफ गवर्नमेंट के राजनीति विज्ञान के विशारद और सीफा के चेयरमैन शमूएल हंटिंगटन ने हमें कई सैद्धांतिक पहलू समझाए। उसके बाद अमेरिकी सरकार के निमंत्रण पर हमने पांच अमेरिकी शहरों का दौरा किया।

वॉशिंगटन : अमेरिका की सर्वशक्तिमान राजधानी की विरासत और संस्कृति

हार्वर्ड विश्वविद्यालय के सेंटर फॉर इंटरनेशनल एफेयर्स में एक वर्ष प्रशिक्षण पर आए फ़ेलो के लिए अमेरिका का विदेश विभाग वहाँ के कुछ शहरों का दौरा करने की व्यवस्था करता है। उस वर्ष दो सप्ताह यात्रा की योजना बनाई गई थी। यात्रा **9** जनवरी से शुरू हुई और **26** जनवरी को समाप्त। फेडरल कैपिटल वाशिंगटन हमारा पहला पड़ाव था। बाद में हम मिनेयापोलिस- सेंट पॉल, न्यू ऑरलियन्स, जैक्सन और कैलिफोर्निया के ऑरेंज काउंटी (उसी क्रम में) हार्वर्ड जाने से पहले गए। हम **9** जनवरी की दोपहर को बोस्टन से वॉशिंगटन गए थे। जब मैं हार्वर्ड से किसी दूसरे स्थान पर जाता था तो आम तौर पर मैं अपने अपार्टमेंट से हवाई अड्डे तक टैक्सी किराए पर ले लेता था। लेकिन उस दिन मुझे मेरे इस कोर्स के सहपाठी इतालवी मित्र रॉबर्टो टस्कानो

और उनकी पत्नी अपने साथ हवाई अड्डे ले गए। श्रीमती टस्कानो ने कार से हम दोनों को हवाई अड्डे पर छोड़ दिया।

अध्येताओं में **12** लोग हार्वर्ड में सपत्निक रह रहे थे। उन सभी के पास अपनी गाड़िया थीं। पुरानी कारें अमेरिका में बहुत सस्ते में मिल जाती थीं। उनके पास गाड़ी होने के कारण वे लोग हार्वर्ड ,कैम्ब्रिज केंद्रस्थल से कुछ दूर रहते थे। नजदीक में दो अन्य प्रसिद्ध विश्वविद्यालय भी थे। एक था बोस्टन विश्वविद्यालय और दूसरा मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एमआईटी)। इस क्षेत्र में घर का किराया बहुत अधिक था। उदाहरण के लिए, विश्वविद्यालय परिसर के निकट कॉनकॉर्ड एवेन्यू के जिस अपार्टमेंट में मैं रहता था, उसका मासिक किराया **900** डॉलर था। दक्षिण कोरिया के मेरे दोस्त यांग ली सोमरविल में मेरे घर से बड़े घर में रहते थे, जिसका मासिक किराया मात्र **1000** डॉलर था। हमारे सपत्निक मित्र हार्वर्ड में रहते समय हमें रात्रि-भोज पर आमंत्रित करते थे। ऐसे अवसरों पर मुझे कोरियाई, जापानी, इतालवी, जर्मन और स्वीडिश व्यंजनों का आनंद लेने का अवसर मिला। मेरी तरह नौ अकेले रहने वाले मित्र अपने दोस्तों और अध्यापकों को फ़ैकल्टी क्लब या किसी होटल में रात्रि-भोज के लिए आमंत्रित किया करते थे ।

सामान्य तौर पर अमेरिका की फ्लाइटें देरी से नहीं चलती है, लेकिन उस दिन बर्फबारी से मौसम खराब था।विमान उड़ने में कुछ देरी हुई। हम लगभग आठ बजे वाशिंगटन पहुंचे। वाशिंगटन से **22** मील दूर जर्मनटाउन में मेरी पत्नी के मामा की बेटी बुबु और दामाद रबू रहते थे। हार्वर्ड में अकेले रहने के कारण वे अक्सर टेलिफोन पर मेरे हालचाल पूछह ते रहते थे। जब उन्हें पता चला कि मैं वॉशिंगटन में आ रहा हूं, तो उन्होंने आग्रह किया कि मैं उनके साथ रहूँ, न कि किसी होटल में। मेरे आगमन का समय उन्हें मालूम था,इसलिए मेरे होटल पहुँचने से आधे घंटे पहले ही रबू वहाँ पहुंच गया था। होटल से जर्मनटाउन में उनके घर तक जाने के लिए गाड़ी में एक घंटा लगता था। बुबु खाना बनाकर घर में हमारा इंतजार कर रही थी। उनकी छह ह साल की बेटी भी जाग रही थी। उस समय बर्फबारी की वजह से हर जगह सफेद नजर आ रही थी। खाना खाने के बाद हम गपशप करने लगे, क्योंकि हम एक लंबे अंतराल के बाद एक दूसरे से मिल रहे थे। अगला दिन रविवार था और रबू की छुट्टी थी। वे वॉशिंगटन की बड़ी कंपनी आईबीएम में काम करते थे।हर दिन अपने घर से आना-जाना करते थे। उस दिन हमारा भी कोई प्रोग्राम नहीं था। स्वेच्छा से हम कहीं भी जा सकते थे।

हिमपात वाली उस सुबह चाय-नाश्ते के बाद छोटी लड़की शिबानी मेरी मार्गदर्शिका बनकर मुझे छोटे से तालाब के पास ले गई, वहाँ तैरते 4-5 बतखों को दिखाने के लिए। रात में भारी हिमपात हुआ था। हमने अवसर के अनुरूप एस्किमो कपड़े पहन रखे थे। तालाब के कुछ   किनारे बर्फ से जम गए थे। फिर भी बतख़ें खुशी से तैर रही थीं।यह जाहिर था कि शिवानी उनकी पुरानी दोस्त थी। वह उनके लिए कुछ   खाना ले जाती थी और उन्हें खुशी से खिलाती थी।

रबू की योजना के अनुसार 12 बजे हम बाल्टीमोर के लिए रवाना हुए। वहाँ हम दोनों को श्री रवि पटनायक ने मध्याहन भोजन के लिए आमंत्रित किया था। उस दिन रवि बाबू ने कई ओड़िया मित्रों को भी खाने पर बुलाया था। श्री सर्वेश्वर आचार्य उनमें से एक थे। वे कटक के रेवेन्शा कॉलेज के रसायन विज्ञान के पूर्व छात्र थे। श्री शरत मिश्रा(आई.पी.एस.) भी वहाँ थे,जो कभी भारतीय दूतावास में पहले काम करते थे। उनकी बेटी न्यूयॉर्क स्टेट यूनिवर्सिटी में अध्ययन कर रही थी। श्री नलिनी पंडा,कुछ   समय पहले यहाँ आए थे। उनके बेटे-बेटी की पढ़ाई मैरीलैंड में हुई थी। मैं मेरे एक और मित्र श्री योगेश पति से मिलने के लिए उत्सुक था, जिनका भौतिक

विज्ञानी में बहुत नाम था। योगेश बाबू रेवेन्शा कॉलेज में मेरे दो साल सीनियर थे। हम दोनों रेवेन्शा के पूर्व छात्रावास में रहते थे,पास-पास अलग-अलग रूम में। उनकी अध्ययन की नियमितता और प्रगाढ़ अनुराग मुझे प्रभावित करता था। उन्होंने पढ़ाई में मेरी बहुत मदद की थी। प्रत्येक दिन निर्धारित समय पर छात्रावास में बत्ती बुझा दी जाती थी। उन दिनों जोगेश बाबू खड़ाऊँ पहनते थे। बत्ती बुझते ही खड़ाऊँ की खट-खट करते हुए वह बाथरूम में जाते थे। वह आवाज मुझे याद आने लगी। मगर योगेश बाबू अपनी पत्नी के साथ भारत चले गए थे। इसलिए उनसे मुलाक़ात नहीं हो सकी।बंधु-मिलन और आतिथ्य ग्रहण करने के बाद हम शाम को जर्मनटाउन लौट आए।

उसके दूसरे दिन हम सुबह सात बजे वाशिंगटन के लिए रवाना हुए। पहले दिन से बहुत अधिक समय लगा था- लगभग दो घंटे। क्योंकि जर्मनटाउन में रहने वाले बहुत सारे लोग वॉशिंगटन में काम करते थे और हाइवे पर काफी ट्रेफिक था। मुझे होटल में छोड़कर रबू अपने ऑफिस चले गए।

वाशिंगटन पृथ्वी पर सबसे अमीर और सबसे शक्तिशाली राष्ट्र अमेरिका की राजधानी है। अमेरिकी संसद, राष्ट्रपति-कार्यालय, सभी प्रशासनिक प्रभाग और सुप्रीम कोर्ट यहां स्थित हैं। सभी सरकारी नीतियां यहां बनती हैं और यह सभी राजनीतिक और आर्थिक गतिविधियों की केंद्र-स्थली है। राष्ट्रीय जीवन में अहम भूमिका अदा करने के कारण वाशिंगटन अमेरिका का सबसे महत्वपूर्ण शहर है, भले ही,यह न्यूयॉर्क, शिकागो और लॉस एंजिल्स जैसी अन्य शहरों की तुलना में बहुत छोटा है।

वाशिंगटन केवल सत्ता, शक्ति, प्रशासन, सरकारी संप्रभुता और वित्तीय मसलों का ही केन्द्र नहीं है, वरन यह अमेरिका का प्रमुख सांस्कृतिक केंद्र भी है। स्मिथसोनियन संग्रहालय और यहां की गैलरी दुनिया भर में प्रसिद्ध हैं। यह अमेरिका के सिनेमाघरों, ओपेरा, पेंटिंग, गायन और नृत्य का भी केंद्र-स्थल है। उदाहरण के लिए, जॉन एफ कैनेडी सेंटर में तीन थियेटरों और दो ओपेरा शो में साल भर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाते है। दुनिया के कई देशों के बैले नृत्य नियमित रूप से वॉशिंगटन में किए जाते हैं। स्मिथसोनियन संगठन द्वारा अमेरिका के लोक कला और लोक नृत्य पर शोध की व्यापक व्यवस्था की गई है। नतीजतन अमेरिकी-भारतीय नृत्य और संगीत पर कई फिल्में, डीवीडी और सीडी बनाई जाती है।इस तरह वाशिंगटन, शक्ति, प्रशासन और संस्कृति के क्षेत्र में अमेरिका के जन-जीवन में एक विशेष स्थान रखता है।

हमारी यात्रा के पहले दिन पहली बैठक स्टेट डिपार्टमेन्ट में आयोजित की गई थी। अमेरिका का स्टेट डिपार्टमेन्ट उनका विदेश मंत्रालय है। स्टेट सचिव उनके विदेश मंत्री होते हैं। स्टेट डिपार्टमेन्ट एक बड़ा संगठन है।दुनिया के हर दूसरे देश के संबंध में अमेरिका जैसे एक शक्तिशाली राष्ट्र की विदेश नीति यहां पर निर्धारित की जाती है। स्टेट डिपार्टमेन्ट के कई उप-विभाजन हैं, अर्थात् नाटो, यूरोपीय संघ, दक्षिण पूर्व एशिया, मध्य पूर्व, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका। स्टेट डिपार्टमेन्ट का दो अन्य संगठनों के साथ घनिष्ठ संबंध है, जैसे रक्षा और आंतरिक सुरक्षा।

हमने स्टेट के उप सचिव से मुलाकात की और स्टेट डिपार्टमेन्ट में हमारे साथ कई मुद्दों पर चर्चा हुई। विदेशी सीनेट समिति के एक सीनेटर और दक्षिण पूर्व एशिया और नाटो की देखभाल करने वाले दो वरिष्ठ अधिकारी उनके साथ थे। उन्होंने हमें स्टेट डिपार्टमेन्ट के काम-काज, उसके अतीत और वर्तमान, युद्ध और शांति के समय

में रक्षा और आंतरिक सुरक्षा विभागों के साथ घनिष्ठ संबंध के बारे में समझाया। हमारी चर्चा शुरु होने से यूनाइटेड स्टेट इन्टरनेशनल एफेयर्स (यूएसआईए) द्वारा एक शानदार दावत का आयोजन किया गया था।

स्टेट डिपार्टमेन्ट से हम दुनिया का सबसे बड़े पुस्तकालय देखने गए। अमेरिका के लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस में दुनिया के सभी देशों की,सभी भाषाओं में और सभी विषय पर पुस्तकें उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त, विभिन्न विषयों पर विभिन्न देशों की कई पत्रिकाएं भी वहाँ हैं। विश्वविद्यालय पुस्तकालयों के हिसाब से हार्वर्ड विश्वविद्यालय की वाइडनर लाइब्रेरी विश्व में सबसे बड़ी है, लेकिन लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस में पुस्तकों का सबसे बड़ा संग्रह है। लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस में 11 हजार करोड़ वस्तुओं को संरक्षित किया गया है, जिसमें मुद्रित किताबें, पांडुलिपियां, प्राचीन फोटोग्राफ, शास्त्रीय संगीत की मूल शीट आदि शामिल हैं।

हमने लाइब्रेरी में चारों ओर घूमते समय थॉमस जेफरसन की निजी पुस्तकें,नोटबुक और निखुण भाव से रखी हुई अनेक प्राचीन बाइबल देखी। इसके अलावा, कंप्यूटर डिजिटल मशीनों के माध्यम से भी कई दस्तावेजों को संरक्षित किया गया है। विभिन्न देशों के प्रमुख लोगों के रचना-पाठ पर लाइब्रेरी ने सीडी और वीसीडी तैयार की है,जिसे एक अलग कमरे में सुरक्षित रखा गया है। कुछ साल पहले, उन्होंने पूर्व एशियाई लेखकों की रचनाओं पर सीडी तैयार की थी। नई दिल्ली में यू.एस.आई.ए.के कार्यालय ने भारतीय लेखकों की ऐसी सीडी और वीसीडी तैयार की थी। इस संग्रह में मेरी भी ग्यारह कविताएं संकलित हैं । हार्वर्ड आने से पहले मुझे पता चला था कि नई दिल्ली का यह कार्यालय हर भारतीय भाषाओं की किताबें एकत्रित कर *'लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस'* में भेज रहा है। मेरी पत्नी के चचेरे भाई श्री नागेंद्र नाथ मोहंती नई दिल्ली में इस संगठन में काम करते थे। इस लाइब्रेरी में प्राचीन, मध्ययुगीन और आधुनिक ओड़िया साहित्य, ओड़िया इतिहास, महिमा-धर्म, जगन्नाथ संस्कृति आदि कई किताबें देखकर मुझे बहुत खुशी हुई। मेरा मानना है कि *'लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस'* दुनिया का सबसे बड़ा सांस्कृतिक संगठन है, जो अमेरिका के लिए गर्व और गौरव है। यह बहुमंजिला पुस्तकालय वाशिंगटन के स्मिथसोनियन, व्हाइट हाउस, यूनियन स्टेशन, वाशिंगटन स्मारक और लिंकन मेमोरियल की तरह मील का एक पत्थर है। हम लाइब्रेरी का केवल छोटा-हिस्सा घूम पाए थे। मुख्य लाइब्रेरियन ने कुछ अधिकारियों के साथ हमें उनके कॉन्फ्रेंस हॉल में पुस्तकालय के संक्षिप्त इतिहास, पुस्तकों के संग्रह और वर्तमान स्थिति के बारे में जानकारी दी थी।

'लाइब्रेरी ऑफ कॉग्रेस' ने हमारे लिए दोपहर के भोजन की व्यवस्था की थी। भोजन करने के बाद हम वाशिंगटन के प्रसिद्ध रेलवे स्टेशन देखने गए,जिसका नाम था यूनियन स्टेशन।यह रेलवे स्टेशन वांशिगटन का ही नहीं, अमेरिका का ही नहीं, वरन वास्तुशिल्प कला की दृष्टि से यह दुनिया का अनुपम और वृहत रेलवे स्टेशन है। यह पारंपरिक रेलवे स्टेशन नहीं है, जब तक आप इसे देखेंगे नहीं, तब तक इसकी कल्पना तक नहीं की जा सकती है।केवल रेलवे स्टेशन कहना इस अनुष्ठान के प्रति अन्याय और सौजन्यता का अभाव माना जाएगा। यूनियन स्टेशन के सामने एक अर्ध-वृत्ताकार जगह है। जहां प्रतिदिन लाखों की संख्या में कारें आती है, जिनकी पार्किंग के लिए समुचित व्यवस्था उपलब्ध है। स्क्वायर के सामने रास्ते के बाहर की ओर देश-विदेश के कई झंडे लगे हुए हैं और स्क्वायर के अंदर फव्वारें और खूबसूरत मूर्तियाँ स्थापित की हुई हैं। इन सब को पार कर जब आप अंदर प्रवेश करेंगे तो आपको लगेगा कि आप किसी सुंदर संग्रहालय में प्रवेश कर रहे हैं। रेलवे पटरियां प्रवेश द्वार से बहुत दूर हैं। इस विशाल हाल के भीतर कई खुले रेस्तरां, पुस्तक और कलात्मक वस्तुओं की दुकानें इस जगह को मॉल और संग्रहालय के मिश्रित रूप को प्रदर्शित करती हैं। इसलिए विदेशी पर्यटक

वॉशिंगटन की इस जगह को अवश्य देखते है। मुझे हार्वर्ड के दोस्तों और गाइड के साथ यह जगह बहुत अच्छी लगी। बहुत पहले मैंने इसे 1973 में देखा था। इस हॉल में बैठकर विश्वास करना मुश्किल है कि कितनी सारी ट्रेनें हर दिन यहाँ आती हैं! कहने की जरूरत नहीं है कि अमेरिका जैसे बड़े देश की राजधानी का रेलवे स्टेशन होने के कारण यहाँ हर रोज आने वाले यात्रियों की संख्या बहुत अधिक है। बेशक, समय के साथ हवाई यात्रा करने वाले लोगों की संख्या में काफी वृद्धि हुई है। अमेरिका में जनसाधारण सम्पन्न होने के कारण ट्रेन से यात्रा करना अक्सर पसंद नहीं करते हैं। हमारे गाइड ने कहा, "कुछ ऐसे लोग हैं जिनके पास समय ही समय है और जो एक बंद कोठरी से कहीं जाना पसंद नहीं करते हैं। जिन्हें दोनों तरफ तरह-तरह के दृश्यों को देखना अच्छा लगता हैं। ऐसे लोग रेल यात्रा का आनंद उठाते हैं। जब यह पहली बार 1908 में बनाया गया था तब यह दुनिया का सबसे बड़ा रेलवे स्टेशन था। अब भी यह दुनिया के सबसे बड़े रेलवे स्टेशनों में से एक है। लगभग दो करोड़ तीस लाख लोग हर साल इसे देखने आते हैं।”

हमारी अगली सुबह पेंटागन में बीती। पेंटागन अमेरिका के रक्षा विभाग और आंतरिक सुरक्षा का प्राण-केंद्र है। इस विशाल पांच मंजिला इमारत में तकरीबन 20 हजार लोग काम करते हैं। जब पोटॉमैक नदी जम जाती है, यह स्थान बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है। उस नदी के पुल को पार कर फेयरफैक्स की ओर जाने से पेंटागन आता है। पेंटागन रक्षा-विभाग का मुख्य कार्यालय है। यह विदेश विभाग और आंतरिक सुरक्षा विभाग के साथ लगातार संपर्क बनाए रखता है और नीति-निर्धारण एवं रोज़मर्रा के कार्यों के बारे में उनकी सलाह लेता है। इस दृष्टि से पेंटागन अमेरिका के शिल्प और पूंजीवादी सभ्यता का सबसे शक्तिशाली विभाग है। आधुनिक हथियारों के निर्माण के क्षेत्र में उन्नत अनुसंधान के लिए पेंटागन का अपना वैज्ञानिक संगठन है। इसके अलावा, पेंटागन प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों जैसे हार्वर्ड और एम.आई.टी. को अनुदान भी प्रदान करता है। पेंटागन का मुख्य उद्देश्य सर्वोत्तम युद्ध उपकरण निर्माण करना है। अमेरिका की सर्वोत्तम रक्षा ही पेंटागन का लक्ष्य है। थल सेना, वायु सेना और नौसेना के लिए सर्वोत्कृष्ट उपकरण पेंटागन के प्रत्यक्ष पर्यवेक्षण में तैयार किए जाते है। इसके अलावा, दूसरे देशों को अमेरिका द्वारा बेचे जाने वाले हथियारों पर भी यह निगरानी रखता है।

पेंटागन में हमारे लिए एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया था, जिसमें रक्षा मंत्रालय, विदेश विभाग और आंतरिक सुरक्षा विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों ने हमें उनके कामकाज की सविस्तार जानकारी प्रदान की।सवाल-जवाब सत्र के माध्यम से भी हमें बहुत-सी जानकारी प्राप्त हुई। उन्होंने संगोष्ठी के बाद हमारे लिए दोपहर के भोजन की व्यवस्था की ।

बहु-मंजिला अमेरिकी संसद वास्तुशिल्प दृष्टिकोण से काफी उल्लेखनीय है और वाशिंगटन दृश्यदिगंत का प्रमुख दृश्य है। इस गोलाकर अट्टालिका को ‘कैपिटल’ कहा जाता है। संघीय कानून बनाने के लिए हमारे संसद की तरह यहाँ अमेरिका के हाऊस ऑफ कॉग्रेस और सीनेट दोनों यहां स्थित हैं। शक्तिशाली सीनेट की सभी समितियों की बैठकों का आयोजन इस भवन के अंदर किया जाता है। अमेरिकी राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति के कार्यालय भी इसके अंदर हैं। अन्य देशों के बड़े-बड़े नेतागण अमेरिका के दौरे पर आते हैं,वे यहाँ कांग्रेस एवं सीनेट के संयुक्त सत्र को संबोधित करते हैं।

जॉर्ज वाशिंगटन ने 1793 में कैपिटल भवन की आधारशिला रखी थी। जहां कैपिटल का निर्माण किया गया है,उस जगह को ‘कैपिटल हिल’ के नाम से जाना जाता है। इसका निर्माण 1793 में शुरू होकर 1830 में समाप्त हुआ था। मगर बाद में कुछ परिवर्तन भी हुए हैं। अमेरिका के तीसरे राष्ट्रपति थॉमस जेफरसन का

स्मारक इसके आस-पास है। संगमरमर से बने इस स्मारक में छह ब्बीस गोलाकार खंभे हैं। ऐसा माना जाता है कि रोम के पैन्थियॉन की वास्तुकला ने जेफरसन को विशेष रूप से प्रभावित किया था। उन्होंने वर्जीनिया विश्वविद्यालय की स्थापना में इस वास्तुकला को अपनाया। अंत में, ऐसे छह ब्बीस गोलाकार खंभे उनके स्मारक में लगाए गए थे।

अमेरिकी राष्ट्रपति मुख्यतः व्हाइट हाउस से अपना कार्य निष्पादित करते हैं। मगर यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि कैपिटल अमेरिकी जीवन, समाज और अर्थव्यवस्था का प्राण-केंद्र है। इसके अलावा, यूनियन स्टेशन के नजदीक अमेरिका का सुप्रीम कोर्ट, व्हाइट हाउस, वाशिंगटन स्मारक और लिंकन मेमोरियल- सभी एक सीधी रेखा पर स्थित हैं। उनके दोनों तरफ वाशिंगटन की दो प्रमुख सड़कें,इंडिपेंडेंस एवेन्यू और कान्स्टीट्यूशन एवेन्यू हैं। कैपिटल के अंदर ले जाकर गाइड ने हमें इसके बारे में साधारण जानकारी दी। अवश्य, हमें वाशिंगटन की सारी दर्शनीय संस्थानों की अच्छी-ख़ासी जानकारी थी। हम कैपिटल से व्हाईट हाउस में आए। वाशिंगटन में व्हाइट हाउस सबसे महत्वपूर्ण स्थान है। 16 वीं, एवेन्यू, पेनसिल्वेनिया कहना ही पर्याप्त है।यह दुनिया के सबसे शक्तिशाली देश के सबसे क्षमता-सम्पन्न प्रशासनिक प्रमुख का निवास-स्थान है। जॉर्ज वॉशिंगटन को छोड़कर, उन्नीसवीं शताब्दी की शुरुआत से अमेरिका के सभी राष्ट्रपति वहां रहे हैं। व्हाइट हाउस वास्तव में सफेद,मगर बहुत ऊंचा घर नहीं है। इसके अंदर हॉल का नाम अलग-अलग है, लेकिन ओवल ऑफिस उन सभी में सबसे महत्वपूर्ण है। अमेरिकी राष्ट्रपति युद्ध और शांति के दौरान, अमेरिका के आपातकाल तथा स्मरणीय घटनाओं के घटित होते समय इस कार्यालय में अपने मुख्य सलाहकार और सीनियर वरिष्ठ अधिकारियों से मिलकर विचार-विमर्श करते हैं। व्हाइट हाउस सन 1800 के बाद से अमेरिकी राष्ट्रपतियों का आधिकारिक निवास-स्थान है। उस साल अमेरिका की राजधानी फिलाडेल्फिया से वॉशिंगटन में स्थानांतरित हुई। राष्ट्रपति जॉर्ज वॉशिंगटन ने व्हाइट हाउस के इस स्थान का चयन किया था। हमें ओवल ऑफिस ले जाने के लिए विशेष व्यवस्था की गई थी। जन साधारण के लिए व्हाइट हाउस के पांच कमरें खुले रखे जाते हैं। इनमें राष्ट्रीय डाइनिंग हाल, ब्लू रूम, ग्रीन रूम, रेड रूम और ईस्ट रूम शामिल हैं। ग्रीन रूम ड्राइंग रूम के प्रयोजन में आता है। उच्च स्तरीय राष्ट्र अतिथियों का स्वागत ब्लू रुम में किया जाता है। पूर्व राष्ट्रपति की तस्वीरें रेड रूम की दीवारों पर देखी जा सकती हैं। ईस्ट रूम में कंसर्ट,संगीत सभा, बॉल डांस आदि का आयोजन किया जाता है।

जॉन एडम्स से लेकर सभी राष्ट्रपति यहाँ रहे हैं। जब अंग्रेजों ने सन 1814 में क्रोध से व्हाइट हाउस में आग लगा दी थी,तब राष्ट्रपति मैडिसन अपना कार्यालय दूसरी जगह ले गए थे।

शाम को होटल लौटकर हम केनेडी सेंटर एचएमएस पिनार्फ ऑपेरा देखने गए। यूएसआईए ने हम सभी के टिकट खरीद लिए थे। यूएसआईए के दो अधिकारी भी हमारे साथ थे। ऑपेरा शुरू होने से पहले हमने केनेडी सेंटर के चारों तरफ घूमकर थोड़ी-बहुत जानकारी अर्जित कर ली थी। कॉन्सर्ट हॉल और ओपेरा हाउस के अलावा केनेडी सेंटर में तीन अन्य थिएटर थे। सेंटर की वास्तुकला बहुत आकर्षक थी। मेरे हिसाब से यह अमेरिका में थिएटर, ओपेरा और कॉन्सर्ट की सबसे सुंदर संरचना होगी। जॉन कैनेडी की स्मृति में बनाया गया यह सेंटर पोटॉमैक नदी से बहुत दूर नहीं है और वॉशिंगटन के पार्श्व में है। यहाँ से एक रास्ता मैरीलैंड और वर्जीनिया की तरफ गया है, दूसरा घुमावदार रास्ता वाशिंगटन के प्रसिद्ध जॉर्जटाउन की तरफ जाता है। जॉर्जटाउन विश्वविद्यालय बहुत प्रसिद्ध है। लगभग 104 एकड़ के परिसर में छोटी-बड़ी साठ इमारतें हैं, इसके रोल में

2,500 छात्र हैं। यह अमेरिका के सबसे पुराने कॉलेजों में से एक है। यह सन 1788 में केवल बारह विद्यार्थियों को लेकर खोला गया था।

शनिवार और रविवार हमारी छुट्टियां थीं। मेरे दो दोस्त (एक कनाड़ा से और दूसरा इटली से) और मैं नियाग्रा की यात्रा पर गए। पहले दिन हम कार से बफ़ेलो सिटी तक गए, उसके अगले दिन नियाग्रा में हमने आधा दिन बिताया और शाम को वाशिंगटन लौट आए। बेशक, हमें वहाँ थोड़ा समय मिला। फिर भी मुझे पछह तावा नहीं था क्योंकि यह मेरी नियाग्रा की दूसरी यात्रा थी। मेरे कैनेडियन मित्र भी इस वजह से परेशान नहीं थे। हमारे इतालवी मित्र निश्चित रूप से कुछ और समय बिताना चाहते थे। लेकिन समय पर वाशिंगटन पहुंचने के लिए हमें लौटना पड़ा। वापसी यात्रा से पहले, हम दोपहर का भोजन ले चुके थे। सप्ताह का अंतिम दिन होने के कारण दर्शकगण बड़ी संख्या में वहां आए हुए थे। कनाड़ा की तरफ कम रेस्तरां थे,जबकि बफ़ेलो की तरफ बहुत सारे रेस्तरां थे। फिर भी वहाँ हर जगह भीड़ थी। हमें दोपहर के भोजन के लिए करीब पंद्रह से बीस मिनट इंतजार करना पड़ा। अधिक दूर पैदल चलने और नौकायन के कारण उस समय हमें बहुत भूख लगी थी। सौभाग्य से हमें खाने के लिए अच्छा भोजन मिला। मेरे हिसाब से उस दिन वहाँ लगभग दस से बारह हजार दर्शक रहे होंगे।

दर्शक नदी तक नीचे उतरने के लिए लिफ्ट अथवा दूसरे साधनों से जा सकते हैं। दर्शकों के बैठने के लिए बड़ी संख्या में बैंच बने हुए है।प्रपात से नदी के स्रोत की विपरीत दिशा में दूर तक जाने के लिए एक सुंदर पैदल रास्ता भी बन रहा है। अधिकांश दर्शकों के हाथों में कैमरे, हैंडीकैम, तस्वीर और ध्वनि दोनों रिकॉर्ड करने के इन्स्ट्रुमेंट थे। नियाग्रा पर बने वृत्तचित्रों में मेरा मानना है कि 'इमिक्स फिल्म' सबसे ज्यादा उत्कृष्ट है। वहां लगभग सौ से डेढ़ सौ जापानी पर्यटक प्रतिदिन आते थे। उनके हाथों में विभिन्न प्रकार के कैमरे होते थे। मैंने विभिन्न जगहों पर जापानी पर्यटकों को देखा है और मेरा विश्वास है कि दुनिया में शायद ही ऐसा कोई राष्ट्र होगा,जिसे इतनी ज्यादा फोटोग्राफी पसंद है। वे शायद दुनिया के सर्वश्रेष्ठ फोटोग्राफर भी हैं।

अनेक युग पहले नियाग्रा का रूप देखकर, ध्वनि सुनकर, अमेरिका के मूल निवासियों ने इसे 'थंडर ऑफ द वाटर्स' की संज्ञा दी है। 167 फीट की ऊंचाई से गिरती जलराशि वाष्प बनकर आकाश में बादलों की तरह उड़ती हुई नजर आती है। नियाग्रा में प्रति मिनट 35 मिलियन गैलन पानी गिरता है।

मैंने कनाड़ा के टोरंटो से पहले नियाग्रा देखा था। इस बार मैंने इसे अमेरिका के बफेलो शहर की तरफ से देखा। नियाग्रा प्रपात तीन भागों में विभाजित किया गया है:अश्वखुर अर्थात् घोड़े के खुर के आकार का बड़ा हिस्सा (लगभग 90 प्रतिशत) कनाड़ा में है। शेष अमेरिका में है। मध्य में एक बहुत ही संकीर्ण पट्टी आती है, जिसे 'ब्राइडल वेल' अर्थात् कन्या का घूँघट कहा जाता है। नियाग्रा प्रपात नदी में गिरने से पहले दो भागों में बंट जाता है। बीच में एक छोटा द्वीप है,जिसे गोट आइलैंड अर्थात् 'बकरी द्वीप' कहा जाता है। हम तीनों दोस्त (हम अपने आपको 'द थ्री मस्केटीयर' कहते थे) एक ही पल में रॉक हाउस प्लाजा एलेवेटर द्वारा 125 फीट नीचे चले गए और जल-स्तर तक पहुंच गए। अधिकारियों ने हम प्रत्येक को एक-एक रेनकोट दिया था। लिफ्ट से उतरने के बाद जल-वाष्प ने हमें गीला कर दिया। ऊपर से भयंकर गर्जन के साथ गिरने वाला पानी हमें कुछ डरा रहा था। फिर भी यह दृश्यावली देखने में आनंद आ रहा था। कनाड़ा और अमेरिका के दोनों तरफ ऐसी लिफ्टों की व्यवस्था है। इसके बाद हम एक स्टीम बोट में बैठे जिसका नाम था 'द मैड ऑफ़ द मिस्ट'। उससे हम वहाँ तक गए, जहां पानी गिर रहा था। मैंने पहले 'इमिक्स फिल्म' में नियाग्रा को देखा था। इस फिल्म की

कहानी में मिथक, चमत्कार और जादू दिखाया गया है। मिथक इस प्रकार है : बहुत समय पहले, एक अमेरिकन इंडियन गाँव (जो नियाग्रा प्रपात से दूर नहीं था) की सुंदर युवती लेलावाला की एक बूढ़े से शादी करवा दी गई। उस लड़की को उस आदमी से बिलकुल प्यार नहीं था। वह किसी और से प्यार करती थी। दु: खी, पीड़ित और असहाय लड़की ने रात में नियाग्रा में कूदकर आत्महत्या कर ली। वह बन गई 'द मैड ऑफ़ द मिस्ट' अर्थात् कोहरे की कन्या। इस प्रकार यह परिचित मिथक बन गया। अमेरिकन इंडियन मिथक में यह कहा जाता है कि जलप्रपात के कोहरे के अंदर उस लड़की का रूप दिखाई देता है। उसकी आवाज़ जल की गर्जन में सुनाई देती है। कई सत्य घटनाएं समय के साथ मिथकों में बदल जाती हैं। फिल्म में कुछ अन्य घटनाओं का भी वर्णन है। ऐनी टेलर, एक शिक्षिका ने 1901 में लकड़ी का एक बड़ा बैरल बनाया और उसके अंदर उसने अपनी प्रिय बिल्ली के साथ प्रवेश किया और अपने दोस्तों से कहा कि वे इसे नियाग्रा में डाल दे। बैरल 167 फीट की ऊँचाई से नीचे गिरा और नदी के किनारे पहुंचने तक पानी पर तैरता रहा। श्रीमती ऐनी और उनकी बिल्ली सकुशल जीवित थी,जब उन्हें बैरल से बाहर निकाला गया। उन्नीसवीं शताब्दी में एक और दुस्साहसी व्यक्ति ने बांस पकड़कर रस्सी पर चलकर नियाग्रा प्रपात पार किया था। इस दृश्य को देखने वाले सैकड़ों दर्शकों ने उसकी सुरक्षा के लिए भगवान से प्रार्थना की थी। दोनों श्रीमती ऐनी और ब्लोंडिन बच गए थे, मगर कई लोग नियाग्रा में अपनी जान गंवा चुके हैं। मुझे ये सब याद आने लगा, जब मैं 'द मेड ऑफ द मिस्ट' बोट और स्पैनिश एयरो-कार से गर्जन वाली जगह पर पहुंचा। मेरे जैसा डरपोक आदमी मेरे दो निडर मित्रों के बलबूते के बिना यह यात्रा नहीं कर सकता था।

नियाग्रा प्रपात से पानी का उद्दाम स्तंभ सीधे बहुत ऊंचाई से नीचे गिरता है। क्या पानी में तैरती हुई मछह लियाँ नीचे गिर जाएगी? आम तौर पर, मछह ली अपने सुलभ ज्ञान के कारण प्रपात तक पहुँचने से पहले खतरे को भाँप लेती हैं। इसलिए वे प्रपात के विपरीत दिशा में तैरते हुए वापस चली जाती हैं। मगर जैसे कि हर जगह कुछ बेवकूफ लोग होते हैं,वैसे ही कुछ बेवकूफ मछह लियां भी होती हैं।वे बेवकूफ मछह लियां खुद की तरफ ध्यान दिए बगैर विपरीत दिशा में लौट नहीं पाती हैं।झरने के प्रखर वेग से कुछ मछह लियां नीचे गिर जाती हैं।

एक विद्वान व्यक्ति ने इस विषय पर शोध किया था, उसका कहना है कि मछह ली गिरते ही तुरंत नहीं मरती।लेकिन उनमें से ज्यादातर थोड़ी देर के लिए बेहोश हो जाती हैं और पानी की सतह पर असहाय रूप से तैरने लगती हैं। उस समय नीचे उड़ने वाले सारसों का आसानी से भोजन बन जाती हैं।

इस शोधकर्ता के पास कुछ रोचक जानकारी भी है। कुछ वर्ष पहले प्रपात के निम्नतम स्तर पर बने पैदल मार्ग पर एक पर्यटक चल रहा था। एक बड़ी मछह ली ऊंचाई से गिरी और पानी से टकराकर उस आदमी के पीठ से टकराई। उस आदमी को थोड़ी चोट लगी, लेकिन वह उस मछली को अपने घर ले गया और खुशी से उसे खाया होगा। दर्शकों को आकर्षित करने के लिए नियाग्रा के नजदीक कई खूबसूरत उद्यान, संग्रहालय, गोल्फ़ कोर्स, कैसीनो, बार, हॉल ऑफ हॉरर आदि बनाये गए हैं।

नियाग्रा इन चीजों की तरफ भ्रूक्षेप किए बिना निरंतर बह रहा है। यह नीचे की ओर ऐसे ही बह रहा है जैसे कि यह बारह हज़ार साल पहले बहा करता था। "अवश्य, यह डेढ़ करोड़ दर्शकों का हर साल यहां सम्मान करता हैं। लेकिन इसके अधीर पानी को इनकी वाणिज्यिक मनोवृत्ति समझ में नहीं आती हैं।" मानो नियाग्रा अपने वज्र निर्घोष से यह बात बता रहा हो। इस तरह हम नियाग्रा की यात्रा समाप्त कर देर रात वाशिंगटन लौट आए।

वॉशिंगटन में आखिरी दिन हमें लिंकन मेमोरियल और वाशिंगटन स्मारक देखने ले जाया गया। खूब बर्फबारी होने के कारण वॉशिंगटन स्मारक तक पैदल जाने की इच्छा नहीं हुई। हमने इसे दूर से देखा। मेरे वॉशिंगटन के पहले दौरे में मैंने इसे नजदीक से देखा था। यह स्मारक वॉशिंगटन में सबसे लोकप्रिय और दर्शनीय खूबसूरत जगह है। जॉर्ज वाशिंगटन की स्मृति में संगमरमर और ग्रेनाइट से बनी यह 555 फुट ओबिलिस्क(सूच्याकार स्तम्भ) वाशिंगटन में प्रवेश करते ही ध्यान आकर्षित करती है। जॉर्ज वॉशिंगटन अमेरिकी जीवन और राजनीति में सबसे महत्वपूर्ण और स्मरणीय व्यक्तित्व है।

लिंकन मेमोरियल 30 मई, 1922 को देश को समर्पित किया गया था। स्मारक तीन चीजों की याद दिलाता है : गृह युद्ध, जो लंबे समय तक चला, विजयी स्वतंत्रता-संग्राम और अमेरिका के राष्ट्रपति के रूप में अब्राहम लिंकन के व्यक्तित्व। लिंकन अमेरिका के सोलहवे राष्ट्रपति थे। स्मारक के अंदर एक बहुत ही ऊंचे सिंहासन पर बैठे हुए लिंकन की प्रतिमा प्रसिद्ध वास्तुकार डैनियल चेस्टर फ्रेंच ने बनाई थी। प्रतिमा पूरी तरह से निर्दोष है, लिंकन का मानवतावाद और उनकी दृढ़ता भी इस प्रतिमा में प्रतिबिंबित होती है। लिंकन द्वारा दिए गए कुछ व्याख्यानों को प्रतिमा के सामने वाली दीवार पर उत्कीर्ण किया गया है।

थॉमस जेफरसन अमेरिका के तीसरे राष्ट्रपति थे। उनका स्मारक, लिंकन मेमोरियल और वाशिंगटन मेमोरियल से पूरी तरह अलग है। यह संगमरमर से वर्तुलाकार बना हुआ है। मेमोरियल में इक्कीस खंभे हैं। जेफर्सन की 19 फुट ऊंची प्रतिमा इसके अंदर खड़ी है। जेफरसन के लेखन के कुछ अंश के साथ-साथ आजादी की घोषणा दीवार पर अंकित है। ऐसा कहा जाता है कि वर्जीनिया विश्वविद्यालय की स्थापना करते समय जेफरसन को रोमन देवता की वास्तुकला ने आकर्षित किया था।

अमेरिका 4 जुलाई, 1776 को स्वतंत्र हुआ। इस दिन स्वतंत्रता की घोषणा पर हस्ताक्षर किए गए थे। हमारे गाइड ने कहा कि दुनिया के किसी दूसरे देश ने इतनी धूमधाम के साथ शायद ही स्वतंत्रता दिवस मनाया होगा ! मुझे अपने स्वतंत्रता दिवस पर नई दिल्ली में लाल किले के सामने रोशनी से जगमगाते भवनों की याद आने लगी। मैंने अखबारों में पढ़ा है कि उनके स्वतंत्रता दिवस समारोह की 200 वीं वर्षगांठ के अवसर पर 33 टन पटाखे छोड़े गए थे।

वाशिंगटन के केंद्रीय अंचल को नेशनल मॉल कहा जाता है। इस पर दो चौड़ी और समानांतर सड़कों को स्वतंत्रता राजपथ और संविधान राजपथ के रूप में जाना जाता है। लिंकन मेमोरियल राष्ट्रीय मॉल की बाईं ओर है और कैपिटल बिल्कुल उसके विपरीत दिशा में है। स्मिथसोनियन संग्रहालय नेशनल मॉल के दोनों किनारों पर है। स्मिथसोनियन दुनिया की सबसे बड़ी संस्था है, जो सत्रह संग्रहालयों की देखरेख करती है। मैंने अपनी पहली वाशिंगटन यात्रा के दौरान इनमें से कई को देखा था। स्मिथसोनियन के मुख्यालय का नाम है स्मिथसोनियन कैसल। वास्तव में, यह मध्ययुगीन किले की तरह दिखता है।

स्मिथसोनियन केवल संग्रहालयों का प्रबंधन ही नहीं करता है, बल्कि यह चित्रकला, वास्तुकला, पुराने दस्तावेजों, ऐतिहासिक वस्तुओं के संरक्षण के बारे में उन्नत अनुसंधान करता है। संविधान राजपथ नेशनल मॉल के उत्तर में है और स्वाधीनता राजपथ दक्षिण में है। इन दो सड़कों की तरह राष्ट्रीय मॉल के अंदर दो अन्य समानांतर सड़कें हैं। जिन्हें जेफरसन ड्राइव और मैडिसन ड्राइव के नाम से जाना जाता है। उनके ये नाम अमेरिका के दो पूर्व राष्ट्रपतियों के नाम पर रखे गए है। स्मिथसोनियन द्वारा प्रबंधित प्रमुख संस्थानों में नेशनल आर्ट गैलरी

शामिल है,जो पूर्वी अट्टालिका और पश्चिमी अट्टालिका में विभाजित है। इसके द्वारा प्रबंधित अन्य संस्थानों में स्पेस म्यूजियम, शाक्लर और फ्रीर आर्ट गैलरी, नेशनल पोर्ट्रेट गैलरी, अमेरिकन आर्ट म्यूजियम और अफ्रीकी आर्ट म्यूजियम शामिल हैं। नेशनल गैलरी ऑफ आर्ट के पूर्वी भवन में ऑर्केस्ट्रा और उच्च गुणवत्ता वाली कला फिल्मों का नियमित प्रदर्शन होता रहता है। स्मिथसोनियन और उसकी सह-संस्था नेशनल ज्योग्राफिक सोसाइटी कई विषयों पर फिल्में बनाती हैं, सेमिनार आयोजित करती हैं।स्मिथसोनियन का लाल दुर्ग 1855 में स्थापित किया गया था। स्मिथसोनियन के सभी मुख्य कार्यालय और वुडरो विल्सन के नाम पर इंटरनेशनल सेंटर फॉर स्कॉलर इस दुर्ग में अवस्थित है। स्मिथसोनियन द्वारा परिचालित सभी संग्रहालयों को देखना लगभग असंभव है। हमने नेशनल आर्ट गैलरी और पास में हिर्शहॉर्न संग्रहालय के प्रतिमा कला उद्यान में कुछ समय बिताया। इसके बाद हमने फ्रीर आर्ट गैलरी देखी। दक्षिण पूर्व एशिया (भारत सहित) और पूरे पूर्वी गोलार्ध से सबसे अधिक चित्रकला यहां संग्रहीत हैं।

पोटोमैक नदी लगभग पूरी तरह से बर्फ बन गई थी। यह बहुत बड़ी नदी नहीं है। इसकी लंबाई 285 मील है, मैरीलैंड से लेकर चेसपीक खाड़ी तक। नदी के किनारे घूमते समय मुझे कुछ नौकाएँ नजर आई । गाइड ने बताया कि वे पोटोमैक बोट क्लब द्वारा आयोजित वार्षिक बोट रेस प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए अभ्यास कर रही हैं। लिंकन मेमोरियल के सामने खड़े होकर देखने पर वॉशिंगटन स्मारक और कैपिटल एक सीधी रेखा में दिखाई देते हैं।

लिंकन मेमोरियल के सामने छोटी झील में वाशिंगटन स्मारक का प्रतिबिंब नजर आता है। इस झील को 'रिफ़्लेक्टिंग पूल' के नाम से जाना जाता है। लिंकन की प्रतिमा, पुस्तकों में पढ़ा उनका चरित्र और अमेरिकी स्वतंत्रता के प्रति उनकी प्रतिबद्धता वहाँ प्रतिफलित हो रही है। मेरा मानना है कि वाशिंगटन में देखी जाने वाली सभी प्रतिमाओं में सबसे विशाल एवं खूबसूरत है। वाशिंगटन स्मारक 555 फुट ऊंचे संगमरमर का बना हुआ है, यह चतुष्कोण वाला विशिष्ट ओबिलिस्क टॉवर है। यह स्मारक अपनी दक्षता, शक्ति और सौंदर्यबोध का परिचायक है। वाशिंगटन स्काईलाइन में यह हर जगह दिखाई देता है। वॉशिंगटन सिम्फनी ऑर्केस्ट्रा हर साल स्मारक के सामने खुले आसमान के नीचे कॉन्सर्ट आयोजित करता है। लगभग चार हजार संगीत प्रेमी वहाँ आनंद लेने के लिए इकट्ठा होते हैं।

वॉशिंगटन नेशनल कैथेड्रल की ऊंचाई 676 फीट है। यह वॉशिंगटन स्मारक की तुलना में ऊंचा है। इसकी नींव सन 1907 में रखी गई थी और 1990 में अर्थात् तिरासी साल बाद अंतिम पत्थर रखा गया था। थियोडोर रूजवेल्ट से लेकर बाकी सभी अमेरिकी राष्ट्रपति प्रतिवर्ष एक या अधिक बार कैथेड्रल में आये थे। वियतनाम, कोरियाई और अन्य युद्धों में अपने प्राण न्यौछावर करने वाले अमेरिकी सैनिकों की दिवंगत आत्माओं को यहाँ सम्मानपूर्वक श्रद्धांजलि दी जाती है। अमेरिका के राष्ट्रपति इस समारोह में भाग लेते हैं।

शहर के बाहरी इलाके में चेसपीक और ओहियो के नहर हैं। जिसका उद्देश्य ओहियो नदी को जलमार्ग से जोड़ना था, क्योंकि उन्नीसवीं शताब्दी में पोटोमैक नदी को गहरा कर जल-यातायात बढ़ाने के लिए इसे तैयार करना संभव नहीं था। उन्नीसवीं शताब्दी में कैनाल की लंबाई 4000 मील थी। छोटे-छोटे यंत्रचालित नाव लोगों और सामान को लाने-लेजाने का काम कर रहे थे। सन 1889 और 1924 की बाढ़ के बाद नहर के कई भाग अनुपयोगी हो गए थे। वाशिंगटन के बाहरी इलाके में स्थित इस नहर के किनारे हार्वर्ड में रहते समय और परवर्ती काल में, मैं अक्सर इस नहर पर घूमता था।

हमारी होटल 'डुपोंट सर्कल' के उत्तर-पश्चिम में मैसाचुसेट्स एवेन्यू है, जिसका लोकप्रिय नाम दूतावास पंक्ति है। बेलारूस और केमरून से लेकर नेपाल और स्लोवेनिया तक के लगभग 70 से 75 दूतावास इस पंक्ति पर स्थित हैं।

एयर एंड स्पेस म्यूजियम देखने के लिए हमें समय नहीं मिला।अवश्य, मैं पहले देख चुका था। अंतरिक्ष में अमेरिका की दीर्घ-यात्रा इस संग्रहालय में प्रदर्शित की गई है। राइट ब्रदर्स से लेकर अपोलो यान और अंतरिक्ष में उनके विभिन्न अभियानों का सुंदर ढंग से प्रदर्शन किया गया है। अंतरिक्ष यानों के विशाल मॉडल दर्शकों को बहुत आकर्षित करते हैं।इसके अतिरिक्त, म्यूजियम के अंदर इमिक्स थिएटर में अंतरिक्ष यात्रा से संबंधित फिल्मों को भी देखने की व्यवस्था है।

जुड़वां शहर : मिनियापोलिस-सेंट पॉल

हमने वॉशिंगटन से मिनेयापोलिस-सेंट पॉल जाने के लिए एक फ्लाइट पकड़ी। हमारे यहाँ रहने के लिए दो दिन निर्धारित किए गए थे। हम दोपहर में वहाँ पहुंच गए थे। जुड़वां शहरों की जानकारी हेतु थोड़ी देर के लिए मिसिसिपी के तट पर चले गए। यह जुड़वां शहर मिसिसिपी के दो किनारों पर स्थित हैं। उन्नीसवीं शताब्दी के आखिरी और बीसवीं शताब्दी की प्रारम्भिक चरण में ये शहर वाणिज्य और कृषि आधारित उद्योगों के लिए जाने जाते थे। यह चमक समय के साथ फीकी पड़ती गई। हवाई जहाज से उतरने पर किसी को यह आसानी से पता नहीं चलता है कि ये दोनों शहर एक-दूसरे से अलग हैं। यह एक विशाल और विस्तारित शहर जैसा लग रहा था, जिसमें बड़ी संख्या में घर, गगनचुंबी इमारतें, छोटी-बड़ी झीलें और उससे भी बढ़कर सर्पिल गति से बहने वाली मिसिसिपी नदी शामिल थी।

अगले दिन सुबह-सुबह हम *हुबर्ट हैम्फ्रे इन्स्टिट्यूट ऑफ पब्लिक अफेयर्स* में गए। यह संस्थान मिनेसोटा विश्वविद्यालय द्वारा संचालित है और अमेरिका के शिक्षा और सार्वजनिक प्रशासन के क्षेत्र में प्रसिद्ध है। अमेरिका में बाहर से आने वाले स्कॉलरों को इस संस्थान में अनुसंधान करने के लिए चुना जाता है। इंस्टीट्यूट के एसोसिएट डीन डॉ. रॉयस हंससन ने हमें इस संस्थान के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी। संस्थान के प्रमुख पाठ्यक्रमों में से एक *'उत्तर दक्षिण फैलोशिप कार्यक्रम'* है,जो *अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान* के सहयोग से आयोजित किया जाता है। हंससन ने कहा कि संस्थान का एक और बड़ा कार्यक्रम *'चिंतनशील नेतृत्व के लिए शिक्षा'* है।इन दोनों पाठ्यक्रमों का उद्देश्य परिवर्तनकारी नेतृत्व है अर्थात् ऐसे नेतृत्व को सामने लाना हैं, जिससे सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों में आवश्यक बदलाव लाया जा सके । इन कार्यक्रमों में भाग लेने वाले अधिकारियों को पहले अपने स्वयं के क्षेत्रों में किए गए कार्य का संक्षिप्त विश्लेषण तैयार करने और फिर उनमें बेहतर प्रदर्शन के लिए परिवर्तन के सूत्र खोजने के लिए कहा जाता है।परमाणु नीति, कानून का सामाजिक पक्ष, आम आदमी के लिए कानूनी सहायता का प्रावधान, आम आदमी के लाभदायक रोजगार आदि विषयों पर सेमिनार और पाठ्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। नेतृत्व के संबंध में हंससन ने कहा कि संस्थान का आदर्श सीनेटर हुबर्ट हम्फ्री के निम्न शब्द है :" *सार्वजनिक जीवन में जैसे-जैसे आपकी क्षमता, शक्ति और दायित्व में बढ़ोतरी होती हैं, वैसे-वैसे अधिकारी के लिए एक-एक प्रश्न के अति सूक्ष्मतम दिग का विश्लेषण करना बड़ी बात नहीं है, लेकिन बड़ी बात है विभिन्न समस्याओं और मुद्दों को एकीभूत कर बड़ी समस्या को सुलझाने तथा नीति को स्थिर करने की। यही तो नेतृत्व है।* "

हम्फ्री का बेटा उनके प्रदेश का अटार्नी जनरल था। वे सीनेट के लिए उस वर्ष चुनाव लड़ रहे थे। हमें संस्थान से उनके कार्यालय में ले जाया गया। उन्होंने हमें उनके दृष्टिकोण और सीनेट चुनावों के बारे में जानकारी दी। वे डेमोक्रेटिक पार्टी के थे। जब हम हम्फ्री के बेटे के कार्यालय से वापस लौट रहे थे, उस समय काफी हिमपात शुरू हो गया था। वातानुकूलित कारों में हमें ठंड महसूस नहीं हो रही थी। हम वहां से ट्रेड सेंटर गए। वहाँ पंद्रहवीं मंजिल पर ट्रेड सेंटर के निदेशक ने हमें दोनों शहरों के बाहरी व्यापार और औद्योगिकीकरण के बारे में समझाया। दोनों शहर मिलकर जिस तरह से व्यापार करते थे, वह काफी शिक्षाप्रद था। सम्मेलन कक्ष से सटे उनके डाइनिंग हाल में हमारे दोपहर के भोजन की व्यवस्था की गई थी। उस ऊंचाई से दोनों शहर, मिसिसिपी नदी और गिरती हुई बर्फ बहुत सुंदर दिखाई दे रही थी। ट्रेड सेंटर में हमें दिया गया भोजन चाइनीज था। मुझे चाइनीज खाना पसंद है। हार्वर्ड में रहने के दौरान चाइनीज और मैक्सिकन भोजन के प्रति मेरा आकर्षण और बढ़ गया था।

दोपहर के भोजन के बाद कुछ समय के लिए मिनेयापोलिस सिटी और उसके डाउनटाउन क्षेत्र में घूमने के बाद हमें सीनेट के चुनाव में रिपब्लिकन उम्मीदवार के ऑफिस में ले जाया गया। मिनियापोलिस और सेंट पॉल शहर नदी के दोनों किनारों पर हैं, फिर भी उनके बीच दूरी करीब पांच से छह ह किलोमीटर है। होटल में कॉफी नहीं पीने तक बर्फ का मनोवैज्ञानिक प्रभाव हमारे दिमाग पर छाया रहा। एल्मर फ्रिकमैन ने मुझे फोन किया और **5.30** बजे पहुंचे। वह हनीवेल कंपनी के एक सेवानिवृत्त वरिष्ठ अधिकारी थे, उनकी उम्र **75** थी। वे सपत्नीक कई बार भारत आए थे। वे मुझे अपने घर ले जाना चाहते थे। जब वे मेरे कमरे में आए, तब मैं अपने जापानी मित्र सोतेरे के साथ कॉफी पी रहा था। हम दोनों निमंत्रण पर उनके घर गए,जो लगभग पांच मील दूर था। उन्होंने अपने बेटे और बेटी से हमारा परिचय करवाया और फिर हमें करीब **20** किलोमीटर दूर चन्नहासन शहर के बाहरी इलाके में बने अपने बेटे और बहू के घर ले गए। शहर के इस बाहरी क्षेत्र में एक सुंदर झील थी।फ्रिकमैन ने कहा, *"आप विभिन्न देशों से आए हैं, क्या आपको फिर कभी हमारे शहर में आने का मौका मिल सकता है ? इसके अलावा, डॉ॰ महापात्र भारत के हैं। यह वह देश है, जिसे मैं अपने देश की तरह प्रेम करता हूं। इससे बढ़कर, मेरी बहू जापानी है और वह आपको जापानी-अमेरिकी डिनर खिलाना चाहती है।"* हमने उनका अनुरोध स्वीकार किया। रास्ते भर सुहावने दृश्य दिखाई दे रहे थे, भोजन भी बहुत अच्छा लगा। हमारे लिए दो प्रकार के जापानी सूप तैयार किए गए थे। अमेरिकन चिकन और रसियन सलाद परोसा गया। एल्मर मुंबई, ताज होटल, आगरा, जयपुर और दिल्ली की याद दिलाते हुए वह कहने लगे, *"लेकिन मैं ओड़िशा में नहीं जा सका।"* मैंने उनसे अगली भारत की यात्रा में ओड़िशा आने के लिए अनुरोध किया। मुझे उनका कुत्ता बहुत पसंद आया। उसकी एक आँख दुर्घटना में चली गई थी। दूसरी आंख को ऑपरेशन कर बड़ी कठिनाई से बचाया गया था। फिर भी आंख की रोशनी कम थी। एल्मर ने अपनी कार से हमें होटल में रात को 11.30 बजे छोड़ दिया।

स्थानीय गाइड ने हमें शहरों के विभिन्न स्थानों के दर्शन करवाए। वह हमें अमेरिकन इंडियन रिज़र्वेशन में ले गए। यह कहना उचित होगा कि हमारे देश के आदिवासी लोग धीरे-धीरे मैदानी इलाकों से पहाड़ियों और घाटियों में निर्वासित हो गए हैं,लेकिन वे अभी भी अपनी पैतृक भूमि में रह रहे हैं। अमेरिकन इंडियन की स्थिति कुछ अलग है। उनमें से कुछ उच्च शिक्षा प्राप्त कर अमेरिकी जन-जीवन का हिस्सा बन गए है। दूसरों को निश्चित पूर्व निर्धारित क्षेत्रों में रखा गया है जिन्हें 'रिज़र्वेशन' कहा जाता है। इसका अर्थ यह है कि वे निर्दिष्ट क्षेत्र उनके लिए आरक्षित हैं। हमने ऐसे एक 'रिज़र्वेशन' का दौरा किया।उसके बाद हमें दूसरे स्थान पर ले जाया गया। वहां ज्यादातर लोग वियतनामी थे। उसके बाद हमने 57 मंजिला इन्वेस्टर डायवर्सिफाइड सर्युज़ टॉवर (आईडीएस),

सेंट पॉल कैथेड्रल, मिनेसोटा आर्केस्ट्रा हॉल, सेंट पॉल के चैंबर ऑर्केस्ट्रा हॉल, मिनेसोटा कला संग्रहालय, मिनेसोटा झील और पास के पार्क और मिनेसोटा फोर्ट स्नैलिफ़ देखे। सब-कुछ देखने के लिए हमारे पास पर्याप्त समय नहीं था। गाइड ने अपने माइक पर हमें वातानुकूलित बस के भीतर विभिन्न जगहों और संस्थानों के बारे में जानकारी दी कि हम मिनेसोटा कला संग्रहालय, आईडीएस टॉवर और सेंट पॉल कैथेड्रल में अपेक्षाकृत अधिक समय व्यतीत कर सकते हैं।

इस तरह दोनों शहर और आस-पास के कुछ क्षेत्रों में घूमने के बाद हम मिसिसिपी नदी के किनारे से होते हुए अपनी होटल में चले गए। उस समय मिसिसिपी नदी पूरी तरह से बर्फ से ढक चुकी थी। होटल में आने के बाद निकटवर्ती गुथरी थिएटर में शेक्सपियर के नाटक 'रिचर्ड थ्री' देखने गए। गाइड हमारे साथ था। मैंने इस नाटक को बहुत पहले पढ़ा था। शो देखने लायक था, मगर प्रस्तुति कुछ हद तक नाटकीय थी। उसके बाद सभी ने एक साथ होटल के डाइनिंग हॉल में डिनर लिया। हमारे दोस्त निकोलस चैपीवी, जोहान वेटजेल और सर मोबर्ली ने फ्रांसीसी, जर्मन और ब्रिटिश शराब डाइनिंग टेबल पर रखी।

मिन्नियापोलिस और सेंट पॉल बिल्कुल जुड़वां भाइयों की तरह हैं। उनकी स्थापना लगभग एक ही समय पर हुई थी।दोनों एक ही गति से फैलते गए थे। दोनों ने अमेरिकी इतिहास में कई बदलाव देखे हैं; दोनों जुड़वां भाइयों की तरह बड़े हुए हैं। वे एक-दूसरे से प्यार करते हैं।सब ठीक हैं, लेकिन वे कभी-कभी एक-दूसरे से ईर्ष्या करते हुए भी स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को जन्म देते हैं। इस प्रकार वे एक-दूसरे के स्नेही प्रतिद्वंद्वी हैं।

इस जुड़वां शहर ने मुझे भारत के हैदराबाद-सिकंदराबाद की याद दिलाई, डेन्यूब नदी के दोनों किनारों पर 'बुडा' और 'पेस्ट' नामक ऐतिहासिक शहरों की भी याद दिलाई, जो बाद में एक होकर हंगरी की राजधानी 'बुडापेस्ट' बन गई। फिर याद आया ओटावा और हॉल। ये दोनों भी ओटावा नदी के दोनों किनारों पर स्थित हैं। सशस्त्र बलों की एक चौकी सन 1820 में लगभग 50 फीट की ऊंचाई पर बनाई गई थी। दुर्ग आकार की यह जगह मिसिसिपी और पश्चिम से बहकर आने वाली मिनेसोटा नदियों के संगम-स्थल पर स्थित थी। लगभग 30 साल तक पत्थर निर्मित यह किला लकड़ी के व्यापारियों और अन्य कारोबारियों का केंद्र-स्थल बना रहा। कनाड़ा की सीमा से आने वाले फ्रांसीसी अमेरिकियों के हितों और व्यवसायों को बाधित करते थे, मिसिसिपी और यह दुर्ग सुरक्षा प्रहरी का काम करता था। हमने देखा कि इस पुराने दुर्ग को अपनी मूल अवस्था में लाने के प्रयास किए जा रहे थे। दुर्ग के गाइड उन्नीसवीं शताब्दी की पोशाकें पहने हुए थे। स्टीफबोट्स पहली बार 1823 में इस किले के पास आये और नदी के तट पर धीरे-धीरे एक छोटा-सा शहर बन गया। जिसका नाम था सेंट एंथोनी। मिनेयापोलिस और सेंट एंथोनी को 1853 में विलय कर दिया गया था, जिससे वर्तमान मिनेयापोलिस वृहत्तर हो गया। नाम मिनियापोलिस कुछ अजीब लग रहा था। गाइड ने बताया कि एक अख़बार ने शहर के नामकरण हेतु एक प्रतियोगिता आयोजित की थी। एक स्कूल शिक्षक ने मिनियापोलिस नाम का चयन किया था और इसे स्वीकार किया गया था। मिनियापोलिस दो शब्दों का समाहार है, अर्थात् मिनिआ और पोलीस।पहला शब्द अमेरिकन-इंडियन ग्रुप सिओक्स से आया है। सिओक्स भाषा में, मिनिआ का अर्थ है जल। दूसरा शब्द ग्रीक है, जिसका अर्थ है शहर। इस प्रकार शहर को अमेरिकन-इंडियन और ग्रीक भाषा के संयोजन से नामित किया गया है। जिसका अर्थ है 'वाटर सिटी' । यह नाम उचित है, क्योंकि मिसिसिपी और उसकी सहायक नदी के अलावा मिनियापोलिस में छोटी-बड़ी तेइस झीलें हैं।

सन 1839 में शेलिंग दुर्ग से एक तड़ीपार फ्रांसीसी शराब व्यापारी के उपनाम पर दूसरे शहर का नाम 'पिग आई (सूअर की आंख)' रखा गया था । मिसिसिपी के घाट की वजह से यह शहर लकड़ी के व्यवसाय के लिए अनुकूल था।धीरे-धीरे व्यापार और वाणिज्य आगे बढ़ना शुरू हुआ। सन 1839 में शहर का नाम बदलकर 'सेंटपॉल' रख दिया गया था। हमारे गाइड की भाषा में, "हमने एक पापी का नाम हटाकर संत का नाम रखा, और 'पिग आई' 'सेंटपॉल' बन गया।" भले ही, शहर का नाम बदलकर सेंटपॉल रख दिया गया था, लेकिन शताब्दी के तीसरे दशक में यह शहर बहुत ज्यादा बदनाम हो गया था।क्योंकि एल्विन कैरिस और उनके दल के माफिया इस जगह पर बहुत शक्तिशाली हो गए और लूटपाट, आगजनी, हत्या सहित सभी तरह के अवैध गतिविधियों में शामिल हो गए। एल्विन कैपर्स को 'जनता का एक नंबर शत्रु' कहा जाता था इसलिए इस शहर का दूसरा नाम 'क्रूकज़ हेवेन' रखा गया। यह कहा गया है, *" हर अपराधी ने सेंट पॉल को अपना घर बनाया। यदि आप किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश में हैं, जिसे आपने कुछ महीनों तक नहीं देखा हो तो आम तौर पर यह सोचा जाता था कि वह जेल में या सेंटपॉल में होना चाहिए।"* फिलहाल सेंट पॉल इस बदनामी से उबर चुका है। अब यह शहर और उसका जुड़वां भाई मिनियापोलिस बहुत ही सुरक्षित और स्वस्थ शहरों में गिना जाता है। मिनियापोलिस मिनेसोटा राज्य की राजधानी है,जिसका क्षेत्र लगभग सेंट पॉल के बराबर है, मगर इसकी जनसंख्या अधिक है। सेंटपॉल की आबादी लगभग 3 लाख लोगों की है, जबकि मिनियापोलिस में चार लाख लोग हैं। दोनों शहरों की स्काई-लाइन अलग-अलग हैं। मिनियापोलिस को 57 मंजिला, आई॰डी॰एस॰ टावर द्वारा जाना जाता है। प्रसिद्ध वास्तुकार फिलिप जॉनसन द्वारा डिजाइन की गई यह विशाल इमारत अपने नीले रंग के काँच के कारण अद्भूत विस्मयकारी है। इमारत का बाहरी भाग नीले काँच से आच्छादित है। दूर से ऐसा लगता है मानो पूरे आकाश के बादल गगनचुंबी इमारत में परिलक्षित हो रहे हों। यहाँ थोड़ी देर रुकने के बाद हम *मिनियापोलिस इंस्टीट्यूट ऑफ़ आर्ट* में चले गए। यह अमेरिका के प्रसिद्ध कला संग्रहालयों में से एक है। यहाँ विभिन्न शैलियों और विभिन्न काल के करीब 65,000 कला-वस्तुओं का प्रदर्शन किया गया है। डच चित्रकार रेंब्रेंड के कुछ अमूल्य चित्र(जैसे लुक्रेटिया) भी यहां प्रदर्शित किए गए हैं। *मिनियापोलिस* के प्रसिद्ध टेम्पलमेन टी सर्विस इस संग्रहालय के पास है। गाइड ने हमें यहाँ चाय पिलाते हुए कहा, *"यह अमेरिका का एक ऐतिहासिक स्थान है। संग्रहालय के एक तरफ अमेरिका के दो प्रसिद्ध थिएटर हैं। एक गुथरी है (जहां हमने 'रिचर्ड III' नाटक देखा था) और दूसरा बच्चों का थिएटर है।"* हमने थोड़ी देर बाद मिनियापोलिस की 23 झीलों में से एक बड़ी झील देखी। हमने शहर के 153 पार्कों में से एक अच्छे पार्क में भी गए। अमेरिकन रॉकस्टार प्रिंस का जन्म मिनियापोलिस में हुआ था।

मिनियापोलिस देखने के बाद हम सेंटपॉल गए। सेंटपॉल एफ॰ स्कॉट फिजराल्ड़, उपन्यासकार का जन्म स्थान है। जिस तरह से मिनेसोटा आईडीएस टॉवर द्वारा जाना जाता है, उसी तरह सेंटपॉल स्टेट कैपिटल और सेंटपॉल कैथेड्रल के द्वारा जाना जाता है। कैपिटल का गुंबद संगमरमर से बना है। दुनिया में ऐसा कोई गुंबद नहीं है जो किसी स्तंभ पर खड़ा हो। हम सेंटपॉल कैथेड्रल के चारों ओर घूमे। यह बेहद खूबसूरत हैं। यह रोम के सेंट पीटर कैथेड्रल शैली में तैयार किया गया है। इसके बाद हमने सेंटपॉल का चेंबर ऑर्केस्ट्रा देखा। ऑर्केस्ट्रा दो चीजों के लिए प्रसिद्ध है। सबसे पहले, प्रसिद्ध वायलिन वादक कंडक्टर जुरमन इसके प्रमुख है।दूसरा, यह अमेरिका में एकमात्र पूर्णकालिक पेशेवर चेम्बर है। यह आर्केस्ट्रा मिनियापोलिस के 'मिनेसोटा आर्केस्ट्रा' के भाई की तरह है।

शीत ऋतु दोनों शहरों का आम दुश्मन है। जनवरी और फरवरी में औसत तापमान शून्य से 15 डिग्री सेल्सियस नीचे चला जाता है। एक वर्ष में लगभग चार फीट बर्फ औसतन गिरता है। मिसिसिपी, उसकी सहायक

नदी और सभी झीलें बर्फ से ढक जाती हैं। लोग ऐसे समय में आइस स्केटिंग और अन्य बर्फ के खेल खेलना पसंद करते हैं। कंपकंपाती सर्दी के बावजूद स्कीइंग और स्केटिंग बहुत प्रसिद्ध हैं। सेंटपॉल में दस दिवसीय शीतकालीन आनंदोत्सव आयोजित होता है, बर्फ पर परेड की जाती हैं, बर्फ पर गोल्फ़ खेला जाता है,स्नो मोबाइल रेस आयोजित की जाती है।

नदियों, झीलों, पार्क, साइकिल भरे रास्ते, शीतकालीन खेलों के कारण यह शहर अमेरिका के सबसे खूबसूरत जुड़वा शहरों में अन्यतम और स्वास्थ्यप्रद माना जाता है। मिनियापोलिस के आईडीएस टॉवर की तरह सेंटपॉल को अपने 40 मंजिले ट्रेड सेंटर पर गर्व है। यहाँ अपराध की दर बहुत कम है। हनीवेल कंपनी, स्कॉच टेप निर्माता और कंट्रोल डेटा कॉरपोरेशन (विश्व का सबसे बड़ा कंप्यूटर निर्माता) इस शहर में स्थित हैं।

मिनियापोलिस-सेंटपॉल की द्वैतनगरी ने मुझे डेन्यूब नदी के दोनों तटों पर स्थित सुंदर और प्राचीन जुड़वां शहर- बुडा और पेस्ट की याद दिला दी, जिसे बुडापेस्ट कहते है और जो यूरोप के सबसे सुंदर शहरों में से एक है। मिनियापोलिस और सेंटपॉल दोनों शहर मिसिसिपी पर पुल 'फ्री वे' से जुड़ते हैं। यह जगह हमेशा यातायात से भरी रहती है। इस पुल का निर्माण 1967 में हुआ था, मतलब सन 1987 में मेरी यात्रा के समय इसकी उम्र बीस साल थी। अपने पाठ्यक्रम-कार्यकाल के दौरान कम से कम पांच से छः बार इस पुल से हम गुजरे होंगे। सन 2007 में मैंने टेलीविजन और समाचार पत्रों में देखा कि यह पुल अचानक गिरकर मिसिसिपी नदी के गर्भ में समा गया। वह भी भरपूर यातायात के समय। अनेक कारें,कंक्रीट और बसें नदी में गिर गईं। तुरंत रेसक्यू के कारण बहुत से लोग बच गए। फिर भी लगभग पन्द्रह-बीस लोग मारे गए या निखोज हो गए।

पुल टूटने से नीचे से गुजर रही मालगाड़ी के दो हिस्से हो गए। कुछ डिब्बे नदी में गिर गए। मुझे कुछ राहत मिली कि वह मालगाड़ी थी, अन्यथा कितने निर्दोष लोगों की मृत्यु हो गई होती! मैंने टीवी पर बहुत अजीब तस्वीर देखी। एक स्कूल बस आधे टूटे स्लैब पर फंसी हुई, इससे पहले कि पुल गिरता, बस निकल गई। स्कूल-बस के बच्चे बाल-बाल बचे। मन में यह बात आई, क्या होता अगर पुल हमारे पार करते समय टूट गया होता!! टेलीविजन और अखबारों में छप पा होता कि हार्वर्ड विश्वविद्यालय के विभिन्न देशों के शिक्षार्थियों का दुर्घटना में निधन हो गया। मिसिसिपी और कैटरीना ने न्यू ऑरलियन्स में मृत्यु की कराल छाया फैला दी थी। यद्यपि मिनेयापोलिस-सेंटपाल में मृत्यु दर कम थी,फिर भी मुझे इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना की याद ने आंदोलित कर दिया।

संक्षेप में, मुझे जुड़वां शहर बहुत अच्छे लगे। हमारे पाठ्यक्रम के दो अमेरिकी मित्र जुड़वां शहर को बहुत सम्मान की दृष्टि से देखते है, उन्होंने हमें यह बताया। सेंटपॉल में हमारा ठहरने का समय समाप्त हो गया। फिर हमने न्यू ऑरलियन्स की ओर उड़ान भरी- जहां उत्तर में भयंकर हिमपात था तो दक्षिण में सूर्यस्नात अंचल ।

न्यू ऑरलियन्स-मिसिसिपी तट पर अमेरिका का एक 'अलग' शहर

न्यू ऑरलियन्स अमेरिका का सबसे जीवंत शहर है। यह अमेरिका का एक और महानगरीय केंद्र है, जहां अमेरिकी-फ्रेंच और क्रेओल फ्रेंच संस्कृतियों का समावेश है। जब हैती में क्रांति हुई,तब क्रेओल-फ्रेंच न्यू ऑरलियन्स में भाग आए। न्यू ऑरलियन्स विभिन्न संस्कृतियों, रीति-रिवाजों, जीवन-शैलियों, विविध खाद्य-पदार्थों, वेशभूषाओं का एक अद्भुत सम्मिश्रण हैं। अमेरिका के दक्षिण का एक प्रमुख बंदरगाह है यह। दास व्यापार का यह मुख्य केंद्र था।इसलिए अमेरिका के अधिकांश काले लोग इस शहर में रहते हैं। फ्रेंच और

क्रेओल परंपरा के प्रभाव के कारण न्यू ऑरलियन्स का भोजन अपनी एक अलग पहचान रखता है। ऐसा भोजन अमेरिका में और कहीं नहीं मिल सकता है। खाने में मिर्च-मसालों का अधिक प्रयोग होने से मुझे भारतीय भोजन की तरह लग रहा था ।

भोजन की इस विशेषता के अलावा, न्यू ऑरलियन्स में संगीत की अपनी अलग परंपरा है, जिसे शहर की आत्मा कह सकते हैं। यहाँ के जाज ब्रास बैंड और जाम बैंड अमेरिका की सबसे समृद्ध परंपरा है। यह सुनकर आश्चर्य हुआ कि इस शहर में पचपन जाज क्लब हैं, जो पुरी के साही यात्रा की तरह बहुधा सड़कों पर परेड करते रहते हैं। जाज संगीत के लिए बड़े-बड़े संगीत हॉल हैं, जो हमेशा दर्शकों से भरे होते हैं। इनमें से अधिकांश जाज क्लब अंतरराष्ट्रीय स्तर का जाज-संगीत प्रस्तुत करते हैं। बड़े ऑडिटोरियमों में जाज सुनने का हमें अवसर मिला था। इसके अलावा, छोटे जाज दलों को सड़क किनारे पर अपने बैंड के साथ परेड करते हुए अनेक बार देखा था। मुझे न्यू ऑरलियन्स की तीन चीजें याद हैं। वे हैं भोजन की विशेषता, जाज-संगीत के प्रति निवासियों का प्रगाढ़ प्रेम और आम लोगों का खुशहाल स्वभाव। ऐसा लगता है आराम से खाना-पीना, बैंड बजाना, गाने सुनना और विभिन्न त्योहारों के सामूहिक जश्न मनाना इस शहर की सबसे बड़ी खासियत है।

अमेरिका में गृहयुद्ध के समय यूनियन के सैनिकों ने बिना किसी प्रतिरोध के न्यू ऑरलियन्स पर कब्जा कर लिया था। इसलिए अमेरिका के दक्षिण अंचल के अन्य शहरों की तरह यहाँ बहुत ध्वंस या नुकसान नहीं हुआ था। उन्नीसवीं सदी की अट्टालिकाएँ, लोहे की संरचनाएँ, भास्कर्य और स्थापत्य अभी भी अक्षुण्ण हैं। एक इतिहासकार की राय में, न्यू ऑरलियन्स अमेरिका का 'फ्रांसीसी शहर' है।

मैंने सुना था, न्यू ऑरलियन्स का सबसे बड़ा त्योहार *मार्डी ग्रास* हर साल मनाया जाता है। यह अमेरिका के सारे मनोरंजनों में सबसे शानदार और जीवंत वार्षिक उत्सव है। यह उत्सव सन **1700** से मनाया जा रहा है। उत्सव का दिन हर साल तय किया जाता है, मगर यह प्राय: फरवरी में मंगलवार को आता है। '*मार्डी ग्रास*' का शाब्दिक अर्थ 'पेटू मंगलवार' है। हम दिसंबर में न्यू ऑरलियन्स आए थे। किसी मित्र ने कहा, *"यदि विश्वविद्यालय आपको मार्डी ग्रास त्योहार के समय न्यू ऑरलियन्स भेजता तो आप **21** फरवरी को अपनी आंखों से इस उत्सव को देख पाते और आप शहरवासियों की खुशी में सरीक हो पाते।"*

मैंने किताबों में पढ़ा था कि पूरा शहर घर से बाहर निकलकर सड़कों पर शोभायात्रा में शामिल होता है। यह कुछ हद तक गोवा के कार्निवल जैसा है। लेकिन उससे बहुत अधिक जीवंत है,मानो उल्लास की पराकाष्ठा हो। लोग अजीबो-गरीब वेशभूषा पहने, गले में तरह-तरह मोतियों की माला डाले, नाना प्रकार के मुखौटे पहने और तरह-तरह के वाहनों पर आरूढ़ होकर रास्तों पर पैरेड निकालते हैं। '*मार्डी ग्रास*' के लिए केवल एक मंगलवार निर्धारित होता है, लेकिन मैंने सुना है एक हफ्ते पहले और एक हफ्ते बाद तक यह उत्साह बना रहता है। इस समय सब काम छोड़कर लोग खाने-पीने, गाने और बंधु-मिलन में व्यस्त रहते हैं। मैंने न्यू ऑरलियन्स में अपने प्रवास का खूब आनंद उठाया। अपने जीवन मैंने जितने भी शहर देखे है, उनमें न्यू ऑरलियन्स सर्वाधिक प्राणवन्त और असीम जीवन-शक्ति से भरा हुआ मुझे लगा।

मिसिसिपी नदी, काजुन और जाज

न्यू ऑरलियन्स लुसियाना राज्य की राजधानी है। अमेरिका की सबसे बड़ी नदी मिसिसिपी नदी के डेल्टा, जो पहले मेक्सिको की खाड़ी में आता था, पर यह विशाल शहर स्थित है।शहर की प्रसिद्ध बोर्नबॉन स्ट्रीट की एक होटल में हम तीन दिन रहे।

न्यू ऑरलियन्स अमेरिका के अन्य शहरों से अलग है। इसकी विशिष्ट सुविधाओं को आसानी से देखा जा सकता है। मिसिसिपी नदी के किनारे, नदी में पुराने स्टीमर, रोशनी की विशेष सजावट, सड़कों के दोनों किनारों पर सुंदर फूलों के पौधों, प्राचीन शैली के पारंपरिक घर, बालकनी में फूलों के छोटे गमले और सुंदर छोटे-छोटे छेद वाली लोहे की ग्रिल्स-सभी इस शहर को शोभायमान बना रही थी। फ्रेंच भाषा-संस्कृति का इस शहर पर काफी प्रभाव है। सड़कों के नाम और सड़कों के किनारे खाने की शैली (खाने-पीने के लिए सड़कों के किनारे पर कुर्सियों पर बैठे हुए) में ये प्रभाव परिलक्षित होते हैं। मगर न्यू ऑरलियन्स का चिह्न आसानी से देखे जा सकते हैं। उनके काजुन पकाने की शैली, प्रचुर समुद्री भोजन, तरह-तरह की मदिरा, क्रॉफिश की प्रबलता, मिश्रित भाषा, लोगों के सहज मनोभाव, अतिथि-वत्सलता, मद्य-प्रेम,खाद्य-प्रेम, संगीत- नृत्य प्रेम सभी अत्यंत मनमोहक हैं। सड़क पर चलने वाले हर किसी को यह बात नजर आ जाती है।

लुसियाना अमेरिका में सबसे बड़ा आर्द्रभूमि क्षेत्र हैं। फ्लोरिडा के प्रसिद्ध एवरग्लेड्स नेशनल पार्क से यह दो गुना बड़ा है। मिसिसिपी नदी में बाढ़ के कारण यह संभव हुआ। मिसिसिपी अमेरिका के समुद्रगामी जल का एक तिहाई हिस्सा वहन करती है और अपने साथ लाई उपजाऊ मिट्टी से धीरे-धीरे समुद्र-तट पर भूमि का निर्माण होता है। बनती है वेटलेंड अर्थात् आर्द्रभूमि अंचल। विस्तीर्ण उथली जलराशि (जिसे 'बायू' कहा जाता है) से पोंट्चर्टाइन झीलें और छोटे-छोटे द्वीप बनते हैं।बीसवीं सदी की शुरुआत में इस समग्र अंचल का क्षेत्रफल छह ह हजार वर्ग मील था। न्यू ऑरलियन्स राज्य सरकार के प्रमुख प्रतिनिधियों ने हमें लुसियाना की विपदाओं और भविष्य के संभावित खतरों के बारे में सविस्तार जानकारी दी। उसके बाद उन्होंने हमें शक्तिचालित दो नौकाओं में पोंटेचर्टन झील, 'बायू' अंचल, दलदल में लगभग तीन घंटे तक घुमाया ।

अधिकारियों ने कहा कि मिसिसिपी तट से लेकर टेक्सास राज्य तक आने वाले खाड़ी इलाके को न्यू ऑरलियन्स भयानक तूफान से बचाता आया है, मगर धीरे-धीरे यह लुप्त होता जा रहा है। इस अंचल के दलदल, छोटे-छोटे द्वीप हेरीकेन या आँधी-तूफान के प्रतिरोधक है। सन 1930 के बाद इन तटवर्ती इलाकों का लगभग 1900 वर्ग मील हिस्सा समुद्र में डूब गया। यह क्षेत्रफल लक्ज़मबर्ग से दोगुना है और अमेरिका के छोटे राज्य डेलावेयर के बराबर है। विगत दशक में 500 मिलियन डॉलर खर्च करने के बावजूद लुसियाना राज्य का 25 वर्ग मील तटीय क्षेत्र हर साल समुद्र में डूबता जा रहा है। एक अधिकारी के शब्दों में:-   " प्रत्येक तैंतीस मिनट में एक एकड़ की क्षति हो रही है।"

इसके लिए प्राकृतिक और मानव निर्मित कारण दोनों जिम्मेदार हैं। डेल्टा क्षेत्र में समुद्र का तटीय इलाका समय के साथ डूबता जाता है, अगर नई उपजाऊ मिट्टी इस पर नहीं जमती हो तो यह इलाका समुद्र में डूबना शुरू हो जाता है। बसंत ऋतु में मिसिसिपी की बाढ़ इस नुकसान की भरपाई करती है। लेकिन सन 1927 की भयानक बाढ़ के बाद नदी के दोनों किनारों पर कंक्रीट बांध बनाये गए। इसलिए मिसिसिपी की उपजाऊ मिट्टी 'फ़नल' से सीधे गहरे समुद्र में चली जाती है। इसके अलावा, सन 1950 में पेट्रोलियम के कुएं खोले गए और इसमें जल-यातायात के लिए लगभग 8000 किलोमीटर खोदा गया। इस वजह से आर्द्रभूमि खंड-विखंडित हो गई और एक जिगशा पहेली बनकर रह गई।

यह सच है कि यह क्षेत्र अमेरिका में सबसे अधिक पेट्रोलियम उत्पादन करता है, कच्चे तेल और प्राकृतिक गैस को पंपिंग कर जहाजों में ढोकर ले जाने के लिए 24 बड़े चैनल खोले गए हैं। बांधों के निर्माण से वेटलैंड का कुछ भाग औद्योगिक क्षेत्रों में परिवर्तित हो गया है। आर्थिक विकास सिक्के का एक पहलू है, मगर वेटलैंड की क्षति केवल लुसियाना की क्षति नहीं है, वरन संपूर्ण अमेरिका की है। सभी पर्यावरणविद, वैज्ञानिक और विकास अर्थशास्त्रियों का मानना है कि वेटलैंड का बहुत अधिक नुकसान खतरनाक हो सकता है। पर्यावरणविदों और मौसम विशेषज्ञों का मानना है कि बोर्नबोन स्ट्रीट की जिस होटल में हम रुके हुए हैं, अगर वहाँ महाचक्रवात आ जाए तो लगभग अठारह फीट तक पानी भर सकता है। इसके अलावा, लुसियाना का यह क्षेत्र मत्स्य-पालन का प्रमुख केंद्र है। जब हम नौका-विहार कर रहे थे,एक मछुआरे ने अपनी नाव रोककर कहा,"मेरे दादाजी की मौसी का घर इस जगह पर था।

आजकल धीरे-धीरे यहाँ मछह लियों की तादाद कम होती जा रही है।" लगभग साढ़े दो करोड़ विभिन्न प्रवासी पक्षी प्रतिदिन इस मौसम में लुसियाना वाटरलैंड में आते हैं। इस क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के लगभग दस लाख मगरमच्छ हैं। गीत गाने वाली चिड़ियाँ इस क्षेत्र की स्थायी प्रजाति हैं। इस परिवेश में धीरे-धीरे विलुप्त होती जा रही हैं।

बातचीत के दौरान अधिकारियों ने कहा, "*इस तरह की हानि लुसियाना के पर्यावरण-प्रेमी नागरिकों के दिल में टीस उत्पन्न करती है, यह प्रत्येक नागरिक के बटुए को भी चोट मारती है।"*

नेशनल ज्योग्राफिक के अनुसार, "*यह उथले, दलदल और बैरियर द्वीपों वाली विस्तीर्ण जलराशि है,जिससे देश के तेल का एक तिहाई और प्राकृतिक गैस का एक चौथाई से अधिक उत्पादन या परिवहन होता है और वाणिज्यिक मछह ली पकड़ने में अलास्का के बाद दूसरे स्थान पर है। वन्यजीव के हिसाब से फ्लोरिडा के एवरग्लेड्स जैसा पालतू चिड़ियाघर की तरह दिखता है। "*

वैज्ञानिकों ने भविष्यवाणी की है कि सन 2050 तक 700 वर्ग किलोमीटर अतिरिक्त क्षेत्रफल जलमग्न होने की संभावना है। बची हुई वेटलैंड को बचाने के लिए लुसियाना सरकार ने 10 अरब डॉलर की योजना बनाई है। न्यू ऑरलियन्स सरकार के प्रमुख अधिकारी ने हमें बताया कि उन्होंने फेडरल सरकार से उदार वित्तीय सहायता के लिए भी अनुरोध किया है।

नौका विहार के बाद हमें न्यू ऑरलियन्स के दक्षिण-पूर्व स्थित शैल बेकतो नामक छोटे-से गांव में ले जाया गया। कार से जाने में लगभग आधा घंटा लगा। गांव के एक आदमी ने हमें बताया कि जब सन 1918 में उसका जन्म हुआ था, तब उसका मूल गांव यहाँ से करीब आधा किलोमीटर दूर था। आज वहाँ लगभग साढ़े तीन फुट गहरे पानी में लहरें पछाड़ मार रही है। नहरों के रास्ते आए समुद्र के नमकीन पानी से हजारों-हजारों साइप्रस पेड़ नष्ट हो गए , आज केवल उनके वहाँ ठूंठ खड़े हैं।

न्यू ऑरलियन्स यूनिवर्सिटी के भूविज्ञान के प्रोफेसर डेनिस रीड का मानना है कि मिसिसिपी के कंक्रीट-लाइन वाले बांध से कुछ फाटक खोलकर अगर नदी के पानी को नियंत्रित तरीके से बाहर छोड़ा जाता है तो आर्द्रभूमि को काफी हद तक पुनर्जीवित किया जा सकता है,कुछ उपजाऊ मिट्टी भी इकट्ठी हो सकती है। उनका कहना है कि आचाफलाय नदी (मिसिसिपी की एक सहायक नदी) में मिसिसिपी का एक तिहाई पानी होने पर भी उसके दोनों किनारों पर आर्द्रभूमि बहुत अच्छी स्थिति में है। इसलिए वहाँ कोई बांध नहीं बनाया गया

है। वास्तव में वह सहायक नदी इतनी चौड़ी और गहरी है कि मिसिसिपी का अधिकांश पानी इसमें छोड़ा जा सकता था। लेकिन समुद्र में ज्वार आने के डर से केवल एक तिहाई पानी ही छोड़ा जा रहा है।

शाम को मिसिसिपी नदी के तट पर हमने घूमने का खूब आनंद लिया। पुरानी शैली की नौका में बैठाकर नदी की तेज धारा में हमें ले जाया गया। वह क्षण भी बेहद सुखद था! बिलकुल ठंड नहीं थी। मार्च का महीना था,मगर इस दक्षिण प्रदेश में गर्मी पड़ना शुरू हो जाती है।शाम की हवा अच्छी लग रही थी। फिर लौटकर नदी-तट के बेंचों पर बैठकर कुछ   स्नैक्स खाए। मिस लुई ड्रक हमारे दल में सबसे ज्यादा मिलनसार थी। पूरे विश्व में कार्य करने वाली संस्था संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी पुनर्वास संगठन (यूएनएचसीआर) की वह एक वरिष्ठ अधिकारी थी।

बचपन में भूगोल की पुस्तक हमने पढ़ा था कि मिसौरी-मिसिसिपी दुनिया की सबसे दीर्घ नदियों में से एक है। इसका संक्षिप्त नाम मिसिसिपी है। यह अमेरिका की सबसे प्रसिद्ध और सबसे लंबी नदी है, जो ऐतिहासिक और संस्कृति-सम्पन्न है। नदी-तट पर चाय-नाश्ता करते समय मुझे मार्क ट्वेन की पुस्तक ''*लाइफ ऑन द मिसिसिपी (मिसिसिपी पर जीवन)*' याद आ गई। मुझे नदी पर काम करते हुए उन मजदूरों की कई तस्वीरें याद आने लगी, जिनका चित्रांकन अमेरिकी कलाकार बिंगहैम ने तैयार किया था। मार्क ट्वेन उन्नीसवीं सदी के थे और चित्रकार बिंगहैम बीसवीं शताब्दी के। मार्क ट्वेन के शाब्दिक वर्णन की तुलना मुझे बिंगहैम के चित्र अधिक सुंदर और प्रभावशाली लगे।

न्यू ऑरलियन्स में कई प्रसिद्ध संग्रहालय हैं। उनमें प्राचीन संस्कृति, विरासत में मिले जाज-संगीत, फ्रांसीसी-साहित्य, दैनिक जीवन-चर्या, पाक-कला आदि के बारे में पढ़ने के लिए कई किताबें और पत्रिकाएं हैं। महानगर प्राधिकरण ने हमें इतनी पढ़ने की सामग्री दी थी कि उन पर सिवाय सरसरी निगाहें दौड़ाने के अलावा कुछ भी संभव नहीं था। बिंगहैम के तस्वीरों का छोटा सा एलबम हमें बहुत खुशी दे रहा था।

मार्क ट्वेन की किताब '*लाइफ ऑन द मिसिसिपी*' में उन्नीसवीं शताब्दी के इस नदी का इतिहास और तत्कालीन बड़े-बड़े स्टीमबोट्स अमेरिकी उपन्यास जगत में बहुत लोकप्रिय थे।मिसिसिपी नदी में ऋतुओं के अनुसार अपने आकार बदलने, नाविकों की जीवन-शैली और तटवर्ती शहरों के स्केच अत्यंत ही सुंदर ढंग से उपन्यासों में उकेरे गए हैं। जब मैंने अपने कॉलेज के दिनों में यह उपन्यास पढ़ा था तो मेरे मन में इस विशाल नदी को देखने के लिए इच्छा पैदा हुई थी। सहपाठियों के साथ संध्या-भ्रमण के समय यह प्रशस्त नदी और उसमें चलते छोटे-बड़े जहाज मुझे मार्क ट्वेन के उपन्यास की फिर से याद दिला रहे थे।

'*मिसिसिपी पर जीवन*' 1883 में प्रकाशित हुई थी। उसके अगले वर्ष मार्क ट्वेन का क्लासिक उपन्यास '*एडवेंचर्स ऑफ हकलबेरी फिन*' प्रकाशित हुआ था। इस उपन्यास की कथावस्तु आजादी की तलाश करते एक गुलाम की एक युवक के साथ मिसिसिपी नदी की यात्रा है। मिसिसिपी-यात्रा में हक और जीन के विभिन्न अनुभव, खतरों से उनके जूझने का रोमांचक वर्णन इस उपन्यास का प्रमुख आकर्षण है। मार्क ट्वेन की शैली कभी पाठकों को रुलाती है तो कभी हँसाती है। अमेरिका के गृहयुद्ध पूर्व की दास-प्रथा और गुलामों के जीवन और मुक्ति लिए उनकी छह टपटाहट का इस उपन्यास में सुंदर वर्णन किया गया है।

न्यू ऑरलियन्स में हमारे तीन दिवसीय प्रवास के दौरान बोरबॉन स्ट्रीट में घूमना और मिसिसिपी नदी के किनारे बैठना मेरे लिए सुखद उपलब्धि थी। मिसिसिपी अमेरिका के इतिहास और संस्कृति का प्रतीक

है।जितनी गंगा नदी हमारे लिए महत्त्वपूर्ण है, उतनी ही मिसीसिपी अमेरिकी लोगों के लिए। न्यू ऑरलियन्स का जनजीवन मिसिसिपी के इतिहास की जटिलता से जुड़ा हुआ है। अमेरिकी शहरों में न्यू ऑरलियन्स की अपनी खास विशेषता है। यह एक बहुत बड़ा शहर है,मगर दूसरों से अलग है। इसकी विशिष्ट जीवन-शैली, भोजन, जाज-संगीत और प्राचीन परंपराओं में आत्मीयता निहित है।

जब मैं यह लिख रहा था, तभी न्यू ऑरलियन्स में भयानक दुर्घटना घटित हुई थी। यह एक चौंकाने वाली त्रासदी थी। हेरीकेन कैटरीना मेक्सिको-खाड़ी के तीन राज्यों में भयानक क्षति का कारण बना। न्यू ऑरलियन्स शहर लगभग पूरी तरह से तबाह हो गया। बोर्नबॉन स्ट्रीट में हम जिन रेस्तरां में खाना खाते थे , जहां घूमते थे, वह जगह करीब दस-बारह फीट जल-मग्न हो गई। न्यू ऑरलियन्स के लगभग सभी क्षेत्र समुद्र-तल से नीचे हैं। एक तरफ मिसिसिपी नदी तो दूसरी तरफ पोंटचार्टन झील। शहर में पहुँचते समय हरिकेन की गति **250** किलोमीटर प्रति घंटे थी। शहर को सुरक्षा देने वाले बांध का बड़ा हिस्सा नष्ट हो गया था। पूरे शहर में बाढ़ आ गई थी। भयानक बारिश, 250 किमी प्रति घंटे की हवा की रफ्तार और बाढ़ के पानी ने 28 तारीख, 'काले सोमवार' को न्यू ऑरलियन्स शहर को पूरी तरह से तबाह कर दिया। यह सच है .. कैटरीना आने की खबर शहर के ज्यादातर लोगों को मिल चुकी थी। हजारों लोगों ने अपनी-अपनी कारें लेकर शहर छोड़ दिया था। मगर बहुत सारे लोग या तो जिनके पास गाडियाँ नहीं थीं या जो यह सोच रहे थे कि कुछ भी गंभीर घटित नहीं होगा,वे लोग वहीं रह गए। दुर्भाग्य से उनमें से ज्यादातर अमेरिका के काले लोग थे।

राष्ट्रीय तूफान केंद्र द्वारा प्रदान की गई जानकारी के अनुसार कैटरीना चौथे केटेगरी का तूफान था। पंद्रह फुट ऊंची सागर की लहरें शहर में घुस आई।

समाचार-पत्रों की खबरें पढ़ने पर मुझे लगा कि स्थानीय लोगों और अधिकारियों की भविष्यवाणियां अक्षरशः सत्य साबित हुई। मैंने मानस-चक्षु से अपने आप को बोरबॉन स्ट्रीट से बाढ़ में मिसिसिपी तट या पैन्टेचर्टन झील की ओर बहता जा रहा हूँ। अगर हमारे समय न्यू ऑरलियन्स में ऐसा तूफान आया होता तो अमेरिका के सभी समाचार पत्रों में छह पा होता कि *हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के पच्चीस सीनियर फ़ेलो की भयानक हरीकेन में जल-समाधि* । शायद हमारी दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए 'चर्च-सर्विस' आयोजित की जाती, और हार्वर्ड विश्वविद्यालय हमारे परिवारों को शोक-संदेश भेजता।

शहर के लैटिन क्वार्टर और बोरबॉन स्ट्रीट बाहरी पर्यटकों के लिए सबसे आकर्षक जगह हैं। लैटिन क्वार्टर की सबसे अच्छी होटल में रहते हुए खूबसूरत बोरबॉन स्ट्रीट, मुख्य रास्ता और अन्य स्थानों के आस-पास हम घूमते थे। लेकिन अब सभी समाचार-पत्रों और टेलीविजन चैनलों में एक ही खबर छाई हुई है कि न्यू ऑरलियन्स पूरी तरह से तबाह हो गया हैं। शहर के महापौर के अनुसार हजारों लोग अपनी जान गंवा चुके हैं। तूफान गुजरने के एक हफ्ते बाद पानी पर तैर रहे शवों और गायब लोगों की संख्या की गणना करना संभव नहीं है। अमेरिका की संघीय सरकार, जो उसे करना था, कर नहीं पाई। इस विषय पर हर जगह आलोचना हो रही थी और अमेरिका के राष्ट्रपति ने न्यू ऑरलियन्स की यात्रा के बाद अपनी विफलता को स्वीकार कर लिया। अमेरिकन कांग्रेस ने 10 अरब डॉलर की प्राथमिक सहायता की घोषणा की, जिसे बाद में बढ़ाकर 50 अरब डॉलर कर दिया गया। शहर में 'सुपर डोम' नौ हजार लोगों को आश्रय प्रदान करने के लिए बनाया गया, मगर पन्द्रह हज़ार लोग ठूंस-ठूंसकर उसमें भर गए थे। लोगों को भोजन-पानी में अकथनीय कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उनके नित्य-कर्म की सुविधाएं भी वहां नहीं थीं। लोग बहुत असंतुष्ट थे। इसके अलावा, कुछ   विरोधी-

सामाजिक तत्वों ने इस स्थिति का फायदा उठाते निर्दोष लोगों को लूटना शुरू किया। अंधेरे में, रास्तों पर और यहां तक कि सुपर डोम के अंदर भी लड़कियों और महिलायों के साथ बलात्कार किया। यह सर्व विदित था कि सरकार अपने बचाव कार्य में विफल रही। प्राकृतिक आपदा से नागरिकों की रक्षा करने में नाकाम रहने के कारण शहरी लोगों ने संघीय सरकार की कटु आलोचना की।

हजारों लोग मर गए। शहर विध्वस्त हो गया। लोग विभिन्न स्थानों पर फंसे हुए थे। कुछ लोग लूटपाट कर रहे थे। मिसिसिपी-तट पर भयानक विस्फोट हो रहे थे। इस तरह एक सुंदर और आकर्षक शहर मलबे के बड़े ढेर और अनदेखे अद्‌भूत नर्क में बदल गया। बोरबॉन स्ट्रीट पर विभिन्न प्रकार के स्नैक्स खाने का आनंद लेते समय कभी कल्पना नहीं की थी कि ऐसी दुर्घटना भी घट सकती है। सन 1853 में इलस्ट्रेटेड लंदन न्यूज में लिखा हुआ था, *"न्यू ऑरलियन्स का निर्माण ऐसी जगह पर किया गया है, जिसे केवल वाणिज्यिक वासना के पागलपन ने लोगों को कब्जा करने के लिए उकसाया होगा।"*

न्यूयार्क, सैन फ्रांसिस्को और लॉस एंजिल्स जैसे विश्व-प्रसिद्‌ध शहर के बाहरी पर्यटकों के लिए आकर्षण-केंद्र है, उनका भविष्य क्या हैं? आज यह प्रश्नवाचक बनकर खड़ा हुआ है। स्थिति इतनी बुरी हो गई थी कि जेलों में लूटपाट करने वालों और बलात्कारियों को डालने के लिए पर्याप्त स्थान भी नहीं था। इसका कारण यह था कि लगभग सभी जेलें टूट गई थीं। इसी तरह ज्यादातर अस्पताल नष्ट हो गए थे । रोगियों के उपचार के लिए वैकल्पिक व्यवस्था की गई थी। कहीं पीने के पानी और दवाओं की कमी के कारण महामारी फैल न जाए, सरकार ने इस दिशा में कुछ   कदम उठाए। अन्य देशों से दवाइयाँ, उपकरण और चिकित्सक आने लगे थे। अमेरिका की थल-सेना, नौ-सेना और वायु-सेना ने ज़ोर-शोर से बचाव-कार्य शुरू किया। यह सच था कि सरकारी मशीनरी प्रारंभिक चरण में विफल रही। लेकिन बाद में धीरे-धीरे स्थिति नियंत्रण में आने लगी। अमेरिका दुनिया का सबसे अमीर देश है और जो हमेशा तीसरी दुनिया के गरीब देशों की मदद करता आया था, आज प्राकृतिक आपदाओं की वजह से स्थिति उलटी है। भारत सहित कई देशों ने अपने वायुसेना के विमानों से दवाइयाँ और खाद्‌य-पदार्थ भेजे।

मनुष्य के लालच और आसुरिकता जैसी प्रवृति सब जगह समान हैं। यहां तक कि अमेरिका जैसे एक अमीर देश में भी दुष्ट लोग स्थिति का फायदा उठाते हुए इतना नीचे गिर जाते हैं कि सरकार सेना को उन्हें देखते ही गोली मारने का आदेश देती है। जिससे कुछ   हद तक लूटपाट और बलात्कार की घटनाओं में कमी आई। सबसे बड़ी समस्या गिरफ्तार किए गए बदमाश लोगों के लिए जेलों की कमी थी। हेलिकॉप्टर द्‌वारा जनता को जिन सुरक्षित जगहों पर पहुंचाया जा रहा था, और जिन जगहों पर खाद्‌य-सामग्री और दवाइयाँ बांटी जा रही थी, उस समय उन जगहों पर काम-चलाऊ जेलें बनाई गईं।

यह थी खूबसूरत न्यू ऑरलियन्स शहर की वर्तमान दुर्दशा! तूफान के कारण शहर के कई हिस्सें खत्म हो चुके थे। कई पर्यावरणविदों के मतानुसार इस शहर को पूरी तरह से नई जगह पर स्थापित किया जाना चाहिए,क्योंकि शहर के अधिकांश क्षेत्र समुद्र-तल से नीचे हैं इसलिए भविष्य में ऐसी दुर्घटनाएं नहीं होगी, इसकी क्या गारंटी है? संक्षेप में, यह कहा जा सकता है कि इतिहास प्रसिद्‌ध न्यू ऑरलियन्स अब न्यू ऑरलियन्स के रूप में मौजूद नहीं हैं। शायद भविष्य में नहीं रहेगा। मैंने लगभग अमेरिका के बड़े सभी शहरों को देखा है और मेरी राय में न्यू ऑरलियन्स एक जीवंत शहर था, जो दूसरों से अलग था। मैंने पहले ही कहा है कि न्यू ऑरलियन्स जाज और 'ब्लू' का जन्म स्थान है। न्यू ऑरलियन्स का यह लोकप्रिय संगीत अमेरिका के साथ-साथ

दुनिया के लिए एक बड़ा उपहार है। तत्कालीन अखबार के पहले पृष्ठ पर शीर्षक था 'सभी जाज अलविदा' । खबर की एक तस्वीर में दिखाया गया था, एक आदमी टुबा-कू (एक बड़ा बिगुल, जो जाज संगीत में काम आता है) के साथ घुटने तक गहरे पानी में सड़क पार करते हुए। न्यू ऑरलियन्स विश्वविद्यालय के जाज विभाग के प्रमुख प्रोफेसर शेल्टनबर्ग, ने कहा, "न्यू ऑरलियन्स ने सबसे पहले महान अनूठी कला के रूप में जाज का निर्माण किया। अमेरिकी अस्तित्व के अनूठे हिस्से को पोंछने वाली वह एक त्रासदी है"

जब मैंने यह समाचार पढ़ा तो मेरे मानस पटल पर विख्यात बोरबॉन स्ट्रीट और उसके आस-पास की गलियों-नुक्कड़ों पर रात 9 बजे से 11 बजे तक जाज-संगीत पर नृत्य करते युवकों के दृश्य उभर आए। न्यू ऑरलियन् में जाज की लोकप्रियता का आप बिना देखे कल्पना नहीं कर सकते हैं। आधी रात तक जाज-संगीत प्रस्तुत करते छोटे-छोटे दल न्यू ऑरलियन्स की सड़कों पर जब गुजरते थे तो स्थानीय लोग ताली बजाकर उन्हें प्रोत्साहित करते थे।

जैसा कि मैंने पहले कहा है, अमेरिका के सभी शहरों की तुलना में न्यू ऑरलियन्स में विभिन्न प्रकार की मछलियां, केकडें और तरह-तरह के समुद्री खाद्य बेहद लोकप्रिय था। जिस प्रकार पेरिस की सड़कों के किनारे कुर्सी लगे रेस्तरां में लोग खाना खाते हैं, ठीक न्यू ऑरलियन्स में वैसा ही था। पाक-शैली पूरी तरह से अलग थी। इसे 'काजुन शैली' कहते थे। शायद बाहरी पर्यटकों को यह भोजन बहुत आकर्षित करता था। निजी तौर पर मुझे मछह ली खाना अच्छा लगता है, न्यू ऑरलियन्स में प्रवास के दौरान मेरे दोस्तों के साथ मैंने अक्सर रेस्तरां समुद्री खाने का ऑर्डर किया था।एक बहुत बड़ी प्लेट में भांति-भांति की मछह लियां, केकडें, ओएस्टर अच्छी तरह से सजा कर रखे जाते थे। मुझे शामूका और घोंघे के अलावा सब-कुछ   खाने में बहुत आनंद आता था। न्यू ऑरलियन्स के दुर्भाग्य की खबर पढ़कर मुझे वह सब याद आने लगा। न्यू ऑरलियन्स के लोग पेरिस की तरह रेस्तरां के बाहर सड़कों के किनारे बैठकर खाने का आनंद लेते थे। न्यू ऑरलियन्स शहर की स्थापना सन 1718 में हुई थी। पेरिस के दक्षिण-पश्चिम में दौ सौ किलोमीटर दूर स्थित शहर का नाम 'ऑरलियन्स' है। सन 1781 में ऑरलियन्स के ड्यूक फिलिप द्वितीय फ्रांस के सम्राट थे। अमेरिका का लुसियाना प्रदेश उस समय फ्रांस के अधीन था। ड्यूक ऑफ़ ओरलियंस के सम्मानार्थ लुसियाना के इस शहर का नाम न्यू ऑरलियन्स रखा गया था। केवल खान-पान में ही नहीं, वरन न्यू ऑरलियन्स की संस्कृति के अनेक पहलुओं पर फ्रेंच-संस्कृति का काफी प्रभाव था। हार्वर्ड में एक साल के प्रवास और अमेरिका के कई शहरों के भ्रमण के दौरान हुए दो अनुभव मेरे लिए अविस्मरणीय हैं, दोनों न्यू ऑरलियन्स के हैं। पहला अनुभव है संध्या के समय मिसिसिपी के किनारे बैठकर नदी के वक्ष पर जहाजों-स्टीमरों को गुजरते हुए देखना, वहां पर बज रहे संगीत का आनंद लेना और इच्छानुसार ठोंगे में तले आलू चिप्स और तली हुई मछह ली लेकर सीमेंट बेंच पर बैठकर खाना । दूसरा अनुभव है, बोरबॉन स्ट्रीट के परिदृश्य। जाज-संगीत पर ताली बजाकर लोगों को प्रोत्साहित करना, विभिन्न प्रकार के भोजन-पेय का आनंद उठाते सड़क पर घूमते लोग, सड़क के दोनों किनारों पर बने रेस्तरां से बाहर आती भोजन की खुशबू, घरों के बालकानियों पर लोहे की सुंदर रेलिंग- इन सबसे ऊपर स्थानीय लोगों का उत्साह, जीवंत व्यवहार, उनकी सादगी और अतिथि-वत्सलता।

विध्वस्त न्यू ऑरलियन्स की खबर पढ़कर मुझे डॉ॰ सिद्धार्थ भंसाली के कथन याद आने लगे। न्यू ऑरलियन्स में वह एक प्रभावशाली भारतीय हृदय विशेषज्ञ थे। भारत के बाहर कहीं भी जैन धर्म की अधिक कलाकृतियां अगर संग्रहीत था तो वह डॉ॰ भंसाली का निजी संग्रहालय था। इस संग्रहालय में एक सौ से अधिक

दुर्लभ कांस्य प्रतिमाएं थीं, अन्य वस्तुएं दसवीं सदी से लेकर वर्तमान समय तक की थी। सन 2008 में मैंने समाचार पत्रों में पढ़ा है कि न्यू ऑरलियन्स कला संग्रहालय में डॉ. भंसाली के निजी संग्रहालय की वस्तुओं की प्रदर्शनी का आयोजन हुआ था। जब मैं हार्वर्ड विश्वविद्यालय के फाइन आर्ट डिपार्टमेंट में था, तो मैंने भंसाली के बारे में सुना था। यहां तक कि जिस घर में डॉ. भंसाली रहते थे, वह घर भी अत्यंत विशाल और वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध था। एक कला विशेषज्ञ ने *'न्यू ऑरलियन्स हाउस-ए हाउस-वॉचर गाइड'* नामक पुस्तक लिखी है। उसमें *'भारतीय बंगला'* शीर्षक से डॉ. भंसाली के घर को जगह मिली है। भंसाली के संग्रहालय में कैथोलिक और अन्य भारतीय समुदायों की कई कला-वस्तुएं भी हैं। अखबारों में पढ़ा कि ये सभी मूल्यवान और विरल कला-वस्तुएं पूरी तरह से सुरक्षित हैं।

न्यू ऑरलियन्स शहर के अनेक नाम रखे गए हैं। इनमें से तीन वर्णनात्मक नामों का सामान्यतः प्रयोग होता है। पहला नाम, क्रेसेंट सिटी मतलब मिसिसिपी का गतिपथ इस शहर के पास अर्ध चंद्राकार है। इसलिए शहर भी अर्ध चंद्राकार है। लोगों के जीवन के प्रति सामान्य दृष्टिकोण को देखते हुए शहर का एक और दूसरा नाम दिया गया है। नाम है 'बिग इज़ी' शहर। जिसका अर्थ है कि शहर के लोग तनाव-मुक्त,आसान और सरल जीवन जीते हैं।यहाँ जीवन भाराक्रांत नहीं है, प्रसन्नतापूर्वक जीवन जीना मानो इस शहर का संकल्प है। कुछ लोग मानते हैं कि यह एक ऐसा शहर है, जहां किसी भी चीज की कोई चिंता नहीं है। ये तीनों नाम न्यू ऑरलियन्स के लिए उपयुक्त हैं। इसका कारण यह है कि शहर हमेशा उत्सवों से भरा होता है, लोगों को खाने में अच्छा मज़ा आता है, जाज-संगीत में खुद को भूल जाना- यह ही जन-जीवन का आभिमुख्य है। यह सुंदर, सरल और स्वच्छंद दक्षिण शहर निश्चित रूप से अमेरिका के बड़े शहरों में एक विशिष्ट स्थान रखता है।

हमारी प्रवास अवधि समाप्त हो गई। यहाँ से हमने मिसिसिपी के जैक्सन प्रदेश की ओर प्रस्थान किया।

मिसिसिपी राज्य का जैक्सन शहर : क्रीतदास नीलामी

न्यू ऑरलियन्स के बाद हमारे यात्रा का अगला पड़ाव था मिसिसिपी राज्य की राजधानी जैक्सन सिटी। एमट्रैक ट्रेन से हम 8 बजे जैक्सन पहुंचे। रेलवे स्टेशन और रेलवे स्टेशन से रैडिसन होटल,जहां हमारे ठहरने की व्यवस्था की गई थी, की सड़क पर स्थानीय काले लोगों का जुलूस निकल रहा था, अच्छे कपड़े पहने हुए थे वे लोग। शुरु में हमने सोचा कि शायद वे किसी बैठक में भाग लेने जा रहे हैं या फिर वे कोई त्योहार मना रहे है। मगर पूछताछ करने पर पता चला कि डॉ.मार्टिन लूथर किंग के सम्मानार्थ उस दिन घोषित छुट्टी थी। यह वही व्यक्ति है, जो महात्मा गांधी का सम्मान करते थे और अहिंसा के बल पर सामाजिक परिवर्तन लाया था। मुझे उनके ओजस्वी भाषणों की एक पंक्ति याद आई: "मेरे पास एक सपना है ...."

कई युवकों के दल सड़कों पर गीत गाते हुए चले जा रहे थे। मार्टिन लूथर किंग को मालूम था कि मिसिसिपी राज्य दास-प्रथा का प्रबल समर्थक है। प्रचुर तंबाकू और कपास की खेती के लिए दासों की इस राज्य में आवश्यकता थी। *'अंकल टॉम का केबिन'* के प्रकाश में आने के बाद अमेरिका में नस्ल-भेद के खिलाफ जागरूकता आने से नीग्रो लोगों की आजादी के लिए गृह-युद्ध शुरू हुआ। उसके पीछे जैक्सन शहर और मार्टिन लूथर किंग दोनों ने विपक्ष का साथ दिया। जैक्सन शहर में मार्टिन लूथर किंग के सामाजिक दर्शन अहिंसा की वास्तविक शक्ति की परीक्षा हुई। उनके शब्दों में, *"अहिंसा केवल एक शक्तिशाली हथियार है।यह इतिहास में अद्वितीय है। यह ऐसे व्यक्ति को नामांकित करता है, जो उसका इस्तेमाल करता है।"*

यह ध्यान देने योग्य बात है कि मार्टिन लूथर किंग की भाषा गांधीजी के सत्य- अहिंसा के दर्शन के सदृश है। गांधीजी ने कहा था कि उनका धर्म सत्य और अहिंसा पर आधारित है। सत्य उनके लिए ईश्वर है और अहिंसा ही परमेश्वर तक पहुंचने का मुख्य मार्ग है।

रैडिसन होटल में अपना सामान रखकर हम खाना खाने की चिंता करने लगे। जैक्सन सिटी के तीन स्थानीय अधिकारी हमारी देखभाल के लिए नियुक्त किए गए थे। वे हमें हवाई अड्डे से होटल ले आए। हम रैडिसन होटल में खाना नहीं चाहते थे। हमारी इच्छा थी कि हम कुछ स्थानीय भोजन खाएं। तीन स्थानीय अधिकारियों में एक भद्र-महिला थी। वह हमें 'कॉक ऑफ़ द वॉक' नामक रेस्तरां में ले गई। रेस्तरां केवल लकड़ी का बना था। दीवारें लकड़ी की, टेबल-कुर्सियां लकड़ी की और यहां तक कि फर्श भी लकड़ी का था। किसी ने हंसी-मज़ाक में कहा, " कहीं खाना परोसने वाले तो लकड़ी के नहीं हैं!" लकड़ी की दीवारों पर टंगे हुए थे काले, पीले और नारंगी रंग के मक्के के पौधे, सूखे तंबाकू के पत्ते, विभिन्न प्रकार के मछह ली पकड़ने के जाल और पिछह ले साठ वर्षों में होटल में खाने वाले कई लोगों के परिचय-पत्र। उसके बाद हमने हमारे तीन स्थानीय अधिकारियों के साथ बातचीत कर कैटफ़िश,बड़े-बड़े तले हुए गोटा आलू, तीन प्रकार के सलाद और छह ल्ले की तरह तले हुए प्याज के टुकड़े आदि लाने का ऑर्डर दिया। भूनी हुई मछह ली स्वादिष्ट थी। इससे भी ज्यादा अच्छे थे केकडे। उबले हुए केकड़ों की खोल से पहले मांस निकालकर विभिन्न मसालों के साथ उन्हें पकाया गया था। उस स्वादिष्ट मांस को परोसने के लिए केकड़ों के खोलों का प्लेटों के रूप में इस्तेमाल करने का दृश्य हमारे लिए नया था। एल्यूमीनियम के विशाल मग में पानी और बियर दिया गया। स्पष्ट था कि वह रेस्तरां काफी प्राचीन था। मिसिसिपी राज्य कैटफ़िश, मक्का और तंबाकू के लिए जाना जाता था। जैक्सन शहर इसकी राजधानी और केंद्र-स्थली थी। यह रेस्तरां बहुत लोकप्रिय था। उस दिन रेस्तरां में लगभग 200 लोग खा रहे थे। गाइड ने हमें बताया कि इस प्रसिद्ध रेस्तरां में खाने के लिए बाहर से कई जाने-माने लोग आते हैं।होटल से रेस्तरां जाते समय पूरे इलाके में गहरी धुंध छाई हुई थी। रेस्तरां से साढ़े ग्यारह बजे लौटते समय कोहरे लगभग छंट गया था। हम थक गए थे और भरपेट स्वादिष्ट भोजन खाने से बिस्तर पर गिरते ही नींद आ गई।

जैक्सन शहर के ‘सिटी हॉल’ का निर्माण 1846-47 में हुआ था। ईंटों को बनाकर उन्हें धूप में सूखाकर अपनी मेहनत से क्रीतदासों ने इस हॉल का निर्माण किया था। उस समय केवल 7000 डॉलर खर्च हुए थे। यह शहर का एक ‘लैंडमार्क’ है, देखने में बेहद खूबसूरत। स्थानीय अधिकारी हमें इसे दिखाने के लिए अंदर ले गए। इसकी वास्तुकला ग्रीक है। यह शहर का दर्शनीय स्थान है,मगर इसकी लागत बहुत कम थी। इसमें घूमते समय हमें याद आने लगा, अमेरिका में दास-प्रथा का दीर्घ इतिहास, शोषण-कषण का असमानांतर अमानवीय व्यवहार।

जब हम जैक्सन शहर के अभिलेखागार में गए तो हमें इस तरह की अमानवीयता के ज्वलंत उदाहरण देखने को मिले। मिसिसिपी राज्य के प्राचीन इतिहास,विशेषकर क्रीतदास -प्रथा, दासों की नीलामी का इतिहास, क्रीतदास कैसे बर्तनों में खाना खाते थे, पशुओं की तरह कैसे वे चेनों से बंधे रहते थे- ये सभी अभिलेखागार में प्रदर्शित किया गया है।अधिकांश क्रीतदास मिसिसिपी राज्य के ‘नट्टेज़’ नामक विशाल गांव में रहते थे क्योंकि कपास और तम्बाकू की अधिकतम खेती वहाँ होती थी। अधिकांश जमींदार भी वहां रहते थे। क्रीतदास अफ्रीका से कौड़ियों के मोल में खरीदे जाते थे और बहुत अमानवीय परिस्थिति में समुद्र रास्ते से दक्षिण अमेरिका में पहुंचाए जाते थे। कई पाठक अफ्रीका में उस स्थान के बारे में जानते होंगे, जहां क्रीतदास इकट्ठे रखे जाते थे। क्योंकि उस अट्टालिका को डेढ़ साल पहले एक ऐतिहासिक स्मारक के रूप में लोकार्पण हुआ है।उस जगह को

जेल भी कह सकते है।अमेरिका-यात्रा से पूर्व उन्हें गाय-बैल की तरह जहाजों में भर दिया जाता था। अभिलेखागार में दिनांक 1 फरवरी, 1820 का नोटिस प्रदर्शित किया गया था, जिसमें लिखा हुआ था कि नीग्रो क्रीतदास की नीलामी 10 फरवरी को होगी। इस नीलामी का विशद इतिहास पढ़कर मैं चकित और दुखी था। नैट्ज़ेज के व्यवसायी मैसर्स एच॰ पोस्टलेहैत एंड कंपनी उस दिन नीलामी के प्रभारी थे। उस नीलामी में उन्नतीस गुलाम नीलाम हुए थे, वे स्वर्गीय जॉन स्टील की संपत्ति थीं। छह पुरुष, सात महिलाएं, आठ से चौदह साल की उम्र के चार लड़कें, दस-बारह साल की दो लड़कियां और दस वर्ष से कम उम्र के दस बच्चे थे। इन छह ह पुरुषों में से तीन के परिवार के लोगों को शामिल किया गया था। नीलामी की शर्तें इस प्रकार थी:_

1. नीलामी की राशि का आधा हिस्सा तुरंत दिया जाएगा और शेष राशि बारह महीने के अंतर्गत देय थी।

2. खरीददार को इस समझौते पर सिक्यूरिटी हस्ताक्षर करने और बैंक में देय राशि जमा करनी थी।

3॰ उन खरीददारों के लिए छूट दी गई थी, जो एक से अधिक परिवारों को खरीदेगा।

4॰ नीलामी में भाग लेने के इच्छुक व्यक्ति नीलामी से पहले किसी दिन जॉन स्टील के घर के सामने बंधे गुलामों को देखकर अपना निर्णय ले सकता है।

5॰ नीलामी प्रक्रिया का पर्यवेक्षण रॉबर्ट अलेक्जेंडर और एडवर्ड टर्नर करेंगे।

पाठकों को कुछ और बताने की कोई जरूरत नहीं है। दूर अफ्रीका से लाए गए लोगों को खरीदकर पशुओं की तरह नीलामी में बेचा जाता था। उससे अधिक हृदय विदारक घटना और क्या हो सकती है? अभिलेखागार देखने के बाद 'नट्टेज़ गाँव की यात्रा करने की मेरी प्रबल इच्छा थी। स्थानीय अधिकारियों ने दो कारणों का हवाला देते हुए मुझे वहाँ जाने से रोक दिया। सबसे पहला, सन 1820 वाले नट्टेज़ गांव का कोई नामोनिशान नहीं था। दूसरा, यह स्थान वहाँ से कुछ दूर था। निस्संदेह वह मिसिसिपी राज्य में क्रीतदास-इतिहास के कारण सबसे ज्यादा असभ्य क्षेत्र था।मार्टिन लूथर किंग ने इस जगह को रंगभेद के खिलाफ अपने आंदोलन हेतु चुना था,अब मुझे इसका कारण स्पष्ट हो गया था।

हमारे लिए 'स्मिथ रॉबर्टसन संग्रहालय' के परिदर्शन की व्यवस्था की गई थी, जहां निग्रो लोगों की विरासत के कई पहलुओं का प्रदर्शन किया गया था। संग्रहालय में शुरू से आज तक, अफ्रीका से निग्रो को क्रीतदास के रूप में लाने से लेकर कृषिकार्य का नानाविध इतिहास, निग्रो समाज के रीति-रिवाज, वाद्य यंत्र, खेती में उनके द्वारा प्रयोग में लाए जाने वाले विभिन्न उपकरण - ये सभी आर्टिफ़ेक्ट्स रखे हुए थे। मिसिसिपी में काले लोगों की विरासत का सबसे बड़ा संग्रहालय है।संग्रहालय की स्थापना सन 1894 में हुई थी। इसके बाद हम जैक्सन की कैपिटल देखने गए थे। सन 1840 में पुराने कैपिटल का निर्माण-कार्य शुरू हुआ था। लेकिन विविध कारणों और कई जगहों पर अट्टालिका के क्षतिग्रस्त होने के कारण सन 1903 में एक नए कैपिटल का उद्घाटन हुआ। मिसिसिपी का प्रशासन इस अट्टालिका से 3 जून, 1903 से शुरू हुआ। यह जन्मदिन था अमेरिकी राष्ट्रपति जेफरसन डेविस का। नई अट्टालिका उन्हें समर्पित कर दी गई थी। अट्टालिका के गुंबद पर अमेरिका के राष्ट्र-चिह्न 'फ्लाइंग ईगल की मूर्ति' स्थापित की गई है। इसके दोनों पंखों की लंबाई 15 फीट है और उन पर 14 कैरेट सोना चढ़ाया गया है। इसमें मिसिसिपी के विभिन्न संसाधन, उद्योग और कला-चित्र प्रदर्शित किए गए हैं। आंतरिक डिजाइन में कपास प्रमुख घटक के रूप में इस्तेमाल की गई है।

सन 1903 में कपास की खेती के लिए मिसिसिपी राज्य प्रसिद्ध था और इसे राज्य की सबसे बड़ी संपति के रूप में जाना जाता था। कपास की वजह से मिसिसिपी अमेरिका का सबसे अमीर राज्य बना। इसलिए कपास जैसे कृषि उत्पाद को कैपिटल की आंतरिक डिजाइनिंग में प्रमुखता दी गई।

जैक्सन में प्रवास के दौरान हमें दो अन्य चीजों को देखने का अवसर मिला। पहली चीज, कोलंबस के आने से पहले अमेरिका की प्राचीन इंडियन सभ्यता के अस्तित्व के बारे में उत्खनन में पर्याप्त सबूत मिले। समग्र अमेरिका के प्राक कोलंबस इतिहास ने इन खुदाइयों की वजह से नया आकार ले लिया है। विशेषज्ञों का मानना है कि हरनडो डी सोटो ने सबसे पहले मिसिसिपी नदी देखी थी। दूसरा, *'ग्रीनवुड कॉटन लैंडिस म्यूजियम'* जिसमें नदियों से कपास की खेती और संश्लिष्ट नदी पथ पर होने वाले व्यापार की विशिष्ट जानकारी दी गई है। मिसिसिपी डेल्टा और वहाँ के लोगों की जीवन-शैली और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को यहां प्रदर्शित किया गया है। खेतों में दासों द्वारा प्रयोग में लाए जाने वाले उपकरण भी यहां प्रदर्शित किए गए हैं। मिसिसिपी में उगाई गई कपास फ्रांस को निर्यात की जाती थी, वहाँ उस कपास से सुंदर कपड़े निर्मित किए जाते थे। वे कपड़े वहां प्रदर्शित किए गए हैं। स्थानीय लकड़ी के फर्नीचर भी प्रदर्शित किए गए हैं। कपास के गोदामों की तस्वीरें, कपास का निर्यात, लंगर लगे जहाज और नदी-तट पर स्थित होटल आदि की तस्वीरें संग्रहालय में दिखाई गई हैं।

संक्षिप्त में, जैक्सन शहर में हमारे प्रवास के दौरान अमरीकी नीग्रो के इतिहास, मिसिसिपी अववाहिका और डेल्टा-संस्कृति के बारे में विशेष जानकारी मिली। जैक्सन में हम दो दिन रुके। जैक्सन के मेयर और स्थानीय सीनेटर ने हमारे लिए एक रात्रिभोज की व्यवस्था की, जिसमें हमने शहर के इतिहास और परंपराओं के बारे में कई सवाल पूछे थे और ऐसे बहुत सारे विषयों पर विचार-विमर्श भी हुआ।

उसके दूसरी सुबह हम विमान द्वारा कैलिफोर्निया के ऑरेंज काउंटी के लिए रवाना हो गए।

ऑरेंज काउंटी: कैलिफोर्निया का समृद्ध क्षेत्र

ऑरेंज काउंटी की यात्रा के लिए दक्षिण के प्रसिद्ध शहर और हवाई अड्डा डलास फोर्टवर्थ पर हमारा विमान थोड़े समय के लिए रुका था। विमान नीचे उतरने से पहले संध्या के समय आकाश और पृथ्वी के दृश्य मेरे लिए अविस्मरणीय और अतुलनीय थे। समग्र आकाश का पश्चिमी क्षितिज कुंकुम की तरह लाल दिखाई दे रहा था तो नीचे धरित्री धूसर काली नजर आ रही थी। उसके कुछ समय बाद असंख्य बत्तियाँ जगमगाने लगी। पहले से मुझे पता था कि डलास फोर्टवर्थ बहुत फैला हुआ घनी आबादी वाला शहर है। आकाश में तीज का चाँद ऊपर उठ आया था, धीरे-धीरे सारा आकाश तारों से टिमटिमाने लगा था। हम रात के नौ बजे लांगविच हवाई अड्डे पर पहुंचे, यह लॉस एंजिल्स के आस-पास है। ऑरेंज काउंटी जाने के लिए चार-पांच हवाई अड्डे उपलब्ध हैं। उनमें से तीन अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे हैं, जैसे लॉस एंजिल्स, सैनडिएगो और ओंटारियो। जबकि लांगविच एयरपोर्ट घरेलू हवाई अड्डों में से एक था।

हवाई अड्डे पर हमारे स्वागत के लिए दो अधिकारी इंतजार कर रहे थे। वे हमें प्रशांत महासागर के तट पर स्थित *वेस्टिन साउथ कोस्ट प्लाज़ा होटल* में ले गए थे। ऑरेंज काउंटी अमेरिका की विकसित और समृद्ध काउंटियों में से एक है। अमेरिका के प्रत्येक राज्य में कुछ काउंटियां होती हैं। प्रत्येक काउंटी में अनेक छोटे शहर बसे होते हैं। उदाहरण के तौर पर ऑरेंज काउंटी 782 वर्ग मील में फैला हुआ 25 लाख आबादी वाला विशिष्ट क्षेत्र है। इसके अंदर 22 कस्बें हैं। इन कस्बों में कोई भी बहुत बड़ा नहीं है, सबसे बड़े शहर एनाहाइम की आबादी लगभग दो लाख है। हम ऑरेंज काउंटी में दो दिन रहें। इन दो दिनों में विभिन्न संस्थानों ने हमारे लिए दोपहर और रात के भोजन की व्यवस्था की थी। काउंटी परिषद के अध्यक्ष ने एक बार रात्रिभोज दिया तो वियतनामी समुदाय ने दूसरी बार; इसी तरह, मेक्सिकन संस्थान ने एक दोपहर के भोजन की व्यवस्था की तो इरविन स्थित कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय ने दूसरी दोपहर के भोजन की। वियतनाम और मेक्सिको के अधिकांश लोग प्रशांत महासागर के तट पर स्थित इस काउंटी में रहते है। दक्षिण की यह काउंटी मेक्सिको से बहुत दूर नहीं है। मैक्सिको के बहुत से लोग वीजा लेकर यहां अधिक पैसे कमाने की आशा में आए है। बहुत से लोग अवैध तरीके से भी सीमा पार कर आ जाते हैं। वियतनाम युद्ध के दौरान बहुत से वियतनामी भी यहाँ आकर बस गए थे। मेरे मित्र नृतत्व विशेषज्ञ जेम्स फ्रीमैन ने इस अंचल के वियतनामी समुदाय, विशेष रूप वहाँ स्थापित शिविरों में रहने वाले युवाओं और छोटे बच्चों के बारे में एक गवेषणात्मक पुस्तक लिखी थी, जिसका शीर्षक है 'वोइसेज ऑफ द कैंप'। इस पुस्तक में उन्होंने वियतनाम के प्रवासी अनेक लोगों,विशेषकर बच्चों पर विशद चर्चा की है। अलबामा विश्वविद्यालय के वियतनामी मूल के प्रोफेसर गुएन दिकू भी इस पुस्तक के सह-लेखक थे। वियतनामी शरणार्थी के दूसरी पीढ़ी ने धीरे-धीरे समाज में अपना स्थान बना लिया था। मगर अभी भी बहुत गरीब लोग उनके शिविरों में रहते हैं। काउंटी अधिकारियों ने हमें इन दोनों समुदायों से मिलने का मौका देने के लिए ही ऐसे दोपहर और रात के भोजन की व्यवस्था की थी। वास्तव में, हमें इन दोनों देशों के लोगों से कई मुद्दों पर बात करने का मौका मिला था। दोनों देशों के साहित्य और संस्कृति के प्रति मेरे मन में बहुत श्रद्धा थी। बहुत समय पहले वियतनाम की आधुनिक कविताओं का मैंने संपादन किया था। उस संकलन का नाम था *'द रॉक एंड सैंडलवुड ट्री'*। वियतनाम के मशहूर चित्रकार ट्रान्वानंकान ने उस किताब के लिए कई तस्वीरें बनाई थीं।'

कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय अमेरिका का एक प्रसिद्ध विश्वविद्यालय है। इरविन उनके सात परिसरों में से एक है।उनके कुलपति द्वारा दिए गए दोपहर के भोजन के समय हमें विश्वविद्यालय के कई प्रोफेसरो और ऑरेंज काउंटी के कई लेखकों और कलाकारों से मिलने का अवसर मिला था। ऑरेंज काउंटी से प्रस्थान करने से पूर्व वहाँ की काउंसिल के चेयरमैन ने हमारे लिए विदाई रात्रिभोज का आयोजन किया था।

वेस्टिन होटल की चौदहवीं मंजिल में मेरा रूम नंबर 1418 था। ऑरेंज काउंटी की रोशनी क्षितिज तक फैलती है, क्योंकि यह काउंटी विशाल लॉस एंजिल्स शहर का अंश-मात्र है। लॉस एंजिल्स और इसके उपनगरों का क्षेत्रफल लगभग 2000 वर्ग मील (100 मील* 20 मील) है। इसलिए लॉस एंजिल्स को *'द ग्रेटेस्ट लाइट शो ऑन अर्थ'* कहा जाता है।लॉस एंजिल्स के हवाई अड्डे पर उतरते समय इस 'शो' के बारे में मेरी सामान्य धारणा बन गई थी।

ऑरेंज काउंटी की अर्थव्यवस्था बहुत मजबूत है,केवल काउंटी का जीडीपी 50 अरब डॉलर है। यदि यह एक स्वतंत्र देश होता तो आर्थिक दृष्टिकोण से इसका स्थान दुनिया में चौरालीसवाँ (46) होता। यहाँ कुछ बड़ी-

बड़ी एयरोस्पेस कंपनियां हैं, कुछ कंपनियां रक्षा उपकरणों का निर्माण करती हैं तो कुछ जैव प्रौद्योगिकी की कंपनियां हैं। काउंटी पर्यटन और उद्योग की वजह से समृद्ध है। काउंटी के समुद्री तट की लंबाई 41 मील है, जहां पर्यटकों के आवास के लिए पांच बेलाभूमि का निर्माण किया गया है।उनमें से हमें फुलरटन और हंटिंगटन समुद्र तट पर ले जाया गया। *'लैगून बीच'* से सटे कला-संग्रहालय का भी हमने दौरा किया था। अमेरिका में सिम्फनी आर्केस्ट्रा, ओपेरा, बैले कंपनी और थियेटर के लिए ऑरेंज काउंटी प्रसिद्ध है। हमें *पैसेफिक सिम्फनी आर्केस्ट्रा* में ले जाया गया था।मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि तीन करोड़ बीस लाख अंतरराष्ट्रीय और अमेरिकी पर्यटक हर साल इस छोटी-सी काउंटी में आते हैं। 'डिज्नीलैंड' तो यहाँ का प्रमुख आकर्षण है। दूसरा आकर्षण है विशाल अनाहाइम स्टेडियम, जहां कैलिफोर्निया के लोग फुटबॉल और बेसबॉल खेलों का आनंद उठाते हैं। अनाहाइम कन्वेंशन सेंटर में सभा-समिति और सेमिनार आयोजित करने के लिए इतनी भीड़ लगती है कि अगर कम से कम दो महीने पहले बुकिंग नहीं की जाती है तो वहाँ रिज़र्वेशन मिलना मुश्किल है।

पहले दिन हम कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के इरविन परिसर में प्रसिद्ध बेकमान लेजर रिसर्च इंस्टीट्यूट और क्लिनिक देखने गए। इसके निदेशक डॉ॰ माइकल बर्न्स का लेजर अनुसंधान के क्षेत्र में अमेरिका में नाम है। इंस्टीट्यूट और क्लिनिक के चारों तरफ घूमने के बाद उन्होंने सेमिनार रूम में वहाँ होने वाले अनुसंधानों की जानकारी दी। उन्होंने हमें पॉवर पॉइंट प्रजेंटेशन की मदद से लेजर के विभिन्न उपयोगों के बारे में समझाया। उनके साथ दो घंटे कहाँ बीते, पता ही नहीं चला। यह बहुत ही सुखद अनुभव था। विश्वविद्यालय के एक गाइड ने हमें चारों तरफ घुमाया। कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के सारे सातों परिसर बहुत सुंदर हैं और बहुत अच्छी तरह से संचालित हो रहे हैं।मैं पहले से ही बर्कले, सांता-क्रूज़ और रिवरसाइड के परिसर देख चुका था। यह परिसर भी कोई कम सुंदर नहीं था। उसके बाद दोपहर के भोजन के लिए हमारा गाइड हमें वियतनाम चैम्बर ऑफ कॉमर्स के कार्यकारी निदेशक के पास ले गया, वहाँ उन्होंने *'कैलिफोर्निया में वियतनाम'* विषय पर संक्षिप्त व्याख्यान दिया। उनसे हमें पता चला कि ऑरेंज काउंटी में एक लाख से अधिक और कैलिफोर्निया में पांच लाख से अधिक वियतनामी रह रहे थे।

प्रशांत महासागर के किनारे ऑरेंज काउंटी के कई आकर्षक समुद्र तट हैं, जो हमेशा पर्यटकों से भरे रहते हैं। दोपहर के भोजन के बाद हम 'हंटिंग्टन बिच' गए। अमेरिका के हर समुद्र तट की तरह यह तट भी सर्दियों में पर्यटकों से भरा रहता है। वहाँ कुछ समय बिताने के बाद हम कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के फुलर्टन परिसर में गए। वहाँ कैलिफ़ोर्निया पैसेफिक रिम की अर्थव्यवस्था पर अर्थशास्त्र विभाग के प्रमुख ने संक्षिप्त व्याख्यान दिया, उनके निमंत्रण पर मित्सुबिशी कंपनी के प्रबंध निदेशक वहाँ उपस्थित थे। उन्होंने अपनी कंपनी और कारों की उपयोगिता के बारे में कुछ जानकारी दी थी। यह परिसर फुलर्टन बिच से कुछ दूरी पर है। वहाँ इधर-उधर घूमते-घूमते शाम होने लगी थी। हम 6 अक्टूबर को ऑरेंज काउंटी के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री टियरेन के घर कॉकटेल डिनर पर गए। वहाँ शादी के घर की तरह व्यवस्था की गई थी। उनका घर विशाल परिसर के भीतर कुटीर-शैली में बनाया गया था। स्विमिंग पूल, लॉन और गार्डन सब-कुछ उसके अंदर थे। उन्होंने ऑरेंज काउंटी के प्रमुख, दो विश्वविद्यालयों के महत्वपूर्ण प्रोफेसरों, उनके दोस्तों, अन्य उद्योगपतियों और कुछ कलाकारों को आमंत्रित किया था। श्रीमती टियरेन के कामकाज में उसकी सहेलियाँ हाथ बटा रही थीं। ऑरेंज काउंटी के प्रमुख ने हमें हार्वर्ड और ऑरेंज काउंटी के हमारे अनुभवों के बारे में पूछा। सोतोरो यची, श्रीमती लूईस, जेम्स स्पेन्स और मैंने अपने अनुभवों के बारे में कुछ बताया। खाना बहुत ही अच्छा था। श्री टियरेन

ने हमारे लिए संक्षिप्त स्वागत भाषण दिया और उन्होंने हार्वर्ड में आए प्रत्येक प्रतिभागी के देश के नाम पर शैंपेन बोतल खोली। यह हमारे लिए विचित्र अनुभव था।

अगले दिन हम मैकडोनेल डगलस स्पेस स्टेशन गए। पृथ्वी से 230 मील ऊपर बनने वाले स्पेस स्टेशनों के मॉडल तथा उनसे संबंधित सभी अनुसंधान कार्य यहां हो रहे हैं। वहां काम करने वाले वैज्ञानिकों ने हमें सब-कुछ बताया। उन्होंने मॉडल के प्रत्येक भाग का भी वर्णन किया। हमें मॉडल के पास में खड़े करवाकर एक तस्वीर खींची थी। जब हम हार्वर्ड लौटे तो हम सभी को उसकी एक प्रति दी गई थी। यह जगह होटल से बहुत दूर थी। इसलिए वहाँ पहुंचकर सब-कुछ   देखते-देखते दोपहर हो गई थी। अंतरिक्ष स्टेशन के अधिकारियों ने हमारे लिए दोपहर के भोजन के लिए व्यवस्था की थी। दोपहर के भोजन के बाद हम ऑरेंज काउंटी के सेंट अन्ना चैंबर ऑफ कॉमर्स गए। काउंटी के सुदृढ़ अर्थ-व्यवस्था में चैंबर ऑफ कॉमर्स की महत्वपूर्ण भूमिका है। चैंबर के दो वक्ताओं ने ऑरेंज काउंटी की अर्थव्यवस्था, वैदेशिक व्यापार, औद्योगीकरण और पर्यटन के बारे में हमें अवगत कराया।

होटल लौटने के बाद हमें पैसेफिक सिम्फनी ऑर्केस्ट्रा में ले जाया गया। यह आर्केस्ट्रा काउंटी के परफोरमिंग आर्ट सेंटर में स्थित है। इस तरह ऑरेंज काउंटी कैलिफोर्निया का मनोरंजन केंद्र बन गया।

दूसरे दिन सुबह नाश्ता करने के बाद हम गाइड के साथ यूनिवर्सल स्टूडियो गए। स्टूडियो के अर्काइव में अधिकारियों ने हमें गोड़्ज़िला जैसी कुछ अविस्मरणीय फिल्मों के निर्माण कौशल से परिचय कराया। उसके बाद उन्होंने हमें 'स्टंट शो' और 'एनिमल शो' भी दिखाया। वहां दो घंटे व्यतीत करने के बाद हम डिज़नीलैंड गए। वहां मध्याह्न भोजन समेत 5 घंटे लगे। अमेरिका का डिजनीलैंड उस समय दुनिया में सबसे बड़ा आकर्षण-केंद्र माना जाता था। उसके बाद पहले पेरिस में और फिर हांगकांग में (2005 में) मूल मॉडल के अनुरूप डिज़नीलैंड बनाए गए। वहाँ भूमध्य रेखा के वर्षा वन, विश्व के विभिन्न अंचलों की सभ्यताएं और नाना प्रकार की दर्शनीय वस्तुएँ, रोलर कोस्टर, अनेक रेस्तरां आदि- सब-कुछ देखने के लिए कम से कम पूरा दिन चाहिए। सभी उम्र के लोगों के अभिरुचियों को ध्यान में रखकर इसके अंदर कई प्रदर्शनियां लगाई गई हैं। कई प्रदर्शनियों में कृत्रिम वातावरण पैदा किया गया है। उदाहरण के लिए, भूमध्य सागर के जंगलों से गुजरने वाली नदी जैसा वहाँ एक छोटी नाव में बैठकर मैंने अनुभव किया था।

साढ़े पाँच बजे हम सभी होटल पहुंचे। अगले सुबह मेरे दोस्त बोस्टन लौटने वाले थे। लेकिन मेरा कार्यक्रम दूसरा था, और व्यक्तिगत भी।पहले, गोपमामा की बेटी अंजी और दामाद सूर्य सैनहोज से सैनडिएगो जाने के रास्ते मुझसे होटल में मिलना चाहते थे। वे लोग छह ह बजे होटल पहुंचे। मेरे साथ चाय पीकर थोड़ी देर बातें कर वे अपनी कार से सैन डिएगो चले गए। वे मुझे अपने साथ सैन डिएगो ले जाना चाहते थे। मगर मेरे लिए यह संभव नहीं था। यह सच था कि मैंने तब तक सैन डिएगो नहीं देखा था। यह अमेरिका का खूबसूरत और प्रसिद्ध शहर था। लेकिन मेरी पुरानी दोस्त श्रीमती सुसान सेमूर और उनके पति लॉरी ग्राहम ने 8.30 बजे तक पहुंचने वाले थे।हार्वर्ड छोड़ने से पहले दो दिन उनके घर रहने के लिए उन्होंने मुझे आमंत्रित किया था। मुझे सुसान के बारे में यहाँ कुछ बातें कहनी चाहिए। सुसान बहुत दिन पहले भारत में बच्चों के पालन-पोषण,उन्हें घर में दी जाने वाली प्रारंभिक शिक्षा और उस संदर्भ में माता-पिता और परिवार का योगदान आदि विषयों पर शोध कर रही थी। उससे पहले वह पुराने भुवनेश्वर, उसके मंदिर और सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक चेतना पर शोध कार्य कर चुकी थी। इस विषय पर उन्होंने गवेषणात्मक पुस्तक भी लिखी थी। जब

उन्होंने बच्चों पर अपने अनुसंधान कार्य शुरू किया था, उस समय मेरी बेटियों की उम्र छह ह और आठ वर्ष थी। उपली और मिताली उन दिनों उनके शोध का विषय हुआ करती थी। इस कारण और अमेरिका की प्रसिद्ध नृतत्वविद होने के कारण सुसान मेरी लंबे समय से परिचित थी। वह ठीक साढ़े आठ बजे मेरे होटल पहुंच गई। लॉस एंजिल्स से दस किलोमीटर दूर क्लेरमोंट में उनकी गाड़ी में उनके घर गया। लॉरी ग्राहम सुसान के दूसरे पति थे। इस वजह से उन्हें सुसान सेमूर ग्राहम के रूप में जाना जाता था। ऑरेंज काउंटी छोड़ने से पूर्व लॉरी के बताए मैक्सिकन रेस्तरां में मैंने एंचलाडा चिकन समेत डिनर किया था। क्लेरमोंट पहुँचकर सुसान ने मुझे दो दिनों के कार्यक्रम की जानकारी दी। उनका बेटा शांत लड़का था। उसकी स्कूल पूरी हो गई थी। हमारे साथ कुछ समय बातचीत कर 'शुभरात्रि' कहकर वह चला गया। फाइजर कॉलेज अमेरिका का पुराना कॉलेज है। जिसके नृतत्व विज्ञान, समाजशास्त्र और अंग्रेजी विभागों की बहुत प्रतिष्ठा है। वास्तव में यह कॉलेजों का एक समूह है ।

इस कॉलेज के प्रोफेसरों ने दुनिया के विभिन्न देशों में नृतत्व विज्ञान और समाजशास्त्र के क्षेत्र में अनेक शोध पुस्तकें लिखी है। सुसान खुद एक उदाहरण है। वह नृतत्व विज्ञान की प्रोफेसर और प्रमुख थी। पंद्रह वर्ष तक विभागीय प्रमुख के रूप में सेवा देने के बाद वह सामाज-विज्ञान की डीन बनी। उनकी संस्था ने नेपाल सरकार से मिलकर काठमांडू में एक कॉलेज खोली है। उस कॉलेज का प्रबंधन सुसान के हाथों में है। एक स्थानीय स्कूल में गणित पढ़ाती है।

दूसरे दिन कैलीफोर्निया के रेगिस्तान में कुछ समय बिताने के लिए हम 6.15 बजे हम घर से बाहर निकले। रास्ते में खाना खाने के लिए हमने केवल नाश्ता किया था। सुसान और लॉरी की अध्यापिका सहेली पेनी भी हमारे साथ थी। कैलिफ़ोर्निया की पर्वत श्रृंखला क्लेरमोंट से ज्यादा दूर नहीं है। लॉरी ने विगत शाम को बताया था, सूर्योदय के ठीक बाद में उपत्यका की दूर पहाड़ियों को देखने में उसे मजा आता है। इसका कारण यह था कि उसे पहाड़ी इलाकों में छाया-प्रकाश देखना बहुत सुंदर लगता है। इस वजह से हम सुबह-सुबह जल्दी घर से बाहर निकले। दृश्य वास्तव में आनंददायक थे। पहाड़ियों के शीर्ष पर कुछ जगह हिमपात भी हो रहा था। उन्हें देखकर मुझे सिक्किम की राजधानी गंगटोक और कंचनजंगा पर्वत श्रृंखला याद आने लगी।हमारी यात्रा के प्रथम पड़ाव में आए पाम स्प्रिंग पहाड़ियों की तलहटी में पंक्तिबद्ध खजूर के पेड़, जिसके पास में था विस्तीर्ण हरे मैदान में बहता झरना। लॉरी ने हमें बताया कि यह झरना कभी नहीं सूखता है। हमने पाम स्प्रिंग से मोरंगों घाटी और फिर योक्का घाटी पार करते हुए जोशुआ पेड़ों से भरे भरा विशाल अंचल में पहुंचे। जोशुआ कांटों वाला पेड़ है, मगर नागफनी से अलग और बहुत सुंदर है। एक छोटी सी छोटी और यहोशू के पेड़ों के बीच एक सड़क रखी गई थी। तीन-चार फीट से बीस-पच्चीस फुट ऊंचे जोशुआ पेड़ों के भीतर से सड़क गई है। अनेक पेड़ों,खासकर छोटे पेड़ों पर शाखा-प्रशाखाएं भी हैं।

प्रत्येक पेड़ एक सुंदर ज्यामितीय आकृति की तरह दिखाई देता था। ऐसा लग रहा था कि किसी वास्तुकार ने जोशुआ पेड़ों की छह वियों का निर्माण कर उस विशाल उजाड़ क्षेत्र में उन्हें स्थापित कर दिया हो।हम कुछ पेड़ों को देखने तथा उनके फोटो लेने के लिए गाड़ी से नीचे उतरे। हमने कई पेड़ों के पास खड़े होकर अपनी फोटो खींची। जोशुआ के पेड़ों पर कोई पत्ते या डालियाँ नहीं थीं। इसकी शाखाएं पारंपरिक पेड़ों की शाखाओं की तरह नहीं होती हैं। उनका गठन नागफनी की तरह नहीं होता है। पत्ते आयताकार और कांटे बहुत कम। इसे पार करते हुए हम जोशुआ देश के राष्ट्रीय स्मारक पर पहुंचे। दो सौ साल पुराना बड़े तने वाला जोशुआ पेड़ वहाँ का

राष्ट्रीय स्मारक है। यह पेड़ सभी को प्रिय लगता है। यह पारंपरिक वृक्ष-पूजा का एक बेजोड़ उदाहरण है। उस पेड़ के चारों तरफ दर्शकों के लिए लकड़ी के बेंच और कुर्सियां रखी हुई हैं। हम भी वहाँ बैठे और प्राचीन- सुंदर पेड़ के दृश्य का आनंद उठाने लगे। स्मारक द्वारा संचालित एक छोटा-सा सभागार और स्मृति चिन्ह बेचने वाली एक दुकान पास में थी। हमने वहाँ जोशुआ देश और जोशुआ पेड़ों पर बनी 20 मिनट की डाक्यूमेंटरी देखी। दुकानों में जोशुआ पेड़ों की तस्वीरों के साथ कपड़े, चीनी मिट्टी के बरतन, जोशुआ पेड़ों के इतिहास पर लिखी किताबें, जोशुआ पेड़ों की फ्रेम बनी तस्वीरें बेची जा रही थीं। मैंने अपने सीमित संसाधनों से कुछ चीजें खरीदीं। लॉरी और सुसान ने मुझे कुछ चीजें उपहार दीं। मोन्युमेंट द्वारा संचालित वहाँ के रेस्तरां में हमने दोपहर का भोजन किया।कुछ जगह पर निजी रेस्तरां भी थे। उस दिन ज्यादा पर्यटक नहीं थे।इसलिए हम अपनी यात्रा का आनंद लेते हुए और आगे बढ़े। पहले आया पच्चीस ताल पेड़ों के भीतर एक विशाल ओएसिस और विस्तृत जनशून्य मोहावे। कैलिफोर्निया के मोहावे रेगिस्तान का परिचय है-छोटी कांटेदार झाड़ियां और थोड़ी-बहुत बालू। ओएसिस में मिट्टी के नीचे से फूट रही पानी की धारा बहुत सुंदर लग रही थी, वहाँ कुछ फूल पौधे भी लगाए गए थे।

हम वहां से कई अन्य जगहों पर गए। पहले हम जंबो रॉक नामक एक विशाल चट्टान के पास गए। उसके बाद दो घाटियां 'हिडन वैली' तथा 'लॉस्ट हॉर्स वैली' आई। ये दोनों पहाड़ियों की तलहटी में थीं। कुछ जगहों पर पानी जमा हुआ था, जिसके किनारे उगे जंगली पेड़ों को देखकर हमें मज़ा आया। इन्हें पार करते हुए हम 'शीप पास' से होते हुए उस अंचल के सबसे ऊंचे स्थान 'की व्यू' पर पहुंचे। यह स्थान पांच हजार चार सौ फीट की ऊंचाई पर स्थित है।

वहाँ से आते समय रास्ते में पड़ने वाली सारी घाटियां, जोशुआ पेड़ों के विस्तृत मैदान, घाटी के दोनों ओर की पहाड़ियाँ बहुत सुंदर दिखाई दे रही थी। दो तरफ पहाड़ियों की ऊंचाई लगभग बराबर थी, लगभग ग्यारह हजार फीट हिमाच्छादित पहाड़ियाँ। वहाँ से क्लेरमोंट बहुत दूर धुंधला दिखाई दे रहा था। वहाँ जैसी हवा मैंने बहुत कम देखी, आँधी-तूफान की तरह तेज हवाएँ चल रही थीं। वह हमें इतना पीछे तेजी से धकेल रही थी मानो कहीं हमें पहाड़ियों की तलहटी में न गिरा दें। ठंड भी बहुत लग रही थी। क्लेरमोंट में ज्यादा ठंड नहीं थी, फिर भी बुद्धिमान लॉरी ने मुझे गर्म कपड़े लेने की चेतावनी दी थी, इस वजह से मुझे किसी भी समस्या का सामना नहीं करना पड़ा था। 'की व्यू' से नीचे उतरकर हम 'कॉटनवुड सेंटर' नामक जगह पर गए। यह दूसरा रास्ता था। हम वहां से इंडिओ रेगिस्तानी अंचल में गए, फिर एक बस्ती में। उसके बाद हमने वहां से लॉस एंजिल्स का रास्ता पकड़ा। घर पहुंचते-पहुँचते पांच बज गए थे।चाय-नाश्ता करके इधर-उधर घूमने के बाद हम पेनी के घर डिनर के लिए गए।

अगले दिन फाइजर कॉलेज के विभिन्न अनुष्ठानों को मैंने सुसान के साथ देखा। यहाँ मैंने पहले भी दौरा किया था। अक्टूबर में सैनहोज विश्वविद्यालय में व्याख्यान देने के बाद मैं इस कॉलेज के अंग्रेजी विभाग में कविता पाठ के लिए आया था। इसके बाद हम लॉस एंजिल्स के बेवर्ली क्षेत्र में घूमने चले गए।वहां दोपहर का भोजन कर हम चार बजे घर लौटे। लॉरी और सुसान मुझे एयरपोर्ट ले गए। हाइवे पर ट्रेफिक जाम था। विमान निर्धारित समय पर उड़ा। डलास से होते हुए बोस्टन आया। बोस्टन पहुंचते समय आसमान बादलों से घिरा हुआ था। हवाई जहाज से भयंकर काले बादल दिखाई दे रहे थे। मुझे याद हो आया डलास में बीती कल की शाम अद्भूत सुंदर दिखाई दे रही थी,मगर आज दिन का तेज उजाला भी निष्प्राण और निर्जीव लग रहा था। बोस्टन

में भारी बारिश हो रही थी, हिमपात भी होने लगा था। किराए की टैक्सी पकड़कर मैं जल्दी से अपने अपार्टमेंट में वापस आ गया। एक महिला टैक्सी चला रही थी। वह बोस्टन में लंबे समय से रह रही थी, उससे शहर के बारे में बहुत सारी बातें की। अपार्टमेंट पहुंचकर मैंने विजय मिश्रा के घर फोन किया तो पता चला कि वह न्यू ऑरलियन्स गए हुए हैं, अगले दिन वापस आएंगे।सुवर्णा (श्रीमती मिश्रा) ने मुझे अपने घर खाना खाने के लिए बाध्य किया।खाना खाकर जल्दी से अपार्टमेंट लौटकर फोन पर भुवनेश्वर में अपने बच्चों से बातचीत की। बहुत जल्दी से नींद आ गई।

17. हार्वर्ड से बहुदिगंत आनुष्ठानिक भ्रमण (भाग-दो)

<u>यूरोपीय समुदाय: स्ट्रासबर्ग और ब्रसेल्स</u>

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद यूरोप के विभिन्न देशों में फेडरल संगठन के निर्माण का प्रयास तेजी से बढ़ा। पहले चरण में संपृक्त देशों के बीच केवल आर्थिक संयोग और सहयोग संभव था। बाद में, संयुक्त सरकार के रूप में उन्होंने अपनी संसद और फेडरल प्रशासन केंद्र की स्थापना की थी।

सम्पूर्ण यूरोप को एक राजनीतिक और आर्थिक इकाई में परिवर्तित करने के प्रयास अभी भी चल रहे हैं। पहले, राष्ट्रसमूह में सदस्यों की संख्या प्रतिवर्ष बढ़ रही है। इस संगठन में शामिल करने के लिए तुर्की विचाराधीन देश है। नए देश को संगठन में जोड़ने से पहले कुछ निश्चित पदक्षेप लेने पड़ते है। अधिकारियों के साथ विचार-विमर्श करने पर हमें उन कदमों की जानकारी हुई। विशेषकर लोकतांत्रिक सरकार और मानवाधिकारों के प्रति सम्मान दो सबसे महत्वपूर्ण चीज है। केमाल अतातुर्क के समय से तुर्की में एक लोकतांत्रिक सरकार है। विविध सामाजिक सुधारों के द्वारा केमाल ने तुर्की को आधुनिक लोकतांत्रिक राष्ट्र में रूपांतरित कर दिया था। तुर्की का मानवाधिकारों के बारे में भी काफी अच्छा रिकॉर्ड है। प्रसिद्ध तुर्की लेखक ओरहाम पानुक ने अपने टेलीविजन साक्षात्कार में तुर्की में बहुसंख्यक अर्मेनियाई नागरिकों की हत्या के बारे में बताया था,जिससे तुर्की सरकार नाराज हो गई थी। इस आरोप के कारण राष्ट्रसमूह का सदस्य होने में तुर्की के अनुरोध को कुछ हद तक बाधा पहुंची। तुर्की ने पानुक के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करने की धमकी भी दी थी। हालांकि पनुक के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं हुई थी क्योंकि शायद ऐसा करना उनके लिए संघ की सदस्यता पाने में अड़चन पैदा कर सकता था। इस संबंध में वर्तमान में चल रही वार्ता के सफल होने की संभावना है।

नए सदस्य को लेने से पहले उसकी आर्थिक पृष्ठभूमि एवं आय के बारे में जानकारी ली जाती है। इसका कारण है कि यूरोपीय समुदाय (ई.सी.) अब एक आर्थिक संगठन के रूप में माना जाता है।यह अब एक सामूहिक निकाय के रूप में विभिन्न देशों के साथ व्यापार करता है और किसी विशिष्ट राजनीतिक समस्या के समाधान के बारे में एकजुट होकर निर्णय लेता है।

हम 12 दिसंबर को बोस्टन से ब्रसेल्स की उड़ान पकड़ कर रात को 9.30 बजे वहाँ पहुंचे। दिसंबर के मध्य में घने कोहरे के कारण हवाई जहाज उतरते समय कुछ भी दिखाई नहीं पड़ रहा था।हमारे कई दोस्त सपरिवार थे। हमारी औपचारिक यात्रा खत्म होने के बाद वे लोग यूरोप में कुछ दिन घूमने की योजना बना रहे थे। हवाई अड्डे से हमारी होटल मेट्रोपॉल आधे घंटे की दूरी पर था। हम वहां सवा दस बजे पहुंचे। लंबी उड़ान के बाद थकान लगने लगी थी। अपने कमरे में खाने को कुछ मंगाकर खा-पीकर मैं सो गया। अगले दिन हमारे लिए संघ के मुख्य कार्यालय का दौरा करना निर्धारित था। वाणिज्य और अंतरराष्ट्रीय संबंध के आयुक्त ने हमें संघ के संक्षिप्त इतिहास का ब्यौरा देते हुए वर्तमान के पारस्परिक व्यापार, अर्थव्यवस्था और विदेश नीति की स्थिति पर चर्चा की। ई.सी. का कार्यालय बहुत बड़ा है। यूरोप के सभी प्रभावशाली देशों के बीच आर्थिक संबंधों पर नजर रखने वाला आयुक्त-विभाग ई.सी. का सबसे महत्वपूर्ण विभाग लगा। इसके अतिरिक्त, यह विभाग ई.सी. के साथ विश्व के अन्य सभी देशों के साथ विदेशी-संबंधों का परिचालन करता है।हमारे मित्र जेम्स ने ई.सी. के कार्यालय में पन्द्रह वर्षों तक काम किया था। इसलिए उन्होंने हमें ई॰सी॰ के कार्य करने के तौर-तरीकों और इसके विभिन्न विभागों के बारे में पहले से ही बता दिया था। वाणिज्य आयुक्त ने अपना संभाषण पूरा

करने के बाद हमें होटल यूरोपा में दोपहर के भोजन के लिए आमंत्रित किया। लंच के बाद जेम्स ने हमें विभिन्न विभागों में ले जाकर वहाँ के अधिकारियों से हमारा परिचय कराया। दिन के साढ़े तीन बजते-बजते अत्यंत ठंड हो गई थी और बर्फबारी होने लगी। हम साढ़े चार बजे स्टेशन स्ट्रासबर्ग गए। रास्ते में नामूर बड़ा स्टेशन आया, बाद में लक्जमबर्ग। इन दो स्टेशनों के बाद हम स्ट्रॉसबर्ग पहुंचे। रिटर्न होटल में हमारे ठहरने के लिए व्यवस्था की गई थी। ई.सी. संसद के दो वरिष्ठ अधिकारी हमें रेलवे स्टेशन पर मिले, जो हमें होटल में ले गए। हिमपात धीरे-धीरे बढ़ने लगा, जल्दी से भोजन कर मैं सोने चला गया। जेम्स, आर्टुरो, जोहान और कुछ अन्य लोग बर्फ में घूमने के लिए बाहर निकल गए।उन्होंने मुझे आवाज दी, लेकिन इस दुस्साहसिक कार्य के लिए मेरी कतई इच्छा नहीं थी।इसलिए मैं उन्हें शुभ-रात्रि कहकर सो गया।

उसके परवर्ती दो दिन ई.सी.संसद के प्रमुख ने हमसे मुलाक़ात की। वे (डोलोरेस) विश्व के शक्तिशाली राजनेताओं में माने जाते हैं और उनके नेतृत्व में ई॰सी॰ का कार्य-परिसर कई गुना बढ़ गया था। सदस्यों की संख्या में भी बढ़ोतरी हुई थी। यूरोप के लगभग सभी देश इसमें शामिल हो गए थे। उन्होंने ई.सी. के लक्ष्य, कार्यप्रणाली तथा विभिन्न देशों के बीच आपसी सहयोग के बारे में अच्छे से समझाया। इतिहास के परिप्रेक्ष्य में यूरोप के विभिन्न देशों की स्व-सत्ता और उनकी आर्थिक विभिन्नताओं को ध्यान में रखते हुए ई॰सी॰ अपना निर्णय लेती है।

उन्होंने ई.सी. के नीति-निर्धारण के विभिन्न पहलुओं की तरफ भी हमारा ध्यान आकृष्ट किया था। हमने उस दिन फ्रांस और जर्मनी के पांच संसद सदस्यों से भी मुलाकात की थी। उन्होंने ई॰सी॰ से संबंधित कई मामलों पर प्रकाश डाला। उस समय संसद-सत्र चल रहा था, इसलिए दो दिन सत्र के कार्यक्रमों को वीआईपी गैलरी में बैठकर हमने देखा था।

स्ट्रासबर्ग यूरोप के सुंदर शहरों में से एक है। इस शहर के कैथेड्रल और विश्वविद्यालय का इतिहास और महत्व यूरोप में हर कोई जानता है। कैथेड्रल के निर्माण में चार शताब्दी लगी थी। फ्रांस, जर्मनी और बेल्जियम के प्रमुख वास्तुकारों के पारस्परिक सहयोग से इसे बनाया गया था। कैथेड्रल की खासियत है कि इसमें केवल एक टॉवर है, जिसका शिखर साढ़े चार सौ फुट ऊंचा है। उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक यह यूरोप और अमेरिका की सबसे ऊंची इमारत थी। कैथेड्रल में हमने लगभग एक घंटा बिताया। उसके बाद हम विश्वविद्यालय देखने गए। स्ट्रासबर्ग विश्वविद्यालय की स्थापना सत्तरहवीं सदी में हुई थी। कभी प्रसिद्ध साहित्यिक गेटे, नेपोलियन बोनापार्ट और माटर्निच इस विश्वविद्यालय के छात्र हुआ करते थे। विश्वविद्यालय में 35,000 छात्र हैं, जिनमें से लगभग 3000 विदेशी विद्यार्थी हैं।

स्ट्रासबर्ग सदैव यूरोप का सांस्कृतिक केंद्र रहा है, रोमन सैनिकों ने ईसा मसीह के जन्म से पहले राइन नदी के तट पर एक सैन्य शिविर स्थापित किया था। बाद में उत्तरांचल के कई आक्रमणकारियों द्वारा विध्वंस्त होने के बाद इस जगह पर छोटा शहर उभरा, जिसका नाम था स्ट्रासबर्ग, जिसका अर्थ है कई रास्तों के मिलनस्थली वाला शहर।रोमन साम्राज्य के दौरान यह यूरोप का एक प्रमुख शहर था। मध्यकाल में विशेषकर यूरोप में पुनर्जागरण के समय स्ट्रॉसबर्ग की सांस्कृतिक उत्कृष्टता अपने चरम पर थी। फ्रांसीसी क्रांति के बाद इसे फ्रांस का हिस्सा माना गया। सन 1870 में फिर से जर्मनी ने इस पर कब्जा कर लिया था, प्रथम विश्व युद्ध के बाद 1918 में इसे फ्रांस को वापस कर दिया। 1940 में जर्मनी ने इस पर फिर से कब्जा कर लिया, द्वितीय विश्व युद्ध के समापन पर 1944 में फिर से फ्रांस को हस्तांतरित कर दिया। स्ट्रासबर्ग की जनसंख्या ज्यादा नहीं है,

केवल चार लाख। लेकिन यहाँ की परंपराएं महान है। रेटरडैम के बाद यह यूरोप के बड़े बंदरगाहों में से एक है और यूरोप के आयात-निर्यात का केंद्र है। शहर के पास से बहने वाली नदी की कई नहरें निकलती है।एक परिव्राजक ने स्ट्रॉसबर्ग के बारे में कहा है: *"स्ट्रासबर्ग में हर जगह कविता है : उनकी कोठरियों के छोटे-छोटे पोस्टकार्डों की तरह फ्रेम जड़ित काँचलगे झरोखे और ऊपरी माले की छोटी बाल्कनियां संकीर्ण और सर्पिल छोटे-छोटे रास्तों की तरफ कुछ बढ़ी हुई हैं।"* इन सब में मध्य-काल और पुनर्जागरण के समय का भास्कर्य और सौंदर्य-बोध परिलक्षित होता है। इस काव्यमयी शहर को अठारहवीं शताब्दी में यूरोप के अति-सुंदर क्लासिक शहर के रूप में जाना जाता था।तत्कालीन रोहन पैलेस उस शहर की सबसे बड़ी पहचान थी। कैथेड्रल के पाद-प्रदेश स्ट्रासबर्ग से प्रवाहित होने वाली नदी(जिसका नाम 'इल्ल' है, हालांकि वह बीमार नहीं है।)वास्तव में इसने शहर के लोगों को स्वस्थ बनाए रखा है। स्ट्रॉसबर्ग के पार्कों में, नदी तट और शहर के केंद्र में वाहन ले जाना निषिद्ध है। हमने दूसरे दिन प्राचीन निजी घरों की वास्तुकला को देखने में समय व्यतीत किया। एक ब्रिटिश पर्यटक ने लिखा है, *"स्ट्रासबर्ग केवल अपनी संस्कृति से नहीं, बल्कि अपनी मदिरा-व्यंजन, स्वागतेय परिवेश और स्वादिष्ट भोजन जीवन-शैली को विशिष्ट बनाती है, जो यूरोप में नए सिरे से बनी हैं।"*

स्ट्रॉसबर्ग का अपना फिलहार्मोनिक ऑर्केस्ट्रा है। हर साल जून महीने में यहाँ अंतरराष्ट्रीय संगीत सम्मेलन आयोजित किया जाता है। इसके लिए सभागार में दो हजार दर्शकों के बैठने की व्यवस्था है। संगीत परिवेषण के लिए यह हॉल यूरोप के सबसे प्रसिद्ध हॉल में से एक है। संगीत के अलावा राइन ओपेरा, नेशनल थिएटर, अलसेसियन थियेटर और अनेक प्रसिद्ध संग्रहालय स्ट्रॉसबर्ग के सुंदर सांस्कृतिक जीवन का परिचय देते हैं। इन सभी संस्थानों खासकर ऑर्केस्ट्रा ऑडिटोरियम में चारों ओर घूमने में हमें बहुत समय लगा। स्ट्रासबर्ग का पुराना शहर अभी तक की अनेक शताब्दियों के स्मृति चिह्न अपने भीतर समेटे रखा है। रास्ते के किनारे बगीचों में स्थानीय पोशाक पहने ब्रासबैंड बजाते हुए युवकों को गाते हुए देखना आम दृश्य था। हमने एक शाम स्ट्रासबर्ग पर आधारित प्रकाश एवं ध्वनि शो देखा था। शायद इन्हीं सभी कारणों से यूरोप की संसद इस छोटे शहर में बसाई गई है। मैंने यूरोप के अनेक शहर देखे हैं, मगर स्ट्रासबर्ग छोटा शहर होने के बावजूद भी अपने प्राकृतिक सौंदर्य, सुदीर्घ परम्परा और शांत जनजीवन के कारण यूरोप का अन्यतम प्रसिद्ध शहर है। स्ट्रासबर्ग प्रवास के तीसरे दिन शाम को हम ब्रसेल्स लौट आए। अगले दिन ब्रसेल्स के विभिन्न अंचल देखने की व्यवस्था की गई थी।

ब्रसेल्स यूरोप का एक अनूठा शहर है। दूसरे यूरोपीय शहरों की तरह यह बेल्जियम का मुख्य व्यावसायिक केंद्र है। अर्थव्यवस्था,बैंक,वाणिज्य,शिल्प -बहुत मात्रा में यहाँ केंद्रीभूत है। प्राचीन ब्रसेल्स में कौलिक व्यवसायों को बहुत महत्व दिया जाता था।ब्रुसेल्स के मुख्य चौक या केंद्र में खड़े होकर सहजता से देखा जा सकता है कि विभिन्न व्यवसायी-समाज को किस तरह विशिष्ट स्थान और महत्व दिया गया था। सुनार, सुथार, बणिक, कारखाना श्रमिक, कृषक, राजमहल में विभिन्न काम करने वाले लोगों- इन सभी के नाम पर वृताकार दिखने वाले अंचल का नाम रखा गया है।

बेल्जियम एक लोकतान्त्रिक देश है। ब्रिटेन की तरह यहां भी शाही परिवार है, जो शासन नहीं करता है, मगर देश का संस्थागत मुखिया माना जाता है। शाही परिवार और निर्वाचित सरकार के बीच कभी कोई टकराव नहीं हुआ है। दोनों एक दूसरे का सम्मान करते हैं और अपनी सीमाओं को नहीं लांघते हैं। बेल्जियम की अर्थव्यवस्था में खनिजों की महत्वपूर्ण भूमिका है। कभी खनिज संसाधनों से भरे कई अंचलों में अधिकांश

संसाधन या तो समाप्त हो गए हैं या होने वाले हैं। हमारे समय के प्रसिद्ध चित्रकार विन्सेन्ट वान गाग ने ऐसे खनन अंचल के कई चित्र बनाए थे।उनके चित्रों में खदान मजदूरों का चेहरा देखा जा सकता है। तेज धूप में दहकते दुखी खनिज क्षेत्रों के बहुत से अजीब दृश्य उनके चित्रों में देखे जा सकते है। 'डियर थियो' नामक आत्मकथात्मक पुस्तक में अपने छोटे भाई को लिखे अनेक पत्रों में उन्होंने बेल्जियम के इन क्षेत्रों का वर्णन किया है। जिस तरह इंग्लैंड का डोवर फ्रांस के कार्लाइस से इंग्लिश चैनल से जुड़ा हुआ है,वैसे ही डोवर बेल्जियम के एक छोटे शहर ओस्टेंड से भी जुड़ा हुआ है। कैम्ब्रिज में अध्ययन करते समय सन 1968 में मैं डोवर से कार्लाइस समुद्री जहाज से गया था और वहाँ से ट्रेन से पेरिस गया था। इसके बाद मैंने जर्मनी और नीदरलैंड का दौरा किया और फिर बेल्जियम के ओस्टेंड से समुद्री जहाज द्वारा डॉवर लौटा। अवश्य अब डोवर और कार्लाइस के बीच इंग्लिश चैनल के नीचे ट्रेन और बसें चलने लगी है। मैं वर्ष **2003** में इसी भूमिगत मार्ग से इंग्लैंड से पेरिस गया था। बेल्जियम, नीदरलैंड और लक्ज़मबर्ग- तीन देशों की अर्थव्यवस्था और संस्कृति ऐतिहासिक काल से समृद्ध रही हैं।

तीनों को एक साथ में 'बेनेलक्स' नाम से जाना जाता है।बेल्जियम में कई राजभाषाएँ हैं। बेल्जियम में फ्रांसीसी, जर्मन, डच और बेल्गिक बोलने वाले लोग रहते है। राजधानी ब्रसेल्स यूरोप का अन्यतम महानगर है। मैं पहले भी ब्रसेल्स देख चुका था इसलिए इस बार मैंने प्रोफेसर विधुभूषण दास और श्रीमती प्रभातनलिनी दास की बेटी प्रज्ञा पारमिता (नानू) और उसके पति क्लोज आरमान मारवे के घर में शाम बिताई। उन्होंने कुछ स्थानीय लेखकों और टेलीविजन कलाकारों को रात्रि-भोज के लिए आमंत्रित किया था। क्लोज आरमान मारवे ब्रसेल्स फ्रांसीसी टेलीविजन का नियमित कलाकार था। प्रज्ञा और उनके पति के साथ मेरा बहुत पुराना परिचय था। प्रजा की पेरिस में जब एक विदेशी सेवा अधिकारी के रूप में नियुक्ति हुई थी तभी से उसने क्लोज आरमान मारवे से शादी करने का फैसला किया था। तत्कालीन विदेशी सेवा अधिनियम के अनुसार उन अधिकारियों को विदेशियों से शादी करने की मनाही थी। प्रज्ञा ने नौकरी से इस्तीफा दे कर क्लोज आरमान मारवे के साथ शादी की थी। उस समय से वे ब्रसेल्स में रह रहे हैं। तब मैं 1975-77 तक होमी भाभा फेलोशिप पाकर संथाली भाषा पर शोध कर रहा था। उस अवसर पर ब्रिटिश लाइब्रेरी **में** सन 1917 के संथाल-विद्रोह से संबंधित अनेक कागजात देखने के लिए मैं लंदन गया था। लौटते समय, प्रज्ञा के अनुरोध पर मैं उसके घर में दो दिन ठहरा था। मैंने उन दो दिनों में लगभग सारा ब्रसेल्स देख लिया था।

इस तरह यह मेरी बेल्जियम और उसकी राजधानी ब्रसेल्स की तीसरी यात्रा थी। मुझे अपनी पहली यात्रा में ब्रसेल्स के बाहरी इलाकों, शहर के खनन और औद्योगिक क्षेत्रों को देखने का अवसर मिला था। दूसरी यात्रा में प्रज्ञा और क्लोज आरमान के घर में रहते समय मुझे ब्रसेल्स के कई स्थानीय कवियों, कलाकारों और पत्रकारों से मिलने का मौका मिला। मुझे अपनी दूसरी यात्रा की एक अनुभूति अभी भी याद है, क्योंकि वह पूरी तरह से एक अलग अनुभव था। ब्रसेल्स के बाहरी इलाके में कुछ जंगल क्षेत्र हैं। जहां विभिन्न प्रकार के कुकरमुत्ता (मशरूम) अपने आप निर्दिष्ट ऋतु में उगते थे। ब्रसेल्स में मेरी दूसरी यात्रा के समय कुकरमुत्ता उगने का समय था। मुझे पता चला कि ऑर्मन को जंगल से मशरूम इकट्ठा करना बहुत अच्छा लगता था। मुझे लेकर वे दोनों मशरूम खोजकर इकट्ठे करने के लिए बाहर निकले। सड़क के किनारे कार खड़ी कर हम जंगल के भीतर सात-आठ सौ मीटर दूर गए। मुझे याद है कि आरमान की अभ्यस्त आंखें अधिक मशरूम खोजने में सक्षम थीं। घर लौटने के बाद आरमान मशरूम की सब्जी बनाने के लिए अंदर गया। मुझे मशरूम बहुत पसंद है, लेकिन मैंने सुना था कि जंगली मशरूम जहरीला और जानलेवा हो सकता है। मैंने उन्हें अपनी आशंका व्यक्त की।

आरमान, प्रज्ञा और उनके छोटे भाई ने कहा कि उन्होंने जंगल से ऐसे मशरूम कई बार एकत्र कर खाया है। मगर फिर भी वे अभी तक जीवित है, यह उन मशरूमों के जहरीला नहीं होने का अकाट्य प्रमाण है। मेरे लिए अविश्वास करने का और कोई कारण नहीं था। मशरूम वास्तव में बहुत स्वादिष्ट थे, मृत्यु तो दूर की बात है, मेरा पेट तक खराब नहीं हुआ। आनुष्ठानिक यात्रा होने के कारण इस बार मेरे हाथ में ज्यादा समय नहीं था। प्रज्ञा और मैंने बेल्जियम में भारत के राजदूत श्री एन.पी. जैन से भेंट की। रात्रिभोज के बाद प्रज्ञा और उसके पति ने मुझे होटल में छोड़ दिया। अगले दिन बोस्टन हम लौट आए।

कनाड़ा यात्रा: अटलांटिक तट से प्रशांत महासागर तक

कनाड़ा सरकार हर साल सेंटर फॉर इंटरनेशनल अफेयर्स (सीएफआईए) के अधिकारियों को कनाड़ा-यात्रा के लिए आमंत्रित करती है। जब मैं हार्वर्ड में था, तब यह यात्रा 15 अक्टूबर 1987 को शुरू हुई थी और 26 अक्टूबर को समाप्त। हमारी यात्रा के लिए कनाड़ा के छह ह प्रमुख शहर मॉन्ट्रियल, क्यूबेक, ओटावा, टोरंटो, कैलगरी और वैंकूवर निर्धारित किए गए थे। उन क्षेत्रों के राजनीतिक नेताओं और अधिकारियों के साथ कनाड़ा की समस्याओं पर हमारी चर्चा होनी थी। कनाड़ा एक विशाल देश है और यह ऑस्ट्रेलिया की तुलना में बड़ा है। कनाड़ा का उत्तरी भाग लगभग निर्जन है। यहाँ केवल इन्युटी (एस्किमोस) रहते हैं। समुद्र से सील,व्हेल और अन्य प्रकार की मछह लियों को पकड़कर अपना जीवन निर्वाह करते हैं। अब उन क्षेत्रों में छोटे-छोटे शहर भी बस गए हैं, जिनका परिवेश गांवों की तरह हैं। आगे और उत्तर की तरफ जाने से अर्थात् उत्तरी ध्रुव के निकट साल भर बर्फ गिरी रहती है। इस समय इन्युटी व्हेल मछलियों का संग्रह करते है और उनकी चर्बी से तेल निकालकर दिए जलाते हैं और सफ़ेद भालूओं को मारकर उनकी खाल का वे हड्डी कंपाने वाली सर्दियों में जैकेट बनाते हैं। स्कूल की पाठ्य पुस्तकों में हमने स्लेज और इग्लू के बारे में पढ़ा है।

कनाड़ा का दक्षिणी भाग अमेरिका के करीब है। यहाँ घनी आबादी है और यह क्षेत्र व्यापार और उद्योग के लिए प्रसिद्ध है, जो काफी हद तक कनाड़ा की राजनीति और अर्थव्यवस्था को प्रभावित करता है। इस क्षेत्र ने कनाड़ा की संस्कृति और ऐतिह्य में मुख्य योगदान दिया है। हमने जिन छह ह शहरों का दौरा किया, वे सभी कनाड़ा के दक्षिणी भाग में स्थित थे। उनमें से दो मॉन्ट्रियल और क्यूबेक कनाड़ा की सबसे बड़ी नदी सेंट लॉरेंस के किनारे पर स्थित हैं। वैंकूवर प्रशांत महासागर के पास स्थित है। कैलगरी रॉकी पर्वतमाला के पूर्व में उच्च पहाड़ियों के बीच स्थित है। कनाड़ा का सबसे बड़ा शहर टोरंटो ओन्टरियो झील के तट पर स्थित है। यह नियाग्रा प्रपात से ज्यादा दूर नहीं है। संघीय राजधानी ओटावा प्रसिद्ध रेडो नहर के पास स्थित है।

क्यूबेक, मॉन्ट्रियल और ओटावा एक-दूसरे से बहुत दूर नहीं हैं। हमने मॉन्ट्रियल से अपनी यात्रा शुरू की। हम वहां से क्यूबेक गए और फिर एक वातानुकूलित बस में ओटावा। हम ओटावा से टोरंटो विमान में गए। फिर विमान से हम टोरंटो से कैलगरी गए। ये दोनों शहर काफी दूर हैं। विमान में हमें चार घंटे लगे। मतलब विमान द्वारा भुवनेश्वर से नई दिल्ली तक की यात्रा करने में लगे समय का दोगुना। हमारी यात्रा का अंतिम पड़ाव था कैलगरी से वैंकूवर। इस यात्रा के लिए कनाड़ा सरकार ने ट्रेन की व्यवस्था की थी, ताकि हम रॉकी पर्वतमाला की छोटी-छोटी झीलों, लुभावनी पहाड़ियों और ग्लेशियरों से बहने वाली नदियों के दृश्यों का आनंद ले

सकें। वास्तव में, यह हमारी कनाड़ा की पंद्रह दिवसीय यात्रा का सबसे अहम हिस्सा था,जो हमेशा अविस्मरणीय रहेगा।

क्यूबेक बहुत ही प्राचीन और खूबसूरत शहर है। जो सेंट लॉरेंस नदी के संकीर्ण अंचल पर स्थित है। इस शहर में लोग अंग्रेजी और फ्रेंच दोनों भाषा बोलते हैं। ओटावा संघीय राजधानी है। टोरंटो, मॉन्ट्रियल और वैंकूवर तीनों विशाल शहर हैं। कनाड़ा का सबसे बड़ा शहर टोरंटो देश के पांच झीलों में से एक के तट पर स्थित है। वैंकूवर शायद कनाड़ा के शहरों में सबसे सुंदर है।यह प्रशांत महासागर पर स्थित है। यह सैल्मन मछह ली और अमेरिकन इंडियन पर शोध हेतु पर्यटकों को आकर्षित करता है। मॉन्ट्रियल पूर्व ओलंपिक शहर है। यह सेंट लॉरेंस नदी के तट पर स्थित है, जहां एक द्वीप भी है। कैलगरी रॉकी पर्वतमाला की तलहटी में बसा एक छोटा मगर खूबसूरत शहर है। कैलगरी से रॉकी पर्वतमाला में प्रवेश करने पर दुनिया के सबसे खूबसूरत दृश्यों का आनंद लिया जा सकता है। हम बहुत खुश थे कि कनाड़ा-सरकार ने हमारे लिए ऐसा यात्रा कार्यक्रम तैयार किया था।

हमारा पहला गंतव्य स्थल था सेंट लॉरेंस की विशाल नदी के मुहाने पर स्थित क्यूबेक का प्राचीन शहर। हमारी यात्रा वहां से शुरू होकर प्रशांत महासागर के तट पर स्थित वैंकूवर में समाप्त हुई। बीच में हमने मॉन्ट्रियल, ओटावा, टोरंटो और कैलगरी का परिदर्शन किया। उस वर्ष कैलगरी में शीतकालीन ओलंपिक आयोजित किए जा रहे थे।

ग्यारह बजे की डेल्टा एयरलाइंस से हम बोस्टन से रवाना होकर बारह बजे डोरवाल हवाई अड्डे पर पहुंचे। क्यूबेक राज्य के अंतर्राष्ट्रीय संबंध मंत्रालय की ओर से कोन्फेडेरेशन रेस्तरां में हमारे लिए दोपहर के भोजन व्यवस्था की गई थी। एक अधिकारी ने हमें हवाई अड्डे से वहां पहुंचा दिया। लंच के बाद हम ‘इंस्टीट्यूट ऑफ एप्लाइड एकोनोमिक्स’ गए। इस संस्थान के मुख्य अर्थशास्त्री जीन पियरे लेगॉफ ने हमें क्यूबेक की अर्थव्यवस्था के बारे में सचित्र लंबा व्याख्यान दिया। यहां यह कहना उचित होगा कि क्यूबेक कनाड़ा का सबसे अमीर राज्य है। यह अंचल कनाड़ा के कई क्षेत्रों में बिजली की आपूर्ति करता है। मॉन्ट्रियल इस राज्य का सबसे बड़ा शहर है, जो कनाड़ा का एक मुख्य शहर है।

लेगोफ ने हमें क्यूबेक के प्रधान शिल्प, सिंचाई सुविधाओं, बिजली उत्पादन और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के बारे में बताया। क्यूबेक राज्य के लगभग आधे लोग फ्रेंच बोलते हैं। अंग्रेजी और फ्रेंच दोनों इस राज्य की राजभाषा हैं। लेगोफ़ ने हमें बताया कि यहाँ कभी-कभी शिक्षा-संस्कृति के क्षेत्र में मनोमालिन्य होता है। उसके बाद क्यूबेक के अंतर्राष्ट्रीय वाणिज्य विभाग के उपमंत्री ने इस तरह के संघर्षों का भी संकेत दिया था। हमें दोपहर के भोजन के बाद ‘हाइड्रो क्यूबेक’ ले जाया गया। यहाँ पर देश के सबसे बड़े सिंचाई और बिजली उत्पादन सुविधाओं का कार्यालय स्थित है। हमें वहाँ की गतिविधियों के बारे में संक्षेप में जानकारी दी गई, जिसकी विस्तृत चर्चा हुई थी। प्रत्येक साक्षात्कार और व्याख्यान के बाद हमेशा विचारों के आदान-प्रदान और प्रश्न-उत्तर के सत्र का आयोजन किया जाता था। हर कोई जानता था कि हमारे जैसे लोगों के लिए केवल व्याख्यान पर्याप्त नहीं होगा। बाद में हमें *फोर सीज़न होटल* में ले जाया गया। जहां पर क्यूबेक के विदेश व्यापार के उपमंत्री मार्सेल बर्ग्रोन ने हमारे लिए एक रिसेप्शन का आयोजन किया था। इस समय मेरी पत्नी, बेटा और आईबीएम में काम करने वाले दूर के रिश्तेदार श्री दिलीप हरिचंदन हमारे पास होटल में आए थे। मैं बहुत समय के बाद दिलीप से मिल रहा था। इसलिए कुछ समय के लिए मैंने अलग से उन लोगों से बातचीत की। हमारे लिए कॉकटेल और

बुफ़े डिनर का आयोजन किया गया था। ऐसा लगा शायद कनाड़ाई बहुत औपचारिक होते हैं। उपमंत्री ने दिलीप, मेरी पत्नी और मेरे बेटे को रिसेप्शन में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया। कॉकटेल और बुफे डिनर के बाद हम सात बजे एक वातानुकूलित चार्टर्ड बस में क्यूबेक के लिए रवाना हो गए। कनाड़ा के विदेश मामलों के वरिष्ठ अधिकारी (येव बोपरे) कनाड़ा-यात्रा के दौरान हमारे साथ थे। वैलेरी रेमन नामक एक अन्य अधिकारी उनकी सहायता के लिए क्यूबेक और मॉन्ट्रियल में थे। मैरी एन डेलेर दूसरे चार शहरों के लिए बोपरे के साथ हमारे एस्कॉर्ट बने थे। उनके विदेश मंत्रालय ने क्यूबेक-यात्रा से पहले हमारे लिए बीस पृष्ठ का कार्यक्रम तैयार कर हमें पकड़ा दिया था, जिसमें प्रत्येक शहर में हमारे आगमन का समय, हमारे कार्यक्रम, मिलने और चर्चा करने वाले लोगों के नाम, यात्रा वाली जगहों के नाम आदि का विस्तारपूर्वक वर्णन था।

'फोर सीजन्स होटल' में रिसेप्शन के बाद रात के साढ़े सात बजे क्यूबेक के लिए हमारी चार्टर्ड बस यात्रा शुरू हुई। सेंट लॉरेंस नदी के किनारे हम अंधेरे के बावजूद जहाजों और नौकाओं को देख पा रहे थे। सेंट लॉरेंस कनाड़ा की मुख्य बारहमासी नदी है क्योंकि यह पांच विशाल झीलों से बहती है। सेंट लॉरेंस का मुहाना काफी प्रशस्त और समुद्रगामी जहाज क्यूबेक नदी के इस रास्ते से आगे बढ़ते हैं। हम दस बजे क्यूबेक की उस होटल में पहुंचे, जहां हमारे ठहरने की व्यवस्था की गई थी। वहाँ दो स्थानीय अधिकारी हमारा इंतजार कर रहे थे। उन्होंने हमारे अगले दिन के कार्यक्रम की जानकारी देने के बाद हमसे विदा ली।

सुबह-सुबह मेरी नींद टूट गई। होटल के कमरे में चाय बनाने की व्यवस्था थी। मैंने खुद चाय बनाई और पी ली। फिर मैं सेंट लॉरेंस के तट पर घूमने के लिए बाहर गया। क्यूबेक शहर के पास यह विशाल चौड़ी नदी संकीर्ण हो जाती है। नदी के उस पार छोटी पर्वतमाला और उसकी तलहटी में बसे छोटे-छोटे गांव। वहाँ घूमते समय मुझे अपने गांव की चित्रोत्पला नदी, सुबह की ठंडी-ठंडी हवा सब याद आने लगी।अचानक मुझे लगा कि मैं अपने गांव की चित्रोत्पला नदी के तट पर बैठा हुआ हूँ । उस सुबह की अनुभूति हमेशा के लिए मेरी स्मृतियों में समा गई। सुबह साढ़े आठ बजे क्यूबेक में मेरा कार्यक्रम था, इसलिए मैं जल्दी से नदी के तट से होटल में लौट आया। हमें क्यूबेक के अंतरराष्ट्रीय संबंधों और व्यापार के लिए निर्धारित सरकारी संस्थान में ले जाया गया। अंतर्राष्ट्रीय संबंध विभाग के निदेशक और विदेश व्यापार विभाग के महानिदेशक ने हमें इन दो मामलों के बारे में बताया। क्यूबेक कनाड़ा का सबसे विकसित प्रदेश है। औद्योगिक समृद्धि के साथ-साथ शिक्षा-संस्कृति के क्षेत्र में यह अन्य राज्यों का नेतृत्व करता है। दोनों अंग्रेज़ और फ्रेंच ने इस प्रदेश के अटलांटिक तट पर अपनी कॉलोनियों की स्थापना की है। लोग अंग्रेजी और फ्रांसीसी दोनों भाषाएँ बोलते हैं। यहाँ पचास प्रतिशत लोग अंग्रेज हैं तो पचास प्रतिशत फ्रांसीसी। क्यूबेक प्रदेश कनाड़ा में उत्पादित कुल बिजली का तीन-चौथाई उत्पादन करता है। यह कनाड़ा के अन्य राज्यों और संयुक्त राज्य अमेरिका में बिजली आपूर्ति करता है।

क्यूबेक सरकार के व्यापार नीति विभाग के महानिदेशक और अंतर्राष्ट्रीय संगठन के निदेशक ने हमें क्यूबेक के विदेश व्यापार और संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ आर्थिक संबंधों के बारे में विस्तृत ब्यौरा प्रदान किया था। कनाड़ा भी भारत की तरह एक संघीय राष्ट्र है, लेकिन वहाँ का कोई भी प्रदेश दूसरे देश के साथ राजनयिक संबंध स्थापित करने के लिए स्वतंत्र है। यह संघीय सरकारों के मामले में एक महत्वपूर्ण व्यतिक्रम है, जिसे अभी तक अन्य किसी राष्ट्र द्वारा स्वीकार नहीं किया गया है। इन चर्चाओं के समाप्त होने के बाद हमें करीब

पंद्रह मिनट के लिए नदी के तट पर बसे क्यूबेक के पुराने शहर में घूमने के लिए ले जाया गया। इस क्षेत्र में क्यूबेक सिटी का सबसे पुराना ढांचा है।

ढांचे को राष्ट्रीय संपत्ति के रूप में संरक्षित किया गया है। समग्र प्राचीन शहर सेंट लॉरेंस के किनारे पर स्थित है और यह नदी के स्तर से नीचे है। नदी के तट से पुराना शहर सुंदर लगता हैं। कनाड़ा में फ्रांस ने इस जगह पर पहली बार कॉलोनी की स्थापना की। प्रसिद्ध ऐतिहासिक किला फ्रेंटेनाक इस पुराने शहर में स्थित है। उस समय यह फ्रांसीसी मुख्यालय था। यह किले जैसा नहीं है, फिर भी इसे किला कहा जाता है। इसके चारों ओर कोई दीवार नहीं है। स्थानीय अधिकारियों ने बताया कि इस अंचल को फ्रांसीसी शासन के प्रारंभिक चरण में खूबसूरती से सजाया गया था और सशस्त्र गार्ड हर समय वहाँ रहते थे। इस वजह से इसे साधारण भाषा में किला कहा जाता था। उस अधिकारी ने भारत का दौरा किया था और हमारे देश के किलों को देखा था। इसलिए शायद उन्होंने हँसते हुए कहा था, *"हमारे किले देखकर आपको मन ही मन अचरज हो रहा होगा।"* फ्रंटनेक एक अत्यंत सुंदर महल की तरह दिखता है। क्यूबेक सिटी में अधिकांश आवास पत्थर से बने है। खूबसूरत पत्थर शहर के आसपास पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं। इसलिए वहाँ के लोग सदियों से इस प्राकृतिक संसाधन का उपयोग करते आ रहे हैं। मुझे पुराने शहर में घूमने और विभिन्न संरचनाओं की वास्तुकला को देखने में बहुत आनंद आया। लगभग सभी घर नदी के तट पर बने है। हर घर की छह त या खिड़कियों से नदी को देखा जा सकता है। फ्रंटनेक वर्तमान में एक उच्च कोटी की होटल है। क्यूबेक के अंतरराष्ट्रीय मामलों के मंत्री ने वहाँ हमारे लिए लंच की व्यवस्था की थी।

क्यूबेक के अंतरराष्ट्रीय मंत्री ने हमें मध्याह्न भोजन खिलाया था। अपराह्न को हमारी क्यूबेक के नेशनल असेंबली के सदस्यों से भेंटवार्ता थी। उनके साथ मुलाक़ात '*पार्लियामेंट होटल*' में तय हुई थी। पहले-पहल होटल का नाम सुनकर मैं समझ नहीं पाया। बाद में मुझे पता चला कि संसद सदस्यों के रहने तथा संसद के अधिवेशन सत्र के समय उनके खाने-पीने की व्यवस्था के लिए उस होटल का निर्माण किया गया था। हमने नेशनल असेंबली के सदस्यों को कई प्रश्न पूछे। उन्होंने क्यूबेक के इतिहास, अर्थव्यवस्था, सामाजिक संबंध, बाहरी व्यापार आदि के बारे में भी हमें जानकारी दी थी। उन्होंने इस विषय पर भी चर्चा की कि किस तरह क्यूबेक सरकार ने अंग्रेजी और फ्रेंच भाषाओं की मांगों के बारे में एक समग्र दृष्टिकोण अपनाते हुए समस्या के समाधान का प्रयास किया। उसके बाद हम क्यूबेक के पर्यावरण मंत्री क्विफ्फोर्ट लिंकन से उनके कार्यालय में मिले थे। तीव्र औद्योगिकीकरण, पनबिजली के लिए बांधों के निर्माण और इन सबके कारण कुछ गांवों के पानी में डूबने की बात का उन्होंने विशदभाव से चर्चा की। उन्होंने अपने मंत्रालय की कार्यावली और लक्ष्य के बारे में भी बताया, जिससे ज्यादा पर्यावरण प्रदूषित नहीं हो। उसके बाद हम एक गाइड के साथ छोटी बस में क्यूबेक सिटी देखने गए। शहर से कुछ दूरी पर सेंट लॉरेंस नदी पर एक पुल बनाया गया है, जिसका इतिहास काफी लंबा है। गहरी नदी, प्रखर स्रोत और दोनों तरफ ऊंची पहाड़ियों को ध्यान में रखकर पुल निर्माण की योजना बनाई गई थी। यह अनुमान लगाया गया था कि पुल डेढ़ साल में पूरा हो जाएगा, लेकिन इसे पूरा होने में तीन साल लगे। स्थानीय आदिवासियों ने पुल के निर्माण में मजदूर का काम किया था और जिनमें से कईयों की काम के दौरान मृत्यु हो गई। मैंने सेंटलॉरेंस के क्यूबेक पुल और आदिवासियों पर एक छोटी-सी किताब देखी थी। यह किताब हमारे रहने वाली होटल की छोटी लाइब्रेरी में थी। क्यूबेक सिटी बहुत बड़ा शहर नहीं है। बस में घूमने में हमें ज्यादा समय नहीं लगा। इसके बाद हम पश्चिम दिशा में गए। वहाँ सूर्योदय बहुत ही

आकर्षक एवं सुंदर लग रहा था। क्यूबेक तक सेंटलारेंस नदी में बड़े-बड़े जहाज आते थे। रात में होटल की खिड़कियों से वे जहाज़ बहुत अच्छे लगते थे।

अगली सुबह गाइड के साथ हम सेंट ऐनी के *बासीलिका* का गिरजाघर देखने गए थे। यह क्यूबेक से कुछ दूर पर स्थित है। हमने होटल से चेक आउट कर लिया था, क्योंकि *बासीलिका* देखने के बाद हमें मॉन्ट्रियल जाना था। *बासीलिका* कुंआरी मैरी को समर्पित है। गाइड ने कहा,"*बासीलिका देखने के लिए हर साल करीब दस लाख पर्यटक आते हैं। यहाँ कई जिज्ञासावश आते हैं तो कई आसाध्य रोगों या शारीरिक असक्षमता से ठीक होने की आशा लेकर आते हैं।" बासीलिका* की ऊंचाई 300 फीट है। उसकी लंबाई और चौड़ाई क्रमशः 375 फीट और 200 फीट है। कई विकलांग लोग जो यहां बैसाखी के सहारे आते है, वे अपनी पुरानी बैसाखी यहाँ छोड़कर जाते हैं। *बासीलिका* के पीछे संग्रहित कई पुरानी बैसाखियों को देखकर मैं हैरान था। मैंने कभी नहीं सोचा था कि इस देश के लोग हमारी तरह दैवी अनुकंपा में इतना ज्यादा विश्वास रखते हैं।

बासीलिका देखने के बाद हम केप टूर्नामेंट नामक स्थान पर गए। सर्दियों में कनाड़ा के उत्तर से हंस दक्षिण में अपेक्षाकृत गर्म क्षेत्रों के लिए उड़ान भरते है। कुछ अज्ञात कारणों से पिछह ले पचास वर्षों से केप टूर्नामेंट उनकी दक्षिण यात्रा का संक्षिप्त विश्राम स्थल है। उन हंसों को 'स्नो गीज़' या 'बर्फ हंस' कहा जाता है। यह अंचल अल्प उच्च पहाड की तलहटी में फैला एक विस्तीर्ण समतल मैदान है। इसके एक तरफ सड़क थी। जब हमारी बस उस स्थान पर पहुंची और जो मैंने देखा, मुझे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। पूरा समतल मैदान और पहाड़ी का कुछ ढालू हिस्सा चिड़ियों से भरा हुआ था। जहां वे अपने लंबे सफर से थककर अस्थायी रूप से आराम कर रहे थे। वह सड़क कारों और बसों से भर गई थी। आकाशमार्ग से वे झुंड में उस जगह पर उतर रहे थे। कुछ समय तक विश्राम करने के बाद वे पक्षी आकाश में उड़ते हुए दक्षिण दिशा में बढ़ने लगे। हर साल सर्दियों की शुरुआत में '*बर्फ हंस*' इस दिशा से जाते हुए निर्दिष्ट स्थान पर उतरते हैं। कनाड़ा के पक्षी विज्ञानी और पर्यावरणविद इस अद्भूत घटना के रहस्य को सुलझाने के लिए शोध कर रहे हैं। उन्होंने इस विषय पर एक छोटी-सी किताब भी प्रकाशित की है। जिसमें यह लिखा हुआ है कि सर्दियों की शुरुआत में कब किस जगह पर अपनी दक्षिण यात्रा के दौरान लगभग डेढ़ लाख बर्फ हंस एवं हंसी आराम कर सकते हैं। जब वे दक्षिण-यात्रा पर जाते हैं तो इस जगह पर लंबे समय तक आराम करते हैं, मगर लौटते समय बहुत कम आराम लेते हैं। हमारे साथ आए अधिकारी से यह सुनने के बाद मैंने विश्लेषण किया और इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि शायद उत्तर में अपना घर छोड़कर दक्षिण की ओर उड़ना हंसों के लिए बहुत आनंददायक नहीं था। केवल वे ठंड से बचने हेतु ऐसा करने के लिए मजबूर हैं। उनकी वापसी यात्रा में उल्लास नजर आता है। इस वजह से वे वापसी यात्रा में कम अवधि के लिए रुकते हैं। कवि की भाषा में,"घरमुंहा बाट,मन उचाट"।

रास्ता केवल कारों से भर गया हो, ऐसा नहीं था, लगभग पांच-छह ह सौ लोग टीवी और साधरण कैमरों से तस्वीरें खींच रहे थे। पास में ही पहाड़ी से पतझड़ का आकर्षक दृश्य देखा जा सकता है, लाल, पीला और लाल-भूरा पत्तियों से भरा हुआ। ऐसा लग रहा था जैसे उस पहाड़ी पर किसी ने रंगीन स्क्रीन रख दी हो। और उस तरह की पृष्ठभूमि से सफेद-भूरे रंग वाले असंख्य पक्षियों के कई झुंड उड़ते देखना वास्तव में एक स्वर्गिक अनुभव था। सच कहूँ, उस जगह पर मैं ज्यादा समय बिताना चाहता था, लेकिन हमारे पूर्व-नियोजित कार्यक्रम के कारण यह संभव नहीं था। हार्वर्ड लौटने के छह ह महीने बाद उन पर लिखी मेरी छोटी कविता का अंग्रेजी

अनुवाद (स्नो गीज) कनाड़ा की साहित्यिक पत्रिका *'हैलिफ़ैक्स रिव्यू'* में प्रकाशित हुआ था। कविता के पहले और अंतिम पद का हिन्दी अनुवाद निम्न प्रकार हैं :-

" राह खोजने के लिए
न कम्पास और न ही कंप्यूटर की आवश्यकता है
बर्फाच्छादित उत्तर दिशा से
सुनसान वायु मार्ग पर तुम दीर्घपथ की उड़ान भरते हो
केवल थोड़े समय के लिए
दक्षिण-यात्रा पथ पर लाखों की तादाद में नीचे उतरते हो॥

XXXXX

यह चट्टान, यह नदी और तुम सभी
अक्टूबर की आसन्न गोधूलि में विलीन होकर
हम प्रार्थना करते हैं जानने के लिए
तुम्हारे यहाँ आगमन का अर्थ
और इस तरह एक खूबसूरत दिन की क्षणिकता का अर्थ!

हंसों को अनिच्छा से अलविदा करते हुए हम 'सेंट ऐनी' नामक स्की केंद्र में गए। यह बहुत ऊंची पहाड़ी पर स्थित है। तलहटी से केबल-कार द्वारा हम पहाड़ी की चोटी पर गए। सर्दियों में यह पहाड़ पूरी तरह से बर्फ से ढक जाता है। इसलिए यह बर्फ पर स्की खेल के लिए कनाड़ा में प्रसिद्ध है। यह पहाड़ी ज्यादा ऊबड़-खाबड़ नहीं है। इसलिए खिलाड़ियों को नीचे खिसकने में सुविधा होती है। इस सेंट ऐनी पहाड़ पर हम दोपहर का भोजन लेकर मॉन्ट्रियल के लिए रवाना हो गए। मोंटेमोरेंसी प्रपात के निकट हम बस कुछ समय के लिए रुके। इस प्रपात की ऊंचाई 274 फीट है, जो नियाग्रा से लगभग 100 फीट अधिक है। प्रपात अपेक्षाकृत संकीर्ण है,इसलिए नीचे अपेक्षाकृत कम पानी गिरता है। जलप्रपात के निकट छोटे से रेस्तरां में बैठकर उसके सौंदर्य का आनंद उठाते हुए कॉफी पीकर हमने मॉन्ट्रियल की यात्रा शुरू की। हम रास्ते में और कहीं नहीं रुके। इसलिए हम शाम को 5.30 बजे मॉन्ट्रियल पहुंच गए।

बस से क्यूबेक जाने से पूर्व हम मॉन्ट्रियल में रुके थे। मगर हम वहाँ सब-कुछ नहीं देख पाए थे। इस बार मॉन्ट्रियल पहुंचने के बाद हमने पुराने ओलंपिक पार्क, प्रसिद्ध कैथेड्रल, मैकगिल विश्वविद्यालय और शहर के केन्द्रांचल में घूमे। हमने दस बजे से पहले डिनर समाप्त कर सीधे होटल सिटाल में वापस आ गए। यहाँ हमारे ठहरने के लिए व्यवस्था की गई थी। मॉन्ट्रियल के आस-पास के अन्य स्थानों को दिखाने के लिए सुबह-सुबह दो गाइड उपस्थित हो गए थे। इस बार हम पुराने मॉन्ट्रियल और सेंट लॉरेंस नदी के किनारे पर घूमने गए। पुराने मॉन्ट्रियल के डेढ़ सौ पुराने रेस्तरां 'प्रीपेन' में लंच कर हम ओटावा के लिए रवाना हो गए। यह मॉन्ट्रियल से केवल दो घंटे की दूरी पर था। वहाँ होटल *प्लाजा डे ला सोथियर* में अपना सामान रखकर शाम को ओटावा के आस-पास कुछ समय के घूमने चले गए। ओटावा और हॉल दो छोटे शहर हैं, जो एक दूसरे के निकट हैं। ओटावा कनाड़ा की राजधानी है। संसद, मंत्रि-परिषद, सुप्रीम कोर्ट, आदि यहां स्थित हैं। छोटा होने के बावजूद भी यह एक सुंदर शहर है। इस शहर की आलोक-सज्जा मंत्र-मुग्ध करती है। यहाँ की सड़कें बहुत विस्तृत हैं।

स्थानीय अधिकारी चार्ल्स नाडो ने हमें दोनों शहरों के केंद्रीय क्षेत्रों का जायजा कराया। अगली सुबह हमारी तीन मंत्रालयों के अधिकारियों के साथ चर्चा रखी गई थी। हमारी पहली बैठक संचार विभाग में रखी गई थी, जहां अंतर्राष्ट्रीय विकास के निदेशक ल्यूसियन ने कनाड़ा जैसे विशाल देश में दूरसंचार क्षेत्र में आने वाली विभिन्न समस्याओं से हमें अवगत करवाया। कनाड़ा के बर्फाच्छादित उत्तर में दूरसंचार सेवाएँ बनाए रखने के लिए सर्दियों में उन्हें किस तरह परेशानी का सामना करना पड़ता है, उन्होंने उसके बारे में संक्षिप्त जानकारी दी। मेरा यहां यह कहना उचित होगा कि दूरसंचार में अपनी प्रगति के लिए कनाड़ा दुनिया में प्रसिद्ध है। कनाड़ा के दूरसंचार और उपग्रह लिंक केवल अपने भीतर ही नहीं बल्कि दुनिया के अन्य देशों के साथ भी संतोषजनक हैं।

इसके बाद हम राष्ट्रीय रक्षा मंत्रालय में गए। मंत्रालय के महानिदेशक के काल्डर ने कनाड़ा की रक्षा-नीति, रक्षा समस्याओं, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका और अन्य राष्ट्रों के साथ कनाड़ा के रक्षा संबंधों से संबंधित मामलों पर चर्चा की। विदेश मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी पियरे डु ब्रुले हार्वर्ड में हमारे एक साथी थे। कहने की जरूरत नहीं है, उन्होंने अपने अनुभव के आधार पर इन मुद्दों पर कई सवाल पूछे। दिन में 12 बजे और 1.45 बजे के बीच मैकडॉनल्ड्स क्लब में हमारे लिए दोपहर के खाने की व्यवस्था की गई थी। कनाड़ाई भोजन प्राय: अमेरिकी भोजन के समान होता है, लेकिन मैंने देखा कि क्यूबेक और मॉन्ट्रियल की तरह ठीक वहाँ भी कुछ मात्रा में फ्रांसीसी भोजन भी परोसा जा रहा था और कुछ हद तक फ्रांसीसी पाक-शैली भी प्रचलित थी। यहीं पर उपलब्ध भोजन के मामले में भी था। मित्र पियरे ने मुझे बताया कि क्यूबेक सिटी, मॉन्ट्रियल और ओटावा में फ्रेंच इतिहास और संस्कृति का ज्यादा प्रभाव है, इसलिए भोजन में फ्रेंच स्वाद स्वाभाविक है। मुझे वह समय याद आया, जब पिएरे ने हमें अपने घर में रात के खाने के लिए आमंत्रित किया था। वहाँ ज्यादातर फ्रांसीसी खाद्य था।

मध्याह्न भोजन के बाद हम कनाड़ा की संसद में गए और वहाँ हमने लगभग तीन घंटे बिताए। श्रीमती सिल्वी हमें संसद में ले गई। उस समय संसद सत्र चल रहा था। हाउस ऑफ़ कॉमन्स में प्रश्नकाल चल रहा था। वी.आई.पी. गैलरी में बैठकर हमने कार्यवाही सुनी। उसके बाद पेश किए जा रहे बिल पर विचार-विमर्श होने लगा। यह बिल कनाड़ा के विस्तीर्ण उत्तरी क्षेत्रों में प्रशासन की प्रक्रिया से संबन्धित था। जिसमें इस क्षेत्र को अधिक स्वायत्तता देने के साथ-साथ इन्युटी (एस्किमो) और पर्यटन नीति के संबंध में विवेचना थी। श्रीमती सिल्वी ने हमें संसद के विभिन्न विभागों में घुमाया और दो मंत्रियों और तीन राजनयिकों से भी भेंट करवाई।

कनाड़ा की संसद समतल भूमि से कुछ ऊंचाई पर है, जिसका नाम है पार्लियामेंट हिल। सन 1916 में भयानक आग के कारण संसद भवन पूरी तरह से नष्ट हो गया था। वर्तमान भवन लगभग पूरी तरह से नया है। मध्य में सेंट्रल ब्लॉक सीनेट, हाउस ऑफ कॉमन्स, कमेटी रूम और ऑफिस बने हुए हैं। दोनों तरफ पूर्व और पश्चिम ब्लॉकों मंत्रियों के कक्ष और अन्य कार्यालय अवस्थित हैं। संसद का खूबसूरत गोलाकार पुस्तकालय 1916 की अग्नि-विभीषिका से बच गया था। इंटीरियर में लकड़ी के पैनल और छत के कुछ हिस्से में सोने की परत चढ़ी हुई थी। यह मुझे सुंदर लग रहा था। लाइब्रेरी काफी बड़ी है। बाहर के स्कॉलर भी यहाँ पढ़ सकते हैं। संसद के केंद्रीय ब्लॉक में 291 फीट ऊंचा पिस्ट टॉवर बना हुआ है। श्रीमती सिल्वी हमें लिफ्ट से शीर्ष पर ले गई। टॉवर के ऊपर से ओटावा और हॉल का दृश्य लुभावना लग रहा था। जुलाई और अगस्त महीनों में दस बजे यहाँ 'चेंजिंग ऑफ गॉड' गवर्नर-जनरल के फूट-गार्ड बदले जाते हैं। जुलाई-अगस्त महीनों में कनाड़ा के सशस्त्र बलों

की बैंड-पार्टी का भी आयोजन होता है। इसी महीने *सन इट ल्यूमिरे* शो में कनाड़ा का इतिहास दिखाया जाता है। अक्टूबर महीने में कनाड़ा परिभ्रमण करने के कारण हम ये सब नहीं देख पाए।

ओटावा कनाड़ा की राजधानी है। यह ओटावा नदी के दक्षिण में स्थित है और नदी के दूसरी तरफ हॉल शहर स्थित है। दोनों शहरों की आबादी आठ लाख है। यह नदी ऑंटारियो और क्यूबेक की सीमारेखा है। हॉल में लगभग 70 प्रतिशत लोग फ्रांसीसी मूल के हैं। रानी विक्टोरिया ने ओटावा को 1857 में कनाड़ा की राजधानी के रूप में चुना था। टोरंटो, मॉन्ट्रियल और वैंकूवर जैसे बड़े शहरों को नजरअंदाज कर इसे राजधानी के रूप में चयन करना आम लोगों के लिए किसी आश्चर्य से कम नहीं था। शायद इस शहर के सामग्रिक सौंदर्य, फ्रेंच भाषा- संस्कृति पूर्वांचल और अंग्रेजी भाषा-संस्कृति के पश्चिमांचल के मिलन-बिंदु के कारण उन्होंने यह निर्णय लिया था। संसद भवन देखने के बाद हम प्रसिद्ध रेडो नहर और ओटावा नदी पर गए। यह नहर छह ह मील से अधिक लंबी है। यह काफी चौड़ी भी है। सर्दियों में बर्फ से ढक जाती है, तब इसे स्केटिंग के लिए काम में लिया जाता है। यह सबसे लंबी मानव निर्मित स्केटिंग रिंक है।शीत-उत्सव (वाइन्ड रल्यूड) यहां हर साल आयोजित किया जाता है। यह राजधानी का सबसे महत्वपूर्ण त्योहार है। लोग साइकिल पर लगभग 65 मील की दूरी तय करते हुए रेडो कैनाल से आगे जाते हैं। हमने रेडो कैनाल और ओटावा नदी के किनारे से घूमते-घूमते एक पार्क में गए। फिर हमने ओटावा नदी में नाव भी चलाई। इस नदी के किनारे ‘कोंफ़िडरेशन स्क्वायर’ भी बना हुआ है।यह शहर का केंद्रीय स्थल है और सबसे अधिक आबादी वाला क्षेत्र भी। यहाँ से थोड़ी-सी दूरी पर संसद भवन है, बड़े-बड़े होटल हैं। रेडो नहर यहाँ ओटावा नदी में मिलती है।

अगले दिन हम ऑंटोरियो सरकार के वरिष्ठ सलाहकार श्री जिम हर्ली से उनके कार्यालय (प्रिवी काउंसिल ऑफिस) में मिले। उन्होंने संघ-राज्य के संबंधों, कनाड़ा की संसदीय प्रक्रिया और संविधान पर शानदार आधा घंटा भाषण दिया। मैं मन ही मन भारत से तुलना कर रहा था। इस बैठक के बाद ऑंटोरियो सरकार के अंतर्राष्ट्रीय वाणिज्य विभाग ने हमारे लिए मध्याह्न भोजन का बंदोबस्त किया। दो बजे विदेश मंत्रालय के कार्यालय में रंगभेद नीति और कनाड़ा के इस विषय पर दृष्टिकोण के बारे में एक वरिष्ठ निदेशक के साथ संक्षिप्त चर्चा हुई। इसके बाद हम हवाई अड्डे से एयर कनाड़ा की उड़ान पकड़कर टोरंटो के लिए रवाना हो गए। इस यात्रा में सिर्फ एक घंटा लगा। हम वहां रॉयल यॉर्क होटल में रुके, रात के भोजन की व्यवस्था भी वहीं थी। ओन्टेरियो झील के तट पर टोरंटो स्थित है। यह 35 लाख की आबादी वाला कनाड़ा का सबसे बड़ा शहर है। मैं पहले भी टोरंटो गया था और कई दर्शनीय स्थानों को देखा था। मैंने कनाड़ा की तरफ से नियाग्रा प्रपात को भी देखा था। इस प्रकार मेरे लिए टोरंटो सुपरिचित स्थान था।

टोरंटो की स्थापना 1793 में हुई थी। तत्कालीन लेफ्टिनेंट गवर्नर ने इसका नाम ‘यॉर्क’ दिया था। शायद संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के शहरों के नामों की तरह ब्रिटिश लेफ्टिनेंट गवर्नर ने इसका यह नाम रखा था। यॉर्क इंग्लैंड का एक सुंदर शहर है। यह नाम 1835 तक प्रचलित था, बाद में इसे टोरंटो में बदल दिया गया था। टोरंटो एक अमेरिकी-इंडियन शब्द है, जिसका अर्थ होता है 'मिलन स्थल'।

इस यात्रा में हम सबसे पहले सी.एन. टॉवर में गए, जो विश्व का सबसे ऊंचा फ्री स्टैंडिंग टॉवर है। इसकी ऊंचाई 1815 फीट है।काँच की लिफ्ट से हम शीर्ष पर गए, जहां से टोरंटो का सामग्रिक दृश्य शानदार दिखाई दे रहा था। जहां तक आँखें जा रही थीं, टोरंटो ही टोरंटो नजर आ रहा था। मैंने सुना था, वहाँ से चारों तरफ 120 किलोमीटर की दूरी तक कोई व्यक्ति दृश्य देख सकता है। टॉप ऑफ टोरंटो अर्थात् सबसे ऊपर टोरंटो के

रेस्तरां में हमारे लिए चाय पार्टी का आयोजन किया गया था। यह घूमने वाला रेस्तरां है। इसके डाइनिंग रूम से सटे नाइट क्लब को विश्व का सर्वोच्च रेस्तरां और नाइट क्लब के रूप में जाना जाता है। इसके बाद हम टोरंटो में चार अन्य स्थानों पर गए। इनमें से एक ओन्टारियो आर्ट गैलरी थी। हमने उसमें मैकमिलन संग्रहालय भी देखा। संग्रहालय में प्रदर्शित इन्युटी (एस्किमो) कलाकारों द्वारा बनाई गई कई पेंसिल स्केच अत्यंत सुंदर थी। सी॰पेर्न उन कलाकारों में से एक थे। 68 वर्ष की उम्र में उनके पैरों में भयानक दर्द हुआ, बर्फ पर लगातार चलने के कारण। अगले साल उन्होंने कुछ ऐसे स्केच बनाए थे, जिसमें यंत्रणा के सूक्ष्म संकेत थे। इसके अलावा, कस्तूरी बैल, व्हेल्स और कार्बीस (उत्तरी अमेरिकी हिरन) की हड्डियों से बनाई गई भास्कर्य मूर्तियाँ सुंदर लग रही थी। ब्रिटिश कोलंबिया के आठ उप-जातियों द्वारा बनाई गई कला संग्रहालय में प्रदर्शित की गई थी।

इसके बाद हम टोरंटो के प्रसिद्ध आइसलैंड पार्क देखने गए। इस विशाल पार्क में छोटी-छोटी झीलें, विभिन्न प्रकार की जल-मुर्गियाँ, कई झूलें, छायाच्छादित रास्ते, प्रवाहित होते झरने, रॉक गार्डन, फूलों की प्रदर्शनी आदि देखी जा सकती हैं। पार्क में सभी जगह लिखा हुआ है-'घास पर नहीं चले'। मगर आइसलैंड पार्क में ठीक इसका उलटा लिखा हुआ था- 'कृपया घास पर चलें'। एक गार्ड ने हमें बताया, *"घास पर चलना हमारे देश में एक रमणीय अनुभव माना जाता है। इसलिए पार्क के भीतर घास का इतना बड़ा मैदान होने पर हम अपने पर्यटकों को असुंदर रास्ते पर चलने के लिए कैसे कह सकते हैं ?"*

हम उसके बाद झील के तट पर स्थित ओन्टारियो प्लेस में गए। यहाँ छियानवें एकड़ जगह में पांच द्वीप हैं। लोग विभिन्न प्रकार की नौकाओं से झील में एक से दूसरे द्वीप की ओर जा रहे थे। संकीर्ण नहर एक-दूसरे द्वीप को जोड़ रही थी। सबसे बडे द्वीप में 800 सीटों वाला थिएटर और खुले स्थान में 8000

लोगों के बैठने लिए एक एम्फी-थियेटर बना हुआ देखकर बहुत अच्छा लगा। अंत में हम बंदरगाह पर गए। जहां पर जल-क्रीडा, थिएटर, नृत्य, सिनेमा हॉल, आदि की अच्छी-ख़ासी सुविधाएं थीं।विदेशी सैलानियों के लिए यह अति प्रिय स्थान था। ये सारी जगहें घूमने के बाद 6.45 बजे हम हवाई अड्डे पर गए, एयर कनाड़ा से कैलगरी जाने के लिए। चार घंटे का सफर था। एयर कनाड़ा की यात्रा हमेशा सुखद रही थी। इस बार रात्रि भोजन भी फ्लाइट में दिया था। कैलगरी का स्थानीय समय टोरंटो के समय से दो घंटे पीछे होता है। चार घंटे की उड़ान के बाद हम कैलगरी में 8.45 बजे पहुंच गए। स्टीव हमारी प्रतीक्षा कर रहा था, वातानुकूलित बस से होटल पलिसर ले जाने के लिए।कैलगरी के लिए केवल एक दिन (22 अक्टूबर) निर्धारित किया गया था। शहर बहुत सुंदर था। रॉकी माउंटेन रेंज पश्चिम में बहुत दूर तक दिखाई दे रही थी। शहर में बहने वाली खूबसूरत नदी दूर-दूर तक नजर नहीं आ रही थी। कनाड़ा-यात्रा के दौरान कनाड़ा-सरकार ने हमारे लिए जिन पाँच-छह ह पांच सितारा होटलों की व्यवस्था की थी, उनमें होटल पलिसर सबसे ज्यादा सुंदर थी। मुझे इस होटल के कमरें, लॉबी और खाना बहुत अच्छा लगा।

कैलगरी में बहुत ठंडा था। सुबह बाहर का तापमान शून्य से 2 डिग्री सेल्सियस नीचे था। सड़कों पर बर्फ पड़ी हुई थी। मुझे पता चला कि रात में न्यूनतम तापमान शून्य से 6 डिग्री सेल्सियस कम था। यह अक्टूबर महीने की बात थी। क्रिसमस और नए साल के समय तापमान शून्य से 20 डिग्री कम रहता है। सुबह नाश्ते के बाद हमें कैलगरी के प्रमुख दर्शनीय स्थान पहाड़ पर शीतकालीन ओलंपिक पर ले जाया गया। श्रीमती शीला और श्रीमती डायना हमारी मार्गदर्शक थीं। शीतकालीन ओलंपिक की तैयारी चल रही थी। मुझे नहीं पता था कि शीतकालीन ओलंपिक में इतने सारे खेलों का आयोजन होता है। मैंने केवल टेलीविजन पर पहाड़ियों की ढलानों

से नीचे फिसलने वाली प्रतियोगिताएँ देखी थीं, मगर यहाँ लगभग आधा दर्जन खेलों के बारे में हमें समझाया गया। मुझे एक खेल बेहद आकर्षक लग रहा था।

प्रतिभागी अपने पैरों पर बड़ी स्लेटों को बांधकर पहाड़ की ढलान से तेज गति से नीचे की तरफ खिसकते थे, जिसके अंतिम चरण में कूदकर अपना भार संतुलन बनाए रखने की कोशिश करते थे। उच्चतम बिंदु से कूदकर अपना संतुलन बनाए रखने में कामयाब होने वाला प्रतिभागी विजेता घोषित किया जाता था। इसे *स्काइडाइविंग* कहते हैं। कूदने के लिए चार अलग-अलग ऊंचाइयों को निर्दिष्ट किया जाता है, अर्थात् 30 मीटर, 50 मीटर, 70 मीटर और 90 मीटर। कैलगरी के मेयर राल्फ क्लिन ने हमारे लिए विशाल *साडेल डोम* में स्वादिष्ट लंच का आयोजन किया था। लंच के बाद हमने शहर के मुख्य स्टेडियम और विश्वविद्यालय के अंदर एक अपेक्षाकृत छोटे स्टेडियम (जिसमें स्पीड स्केटिंग की व्यवस्था थी) देखा। इन तीन स्थानों पर शीतकालीन ओलंपिक आयोजित होने का प्रस्ताव था। शहर के अंदर ओलंपिक ग्राम बनाया जा रहा था।

मेयर के साथ हमने कैलगरी शहर के भविष्य और शीतकालीन ओलंपिक की तैयारियों की चर्चा की। शहर के भीतर बहने वाली दो नदियों के नाम बो और एल्बो था। कुछ   दूर आगे जाकर वे मिल जाती हैं। यह शहर दोनों नदियों के किनारे फैला हुआ है। पहाड़ से ओलंपिक की तैयारी देखते समय शहर एक खूबसूरत पोस्टकार्ड की तरह लग रहा था। छोटे-छोटे पहाड़, घाटियां, बहने वाली दोनों नदियां, नदियों के तट पर साइकिल चला रहे अनेक लोग, ठंड और बर्फ होने के बावजूद भी सुंदर लग रहे थे।

स्थानीय समय के अनुसार 2.35 बजे हमने कैलगरी छोड़ दिया, ट्रेन से वैंकूवर जाने के लिए। इस ट्रेन का नाम था *कनाडियन पेसेफिक। जो* कोच हमारे लिए आरक्षित किया गया था, इसमें तीन अलग-अलग वर्ग थे। रात में सोने के लिए बर्थ, बर्थ के सामने अलग से भोजन करने का स्थान और सबसे सुंदर काँच के गुंबद का सुंदर लाउंज था। हार्वर्ड में मेरे एक वर्ष के प्रवास में इस ट्रेन की यात्रा सबसे सुखद रही।

कैलगरी के रास्ते में कई घाटियां पड़ रही थीं और उनके भीतर से बहने वाली नदी रेलवे पटरियों के बगल से पार हो रही थी। बाद में मुझे पता चला कि वह नदी कैलगरी शहर से भी होकर गुजरती है। पहाड़ के ढलानों पर बड़ी संख्या में गाय-गोरु, घोड़ों की आवाजाही और उनके चरने के लिए विशाल राँच बने हुए थे। बीच-बीच में चाय, कॉफी, स्नैक्स लेते, एक-दूसरे से बातचीत करते और कांच के गुंबद के बाहर के दृश्यों को देखते हुए समय तेजी से पार हो रहा था। रेलवे अधिकारियों द्वारा गाए जा रहे कनाड़ा के लोकगीत (दोनों यंत्रसंगीत और कंठ संगीत) बहुत आनंददायक लग रहे थे। धीरे-धीरे हमारी ट्रेन रॉकी पर्वतमाला में प्रवेश करने लगी। तलहटी के कई गाँव पार होने के बाद ट्रेन में उत्कृष्ट खाना परोसा गया। उसके कुछ समय बाद पृथ्वी का वास्तविक स्वर्ग प्रारम्भ हो गया। दृश्य लगभग कश्मीर घाटी जैसा ही था। उससे किसी भी दृष्टिकोण से कम नहीं था। रात्रिभोज से पहले पर्वत-शिखरों पर सूर्यास्त की सुनहरी आभा कुलू से मनाली की यात्रा की तरह दिख रहा था, दूर से यह दृश्य बर्फाच्छादित स्वर्ग की तरह दिख रहा था। धीरे-धीरे वे शिखर हमारे करीब आ रहे थे, मानो हमसे मिलने के लिए आतुर हो। धीरे-धीरे संध्या की छाया उन पहाड़ की चोटियां को निराकार बना रही थी। बाद में धीरे-धीरे वे दृश्य अंधेरे में खो गए।

शाम को सात बजे खाने के समय तक पूर्व में चंद्रोदय हो गया था। इस काँच गुंबद का अंचल दु-मंजिला था। नीचे से कुछ ज्यादा नहीं दिखता था। इसलिए हम सभी ऊपर माले के लाउंज में बैठ गए थे। उस समय ट्रेन

ऊंचे पहाड़ पर चल रही थी। बीच-बीच में ट्रेन बर्फ से ढकी दो पहाड़ियों के मध्य से गुजर रही थी। कई बार हमने महसूस किया कि वे बर्फीली पहाड़ियां काँच के गुंबद से रगड़ तो नहीं खा जाएगी ! साथ ही साथ, यह भी महसूस हुआ कि हाथ बढ़ाने से हम बर्फ की उन दीवारों को छू सकते थे। ऊपर आकाश में चमकते सितारें सुंदर दिख रहे थे।

रेलगाड़ी की हेडलाइट आगे रास्ते पर प्रकाश डाल रही थी। चन्द्रमा की किरणें उस समग्र दृश्य को अनिर्वचनीय बना रही थी। वास्तव में यह अनुभव करने की चीज है, शब्दों में अभिव्यक्त करना नामुमकिन है। हमारे कई दोस्त जिनके पास उन्नत कैमरे थे, जो कैमरों का इस्तेमाल करना जानते थे, वे इन अपरूप दृश्यों का फोटो खींचते जा रहे थे। कई लोग अपने हैंडीकैम से रिकॉर्डिंग कर रहे थे। ट्रेन अक्सर अंधेरी सुरंगों में प्रवेश करती थी। यह मुझे पसंद नहीं आता था। उसके बाद सूर्यकिरणों से उद्भासित बर्फ के वे ही चित्र आँखों के सामने नजर आने लगे।रास्ते में छोटी-छोटी झीलें दिखने को मिल रही थीं। कुछ दूर नजर आ रही थी कनाड़ा की सबसे खूबसूरत और मशहूर झील बेंफ़। चारों तरफ बर्फ़ाच्छादित पहाड़ों की खोल और झीलों के तट पर कई पर्यटक कॉटेज थे,बेंफ गाँव था, मुझे विश्वास नहीं हो रहा था मानो मैं कोई सपना देख रहा था। इच्छा हो रही थी राधानाथ की कविता की पंक्तियों को थोड़ा बदलकर गाने की:

"रुको,रुको एक पल यांत्रिक शकट,
देखूंगा रॉकी का चारु-चित्रपट।"

सोने का समय सो गया। आधी रात बीत चुकी थी। हमारे अधिकांश बंधु इस लुभावने दृश्य का अब तक आनंद ले रहे थे। कुछ दोस्त आनंद-उल्लास से गीत भी गाने लगे थे। नींद आने का समय होने के कारण अनेक बंधु सोने चले गए। केवल मुझे नींद नहीं आ रही थी। मुझे याद है कि उस रात मैं बहुत देर से सोया था।

नींद खुलने के समय हमारी ट्रेन रॉकी पर्वतमाला के पाद-प्रदेश की घाटियों में दौड़ रही थी। दृश्यपट अब भी बहुत सुंदर थे, लेकिन रात के जादू जैसा नहीं, सपने की तरह वह कहीं खो गया हो। यद्यपि मैंने कोई फोटो नहीं खींचा था, लेकिन मेरे मन के अंदर वे दृश्य दीर्घकाल तक बचे रहेंगे। एक कविता का जन्म हो चुका था, हार्वर्ड लौटने के कई दिनों बाद मैंने *'रॉकी पर्वतमाला की यात्रा'* कविता लिखी। मूल कविता ओड़िया में लिखी गई थी। यह कविता और इसका अंग्रेजी अनुवाद मेरे ओड़िया और अंग्रेजी कविता-संकलनों में संग्रहित है।कविता के कुछ अंश निम्न है :-

जल्द ही हम कैलगरी के
मुट्ठी से बाहर निकले
विलंबित अपराह्न की संगीत-यात्रा में
छोटी नदी के कल-कल स्वन
हमारे साथ चल रहे थे।

******

रात के विलंबित प्रहर तक
हम गपते गए
हमारी आशा,हमारा भय,
इधर-उधर की सारी बातें

अंततः हमारे भाग्य के निर्णय

****

सुबह की प्रशस्त नदी
जिसके वक्ष पर दिखाई देते रात के जंगल
अनेक पेड़ों के शव
किसी अज्ञात देश की तरफ तैरते हुए
हमारे ज्ञान-अज्ञान
में वृद्धि करते हुए।

****

हम दोपहर के 12 बजे वैंकूवर पहुंच गए। वैंकूवर का स्थानीय समय कैलगरी के समय से एक घंटे पीछे था। अमेरिका की तरह कनाड़ा में भिन्न-भिन्न समय क्षेत्र हैं। पेजब्रुक होटल में हमारे रहने की व्यवस्था की गई थी। श्रीमती केली हमें होटल में ले गई। शहर की यह सुंदर होटल प्रशांत महासागर से ज्यादा दूर नहीं थी। हमारे कई दोस्त लंबी ट्रेन यात्रा से थककर होटल में आराम कर रहे थे। मैं नौवें मंजिल के अपने कमरे की खिड़की से प्रशांत महासागर देख रहा था। बाहर घूमने की इच्छा हो रही थी। यूरोपीय संघ के चीफ एक्सक्यूटिव जेम्स स्पैन ने मेरा साथ दिया। हम दोनों पैदल-पैदल प्रशांत महासागर के तट पर स्थित प्रशांत मॉल में घूमने चले गए। छोटी-छोटी आयताकार क्यारियों में अनेक फूलों के पौधे लगे हुए थे। बीच-बीच में अनेक रेस्तरां और अन्य दुकानें थीं। दुकानों के सामने विस्तृत सीमेंट फर्श पर हरी पत्तियों वाले बहुत लंबे पेड़ लगे हुए थे और प्रत्येक पेड़ के नीचे वृत्ताकार घेरे में सर्दी ऋतु के फूल खिले हुए थे।ऐसा मिश्रित परिवेश हमें बहुत अच्छा लग रहा था। समुद्रोन्मुखी एक छोटे रेस्तरां में बैठकर हम दोनों ने कॉफी पी। समुद्र तट पर भ्रमण करने और कॉफ़ी पीने से हमारी रेलयात्रा की थकान उतर गई। पास वैंकूवर आर्ट गैलरी में घूमकर हम होटल में लौट आए। रूम में खाना मंगवाकर मैंने मध्याह्न भोजन किया।

थोड़ी देर आराम करने के बाद उसी होटल में ब्रिटिश कोलंबिया सरकार के आर्थिक विकास मंत्रालय के सचिव जॉर्ज लेनको ने हमें ब्रिटिश कोलंबिया की अर्थव्यवस्था के बारे में बताया। वैंकूवर स्थित भारतीय काउंसिल जनरल श्री जगदीश शर्मा उनके साथ में थे। क्यूबेक और ओन्टेरियो प्रदेशों की तरह ब्रिटिश-कोलंबिया प्रदेश की शिक्षा, व्यापार, वाणिज्य, प्रति व्यक्ति आय आदि सभी अत्यधिक उन्नत हैं। प्रशांत महासागर के किनारे पर स्थित इस प्रदेश का चीन और जापान के साथ निरंतर व्यापार संबंध बना रहता है। वैंकूवर में चीनी और जापानी लोगों की बड़ी आबादी है। लेनको के व्याख्यान के बाद गाइड हमें शहर के दौरे पर ले गया। पहले दिन हमारे लिए स्टेनली पार्क, क्वीन एलिजाबेथ पार्क, चीनाटाऊन, ग्रीनविल्ले आइलैंड, गैस टाऊन, डॉ॰ सूर्य यॉत सेन के क्लासिक चीनी उद्यान और मछलीघर देखना निर्धारित हुआ था। अगले दिन हमें और दो स्थानों पर जाना था। पहला ब्रिटिश-कोलंबिया विश्वविद्यालय और निगम द्वारा प्रबंधित एवं विश्वविद्यालय की तकनीकी सलाह के अनुसार बनाया गया खुला भूवैज्ञानिक संग्रहालय था। दूसरा दो झरने, छोटी नदी और उसके तट पर स्थित तालाब में नियोजित तरीके से रखी गई सैल्मन मछली को देखना था। स्टेनली पार्क और क्वीन एलिजाबेथ पार्क बहुत खूबसूरत हैं। स्टेनली पार्क के अंदर रखे गए विविध अमेरिकी-इंडियन के विभिन्न प्रकार, अलग-अलग ऊंचाइयों और क्षेत्रफलों के रंगीन कुलदेवता की पताकाएँ और भी सुंदर लग रही थीं। प्रत्येक जनजातीय समुदाय में नृतत्व में कुलदेवता का विशिष्ट पताका होती है। यह उस जनजाति की सबसे अच्छी पहचान मानी जाती है। लगभग सभी अमेरिकी भारतीय जनजातियों की पताकाएँ पार्क में प्रदर्शित की गई थीं। नृतत्व की कुछ

जानकारी होने के कारण मैंने इन्हें देखने में ज्यादा समय बिताया था, इसलिए मैं अन्य दोस्तों के साथ पार्क की दूसरी जगहों में नहीं जा पाया। यह अनुभव मेरे लिए शिक्षाप्रद था। कुछ समय बाद हम क्वीन एलिझाबेथ पार्क में गए। हमारे कोलकाता में जिस तरह विक्टोरिया मेमोरियल रानी विक्टोरिया के यादगार में बनाया गया है, ठीक उसी तरह यह पार्क महारानी एलिजाबेथ की याद में। यह सर्वसाधारण लोगों के लिए एक सुंदर पार्क है,अवश्य इस पार्क में देखने के लिए काफी कुछ नहीं था। मगर मुझे सन यात सेन का शास्त्रीय चीनी उद्यान बहुत अच्छा पसंद आया। जापान के देखे गए बगीचों की तरह इस बगीचे में बहते झरने में रंगीन मछह लियाँ, अलग-अलग ऊंचाई से उतरने वाले रास्ते, छोटे-छोटे तालाब और तरह-तरह के सुंदर पेड़- सभी मनमोहक लग रहे थे। इसलिए यह बगीचा मुझे बहुत अच्छा लगा। इसके बाद हमने चाइना टाउन में कुछ समय बिताया था। बीच-बीच में चाइनीज सूप का भी स्वाद लिया था। चाइना टाउन बहुत बड़ा है, क्योंकि प्रशांत महासागर के तट पर शहर होने के कारण कैलिफोर्निया के ऑरेंज काउंटी की तरह कई चीनी लोग चीन से इस जगह पर बस गए हैं।

गैस टाउन का नाम मुझे पहले समझ में नहीं आया। गाइड ने हमें बताया कि बहुत समय पहले इस जगह पर प्राकृतिक गैस एकत्रित की जा रही थी। हालांकि अब ऐसा नहीं है। केवल 'गैस' शब्द इस जगह के नाम से जुड़ गया है। इसके बाद हम डाउनटाउन वैंकूवर के बंदरगाह को देखने गए। पाश्चात्य देशों के सभी शहरों में बड़ी-बड़ी दुकानें, बाज़ारों और भीड़वाले इलाके को आमतौर पर 'डाउनटाउन' कहा जाता है। मुझे इस जगह में ऐसी कोई खासियत नजर नहीं आई, जिससे इसकी टोक्यो के गीजा, न्यूयॉर्क के टाइम स्क्वायर या लंदन के पिकाडिली सर्कस या ऑक्सफ़ोर्ड स्ट्रीट से तुलना की जाए। शाम होने लगी थी। हम समुद्र के नजदीक ग्रीन वैली द्वीप गए।वहाँ सूर्यास्त बहुत सुंदर दिख रहा था। संध्या उतरते-उतरते वैंकूवर शहर उज्ज्वल आलोकमाला से विभूषित होते-होते हम होटल लौट आए।

होटल में आने के बाद मैंने ओहियो के कैंटन में रहने वाले रिश्तेदार डॉ॰ वीरेश्वर पटनायक को फोन लगाया। मेरी पत्नी और बेटा हार्वर्ड से मोंट्रियल जाते समय कुछ दिन वहाँ ठहरने वाले थे। लेकिन हमारे एक अन्य संबंधी श्री सुजीत मोहंती (बफेलो विश्वविद्यालय में अंग्रेजी प्रोफेसर, प्रसिद्ध गायक अक्षय मोहंती के अत्यंत अंतरंग थे) ने उन्हें कैंटन से अपनी गाड़ी में ले गए। दो दिन तक वहां रहकर उन्होंने नियाग्रा प्रपात देखा और बाद में फ्लाइट पकड़कर सैन फ्रांसिस्को चले गए। अंजी और सूर्या (गोपी बाबू की बेटी और दामाद) उन्हें सैन फ्रांसिस्को से अपने घर सैन होज ले गए। कनाड़ा-यात्रा के शेष में मैं सैन होज गया था। वहां के विश्वविद्यालय के नृतत्व विभाग के प्रमुख डॉ॰ जेम्स फ्रीमैन और मेरे मानवविज्ञानी मित्र सुसान सीमौर ने मुझे फाइजर ग्रुप ऑफ कालेज में काव्य-पाठ के लिए आमंत्रित किया था। उस समय सैन होज में अंजी और सूर्य के साथ गोपीमामू और मामी थीं। सैन होज में आठ दिवसीय प्रवास में मैंने विश्वविद्यालय में व्याख्यान देने के साथ-साथ दोस्तों के साथ विभिन्न स्थानों पर घूमने और क्लेरमॉन्ट में सुजान के अनुष्ठान में काव्य-पाठ किया था।

हम अगली सुबह पहली बार वैंकूवर में साल्मन मछह ली के बारे में जानने के लिए गए। वैंकूवर के मत्स्य-पालन और महासागर विभाग ने साल्मन मछह ली के बारे में एक पुस्तिका प्रकाशित की थी, जिसका नाम था *'सलोमोनाइड एन्हांसमेंट प्रोग्राम'*। यह किताब हमें पहले दिन दे दी गई थी।इसमें मैंने पढ़ा था कि इस कार्यक्रम के अनुसार वैंकूवर में इकतालीस जगहों पर काम चल रहा था । इन सभी को पुस्तिका में ब्रिटिश कोलंबिया के नक्शे पर भी दिखाया गया था, जिसमें एक तिहाई जगह वैंकूवर और समुद्री द्वीप के नजदीक थी। पढ़ने पर

मुझे पता चला कि ब्रिटिश-कोलंबिया के विभिन्न क्षेत्रों में पांच प्रकार की साल्मन मछली पाई जाती थी, मगर कोहो और चिनूक किस्म ज्यादा मात्रा में पाई जाती थी। परियोजना की अन्य तीन किस्म इन साल्मन हैचरियों में नहीं थी। जिनके तीन क़िस्मों के नाम थे *स्टीलहेड, सोकी* और *पिंक* । हमें छोटी-सी नदी कैपिलानो के तट पर स्थित हैचरी के पास ले जाया गया। कैपिलानो नदी पर एक हैंगिंग ब्रिज बना हुआ था, लक्ष्मण झूला से बहुत छोटा। इस हेचरी में केवल कोहो और चिनूक की किस्में रखी गई थीं।

साल्मन एक विचित्र मछह ली है। मीठे पानी में अपने अंडे देने के लिए वे समुद्र से नदी में आती हैं। इससे पहले सात वर्ष तक समुद्र में घूमकर वे आकार में काफी विशालकाय हो जाती हैं, फिर अपनी दूसरी संक्षिप्त यात्रा शुरू करती हैं नदी के लिए। उनमें से बहुत सी पकड़ी जाती हैं, नदी के स्रोत के विपरीत तैरते समय। जो बच जाती हैं,वे मधुर जल में अंडे दे पाती हैं। उनके बारे में एक तथ्य और उल्लेखनीय है कि मधुर जल में सहवास के लिए आने वाली साल्मन मछह ली सहवास के तुरंत बाद मर जाती है। इस प्रकार उनका नया सृजन और मृत्यु लगभग एक ही समय में होती है। अत्यंत ही अद्भूत सृष्टि-तत्व है यह !

कैपिलानो नदी तट पर स्थित हैचरी में उन मछह लियों को लाया जाता है और उनका अंडे देने से लेकर बढ़ते-बढ़ते पूरी तरह से वयस्क होने तक उनकी ज़िंदगी का अध्ययन करते हैं। उन्हें क्या खाना पसंद है और वे कितनी गहराई में अपने अंडे देती हैं- आदि उनकी गवेषणा के विषय होते हैं। इकतालीस परियोजनाओं का मुख्य उद्देश्य यह है कि किस तरह मधुर जल में अधिक से अधिक साल्मन मछली के बच्चे पैदा हों और निरापद तरीके से समुद्र में चली जाए- इन विषयों पर अनुसंधान करना। कैपिलानो हेचरी देखने के बाद हम पास का अंगूर बगीचा देखने गए। ब्रिटिश-कोलंबिया और वैंकूवर अंचल में इन अंगूरों से अमेरिका के कैलिफ़ोर्निया की तरह अच्छी गुणवत्ता वाली लाल और सफेद शराब का पर्याप्त उत्पादन किया जाता है। उस अंगूर बगीचे में हमने वाइन परीक्षण प्रक्रिया और प्रणाली देखी। उसके हैचरी के नजदीक प्रोस्पेक्ट प्वाइंट में हमने लंच किया और कल नहीं देख पाए एक्वैरियम को आज देखने गए। यह बहुत बड़ा एक्वैरियम था। छोटी-बड़ी अनेक सफेद रंग की बलुगा व्हेल और दो मानव भक्षी किलर व्हेल देखी। मानव भक्षी के होने के बावजूद भी वे नृत्य करने में कुशल थीं और बच्चों की तरह चीं, चीं की कर्कश आवाज निकाल रही थीं। उनका पूरा शरीर काला, नाक के पास थोड़ा सफेद निशान था। हमने और कई छोटे-छोटे तालाबों में अन्य समुद्री मछह लियाँ देखीं। उसके बाद हम ब्रिटिश-कोलंबिया के संग्रहालय और विश्वविद्यालय को देखने के लिए रवाना हुए।

ब्रिटिश-कोलंबिया विश्वविद्यालय न केवल अपने प्रदेश या कनाड़ा में प्रसिद्ध है,बल्कि सारी दुनिया में उसकी ख्याति है। इस विश्वविद्यालय के नृतत्व और समाजशास्त्र के विभाग बहुत ही सम्मानित है। मेरी नृतत्व में विशेष दिलचस्पी थी, इसलिए मैंने उस विभाग के प्रोफेसरों के साथ चर्चा के लिए अलग से कुछ समय निकाला। उन्होंने मुझे पहले दिन देखे हुए स्टैन्ली पार्क में लगे कुलदेवताओं की पताकाओं के बारे में कुछ और जानकारी दी। उन्होंने यह भी बताया कि पार्क में उनके सज्जीकरण की व्यवस्था उनके विभाग द्वारा की गई थी।

संग्रहालय वैंकूवर नगरपालिका के नियंत्रण में था, लेकिन विश्वविद्यालय के नृतत्व विभाग ने इसे बनाया था। विश्वविद्यालय में भारत के बारे में बहुत कुछ अध्ययन-शोध किया गया है और यह अब भी जारी है। उदाहरण

के लिए, संग्रहालय में भारत पर आधारित एक प्रदर्शनी नृतत्व विभाग द्वारा लगाई गई थी। यह प्रदर्शनी छह ह विषयों पर आधारित थी अर्थात् राम-सीता, विष्णु, शिव- पार्वती, घर-मंदिर, हिंदू परंपराएं और हिंदू, मुस्लिम और सिखों की परंपराओं में पारस्परिकता- प्रत्येक विषय पर बनी अनेक परंपरागत पेंटिंग, रेखाचित्र, भास्कर्य वस्तुएं एवं लिखित पोस्टर दर्शकों को समझाने में मदद कर रही थी। खूब सुंदर पृष्ठभूमि में सितारवादन इस प्रदर्शनी का अन्यतम आकर्षण था। हमारे उपनिषद (मुख्यतः छान्दोग्य उपनिषद) से कुछ चुने गए अंशों को उनके अँग्रेजी अनुवाद के पोस्टर के साथ भी प्रदर्शित किए गए थे। इसके अतिरिक्त, कॉमनवेल्थ से संबंधित कुछ बेहतरीन तस्वीरें भी इस प्रदर्शनी में आयोजित की गई थीं।

ब्रिटिश-कोलंबिया विश्वविद्यालय प्रशांत महासागर के घाट पर स्थित है। विश्वविद्यालय के लॉन, उद्यान और उनसे जुड़े रास्ते प्रशांत महासागर से बहुत दूर नहीं हैं। लहरों की आवाज भी साफ सुनाई दे रही थी।सामने समुद्र दिखाई दे रहा था। हमारे गाइड ने कहा कि कनाड़ाई तीन चीजों को ज्यादा पसंद करते हैं।

पहली- फिल्म एवं संगीत,

दूसरी- पर्यावरण,खासकर जंगल, बर्फ हंसों की वार्षिक दक्षिण यात्रा एवं मूस और कैरिबौ (दोनों उत्तरी अक्षांश के जानवर)।

तीसरी- साहित्य और लोक साहित्य

गाइड ने बताया कि एक बार टोरंटो का प्रसिद्ध सिम्फनी ऑर्केस्ट्रा उत्तर के इनुविक शहर में आया था। सिम्फनी के निदेशक आंद्रे डेवी की प्रेक्षागृह में उम्मीद से कम लोगों को देखकर कुछ हद तक आश्चर्यचकित हुए और उतनी कम उपस्थिति के कारण खोजने लगे। उन्हें बताया गया कि उस दिन उस वर्ष पहली बार मूस के दर्शन हुए थे। बाद में गाइड ने कहा कि मूस के दर्शन करना हंसों की दक्षिण-यात्रा जैसा अवसर होता है।

वैंकूवर को अलविदा करने का समय आ गया था। होटल लौटकर कुछ   नाश्ता पानी करने के बाद हमने एयर कनाड़ा से ओटावा के रास्ते बोस्टन की उड़ान भरी। हमें कहा गया, बोस्टन का अंतरराष्ट्रीय समय वैंकूवर के स्थानीय समय से तीन घंटे आगे है। एयरलाइन ने हमें उड़ान में डिनर दिया। बोस्टन पहुंचते -पहुँचते मुझे भारी नींद आने लगी थी। टैक्सी से कॉनकॉर्ड एवेन्यू के मेरे अपार्टमेंट में पहुँचकर तुरंत सो गया। एक सपने की तरह दो सप्ताह का दौरा पूरा हो गया था। जिन आठ नौ शहरों में पांच सितारा होटल में रहने और वहाँ के अनेक दर्शनीय स्थल देखने को मिले,इतना ही नहीं, वरन् प्रवास के दौरान विशिष्ट अतिथियों के उद्बोधन और उनसे चर्चा के माध्यम से कनाड़ा के इतिहास, अर्थव्यवस्था, संस्कृति, जीवन शैली, अंग्रेजी और फ्रांसीसी भाषाओं के बीच आपसी संबंध एवं प्रतिस्पर्धा के बारे में सम्यक जानकारी प्राप्त हुई। कैलगरी से वैंकूवर का ट्रेन सफर सबसे ज्यादा यादगार हिस्सा बना। कैफे टूर्नामेंट में लाखों बर्फहंसों का समावेश, मॉन्ट्रियल और क्यूबेक में सेंट लॉरेंस नदी के किनारे भ्रमण और सामग्रिक भाव से वैंकूवर शहर, उसकी साल्मन मछह ली और प्रशांत महासागर भी हमें बहुत अच्छा लगा।

18. हार्वर्ड से बहुदिगंत आनुष्ठानिक भ्रमण: काव्य-पाठ एवं व्याख्यान

हार्वर्ड विश्वविद्यालय का नृतत्व विभाग

हार्वर्ड यूनिवर्सिटी का नृतत्व विभाग शिकागो विश्वविद्यालय के नृतत्व विभाग की तरह बहुत प्रसिद्ध है। इस विभाग में कई प्रसिद्ध नृतत्वविद हैं, जिन्होंने अमेरिका के अलावा दुनिया के कई आर्थिक-सम्पन्न देशों पर शोध किया है। उन्होंने दक्षिण अमेरिका की अमेज़ॉन घाटी,अफ्रीका के नाइजीरिया, केन्या आदि राष्ट्र, दक्षिण-पूर्व एशिया के अनेक देशों की अर्थव्यवस्था के विकास के लिए पारंपरिक समाज में होने वाले परिवर्तनों और समस्याओं के बारे में विभिन्न दृष्टिकोण से चर्चा की है। नृतत्व विभाग के मुखिया मेबुरी लुईस दक्षिण अमेरिका के विभिन्न अंचल, विशेषकर अमेज़ॅन नदी घाटी में आर्थिक विकास के ख्याति लब्ध गवेषक थे। हार्वर्ड प्रवास के दौरान मुझे प्रोफेसर लुईस, प्रोफेसर नूर यूलमान और अन्य लोगों के साथ मिलने का अवसर प्राप्त हुआ था। नृतत्व विभाग द्वारा आयोजित होने वाले अधिकांश मासिक सेमिनारों में मैंने भाग लिया था। प्रोफेसर लुईस के अनुरोध पर मैंने *'भारत के आदिवासी समाज के लिए उपयुक्त विकास की योजना का स्वरूप'* विषय पर व्याख्यान दिया था। व्याख्यान के विभिन्न सैद्धांतिक पहलुओं पर यहाँ चर्चा करने की कोई खास जरूरत नहीं है। मैं केवल अपने व्याख्यान का सारांश यहां बताना चाहता हूं।

भारतीय आदिवासी समाज कई तरह से विभाजित एक जटिल समाज है। यह समाज लगभग दो सौ पचास समुदायों में विभाजित है। इन समुदायों को देखने के अलग-अलग दृष्टिकोण हैं। उनके आर्थिक विकास और शिक्षा के स्तरों में अंतर हैं। भारत के तीन सबसे बड़े आदिवासी समुदाय की आबादी 60 लाख से ज्यादा है, जबकि अंडमान-निकोबार द्वीप समूह में कुछ आदिवासी समुदायों की आबादी केवल तीन या चार सौ तक ही सीमित है। संथाल उन तीन सबसे बड़ी समुदायों में से एक है। वे पूर्वी भारत के तीन राज्यों के निर्दिष्ट भौगोलिक क्षेत्र में रहते हैं। अब इन अंचलों को लेकर झारखंड राज्य बनाया गया है। संथाल समुदाय विकास की मुख्य धारा से अपने आपको जोड़ने में सक्षम है। इसके विपरीत, ओड़िशा के बोंडा और जुयांग समुदाय (जिनकी जनसंख्या पांच-छह ह हजार है) देश द्वारा संचालित विकास प्रक्रिया से बहुत दूर हैं।

ऐसे जटिल, विभक्त समुदाय के लिए कोई उपयुक्त योजना तैयार करना आसान है। नृतत्वविद, अर्थशास्त्री और योजना विशेषज्ञों के बीच दो विरोधाभासी दृष्टिकोण देखे जा सकते हैं। पहला, यह है कि इन समुदायों की मौलिक संस्कृति अत्यंत मूल्यवान है और आर्थिक विकास के परिप्रेक्ष्य में ऐसी संस्कृति को बिलकुल नुकसान नहीं पहुंचाया जा सकता है। दूसरा दृष्टिकोण है: भारतीय आदिवासी समाज की पारंपरिक संस्कृति विकास विरोधी है और जब तक कि उनकी पारंपरिक संस्कृति को मिटाया नहीं जाता, उनका आर्थिक विकास संभव नहीं है। सौभाग्य से, एक और नया दृष्टिकोण उभरा है, जिसके अनुसार उनकी पारंपरिक संस्कृति की मौलिकता को बरकरार रखते हुए उनके लिए आर्थिक विकास कार्यक्रम किए जा सकते हैं।

यह याद रखना होगा कि भारतीय आदिवासी समाज में अढ़ाई सौ विभिन्न समाज शामिल हैं।उनके लिए कोई भी योजना बनाते समय इस पहलू को ध्यान में अवश्य रखना चाहिए। मैंने अपने व्याख्यान में विस्तार से

भारतीय आदिवासी लोगों के जटिल नृतात्विक परिवेश, जीवन के प्रति उनके पारंपरिक दृष्टिकोण आदि पर प्रकाश डाला। मैंने इस बात पर बल दिया था कि आदिवासी समाज के मूल्यवान गुणों को उनके आर्थिक विकास हेतु नष्ट नहीं किए जाने चाहिए। उनके महत्वपूर्ण गुण निम्न हैं :-

1 उनमें जीवन के प्रति गहरी अनुरक्ति है जो हमारे समय की जीवन विमुखता से पूरी तरह से अलग है। इस अनुरक्ति के कारण दु:ख-दुर्दशा, शोषण और उत्पीड़न होने के बावजूद भी वे जीवन विमुख नहीं हो पाए।

2 आदिवासी लोगों का समाज-प्रेम, समुदाय-स्नेह और अनुरक्ति हमें अभिभूत करती है। यह सामूहिकता समुदाय के संगीत, नृत्य और त्योहारों इत्यादि के जरिए आंतरिक बंधन बनाए रखती है।

आधुनिक समाज में व्यक्तिचेतना, देवता, पूर्वज और आसपास की प्रकृति से संबंध छिन्न-भिन्न होने के कारण हम लोग सामान्य धूल कणों की तरह तैर रहे हैं। इस दृष्टि से आदिवासी समाज की स्वाभाविक जीवनप्रीति और समुदाय के प्रति प्रेम आधुनिक समाज के लिए शिक्षाप्रद है।

आदिवासियों का मानना है कि व्यक्तिगत जीवन में आनंद, सुख और संतोष सबसे महत्वपूर्ण चीजें हैं। इसलिए उनका मानना है कि आर्थिक विकास मायने रखता है। दूसरी बातें, आधुनिक व्यक्ति आदिवासी लोगों से मूल्यबोध सीख सकते हैं। यह जरूरी है कि उनके आर्थिक विकास की योजना बनाते समय इन गुणों की तिलांजलि नहीं दी जा सकती है।

समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र और योजना के विभिन्न पहलुओं पर मैंने उपरोक्त पृष्ठभूमि की अपने व्याख्यान में प्रस्तुति की थी। मुझे नहीं लगता कि इन सब की विस्तृत चर्चा यहाँ प्रासंगिक है।प्रोफेसर मेबूरी लुईस ने इस बैठक की अध्यक्षता की थी। नृतत्व विभाग, समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र विभाग के कई प्रोफेसरों, शोधकर्ताओं और विद्यार्थियों ने इस संगोष्ठी में भाग लिया था। व्याख्यान के बाद लंबा समय सवाल-जवाब सत्र में व्यतीत हुआ था।

मैंने बोस्टन विश्वविद्यालय में नृतत्व पर एक और व्याख्यान दिया था। मैंने आदिवासी लोगों के आर्थिक विकास हेतु भूमि और जंगल के महत्व पर प्रकाश डाला था। मेरे व्याख्यान का शीर्षक था *"आदिवासी विकास में भूमि और जंगल की भूमिका : अधिकार एवं अधिकार वंचित"* मैंने उन संदर्भों के बारे में एक विस्तृत ब्यौरा प्रदान किया था, जिसमें गरीब आदिवासियों ने अपनी अल्प जमीन खोई थी। आजादी के बाद में बड़ी-बड़ी सिंचाई परियोजनाओं, बड़े उद्योगों और खनिज उत्तोलन के लिए आदिवासियों की भूमि का सरकार द्वारा अधिग्रहण किया गया था। इसके अलावा, गैर-आदिवासी लोगों ने आदिवासियों की जमीन चालाकी से हड़प ली, भले ही, कानून ने इसे प्रतिबंधित क्यों न कर दिया हो। उपर्युक्त कारणों के कारण छोटे और सीमांत आदिवासी किसान अपनी जमीन लूटाकर, घर-ज़मीन से अपने अंतरंग और गहरे संबंध छिन्न-भिन्न कर शहरों में दैनिक मज़दूरी करने के लिए बाध्य हुए हैं। सरकारी परियोजनाओं के लिए भूमि खोने पर उन्हें पर्याप्त मुआवजा मिलता है, मगर मुआवजे के पैसे आदिवासियों के हाथ में लंबे समय तक रह नहीं सकते। उनका पैसा बहुत ही कम समय में स्थानीय शराब दुकानदार या व्यापारियों के हाथों में अनायास अपना रास्ता तलाश लेता है। नतीजतन, मिट्टी,गाँव और समुदाय के प्रति आसक्त आदिवासी लोग जटिल शहरी जीवन से समझौता करने

लगते हैं। दूसरा आदिवासी लोगों का युगों से जंगलों से संबंध रहा है। ऐसा नहीं है कि वे केवल पहाड़ियों, घाटियों और जंगलों के ढलान पर रहते हैं। वे जंगल में रहने के लिए घर बनाने की चीजों को इकट्ठा करते हैं, वे जंगली द्रव्यों को इकट्ठा कर बेचते हैं, उनसे मिलने वाले पैसों का इस्तेमाल अन्य चीजों को खरीदने में करते हैं, जो उनकी जीविका के लिए आवश्यक है। पहाड़ों और जंगलों से आदिवासी लोगों को हटाने का अर्थ है मछह ली को पानी से बाहर निकालकर कहीं और फेंकना। उनकी आर्थिक योजनाओं के उद्देश्य का आधार होना चाहिए, जमीन और जंगल दोनों को लेकर स्वस्थ,सुखी और आत्मनिर्भर आदिवासी समाज का निर्माण करना। मैंने अपने व्याख्यान में आदिवासी लोगों की जमीन खोने के कारण, अवांछित तरीके और उनके परिणामों पर विशद चर्चा की थी। दूसरा, मैंने जंगलों के साथ आदिवासी लोगों के घनिष्ठ संबंधों पर भी चर्चा की थी। अंत में, मैंने दोनों को लेकर आदिवासी लोगों के लिए विकास योजना प्रणयन और उनके विभिन्न बिन्दुओं पर प्रकाश डाला था।

आदिवासी लोगों की जमीन का कानूनी अधिग्रहण और उचित मुआवजा मिलते ही बहुत कम अवधि में उन्हें मिले मुआवजे के वे पैसे खर्च हो जाते हैं। स्थानीय मदिरा, कपड़ा व्यापारी उनके मुआवजे के पैसों पर गिद्ध दृष्टि रखते हैं। इसलिए पैसा जल्द ही उनके हाथों से निकल जाता है और वे शहर जाकर दैनिक श्रमिक बनने पर मजबूर हो जाते हैं । सामाजिक संहति की दृष्टि से यह अवांछह नीय है, जिसके फलस्वरूप शहरों में नाना समस्याएं पैदा होती हैं।

इसलिए मैंने अपने व्याख्यान में जंगल और जंगलाती द्रव्यों पर आदिवासी लोगों के अधिकारों के बारे में विशिष्ट टिप्पणी की थी। मैंने ओड़िशा के आदिवासी अंचलों में (एक सरकारी कर्मचारी और शोधकर्ता के रूप में) लंबे समय तक काम करने के कारण मेरा विश्वास है कि इस मामले में मेरे पास गहरा अनुभव है। वास्तव में, मेरा व्याख्यान मुख्य रूप से मेरे उन व्यक्तिगत अनुभवों पर ही आधारित था। मेरे व्याख्यान का मूल प्रतिपाद्य था कि आदिवासी लोगों के लिए नूतन समाज, अर्थनीति और समाजिकता के लिए जमीन और जंगल के उनके पुराने अधिकार और व्यवहार के मद्देनजर नीति-निर्माण की आवश्यकता।

व्याख्यान के बाद सवाल-जवाब सत्र का आयोजन किया गया था। सेमिनार में मौजूद प्रोफेसरों और छात्रों ने मेरे व्याख्यान पर सारगर्भित मंतव्य दिया था। बोस्टन विश्वविद्यालय के नृतत्व विभाग के प्रति मेरी श्रद्धा दोगुनी हो गई थी।

शिकागो विश्वविद्यालय का नृतत्व विभाग और विलियम वॉन मूडी व्याख्यान

'दक्षिण एशियाई अध्ययन समिति' ने मुझे हार्वर्ड प्रवास के दौरान शिकागो विश्वविद्यालय में नृतत्व विषय पर व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया था। यह समिति शिकागो विश्वविद्यालय में सम्मानित संस्था है और उसके नृतत्व विभाग के साथ मिलकर काम करती है। उस समय विश्वविद्यालय के नृतत्व विभाग में मैकिम मैरियट और बी.एस. कोन समेत लगभग सात विश्व प्रसिद्ध नृतत्वविद थे। श्री कोन मेरे व्यक्तिगत दोस्त थे। मैं उन्हें 'बार्नी' कहता था और वे मुझे 'एसके' । वहाँ का नृतत्व विभाग विश्वविख्यात था। अर्थशास्त्र विभाग भी नृतत्व विभाग की तरह प्रसिद्ध था। बहुत सारे नोबेल पुरस्कार विजेता प्रोफेसर वहाँ पढ़ाते थे।जिनमें थियोडोर

शुल्ज़, वसीली लोंतीफ, लॉरेंस क्लाइन, मिल्टन फ्रिडमैन, मर्टन मिलर, रॉबर्ट लुकास आदि के नाम शामिल थे। मैंने उनकी कुछ पुस्तकें पहले पढ़ रखी थीं।

नृतत्व विभाग के प्रमुख और शिकागो विश्वविद्यालय के विलियम वॉन मूडी लेक्चर कमेटी के अध्यक्ष डा॰ केनेथ नॉर्टकोट ने मुझे उस वर्ष के वार्षिक व्याख्यान हेतु आमंत्रित किया था। मुझे पहले अपनी कविताएं पढ़ने, उनके बारे में कुछ कहने का और उपस्थित साहित्य के प्रोफेसरों और छात्रों के साथ चर्चा करने का अनुरोध किया गया था। मैं एक ही बार दोनों कार्य पूरा करना चाहता था। अतः तदनुसार व्यवस्था की गई थी।

हार्वर्ड पाठ्यक्रम के प्रतिभागियों को जब कोई अन्य विश्वविद्यालय या संगठन आमंत्रित करता है तो न उन्हें केवल अनुमति दी जाती है वरन प्रोत्साहित भी किया जाता है। मैं बोस्टन हवाईअड्डा से उड़ान पकड़कर (मेरी घड़ी के अनुसार सवा चार बजे) शिकागो पहुंच गया, लेकिन स्थानीय समय सवा तीन बज रहा था। आकाश घटाटोप छाया हुआ था,हल्की-हल्की बूंदाबाँदी हो रही थी। विश्वविद्यालय हवाई अड्डे से ज्यादा दूर नहीं था। आगे से जगह की जानकारी थी, इसलिए लिमोसिन (बड़ी टैक्सी) पकड़ कर वहाँ पहुँच गया। साथ ही साथ नॉर्मन भी मेरे पास पहुंच गए। क्वाड्रंगल क्लब में मेरे रहने की व्यवस्था की गई थी। सूट बहुत बड़ा था, सोफा सेट, टेलीविजन, ड्राइंग रूम सब थे। बेडरूम दूसरा था। नॉर्मन ने बताया कि यह विश्वविद्यालय का सबसे पुराना और सबसे महंगा क्लब था। क्लब के डाइनिंग हॉल में हम दोनों ने एक साथ खाना खाया, लंबे झींगों का भोजन, जो हम दोनों का प्रिय था। क्लब से मंगाए खाने में सलाद और फल सबसे ज्यादा स्वादिष्ट थे। मैंने देखा कि नॉर्मन को गहरे लाल तरबूज पसंद थे। नॉर्मन ने अपने ओड़िशा दौरे में मुझे ओड़िया खाद्य खिलाने के लिए कहा था उस दिन स्वादिष्ट भात खाने को मिला था।

नॉर्मन ने कोरापुट की दिदाई (एक जनजाति) भाषा पर शोध कार्य किया था। उन्हें मुंदरी (एक अन्य जनजाति) भाषा भी आती थी। उनकी पत्नी आरर्लेन को मैं जानता था। मैंने उनसे पूछा कि उनकी पत्नी उस रात डिनर पर क्यों नहीं आई? उन्होंने कहा, "*आप बोस्टन से शिकागो आए हैं।आरर्लेन आज बोस्टन गई है। आपके रहते-रहते वह आ जाएगी।"* नॉर्मन के दो पुत्र थे। मैंने उन्हें भुवनेश्वर में अपने पिता के साथ देखा था, जब वे बहुत छोटे थे। उनके बड़े बेटे ने कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय से अपनी पढ़ाई पूरी कर फिल्मों में आने की कोशिश कर रहा था। छोटा बेटा अभी भी पढ़ रहा था। क्लब पहुँचते-पहुँचते मेरे मित्र रामानुजन ने मुझे फोन किया।अनौपचारिक रूप से मैं उन्हें रमन या ए के कहकर बुलाता था और वह मुझे 'एस॰के॰'। फोन पर उन्होंने बताया कि अपनी बेटी को हवाई अड्डे से रिसीव करने के कारण वह रात्रिभोज में शामिल नहीं हो पाएगा। उनकी बेटी ने इंडियाना विश्वविद्यालय से साहित्य की पढ़ाई पूरी कर ग्रीक संस्कृति पर काम कर रही थी। उनका बेटा शिकागो में काम करता था।

अगली सुबह नींद खुलते समय तेज धूप पड़ रही थी। आकाश में और बादल नहीं थे। स्थानीय समय साढ़े छह ह बजे कमरे में चाय पीकर टहलने के लिए बाहर आया। क्लब के पीछे दो टेनिस कोर्ट थे, उसके उस तरफ यूनिवर्सिटी की सड़क पर वाहन चल रहे थे। सुंदर धूप वाली सुबह रात की हल्की-हल्की बूँदाबाँदी और सामान्य बर्फबारी को अतीत में बदल दे रही थी। मुझे उस दिन पहले रिक स्वेडर से मिलना था। वे सामाजिक विज्ञान के डीन थे। उनके विभाग में कुछ समय व्यतीत करने पर नॉर्मन वहाँ आया था। रिक ने भारतीय समाज और संस्कृति पर कुछ काम किया था। उन्होंने मुझे अपना विभाग दिखाया। उसके बाद हम दोनों ने तहखाने में रखी समाजशास्त्र की पुस्तकें देखी।इस विषय पर बहुत सारी पुस्तकें एक ही स्थान पर देखकर मुझे बहुत खुशी

हुई। उसके बाद झील के बगल में विस्तृत सड़क पर जाते हुए हमने विज्ञान और उद्योग संग्रहालय, आधुनिक आर्ट गैलरी और प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय देखते हुए सीयर्स टावर्स में कुछ समय बिताया। यहाँ दो बहुत लंबे टावर थे। एक सफेद था और दूसरा काला। हम रास्ते में मछह लीघर और चिड़ियाघर भी देखकर झील के किनारे कुछ समय इधर-उधर घूमे। उसके बाद लंच के लिए क्लब में आए। लंच के बाद शिकागो विश्वविद्यालय में उर्दू साहित्य के प्रोफेसर सी॰एम॰ नैम, और उनकी एक छात्रा मुझसे मिलने आई। 'अमरशतक' पर पीएचडी करने वाला एक छात्र भी उनके साथ था।

30 मार्च, संध्या 7.30 बजे हार्पर लाइब्रेरी में मेरे काव्य-पाठ और व्याख्यान की व्यवस्था की गई थी। उसके लिए व्याख्यान समिति ने मुझे बहुत पहले से विज्ञापित नोटिस भेज दिया था। उसमें यह उल्लेख किया गया था कि कार्यक्रम के लिए कोई टिकट नहीं रखे गए थे। मेरे दोस्त स्व॰ ए.के. रामानुजन ने प्रेक्षागृह में मेरा परिचय दिया और विभागीय प्रमुख प्रोफेसर नॉर्थकोट ने बैठक की अध्यक्षता की। कई स्थानीय कवि और साहित्य के प्रोफेसर उपस्थित थे। पहले मैंने दस कविताएं पढ़ीं, उसके बाद मैंने आधुनिक भारतीय कविता और मेरी कविता के बारे में संक्षेप में रोशनी डाली। परवर्ती चर्चा बहुत उच्च स्तर की थी। कई सवाल काफी 'तेज' थे। सत्र खत्म होने के बाद प्रोफेसर नॉर्थकोट ने अपने घर में मेरे लिए रात्रि भोजन का आयोजन किया था। वहाँ मैं रामानुजन, अन्य कवियों और साहित्यिकारों से अनौपचारिक परिवेश में फिर से एक बार मिला था। मेरे दोस्त ए.के. (राननुजन) ने डिनर के दौरान बताया कि विलियम वॉन मूडी व्याख्यान में मुझे आमंत्रित किए जाने पर वह बहुत खुश था,क्योंकि इस आयोजन में पहले आर.के. नारायण और कई प्रख्यात अमेरिकी लेखक आमंत्रित किए जा चुके थे।

नृतत्व विषय पर मेरा व्याख्यान दूसरे दिन था। मुझे इस संबंध में विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित विज्ञापन की प्रतिलिपि मिली थी। मेरे व्याख्यान का शीर्षक था 'ओड़िशा के तीन जनजातियों के शब्द, भित्तिचित्र और रिचुअल्स'। इस व्याख्यान का आयोजन नृतत्व विभाग और दक्षिण-पूर्व एशियाई सांस्कृतिक संगठन ने संयुक्त रूप से किया था। मेरा व्याख्यान सांथाल, सौरा और कंध, इन तीन आदिवासी समुदायों द्वारा देवी-देवताओं को प्रसन्न करने के लिए अपनाए जाने वाले विभिन्न तौर-तरीकों और अनुष्ठानों पर आधारित था। सौरा के भित्ति चित्र, संथालों की 'बाखने' (प्रार्थना संगीत) और कंधों के मारिया स्तोत्र मेरे व्याख्यान के विशेष अंश थे। प्रो॰बी॰एस॰कोन, मैकिन मैरियट और भारतीय नृतत्व पर काम कर रहे कई अन्य शोधकर्ता दर्शकदीर्घा में उपस्थित थे। डा॰ कोन ने बैठक की अध्यक्षता की थी। वे उन्नीसवीं शताब्दी में भारत में हुए सामाजिक परिवर्तनों और कृषि उपायन में नृतात्विक दृष्टिकोण जैसे विषयों के विशेषज्ञ थे। (श्री बार्नी का इस बीच में निधन हो गया है।) मैंने ओड़िशा के तीन आदिवासी समुदायों के विश्वास, धार्मिक चेतना के उत्स और सामाजिक जीवन में मूल्य-बोधों पर प्रकाश डाला था। मैंने पहले 'बाखने' के बारे में बात की थी, जो अलग-अलग समय पर देवी-देवताओं और पूर्वजों की प्रार्थनाओं से संबंधित है। मैंने चौदह 'बाखने' के विशद विश्लेषण की एक पुस्तक प्रकाशित की है। मैंने अपने व्याख्यान में इसके बारे में कुछ बताया था। दूसरे, मैंने सौरा के देवी-देवताओं को समर्पित भित्ति चित्रों के बारे में कुछ कहा था। मैंने सौरा के इन चिह्नों की और कहीं भी चर्चा की है। सौरा की प्रार्थना प्रवृत्ति संथाल से बहुत भिन्न है, लेकिन उनके उद्देश्य समान हैं। वह उद्देश्य है- व्यक्ति और समाज की मंगल कामना, बेहतर फसल, अच्छा स्वास्थ्य, निरोग जीवन और समुदाय में शांति के लिए अदृश्य देवताओं से प्रार्थना की जाती है।

तीसरा समांतराल उद्देश्य डंगरिया कंधों के मेरिया त्योहार के समय नर-बलि देने की मैंने पूर्व व्याख्या की है। वे धरित्री देवी अर्थात् धरतीनी और आकाश के धर्म देवता अर्थात् धर्म आशीर्वाद के लिए मेरिया श्लोक पढ़ते हैं। एक दृष्टिकोण कोण से मेरिया बलि क्रूर परंपरा है। यह अभी भी प्रचलित है। एकमात्र परिवर्तन यह हुआ है कि नर-बलि की जगह पशु-बलि दी जाती हैं। लेकिन इसके पीछे प्रार्थना से धरती माता और धर्म देवता का समाज के मंगल हेतु आह्वान करना है, इस बात का ध्यान रखना पड़ेगा। इस तरह तीन अलग-अलग आदिवासी समाज अपने-अपने तरीकों से देवी-देवताओं की पूजा-अर्चना करते हैं। सामाजिक मंगल के लिए वे उनका आशीर्वाद मांगते हैं। वैदिक ऋषियों की प्रार्थना की तरह इन आदिम जनजातियों की प्रार्थना विश्व-संस्कृति का एक मूल्यवान अंग है।

मैं विश्वविद्यालय के अतिथिगृह में ठहरा था, वहाँ रामानुजन और उनकी विदेशी पत्नी नॉर्मन जैड के साथ मेरा तीन दिवसीय प्रवास काफी सुखद रहा। मेरे इस व्याख्यान में मेरे कई भारतीय दोस्त भाग ले रहे थे। उनमें मेरे कॉलेज दिनों के सहपाठी मित्र सूर्य मिश्रा और उनकी पत्नी भी थीं। सूर्य विश्वविद्यालय से करीब 40 किलोमीटर दूर रहते थे। उनके अनुरोध पर मैं रात्रि-भोज के लिए उनके घर गया। उस रात उन्होंने अपने घर अनेक ओड़िया दोस्तों को भी आमंत्रित किया था। विजय मिश्रा, अमिय पटनायक, मिहिर दास और भावेश दास चार लोगों से वहाँ मेरी मुलाक़ात हुई। खाने के बाद विजय ने कुछ ओड़िया गाने गाए। हमारे अनुरोध पर सूर्य की डॉक्टर पत्नी कविता ने भी कुछ गाने गाए। सूर्य ने मुझे विश्वविद्यालय के क्लब में छोड़ा,उस समय आधी रात हो रही थी। अगली सुबह मुझे बोफालो में एक रिश्तेदार के घर जाना था।

इससे पहले मैंने शिकागो का दो बार दौरा किया था। सन 1976 में अंतर्राष्ट्रीय नृतत्व कांग्रेस में दो पेपर पढ़ने के लिए मैं वहां गया था। दूसरी बार अपनी खुशी से मैं वहां गया था। मेरी पहली यात्रा के दौरान मेरे साथ कई भारतीय नृतत्वविद थे। उस समय भी मैंने रामानुजन और नॉर्मन ज़ैड के साथ भी कुछ समय बिताया था। रामानुजन ने *'द क्लोजिंग ऑफ अमेरिकन माइंड'* के लेखक से मेरे मिलने की व्यवस्था की थी। इस बहुचर्चित पुस्तक के विषय पर उसके लेखक के साथ मैं कुछ चर्चा करना चाहता था- मैंने रामानुजन को पहले से बता दिया था।

शिकागो महानगर सिर्फ अमेरिका का दूसरा सबसे बड़ा शहर नहीं है, वरन् यह अमेरिका के साहित्य, संस्कृति, जैज संगीत और काले लोगों की जीवन-शैली के लिए प्रसिद्ध है। शिकागो का *'ओ हेयार'* दुनिया का सबसे बड़ा और व्यस्त हवाई अड्डा है और व्यापार-वाणिज्य का अन्यतम केंद्र है। मिशिगन झील के तट पर स्थित होने के कारण शिकागो से जलमार्ग द्वारा कई वस्तुओं का कनाड़ा और दुनिया के अन्य देशों में निर्यात किया जाता है। अमेरिकी रेलवे इतिहास में शिकागो एक महत्वपूर्ण नाम है। झील तट पर बनी गगनचुंबी इमारतें दर्शनीय हैं।यद्यपि मैंने इस अंचल को पहले देखा था, फिर भी मेरे दोस्त नॉर्मन जैड मुझे दुबारा इस अंचल में ले आए। मिशिगन झील के किनारे बना सीयर्स टॉवर दुनिया की अन्यतम ऊंची इमारत है। अन्य शहरों के साथ शिकागो को जोड़ने वाले हाइवे पर यातायात खूब ज्यादा होता है। आठ-लेन वाले इस हाइवे पर सुबह 8 से 10 बजे और शाम को 5 और 8 बजे के बीच इतनी गाडियाँ चलती है कि अक्सर ट्रैफिक जाम रहता है। नॉर्मन एक बार ऐसे ट्रैफिक जाम में फंस गए थे, जिसकी वजह से हम निर्धारित समय से लगभग पैंतालीस मिनट देर से पहुंचे। संक्षेप में यह कहा जा सकता है, स्थलमार्ग, जलमार्ग और वायुमार्ग, तीनों में शिकागो अमेरिका का अन्यतम विशाल महानगर है।

रामानुजन ने 31 मार्च के पूर्वाह्न 11 बजे सुप्रसिद्ध उपन्यासकार शाल बेलो से मेरी मुलाक़ात तय की थी। शाल बेलो बहुत ही व्यस्त व्यक्ति थे। मैंने उनके अधिकांश उपन्यास और निबंध-संग्रह पहले पढे थे (*जैसेकि 'हर्ज़ोग', 'एडवेंचर्स ऑफ औगी मार्च', 'डांगलिंग मैन', 'मिस्टर॰सम्मलर प्लैनेट' और ' द डीन ऑफ दिसम्बर' इत्यादि।)* मुझे उनसे मिलने की बहुत इच्छा थी। शिकागो की विगत यात्रा में रमन उनके साथ मेरी मुलाक़ात नहीं करवा पाए थे। इस अवसर पर उन्होंने हमारे लिए आधे घंटे का समय निकाला। रामानुजन उस विश्वविद्यालय की सात सदस्यीय समिति के सदस्य थे। यह समिति अमेरिका के जन-जीवन,संस्कृति,मानवता खोजने,भविष्य में समूचे विश्व में मानवतावाद के संरक्षण और साहित्यिक स्वाधीनता आदि के बारे में चर्चा करती है। शाल बेलो शिकागो के जीवन से ज्यादा जुड़े हुए थे। उन्हें सन 1976 में नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ था। वे शिकागो में बड़े हुए और निर्विच्छिन्न भाव से सन 1962 से वहां रह रहे थे। उनके अनेक उपन्यासों में उस महानगर के सामान्य जीवन, दैनिक क्रिया-कलाप और नैतिक मूल्यों में संघर्ष को कलात्मक रूप से दर्शाया गया है। सन 1964 में प्रकाशित उपन्यास उनके "हर्ज़ोग" के नायक के जीवन में शिकागो के सभी उल्लेखनीय गुणों का समाहार हैं। बाकी की तुलना में यह उपन्यास ज्यादातर आत्मकथात्मक प्रकृति का है। दूसरे उपन्यासों में उन्होंने शिकागो के महत्त्वपूर्ण निर्माण केन्द्रों,कत्लखानों, मलिन बस्तियों, जेलों, अस्पतालों और स्कूलों के बारे में लिखा है। इनके भीतर *'इस मनुष्य जीवन का नैतिक महत्व'* खोजने का उन्होंने प्रयास किया है।

शाल बेलो के साथ पैंतालीस मिनट बिताने के बाद रामानुजम और मैं क्लब लौट आए। शायद उनसे भेंट करने के लिए शिकागो के बारे में मेरा पूर्वार्जित ज्ञान याद आने लगा। थियोडोर ड्रेइजर, रिचर्ड राइट, अप्टन सिल सिंक्लेयर, जेम्स फरेले, शेरवुड एंडरसन इत्यादि शिकागो के उपन्यासकार और लेखक स्मृति में आने लगे। उनकी लेखन-शैली आलोचक अल्फ्रेड काइजिन की भाषा में *"ए सर्टेन हैंडबिटन नेचुरलिस्टिक"* को अमेरिकी उपन्यासों की प्रसिद्ध शैली के रूप में स्वीकार किया गया है। ग्रिट्टी रियलिज़्म अर्थात् किरकिरा यथार्थवाद शाल बोले की रचनाओं में सुंदरता से परिलक्षित हुआ है, जिसमें सामान्य लोगों के जीवन, सपनों और महानगरों की अवैयक्तिक शक्ति प्रवाह के साथ सदैव संघर्ष होता है। शाल बेलो के उपन्यास *'द एडवेंचर्स ऑफ ओगू मार्च'* के नायक की भाषा में, *"मैं एक अमरीकी हूं, शिकागो का जन्मा, शिकागो- जो भाराक्रांत शहर है- सारी समस्याओं का मैं अपने तरीके से खुद सामना करता हूँ और अपने तरीके से उनका रिकॉर्ड रखता हूँ।"* संक्षेप में कहें, उपन्यासकार की रचनाओं में शिकागो का अद्भूत खिंचाव, अमाप शक्ति, अनुशासित अनुशासनहीनता, व्यक्तिगत स्वातांत्र्य के साथ-साथ एकीभूत सामुदायिक जीवन के छंद-ये सब प्रतिबिम्बित होते है।

शिकागो अमेरिकी लोकतंत्र की प्रयोगशाला है, यह एक अलग महानगर है, जिसमें अमेरिका के इतिहास, कामना,आशा और संघर्ष स्पष्ट प्रतिफलित होते हैं। साहित्य के अलावा संगीत और वास्तुकला दोनों में शिकागो की अनूठी शैली है।शिकागो सिम्फनी अमेरिका का अन्यतम प्रसिद्ध सिम्फनी ऑर्केस्ट्रा है। इसके निर्देशक जॉर्ज सोलटी के निर्देशन में पश्चिमी शास्त्रीय संगीत के कई संगीतकारों का ऑर्केस्ट्रा मेरा प्रिय है और मेरे संग्रह में है। दीर्घकाल से शिकागो के लिरिक ओपेरा ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध संगीत कलाकारों को मंच प्रदान किया है। न्यू ऑरलियन्स की तरह शिकागो जैज़ संगीत का केंद्र भी है। इस संगीत से बेनी गुडमैन और लुई आर्मस्ट्रांग विश्व प्रसिद्ध हो गए हैं।

एक बार सन 1871 में भीषण अग्निकांड से शिकागो के कई क्षेत्र विध्वस्त हो गए थे। लुइस सुलिवन, डैनियल बर्नहैम और कई अन्य वास्तुकारों ने शिकागो के पुनर्निमाण के अवसर पर अमेरिका को नई वास्तुशैली प्रदान

की थी। गगनचुंबी इमारतों में ग्लास टॉवर, डाउनटाउन के कई विशाल कार्यालयों के प्रवेश द्वार पर पिकासो की चित्रकला, हेनरी सुर और क्लिस ओल्डेनबर्ग की वास्तुकला- ये सब शिकागो की विशेषता है। सुप्रसिद्ध अमेरिकन कवि कार्ल सैंडबर्ग (1878-1967) की कविताओं में शिकागो शायद सबसे ज्यादा शक्तिशाली ढंग से चित्रित हुआ है। पुलित्जर पुरस्कार प्राप्त इस लोकप्रिय कवि ने अपनी युवावस्था में शिकागो में दुकान के विक्रेता, साधारण सिपाही,रिपोर्टर और छोटे-मोटे काम किए थे। उनके प्रसिद्ध संकलन *'शिकागो पोएम्स'* की कविता 'शिकागो' का एक अंश नीचे उद्धृत है :-

"दुनिया भर के हॉग बुचर,
टूल मेकर , गेहूं स्टेकर,
रेलरॉड्स प्लेयर और राष्ट्र के फ्रेट हेन्डलर;
तूफानी, उबाऊ, विवादित,
बड़े कंधों का शहर"

शिकागो के 'रफ हेक्सन एनर्जी', 'ठोस, भारी, बड़ी और महान भावना (प्रसिद्ध वास्तुकार फ्रैंक लॉयड राइट) ने विश्व की अन्यतम ऊंची गगनचुंबी इमारत, 110 मंजिला सीयर्स टावर्स को जन्म दिया था। सन 1803 में स्थापित यह शहर अमेरिका में गेहूं की खेती का केंद्र है। रेल यातायात, सूअर के मांस के व्यंजन, सभी प्रकार के व्यापार-वाणिज्य में पारदर्शिता, दुर्घुष अंडरवर्ल्ड के शक्तिशाली व्यक्ति और समुदाय के साथ-साथ साहित्य, संस्कृति, संगीत इत्यादि के अद्भूत मिश्रण ने शिकागो को अमेरिका का असली प्रतिनिधि शहर बना दिया है। जॉर्ज विल की भाषा में, *"मैदानों का यह शहर महान अमेरिकी शहर है ...। यह अमेरिकी इतिहास और अमेरिकन यात्राओं का सारगर्भित मिसाल है।"* शाल बेलो ने अपने उपन्यास *"द डीन ऑफ दिसम्बर"* की नायिका के बारे में लिखा है :-*"उसे प्रोक या फ्रायड या बाल्ज़ैक या अरिस्टोफेन की कोई आवश्यकता नहीं थी, शिकागो ने ही सब-कुछ कर लिया।"*

नृतत्व संगोष्ठी और कविता पाठ के लिए मैं कई बार शिकागो गया था। इस बार मेरा प्रवास काफी आनंददायक था।रामानुजन, नॉर्मन, रिक और अन्य साहित्यिक मित्रों के अलावा ओड़िशा के सहपाठी से मिलने का अवसर मुझे मिला। सूर्य के घर मुझे ओड़िया खाद्य के साथ-साथ ओड़िया गीत सुनने को मिले।अंत में, एअरपोर्ट से बाफ़ेलो के लिए रवाना हुआ।

वहाँ मेरे मौसरे भाई टूना (सुजीत मोहंती) विश्वविद्यालय में शोध कर रहे थे। सुबह 11.30 बजे शिकागो छोड़कर क्लीवलैंड के रास्ते बफ़ेलो पहुंचे। एअरपोर्ट पर लेने के लिए टूना आए, अपनी बेटियों निकी और टीना के साथ में। मौसम बहुत अच्छा था। सूरज आकाश में चमक रहा था,ठंडी-ठंडी हवा बह रही थी। टूना का घर वहाँ से केवल आठ मील की दूरी पर था। घर पहुँचकर थाईसैंडविच खाकर, कॉफी पीकर मैंने टूना के कामकाज के बारे में पूछा। वह काले लेखकों द्वारा लिखे गए उपन्यासों पर शोध कर रहा था। फिर से मुझे ओड़िया खाद्य खाने को मिला, मेरी पसंदीदा मूंगदाल और छोटी मछह ली की तरकारी। उस दिन *'गुड फ्राइडे'* था। कैथोलिकों के लिए दुःख का दिन था, उस दिन ईसा को सूली पर चढ़ाया गया था। दोपहर में हम रोचेस्टर में श्रीला राय के घर गए। रोचेस्टर विश्वविद्यालय अमेरिका में प्रसिद्ध है। श्रीला कई वर्षों तक अमेरिका में रह रही थीं, अपने अमेरिकी पति हेंड्रिक के साथ। वह अत्यंत ही शांत स्वभाव के व्यक्ति थे। उनके पास दो पुत्र थे।

बड़ा पुत्र ग्वेन छात्रावास में रहकर अध्ययन कर रहा था। छोटे बेटे कबीर की आंखें अपनी मां की तरह बहुत सुंदर थीं। श्रीला कटक के एक प्रसिद्ध परिवार की लड़की थी। ब्रिगेडियर संग्राम केशरी राय के परिवार, मेरे अंग्रेजी शिक्षक देवी प्रसन्न पटनायक के परिवार से थी। श्रीला ने अंग्रेजी में अनेक सुंदर कविताएं लिखीं थी। उसके दो कविता-संग्रह प्रकाशित हुए थे, नई पीढ़ी के अमेरिकी कवियों के इन संग्रहों को जगह मिली थी। उनके पति एक स्कूल में गणित पढ़ाते थे। वह शांत एवं स्नेही व्यक्ति थे। अपने पसंदीदा कवि के नाम पर श्रीला ने अपने छोटे बेटे का नाम कबीर रखा था। डिनर के समय उसने कुछ कविताएं सुनाई थी, और टूना ने कुछ गाने गाए थे। सुनने में आया है कि आजकल श्रीला का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता है। भुवनेश्वर में उसकी माँ रहती है, वह हमारे घर बराबर आती-जाती है। खाना खाने के बाद मैं लौट गया।

श्रीला की कविताओं में आत्मीयता, गंभीर आवेग और सरल अभिव्यक्ति मुझे बहुत पसंद आई। हार्वर्ड से भुवनेश्वर लौटने के बाद अमेरिकी कविता, टोनी मॉरिसन के उपन्यास और अमेरिका में काली संस्कृति के खतरों- ऐसे अनेक विषयों पर श्रीला के साथ पत्र व्यवहार होता रहा, उनकी असामयिक मृत्यु पर्यंत। मैंने अभी भी कविता और साहित्य से संबंधित उन मूल्यवान चिट्ठियों को सुरक्षित रखा है।

अगले दिन टूना के साथ मैं फिर से नियाग्रा प्रपात देखने गया। इससे पहले मैं दो बार नियाग्रा प्रपात देख चुका था। पहली बार कनाड़ा के टोरंटो में अपने एक करीबी दोस्त के घर में कुछ दिन रहते समय हम नियाग्रा देखने गए थे। कनाड़ा की तरफ से नियाग्रा बेहद खूबसूरत लग रहा था। अधिकांश पर्यटकों का मत है कि अमेरिका की तरफ से नियाग्रा सुंदर दिखता है,तब भी कनाड़ा की तरफ से बहुत ज्यादा सुंदर दिखता है। दूसरी बार हार्वर्ड प्रवास के दौरान विश्वविद्यालय आयोजित कार्यक्रम के लिए वॉशिंगटन आया था, उस समय मैंने अपने दो मित्रों के साथ नियाग्रा का दौरा किया था। यह नियाग्रा की मेरी तीसरी यात्रा थी। नियाग्रा से लौटने के बाद टूना के पड़ोसी डॉ अरविंद वाधवा के यहाँ रात्रि-भोज किया। उसमें कई डॉक्टरों को आमंत्रित किया गया था। डॉ॰ भयानी उनमें से एक थे। मुझे पता चला कि वह 'उस अंचल में बहुत प्रसिद्ध डॉक्टर थे। वहाँ से दस किलोमीटर दूर रहने वाले श्री विचित्रानंद कर की बेटी और दामाद भी आए थे। उनकी बेटी श्रीमती महापात्रा स्थानीय कैंसर संस्थान में बायो केमिस्ट थी। अगली सुबह न्यूयार्क के पास के शहर नेवार्क की फ्लाइट थी। विमान से हल्के कोहरे से आच्छादित मैनहट्टन, एम्पायर स्टेट बिल्डिंग और वर्ल्ड ट्रेड सेंटर का नजारा बहुत सुंदर लग रहा था। न्यूयार्क से उड़ान पकड़कर बोस्टन आकर मैं कॉनकॉर्ड एवेन्यू में मेरे अपार्टमेंट में लौट आया। अपार्टमेंट में चाय-नाश्ता कर कुछ समय के लिए मैं अपने सेंटर चला गया, मेरे नाम आए पत्रों को लेने के लिए। फ्रिज में बहुत सारा सामान था, इसलिए मैंने अपना डिनर खुद बनाकर खा लिया, गीत सुनते-सुनते बैठे-बैठे मुझे नींद आ गई।

सैनहोज विश्वविद्यालय, सैन फ्रांसिस्को, मोंटेरी खाडी , रेडवुड नेशनल पार्क और चिमनी वृक्ष

मेरा चौथा व्याख्यान सैनहोज विश्वविद्यालय में था। विश्वविद्यालय के नृतत्व विभाग के प्रमुख डॉ॰ जेम्स फ्रीमैन ने मुझे आमंत्रित किया था। उन्होंने मुझे आने-जाने का हवाई जहाज का किराया दिया था और विश्वविद्यालय के अतिथि गृह में मेरे रहने की व्यवस्था की थी, लेकिन मैंने उन्हें मेरे रिश्तेदार गोपीनाथ बाबू की बेटी और दामाद के घर में रुकने के इरादे के बारे में बताया था। फ्रीमैन अपनी पुस्तक *'अनटचेबल:एन इंडियन लाइफ हिस्ट्री'* के लिए नृतत्व जगत में जाने जाते थे। इस पुस्तक की कथावस्तु भुवनेश्वर के बाहरी इलाके में रह रहे अछूत बौरी परिवार के 40 वर्षीय आदमी मूली की जीवनी पर आधारित थी। बहुत वर्ष पहले

फ्रीमैन ने इस पर शोध किया था। गवेषणा और अध्ययन का मूल प्रतिपाद्य था किसी विशेष व्यक्ति के जीवन इतिहास अर्थात् उस व्यक्ति के जीवन के झरोखे से एक विशेष समाज और उसके आस-पास के बड़े समाज से संबंध का अध्ययन किया जा सकता है।

फ्रीमैन ने दो वर्ष(1970-72) शिमला में अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडियन स्टडीज की वरिष्ठ फेलोशिप के लिए यह गवेषणा कार्य किया था।उन्होंने समय पर सभी आवश्यक आंकड़े एकत्र किए थे, और सन 1976-77 में इस किताब को पूरा किया था। वास्तव में किताब ज्यादातर मूली के जीवन पर आधारित थी। उनकी भाषा में उन्होंने उसके जीवन, उसके चारों ओर की दुनिया और परिवेश संबन्धित सामाजिक संबंधों का वर्णन किया है। पुस्तक के प्रारम्भ में फ्रीमैन ने संक्षेप में मूली के गांव, गांव के विभिन्न परिवारों और वहाँ के पर्यावरण पर चर्चा की है। उसके बाद पूरी किताब मूली के समग्र जीवन(1932-72) पर लिखी गई है। चालीस वर्षों के इस 'आत्मजीवनी' में उसकी युवावस्था की आशा-आकांक्षा और उसके परिवार के उतार-चढ़ाव पर चर्चा की गई है। कहने की जरूरत नहीं है, मूली अपने पूर्व जीवन के इतिहास को अपने अनुभवों से प्रकाशित करता है। फ्रीमैन ने उसके परिवार के सदस्यों और गांव के लोगों के साथ विचार-विमर्श कर काफी जानकारी एकत्र की है।मूली का जीवन 12 करोड़ अनुसूचित जाति के   लोगों का प्रतिनिधित्व करता है, जिन्हें उस समय अछूत माना जाता था। फ्रीमैन की भाषा में, *"यह न केवल भारतीय जाति व्यवस्था की आलोचना है, वरन दुनिया के सभी देशों में प्रचलित सामाजिक असमानता की परतों की आलोचना है।"* प्रो॰जी.टी. पिटसन ने इस पुस्तक के बारे में लिखा हैं: *"भारत के निम्नतम जाति के स्तर का जीवन हमें बुरी तरह से विचलित कर देता है ....शायद ही कभी ऐसा सबसे निष्पक्ष सांस्कृतिक खाता प्रकाशित हुआ हो।"*

हार्वर्ड के आने से पहले ही मैं फ़्रीमेन से परिचित था। हम पहले मिले थे।मैंने बहुत समय पहले फ्रीमैन की किताबें पढ़ी थी और मुझे याद है कि उस पुस्तक में व्यापक आंकड़ों पर आधारित अलग तरह से किया गया सामाजिक विश्लेषण है, जो विशेष सामाजिक रोग की ओर इशारा करता है। मैं फ्रीमैन को तब से जानता था, जब वह भुवनेश्वर में 'कोरा डुबोएस' की ओड़िशा शोध संस्थान में सक्षम प्रोफेसर के रूप में काम कर रहे थे। पुस्तक प्रकाशित होने के बाद वे मेरा मंतव्य जानना चाहते थे और उसके लिए काफी पत्रालाप भी हुआ था। उनकी '*अनटचेबल*' प्रकाशित होने से पहले '*स्कार्सिटी एंड ऑपर्च्यूनिटी इन एन इंडियन विलेज*' *नामक* एक और पुस्तक प्रकाशित हुई थी। इस परिप्रेक्ष्य में उनके विश्वविद्यालय के नृतत्व विभाग में व्याख्यान देने के लिए मैं खुशी से सहमत हुआ था। मेरे व्याख्यान का शीर्षक था: *'जनजातीय जीवन का डाक्यूमेंटेशन- समस्याएं और संभावित समाधान'* ।

आदिवासी समाज में नृत्य और संगीत और इन दोनों से जुड़े विभिन्न अनुष्ठान, त्योहार, पूजा-पाठ,प्रार्थना आदि से अपने जीवन और कबीले के प्रति गहरा लगाव प्रकट करते हैं।उनके जीवन-शैली के मूल-सूत्र इन सभी से गूँथे हुए होते हैं। इन सूत्रों को सूक्ष्मता से देखे बिना आदिवासी जीवन, व्यक्तिगत और समाज के परस्परिक अंतरंग संबंध, कर्म में उनके दृढ़ विश्वास को अच्छी तरह से नहीं समझा जा सकता है। कहने की जरूरत नहीं है, आर्थिक विकास की प्रक्रिया भिन्न-भिन्न समाजों में भिन्न-भिन्न होती है, क्योंकि आर्थिक विकास केवल व्यक्तिगत आय या राष्ट्रीय आय में वृद्धि अथवा पूंजी के उपयोग के विश्लेषण तक ही सीमित नहीं है। कई अन्य चीजें भी महत्वपूर्ण हैं जैसे कि पूंजी-निवेश, अर्थ के प्रति व्यक्ति का दृष्टिकोण, अर्थ का सामाजिक मूल्य आदि। भारत में आज तक आदिवासी लोगों के संगीत, नृत्य, त्योहार और अनुष्ठानों को व्यवस्थित तरीके से

संकलित नहीं किया गया है। विश्लेषण करना तो दूर की बात है, योजनाबद्ध विशद संग्रह और विश्लेषण से आर्थिक विकास के कई मूल्यवान पहलू समझे जा सकते है। दूसरा, विकास के संदर्भ में आदिवासी समाज के संगीत-नृत्य धीरे-धीरे विलुप्त हो रहे हैं। आगामी वर्षों में हमें आदिवासी संस्कृति के इन महत्वपूर्ण पहलुओं को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। यह बेहद जरूरी है कि हम इन सब पर ध्यान दें। विकास की योजनाओं के लिए ये सारी बातें जितनी आवश्यक हैं, उतनी ही सामग्रिक सांस्कृतिक अमूल्य भंडार को सुरक्षित रखने के लिए महत्वपूर्ण है। मैंने अपने व्याख्यान में संगीत, नृत्य, मिथकों, अनुष्ठानों, कहानियों से संबंधित आंकड़ों के नियोजित संकलन और विश्लेषण पर बल दिया था। भारत के संदर्भ में आंकड़ा-संग्रह प्रणाली, संग्रह करने वाली विभिन्न एजेंसियों के बीच आपसी सहयोग, आदिवासी लोगों की जीवन शैली से संबंधित वस्तुओं के पंजीकरण और सूची तैयार करने के बारे में मैंने अपने व्याख्यान में बात उठाई थी, जिन पर व्याख्यान के बाद अलग-अलग दृष्टिकोण से जीवंत चर्चा हुई थी।

इसी बीच फ्रीमेन ने यूएसए के शरणार्थी वियतनामी बच्चों और कैलीफोर्निया के विभिन्न शिविरों में रहने वाले लोगों के जीवन, शिक्षा और सामाजिक स्थिति पर नई किताब लिखी। पुस्तक का शीर्षक था :*'वोइसेस फ्रॉम द कैम्पस"।* वियतनामी विद्वान गुड्एन-डिब हू इस पुस्तक के सह-लेखक थे। यह वाशिंगटन विश्वविद्यालय प्रेस द्वारा प्रकाशित हुई थी। कहने की जरूरत नहीं है, सन 1988 में हार्वर्ड छोड़ने के बाद मैंने जब भी सैनहोज का दौरा किया है, फ्रीमैन से अवश्य मिला हूँ और आधुनिक पुस्तकों पर हमने चर्चा की है। उनके अनुरोध पर वाशिंगटन यूनिवर्सिटी प्रेस ने वियतनामी बच्चों पर आधारित इस पुस्तक को मेरे पास समीक्षार्थ भेजा था। मैंने उसकी समीक्षा की थी।

सैनफ्रांसिस्को:

मैंने पहले ही उल्लेख किया है कि जब मैं सैनहोज विश्वविद्यालय में व्याख्यान देने गया था, तब मैं श्री गोपीनाथ मोहंती के साथ उनकी बेटी और दामाद के घर पर रुका था। उस अंचल में घूमने की हमारी योजना पहले से ही बन चुकी थी। मैं सैनहोज में दस दिनों तक रहा, मेरे व्याख्यान के लिए केवल एक दिन निर्धारित था। बाकी दिनों में हम दो बार सैन फ्रांसिस्को गए। एक बार मोंटेरी खाड़ी इलाके में और दूसरी बार प्रसिद्ध हंबोल्द् रेडवुड जंगल में गए थे। उस समय श्री मोहंती सपरिवार सैनहोज में रहते थे। उस समय गोपी बाबू स्वस्थ थे, हमेशा की तरह विभिन्न स्थानों को देखना उन्हें पसंद आता था। उनकी बेटी अंजलिका लंबे अरसे से वहाँ स्थानीय अस्पताल में डॉक्टर थी, उनके दामाद सूर्य आईबीएम के वरिष्ठ अधिकारी थे। मेरी पत्नी और पुत्र सत्यकाम मेरे से पहले सैनहोज पहुंच गए थे। उन्होंने पहली बार बोस्टन से कनाड़ा के मॉन्ट्रियल का दौरा किया था, अपनी मौसी की बेटी अशोका और उनके पति दिलीप के साथ लगभग एक हफ्ते तक वहां रहे थे। अशोका मैकगिल विश्वविद्यालय में काम करती थी और दिलीप आईबीएम में। मॉन्ट्रियल से ओहियो की राजधानी कैन्टोन में दूसरे रिश्तेदार के घर में चार दिन बिताकर वे सैनहोज पहुंचे थे। हम सभी आस-पास के अंचलों में बहुत घूमे, किसी न किसी के यहाँ खाना-पीना करते और गप्पे हाँकते थे। हमारे घूमने के मुख्य तीन स्थान थे। सबसे पहले, सैन फ्रांसिस्को और उसके आस-पास का इलाका। दूसरा मोंटेरी खाड़ी अंचल और तीसरा प्रसिद्ध हम्बोल्ट रेडवुड प्रदेश। सैनहोज प्रवास और इन स्थानों की यायावरी हार्वर्ड के एक साल की अविस्मरणीय अनुभूतियों में हैं।

प्रवास के दौरान हम दो बार सैन फ्रांसिस्को गए थे, यह सैनहोज से बहुत दूर नहीं था।सुनने में आया कि यहाँ के कई लोग सैन फ्रांसिस्को में काम करते थे या विश्वविद्यालय में पढ़ते थे, मगर वे सैनहोज के आस-पास में रहते थे। द्रुतगामी वाहन आसानी से सस्ते में उपलब्ध हो जाते थे। सैनहोज में घरों का भाड़ा भी बहुत कम था। सैनफ्रांसिस्को कैलिफोर्निया और अमेरिका के पश्चिमी तट का अति संभ्रांत और सुंदर शहर है। समुद्र तट पर कई ऊंची इमारतें होने के कारण हवाई जहाज से सैनफ्रांसिस्को कुछ हद तक हांगकांग या न्यूयॉर्क की तरह दिखता है। सैनफ्रांसिस्को का गोल्डन गेट ब्रिज विश्व-विख्यात है। यह हावड़ा ब्रिज की तरह कैंटीलीवर पुल है अर्थात् पानी के अंदर किसी भी स्तंभ पर टिका हुआ नहीं है। हावड़ा ब्रिज ब्रिटिश शासन के दौरान तैयार हुआ था। गोल्डन गेट ब्रिज प्रशांत महासागर के तट पर अधिक ज्वार-भाटे वाली नदी के मुहाने पर स्थित है। यह पुल बनाना बहुत मुश्किल कार्य था। हावड़ा ब्रिज के निर्माण में ऐसी कोई समस्या नहीं थी, क्योंकि हावड़ा नदी समुद्र से बहुत दूर थी और उसमें ज्वार भी कम आते थे। गोल्डन गेट ब्रिज के निर्माण का इतिहास बहुत अच्छी तरह से लिखा गया है। अमेरिका में इसे असाधारण इंजीनियरिंग विद्या के अद्भूत कौशल के तौर पर माना जाता है। स्टील के कई मोटी रस्सियों से नदी के दोनों किनारों पर बड़े खंभे से झूलते पुल को आकार दिया गया हैं। मैं इस पुल पर कई बार गया हूँ। इस बार हम सभी ने एक साथ पुल के बीचोंबीच जाकर समुद्री ज्वार की लहरें और सूर्यास्त देखने का आनंद लिया। दूर से दिखाई देता है एक छोटा-सा द्वीप। जिसे बेहद अवांछनीय और दुष्ट अपराधियों के रखने के लिए इस्तेमाल किया जाता है, ठीक हमारे अंडमान के 'कालापानी' की तरह। इस द्वीप पर अंडमान की जेल की तरह एक सर्कुलर जेल थी, मगर आजकल अव्यवहृत है। पुल देखने के बाद हमने निकट पार्क में कुछ समय बिताया। पार्क बहुत ही खूबसूरत और सैनफ्रांसिस्को का एक अन्यतम दर्शनीय स्थान था। गोल्डन गेट ब्रिज से नीचे उतरने के बाद हम समुद्र तट पर गए। तेज हवाएँ चल रही थीं। बाद में मुझे पता चला कि यहाँ हमेशा तेज हवाएँ चलती हैं। नदी के मुहाने के एक तरफ सैनफ्रांसिस्को की गगनचुंबी इमारतें थीं तो दूसरी तरफ पर्वतमाला। इसलिए महासागर से आने वाली हवा एक फ़नल में बहती है और उसकी गति तेज हो जाती है। गोल्डन गेट ब्रिज बनाते समय समुद्र की गहराई, ज्वार की ऊंचाई और यह तेज हवा उसके निर्माण में अनेक मुश्किलें पैदा कर रही थी। विक्रम सेठ ने गोल्डन गेट ब्रिज पर काव्य-शैली में एक उपन्यास लिखा है। समुद्री तट पर सैनफ्रांसिस्को के मशहूर मछुआरे की दुकानें (ग्रोटो) स्थित हैं, जहां विभिन्न प्रकार के समुद्री भोजन तैयार किए जाते हैं। यह जगह हमेशा सैकड़ों पर्यटकों से भरी रहती है। चारों तरफ विभिन्न समुद्री भोजन की खुशबू महकने लगती है। मैंने पहली बार विशाल कड़ाई और हांडी में केकड़ों की बहु पाकप्रणाली देखी। ये सब खाना पकाने का काम खुले स्थान में किया जाता है और दर्शकों के देखने पर रेस्तरां वालों को कोई आपत्ति नहीं है,बल्कि वे उन्हें इस हेतु उत्साहित करते हैं। शायद दर्शकों की भूख बढ़ाने का उद्देश्य उसमें निहित है। विभिन्न आकार के केकड़ों के अलावा झींगा मछली, बड़ी मछली, जो हमने कभी नहीं खाई। ऐसी कई प्रकार की मछलियाँ और अनेक प्रकार के ओएस्टर पकाए जाते हैं। समुद्री हवा का आनंद लेते हुए पर्यटक सब-कुछ खा लेते हैं। हमने भूनें लॉबस्टर और विशेष शैली में पकाए झोल रहित स्वादिष्ट केकड़े खाए।

चाइनाटाऊन सैनफ्रांसिस्को की अन्यतम खूबसूरत जगह है। अमेरिका के पश्चिमी तट पर लगभग सभी शहरों में चीनी बस गए थे। चाइनाटाऊन चीनी संस्कृति, चीनी परिधान, घरों की विशिष्टता और सबसे ज्यादा चीनी खाद्यों ने हमें मंत्र-मुग्ध कर दिया था। शहर की अधिकांश रास्तों से समुद्र देखा जा सकता है। सबसे आकर्षक रास्ता है जो सर्पिलाकार पांच सौ फीट नीचे उतरा है। उसके हर मोड़ पर खूबसूरत लॉन और फूल उद्यान

हैं।रास्ते का नाम है लोम्बार्ड, जिसके शीर्ष पर खड़े होकर कई बार हमने नीचे देखा और जिसके नीचे खड़े होकर हमने कई बार ऊपर देखा।आती-जाती कारों के दृश्य और फूलों की शोभावली अविस्मरणीय थी। शहर के अन्य प्राचीन क्षेत्रों में घूमने के बाद हम उस दिन वापस लौट आए।

दूसरी बार सैनफ्रांसिस्को में हमने स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय और खाड़ी के पुल के उस तरफ बर्कले के कैलिफ़ोर्निया विश्वविद्यालय का दौरा किया। स्टैनफोर्ड दुनिया का एक अग्रणी विश्वविद्यालय है। पश्चिमी तट का यह प्रसिद्ध विश्वविद्यालय अमेरिका के पूर्वी तट के हार्वर्ड , येल और प्रिंसटन विश्वविद्यालयों की कोटी का गिना जाता है। स्टैनफोर्ड के अलावा पश्चिमी तट पर बहुत प्रसिद्ध और विशाल कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय है, जिसकी शाखाएं विभिन्न स्थानों पर फैली हुई हैं। उन शाखाओं में बर्कले सबसे प्रसिद्ध हैं। अन्य प्रसिद्ध शाखाओं में सांता क्रूज़, लॉस एंजिल्स, सैनडीगो और रिवरसाइड के नाम आते हैं। बर्कले और स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालयों की युगलबंदी हार्वर्ड और एमआईटी के विश्वविद्यालयों की तरह है। मैंने पहले भी स्टैनफोर्ड देखा था। इस बार मेरे साथ थे मेरी पत्नी, मेरा बेटा सत्यकाम और सैनहोज के मेरे अन्य रिश्तेदार थे। स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय के प्रवेश द्वार के दोनों किनारों पर मोटी पत्तियों वाले छोटे खजूर के पेड़ों की कतारें लगी हुई थी। प्रवेश द्वार पर पांच खूबसूरत कांस्य मूर्तियां लगी हुई थीं। विश्वविद्यालय की इमारतों का निर्माण पारंपरिक शैली में हुआ हैं। स्टैनफोर्ड हार्वर्ड , कैम्ब्रिज और ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय की तरह परंपरा बचाए हुए हैं। मैं बहुत भाग्यशाली हूँ, हार्वर्ड से लौटने के बाद मैंने कैम्ब्रिज में एक साल बिताया था। उस दौरान मैं कई बार ऑक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय देखने गया था।उस समय प्राणनाथ पटनायक के सुयोग्य पुत्र श्री प्रभात पटनायक ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में रोड्स स्कॉलर के रूप में पढ़ रहे थे। अब वह भारत के अग्रणी अर्थशास्त्रियों में गिने जाते हैं। इस तरह हार्वर्ड के नजदीक मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एमआईटी) और चार्ल्स के नदी की दूसरी तरफ स्थित बोस्टन विश्वविद्यालय से भी कुछ संपर्क स्थापित होने लगा था। ये तीनों विश्वविद्यालय हमेशा अपने उच्च मानकों और अपने स्वातंत्र्य को बचाए रखने में सतत प्रयासरत रहे हैं। स्टैनफोर्ड, हार्वर्ड या ऑक्सफ़ोर्ड की तरह पुराना नहीं है, मगर एमआईटी को दुनिया के प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों में से एक माना जाता है।

जब हम स्टैनफोर्ड की यात्रा पर थे, उस समय सर्दी का मौसम था। मुख्य प्रवेश द्वार के सामने फूलों के इतने सारे बगीचे देखकर हम बहुत आनंदित थे। विश्वविद्यालय के विभिन्न विभाग, विशाल पुस्तकालय, प्रशासनिक ब्लॉक, सीनेट हॉल, सिंडिकेट हॉल- ये सब हमने घूम फिरकर देखे थे।स्टैनफोर्ड बिजनेस स्कूल हार्वर्ड बिजनेस स्कूल और केलॉग बिजनेस स्कूल की तरह विख्यात है, जो विश्व के कोने-कोने से छात्रों को अपनी ओर आकर्षित करता है। स्टैनफोर्ड के खगोल भौतिकी, अंग्रेजी साहित्य और इतिहास विभाग ने विशिष्ट ख्याति अर्जित की है। स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय के अंदर स्टैनफोर्ड बुक शॉप है।यहां स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी के अपने प्रकाशन, दुनिया के अन्य अग्रणी विश्वविद्यालयों की प्रकाशित पुस्तकों के साथ-साथ कई अन्य किताबें भी मिलती हैं। जिस तरह अमेरिका के सभी प्रमुख विश्वविद्यालयों जैसे हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, शिकागो यूनिवर्सिटी प्रेस की अपनी प्रिंटिंग प्रेस है, उसी तरह स्टैनफोर्ड का अपना प्रकाशन विभाग और प्रिंटिंग प्रेस है। यह भी ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस या कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस की तरह ही प्रसिद्ध हैं। मैंने स्टैनफोर्ड बुक शॉप से कई किताबें खरीदी थीं। इसके अलावा, मैंने चार अमेरिकी-इंडियन संगीत एल्बम खरीदे थे।

उन्हें वैज्ञानिक तरीके से संकलित किया गया था। स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी की देखरेख में चार विभाग थे, अर्थात् मूल: चक्र, मौसम और युद्ध के गाने और नृत्य। खगोल भौतिकी विभाग द्वारा विश्वविद्यालय के नजदीक पहाड़ी की चोटी पर एक केंद्र की स्थापना की गई थी, जहां से एक बड़ी दूरबीन की सहायता से शोध-कार्य किया जाता है।

स्टैनफोर्ड से खाड़ी पुल पार करते हुए दूसरी तरफ बर्कले के कैलिफ़ोर्निया विश्वविद्यालय में गए, जिसे संक्षिप्त में यूसीबी अर्थात् यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया,बर्कले कहा जाता है। ठीक उसी तरह यूसीएलए का मतलब होता है यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया, लॉस एंजिल्स। स्टैनफोर्ड का सौंदर्य एक तरह का है तो बर्कले का दूसरी तरह का। ऊंची-नीची भूमि पर विभिन्न परिसर, प्रशासनिक ब्लॉक, छात्रावास आदि का निर्माण किया गया है। हार्वर्ड की तरह बर्कले का भी नृतत्व विज्ञान, समाजशास्त्र और भौतिकी में बहुत नाम है। नृतत्व विभाग की मेरी सहेली श्रीमती रूथ इंजेज-हेन्ज़ से मुलाक़ात हुई थी। यह भद्र जर्मन महिला लंबे समय से इंडोनेशिया, म्यांमार और अन्य दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों में काम कर रही थी। 'एशियन एंथ्रोपोलोजी ग्रुप' नामक छोटी समाचार पत्रिका की वह संपादिका थी। लगभग एक साल पहले उन्होंने बर्कले में पांचवे अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया था, जिसकी थीम थी *'शामनिज्म एंड अल्टरनेटिव मोड्स ऑफ़ हीलिंग'* । मुझे भी इसके लिए निमंत्रण मिला था, मगर मैं उसमें शामिल नहीं हो पाया था। लेकिन सम्मेलन में मेरे आलेख *"इनवोकेशन एंड रूरल हीलिंग इन संथाल सोसायटी"* का मेरी अनुपस्थिति में पाठ हुआ था और पुस्तकाकार प्रकाशित निबंधों में संकलित भी। यूसीबी के नृतत्व विभाग में श्री एफ॰जी॰बेली ने कुछ वर्षों तक अध्यापन कार्य भी किया था। ओड़िशा के फूलबानी जिले के बिशापाड़ा गांव पर लिखी उनकी पुस्तक काफी प्रसिद्ध है। बर्कले घूमने के बाद हम लौट आए।

मोंटेरी खाड़ी :

हमने दूसरे दिन मोंटेरी का दौरा किया। मोंटेरी खाड़ी अमेरिका का सबसे बड़ा समुद्री अभयारण्य है। कहा जाता है कि इस अर्द्ध चंद्राकार अभयारण्य में विश्व में सबसे ज्यादा समुद्री जीव पाए जाते है। कैलिफोर्निया और अमेरिका के इतिहास में मोंटेरी का एक विशेष स्थान है। कोलंबस के अमेरिका पहुंचने के पचास साल बाद जुआन रोड्रिग्ज नामक स्पेनिश अंचल में सन 1542 में आया था, उसने इस जगह का नाम मोंटेरी पॉइंट्स रखा था। मैक्सिको के वायसराय के अधीन पहली स्पैनिश कॉलोनी बनी। स्वास्थ्यप्रद जलवायु, उपजाऊ मिट्टी और घने जंगलों के लिए यह जगह प्रसिद्ध हो गई। उस समय समग्र कैलिफ़ोर्निया मेक्सिको के अधीन था। सन 1821 में मेक्सिको की स्पेन से स्वतंत्रता की घोषणा के बाद मोंटेरी कैलिफोर्निया की राजधानी बन गई। उन दिनों से यहाँ नौसैनिक स्नातकोत्तर स्कूल, तट रक्षक केंद्र और रक्षा विभाग के भाषा संस्थान संचालित हो रहे हैं। मोंटेरी के विभिन्न अंचलों में घूमने का हमने निर्णय किया। सैनहोज से मोंटेरी तक जाने वाली सड़क बहुत चौड़ी है। सड़क के दोनों किनारों की मिट्टी बहुत उपजाऊ है। वहाँ हमने शतावरी और एवोकैडो की खेती के लिए बड़ी-बड़ी क्यारियाँ देखी। मोंटेरी छोटा शहर है। समुद्र तट से शहर के मछह लीघर, पार्क और अन्य ऐतिहासिक स्थानों की ओर जाने वाले रास्ते को 'सत्रह मील' कहा जाता है। मोंटेरी के अधिकांश महत्वपूर्ण स्थान इस सड़क के किनारे स्थित हैं। मोंटेरी कोस्ट पर एक अद्भुत तितली दिखाई दी,जिसे *'मोंटेरी बटरफ्लाई'* कहा जाता है। सर्दियों में भारी तादाद में दिखाई देती है। वे सर्दियों में देवदार के पेड़ पर रहती हैं। सर्दियों में वहाँ जाने के कारण हमें एक और अद्भूत दृश्य देखने को मिला। इस समय इस अंचल के बच्चे खुद तितलियों

की तरह कपड़े पहनकर 'तितली परेड' करते हैं। सुना हूँ, ये तितलियाँ बहुत दूर कनाड़ा और अलास्का से यहाँ पर आती थीं । हमारे घूमने के दिन मौसम बहुत अच्छा था। तितलियां पेड़ों की शाखाओं को छोड़कर चारों ओर उड रही थी। उनके पंखों का रंग नारंगी था, भारी तादाद में वे उड़ रही थीं। वास्तव में, यह दृश्य अविस्मरणीय था। मुझे पता चला कि मौसम अच्छा नहीं होने पर वे पेड़ की शाखाओं पर बैठ जाती हैं। मोंटेरी तट पर पाए जाने वाले कुछ देवदार के पेड़ पृथ्वी पर सबसे पुराने हैं। प्रशांत महासागर से ऊपर उठने वाले हल्के कोहरे से देवदार के वृक्षों के विकास और उन्हें लंबे समय तक जीवित रखने में मदद मिलती हैं। मोंटेरी से कैलिफोर्निया के उत्तर में प्रशांत महासागर का तटीय देवदार जंगल कैलिफोर्निया का अन्यतम चित्ताकर्षक दृश्य है। कार्नेमल नामक एक छोटी-सी नदी मोंटेरी से होकर बहती है। समुद्र तट पर प्रशांत ग्रोव, मोंटेरी पब्लिक लाइब्रेरी और मेरीटाइम संग्रहालय देखने के बाद हम अमेरिकी कवि रॉबिन्सन जेफर के घर गए। घर का नाम *'टोर होम'* था। रॉबिन्सन को प्रशांत महासागर के तट और मोंटेरी से बहुत प्यार था। वह घर उसने खुद तैयार किया था। घर समुद्री तट से थोड़ी ऊंचाई पर स्थित था। लगभग दो सौ फुट नीचे उतरने से समुद्र। रॉबिन्सन ने समुद्र तटीय चट्टानों से खुद अपना घर बनाया था और नाम रखा था *'टोर होम'* । इस घर में ही उन्होंने अपनी अधिकांश कविताएं लिखी थीं। उनकी कविताओं का कई भाषाओं में अनुवाद हुआ है। चीन और मिस्र भाषा में अनूदित होने के बाद उनके कुछ प्रिय पाठकों और प्रशंसकों ने उनके लिए *चीन की महान दीवार* और *मिस्र के पिरामिड* से पत्थर लाकर उन्हें अपने घर में लगाने के लिए उपहार स्वरूप दिए थे। उनके घर में लगे पत्थर के वे टुकड़े अब पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। हमने वहां कुछ समय बिताया, घर के पास बैठकर महासागर दर्शन का यह आनन्ददायक अनुभव था। रॉबिन्सन ने सन 1919 में यह घर बना लिया था। उन्हें मोंटेरी और देवदार के जंगलों से इतना प्यार था कि वह मृत्यु-पर्यंत (1962) तक सपरिवार उस घर में रहा। अब वहाँ एक स्मारक बन गया है, जिसका संचालन *'रॉबिन्सन जेफर टोर हाउस फाउंडेशन'* द्वारा किया जाता है। यह अमेरिका के ऐतिहासिक स्थानों के राष्ट्रीय रजिस्टर में शामिल है। असंख्य समुद्री जीव मोंटेरी खाड़ी में रहते हैं और ऐसा कहा जाता है कि इतने समुद्री जीव दुनिया के किसी भी दूसरे अंचल में नहीं देखे जा सकते है। मोंटेरी में सत्रह-मील रास्ते पर घूम-घूमकर हमने कई दर्शनीय स्थान देखे। उनमें 'पेसेफिक ग्रोव' अंचल बहुत ही आकर्षक है। इस अंचल में बहुत सारे प्रसिद्ध मोंटेरी देवदार पेड़ों को देखा जा सकता है। *पेबल बिच* और कार्मेल नदी समुद्र में जहां गिरती है, उस मुहाने के पास ही बिच है। यहाँ समुद्री काई बहुत मात्रा में किनारे तक आ जाती है। उसे समुद्री काई न कहकर समुद्री लता कहना उपयुक्त होगा। समुद्री पानी में तैरती इस लता के जमावड़े में विभिन्न समुद्री जीव रहते हैं। विशेष प्रकार की यह लता समुद्र तट से लगभग एक किलोमीटर तक फैली हुई है, जैसा सुनने को मिला।

मोंटेरी से अलविदा लेने से पहले हम वहाँ के मशहूर एक्वैरियम देखने गए। यह कोई साधारण मछह लीघर नहीं है। इस विशाल मछह लीघर में मोंटेरी खाड़ी में पाए जाने वाले अनेक समुद्री जीव रखे गए हैं। वास्तव में, सब-कुछ देखने के लिए बहुत समय चाहिए। सीमित समय में जितना कुछ देख सकते थे, उतना हमने देखा।

श्री गोपीनाथ मोहंती हमारे साथ थे। उनकी बेटी और दामाद ने मुझे बताया कि उनको मोंटेरी (रॉबिन्सन जेफर की तरह ?) बहुत अच्छा लगता है और एक-दो बार वहाँ गए भी हैं। मोंटेरी समुद्र तट पर उनका व्यवहार कुछ हद तक एक छोटे बच्चे की तरह था। प्रचुर मात्रा में खाद्य पैकेट खरीदकर उन्होंने लगभग आधे घंटे तक समुद्री सारसों को खिलाया था। बहुत सारे सारस खाद्य पाने के लिए उनके सिर के इर्द-गिर्द उड़ रहे थे। यह दृश्य मैं कभी नहीं भूल पाऊँगा।

<u>रेडवुड राष्ट्रीय उद्यान और चिमनी पेड़:</u>

अमेरिकी दर्शनीय स्थानों में प्रशांत महासागर के तट पर रेडवुड पेड़ों का एक विशाल अंचल है। इस अंचल में कई राष्ट्रीय और राज्य पार्क देख सकते हैं। सैन फ्रांसिस्को के उत्तर में प्रशांत महासागर के निकट इस अंचल को रेडवुड का साम्राज्य कहा जाता है। यहां पर सब-कुछ घूम कर देखने में बहुत समय लगेगा, क्योंकि यहां छोटी-छोटी झीलें, जंगली जानवरों को देखने और पर्यटकों के लिए होटल तथा अन्य सुविधाएं हैं। फिर भी गोपीनाथ बाबू के दामाद सूर्य पटनायक ने एक दिन में देखी जाने वाली चीजों की एक सूची तैयार की। भोर-भोर बहुत जल्दी हम सैनहोज से रवाना हो गए। यह रास्ता सैन फ्रांसिस्को की दायीं तरफ से होते हुए उत्तर की ओर जाता है। इस मार्ग का वानस्पति नाम '*सेक्वाइया सेमपर्विरेंस*' है, जिसका अर्थ है-'चिरंजीवी'। जब डायनोसर इस पृथ्वी पर विचरण करते थे, उस समय एक द्रुम का जन्म हुआ, जिसे कहा जाता है 'रेडवुड'। हालांकि साढ़े पांच करोड़ साल बीत चुके हैं,फिर भी 'रेडवुड' के नाती,पडनाती और उनके वंशज अभी तक बचे हुए हैं । इस अद्भूत अंचल में घूमने का अवसर पाकर मैं बहुत खुश था। इस सजीव जगत में रेडवुड वास्तव में विस्मयकारी है। विशाल तने वाले उस पेड़ के छोटे-छोटे बालों वाला गगनचुंबी मुकुट देखकर विस्मय होता है। एक समय था, जब रेडवुड जंगल उत्तरी गोलार्द्ध के अनेक विस्तृत अंचलों में फैला हुआ था। हालांकि बाद में जलवायु परिवर्तन के कारण अधिकांश प्राचीन रेडवुड जंगल लुप्त हो गए। अब उनके वंशज पृथ्वी पर तीन क्षेत्रों में देख सकते हैं। पहला, सबसे प्रसिद्ध और विस्तृत अंचल है अमेरिका के कैलिफोर्निया और ओरेगन की तटीय आर्द्र जलवायु वाले रेडवुड। दूसरा, सिएरा अंचल में बहुत बड़े और बहुत दुर्लभ रेडवुड। तीसरा, चीन के कुछ सीमित क्षेत्रों में कुछ दुर्लभ रेडवुड हैं।

सबसे पहले हम रेडवुड नेशनल पार्क के फाउंडर्स ग्रोव में गए। प्रसिद्ध अमेरिकन व्यक्ति *हंबोल्ट्ट* इस क्षेत्र में 1917 में पहली बार आए थे और वे इस रेडवुड फ़ॉरेस्ट देखकर आश्चर्यचकित हुए थे। उस समय रेडवुड फ़ॉरेस्ट का संरक्षण काफी सुस्त था। भावी पीढ़ी हेतु रेडवुड पेड़ों के संरक्षण के लिए उन्होंने '*सेव द रेड्वुड लीग*' नामक संस्था खोली। संस्थापक ग्रोव के अदम्य उत्साह और अप्रतिम प्रयासों के कारण पहले ग्रोव के रूप में इसकी स्थापना हुई और इसका नाम *हंबोल्ट्ट रेड्वुड स्टेट* पार्क रखा गया था। लीग ने इसे 1921 में खरीदा। वर्तमान में एक लाख सत्तर हजार एकड़ जमीन रेडवुड जंगलों के लिए संरक्षित है। लीग के एक अधिकारी ने हमें बताया कि इसके संरक्षण के लिए किस तरह लीग को 6 करोड़ डॉलर का अनुदान मिला है। इस विस्तृत अंचल में पच्चीस कैलिफोर्निया राज्य पार्क, एक रेडवुड नेशनल पार्क और एक सेक्वाइया राष्ट्रीय उद्यान हैं। हमने पहले राज्य पार्क में प्रवेश किया, जिसका नाम था 'हम्बोल्ट रेडवुड'। इस अंचल में दुनिया के सबसे बड़े पेड़ों का समाहार है। सबसे पहले हम संस्थापक का पेड़ देखने गए। वृक्ष का नाम डायरेविल्ले जायंट है। लगभग दो हज़ार साल पूरे करने के बाद 24 मार्च 1991 को इस पेड़ को पूरी तरह से उखाड़ा गया। मगर जब हमने यह पेड़ देखा था, उस समय यह खड़ा था। पेड़ 370 फीट लंबा था। गर्दन झुकाकर यथा संभव कोशिश करने के बाद भी हम पेड़ के ऊपरी हिस्से को नहीं देख पाए। वृक्ष का व्यास सत्रह फीट था और परिधि पैंतीस फीट। अमेरिका के वन विभाग ने इसका 'चैंपियन' नाम दिया था। इसकी ऊंचाई नियाग्रा प्रपात से लगभग दो फीट ज्यादा थी और ऐसे पैंतीस मंजिला इमारत से भी ज्यादा। मैं इस विशाल वृक्ष को देखने के लिए फिर से 2003 में वहाँ गया था। पेड़ पहले ही उखड़ चुका था और चार साल से जमीन पर ऐसे ही सो रहा था। पार्क के एक गाइड ने कहा कि लगभग एक मील दूर तक उस पेड़ के गिरने की भयानक आवाज सुनाई पड़ी थी।उसे आँखों देखी भंयकर ट्रेन दुर्घटना याद आने लगी। उसने कहा कि पेड़ कब गिरा, उखड़ी हुई जड़ों से पचास फीट दूर एक और पंद्रह

फीट ऊंचा रेडवुड पेड़ गिरा। असहाय भाव से जमीन पर गिरे इस प्राचीन पेड़ के दोनों किनारों पर खड़े होकर मेरे और सूर्य के लिए एक-दूसरे को देखना संभव नहीं था। उसके बाद हम रेडवुड पेड़ के तने से बने एक प्रसिद्ध घर को देखने गए, जिसका नाम था *'वन-लॉग-हाऊस'*। नीचे गिरे रेडवुड के तने में यह घर सन 1946 में बनाया गया था। पेड़ 2,100 साल पुराना था और घर के निर्माण में इस्तेमाल हुए तने के हिस्से का वजन 42 टन था। दो लोगों ने अपने अथक प्रयास से आठ महीने तक तने में सात फीट ऊंची और बत्तीस फुट लंबी जगह खोदी। प्रति व्यक्ति एक डॉलर प्रवेश शुल्क देकर हमने इस घर में प्रवेश किया। घर में प्रमुख दो कमरे थे। पहला ड्राइंग रूम और उसके पीछे बेडरूम । ड्राइंग रूम में उसी तने की लकड़ी से दो सोफे बनाए गए थे। सोफे चिकने और पॉलिश किए हुए थे। ड्राइंग रूम और बेडरूम के प्रवेश द्वार खुले थे। बेडरूम के दो बेड भी उसी तने की लकड़ी से बनाए गए थे। मेरी लंबाई साढ़े पांच फीट होने के कारण सात फीट ऊंचे घर में चलते समय सिर झुकाना नहीं पड़ा था। घर के बाहर लिखा हुआ था इसे बनाने वाले दो कारीगरों के नाम, जिन्होंने केवल आठ महीने की अवधि में इसे बनाया था। मुझे याद आ गए 1,200 मिस्त्री, जिन्होंने बारह साल में कोणार्क मंदिर का निर्माण किया था।

उसके बाद हम एक विशाल रेडवुड देखने गए, जिसका नाम था *'चिमनी ट्री'*। यह मूल से बहुत ऊंचा पेड़ था, मगर बीच में से यह टूट गया था और उस जगह से कई नई शाखाएं फूट निकली थीं। पर्यटकों को वे इसे जीवंत चिमनी के रूप मेंदिखाते हैं। मिट्टी स्तर पर तने को काटकर उन्होंने एक प्रवेश द्वार बनाया है, भीतर में चूल्हा जलाकर पेड़ के ऊपर से धुआं निकलने की व्यवस्था है। इस प्रकार, यह वास्तव में एक जीवंत चिमनी है, क्योंकि पेड़ जीवित है। तने के अंदर लोगों के उठने-बैठने के लिए विराट जगह बनाई गई है। वहां बैठकर कोई भी जलता हुआ चूल्हा देख सकता है। जीवित पेड़ के ऊपर से धुआं निकलते हुए देखना आमोददायक दृश्य था।

उसके बाद हमने सबसे आकर्षक 'ड्राइव-थ्रू' पेड़ को देखा। जमीन पर तने की परिधि इतनी बड़ी है कि कारों के आवागमन के लिए तने के भीतर एक सड़क बनाई गई है। सूर्य हमें अपनी कार में बैठाकर आनंदपूर्वक दूसरी तरफ ले गया। पेड़ के भीतर कार लेकर जाने की वास्तव में विचित्र अनुभूति थी। इसी कारण कि कई कारें वहाँ पर कतारबद्ध खड़ी थीं। पास वाले रेस्तरां में कुछ नाश्ता खाकर हम नजदीक ईल नदी के तट पर गए। कंकड़ और छोटे पत्थरों से भरी इस संकीर्ण नदीके तट पर हाथ-मुंह धोना बहुत अच्छा लगा। नदी के तट पर रखे लकड़ी के बेंचों पर कई अन्य पर्यटक बैठे हुए थे। हमने अपने साथ लाई खाद्य सामग्री को बैग से बाहर निकाल कर मध्याह्न भोजन वहीं कर लिया। उसके बाद हम ‘एवेन्यूऑफ जियांट्स’ देखने गए। पेड़ों के बड़े आकार या आयतन के कारण उन्हें ' जियांट्स' या असुर नाम दिया गया है। रास्ते का नाम सुनकर मन ही मन समझ गया यह वास्तव में असुरों की ‘बड़दांड’ है। पेड़ों को देखते-देखते हम बहुत दूर तक गए। हम पेड़ों के शीर्ष भाग को देखने के लिए गर्दन पीछे करने लगे, फिर भी आसानी से वह भाग नहीं दिख रहा था। लोगों के बैठने के लिए सड़क के किनारे बैंच लगे हुए थे। थकान मिटाने के लिए हम भी इधर-उधर बेंच पर बैठ गए। उस दिन रेडवुड साम्राज्य की इतनी परिक्रमा पूरी की। इस जगह को छोड़ने से पूर्व रेडवुड के जादू के बारे में मुझे प्रसिद्ध उपन्यासकार जॉन स्टीनबेक की पंक्तियाँ याद आ गई, *"जिसने भी एक बार रेडवुड देखा, उसके मन में हमेशा के लिए उसकी अमिट छाप रह जाएगी, जिससे पैदा होगी एक नीरवता और भय मिश्रित आश्चर्य। रेडवुड की उपस्थिति में सबसे अप्रिय मनुष्य भी आश्चर्य और सम्मान के जादू में डूब जाता है ।"*

रेडवुड साम्राज्य से लौटते समय हम प्रशांत महासागर के किनारे कुछ दूरी तय कर मुख्य रास्ते को पकड़ा। सैनहोज पहुंचते-पहुँचते शाम हो गई थी।

बर्मिंघम विश्वविद्यालय, फ्लोरिडा, फिर से न्यू ऑरलियन्स

अलबामा विश्वविद्यालय (बर्मिंघम) के नृतत्व विभाग ने मुझे नृतत्व विषय पर व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया था। नृतत्व विभाग की प्रमुख श्रीमती जेन क्रिश्चियन अमेरिका के नृतत्व क्षेत्र में सुप्रसिद्ध नाम है। पारस्परिक चर्चा के बाद यह निर्णय लिया गया कि मैं *'राष्ट्र शक्ति और गोष्ठी संस्कृति: संघर्ष और सहयोग'* विषय पर अपना व्याख्यान दूंगा। कहने की जरूरत नहीं है, अब विश्व में अनेक प्रबुद्ध लोग इस विषय पर शोधरत हैं। विभिन्न अंतरराष्ट्रीय सेमिनारों में इस विषय पर चर्चा की जाती है। मैं इस संबंध में भारत के आदिवासी समाज की आशा, आकांक्षा और उनके राजनीतिक-आर्थिक प्रभावों पर कुछ काम कर रहा था। अमेरिका के अल्प-संख्यक प्राचीन आदिवासी अर्थात् अमेरिकी-इंडियन की अपना स्वतंत्र राज्य बनाने की इच्छा नहीं है और न ही वे किसी भी ऐसे मुद्दों पर कभी भी आंदोलन करते हैं,यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है। मगर भारत के प्रमुख आदिवासी समुदायों ने अपनी व्यक्तिगत पहचान स्थापित करने की कोशिश की है और वे राजनीतिक और आर्थिक शक्ति प्राप्त करने लिए काफी सचेत हैं। मानवविज्ञानी इन्हें जातीय और सांस्कृतिक पहचान की अभिव्यक्तियों के रूप में स्वीकार करते हैं।

व्याख्यान के प्रारम्भ में मैंने राज्य सत्ता की संप्रभुता और दो सौ वर्षों के इतिहास में इस संप्रभुता के क्रामिक अवक्षय विषय पर चर्चा की थी। फ्रांसीसी क्रांति के बाद उन्नीसवीं शताब्दी में कई सार्वभौम और शक्तिशाली देशों का अभ्युदय हुआ था, मगर स्थिति धीरे-धीरे बदलने लगी। बांग्लादेश को पाकिस्तान से अलग करना संभवतः ऐसा पहला उदाहरण है। बांग्लादेश के लोग भी मुसलमान थे,लेकिन उनकी भाषा बंगला थी। यह आरोप लगा कि बंगला भाषा की राष्ट्र शक्ति द्वारा उपेक्षा की गई है। समसामयिक राजनीतिक विश्लेषकों का मानना था कि इस आरोप में मोटामोटी सच्चाई थी। इसके अलावा, बांग्लादेश की भौगोलिक दूरी और केंद्रीय सरकार द्वारा आर्थिक उपेक्षा ने अलगाववाद की भावनाओं को जन्म दिया। मुख्यत: बंगाली भाषा आंदोलन बांग्लादेश के निर्माण का मुख्य कारण बना। इसी तरह सोवियत संघ से एशियाई इस्लामिक रिपब्लिक, यूक्रेन और जॉर्जिया अलगाववाद के अभ्युदय होने के कारण अलग-अलग राष्ट्र बन गए थे। सोवियत संघ छोटे-बड़े ग्यारह विभिन्न देशों में विघटित हो गया था। इसके कुछ साल बाद यूगोस्लाविया पांच अलग-अलग देशों में विभाजित हो गया था। इन सभी स्वतंत्र देशों के गठन के पीछे सिर्फ एक ही कारण था। देश की भौगोलिक सीमाओं के भीतर रहने वाले विभिन्न सांस्कृतिक और नृतात्विक समूह अपने आज़ादी की मांग करने लगे और एक दिन वे शक्तिशाली देश उन्हें मानने के लिए मजबूर हुए। भारत में ऐसी मांगों का मतलब यह नहीं है कि संबंधित समूह या समुदाय संघीय सरकार से अलग होना चाहते हैं, लेकिन संघीय गणराज्य के भीतर धीरे-धीरे अपने जातीय समूहों के आधार पर अलग-अलग राज्यों की मांग बढ़ने लगी है। भाषा के आधार पर सन 1956 में राज्यों का गठन किया गया था। वर्तमान में नए राज्यों के गठन की मांग में भाषा समेत अन्य सामाजिक, सांस्कृतिक और नृतात्विक कारण भी जोड़े गए हैं।

उस समय तक झारखंड और छत्तीसगढ़ अलग राज्य नहीं बने थे, मगर धीरे-धीरे उनकी मांग बढ़ रही थी। बिहार से अलग होकर झारखंड राज्य के गठन की मांग के पीछे संथाली और मुंडारी आदिवासियों की राजनीतिक और सांस्कृतिक जागरूकता और भाषागत विभेदता प्रमुख कारण थे। मैंने अपने व्याख्यान में इन सब पर चर्चा के

दौरान संथाली भाषा के प्रमुख विद्वान पंडित रघुनाथ मुर्मू की रचनाओं का उल्लेख किया था। रघुनाथ मुर्मु खुद शिक्षक थे लेकिन उन्होंने संथाल लिपि 'अल्चिकी' की खोज की थी और उसी लिपि में उन्होंने 'बिदुचंदन' और 'खहरुवाल बीर' नामक दो नाटकों की रचना की थी। इसके अतिरिक्त, उन्होंने संथाली प्रार्थना, मंत्र 'बाखणे' संग्रह कर प्रकाशित किये थे तथा प्राथमिक शिक्षा के लिए छात्रों और शिक्षकों के लिए छोटी-छोटी किताबें भी लिखी थीं। संथाली संस्कृति के पुनर्मूल्यांकन के वह जनक थे। अलग राज्य झारखंड की बढ़ती मांग में पंडित रघुनाथ मुर्मू का सबसे बड़ा योगदान था। इस तरह मेरा व्याख्यान सार्वभौम राष्ट्र शक्ति और धीरे-धीरे सांस्कृतिक नृतात्विक समुदायों के भीतर बढ़ते संघर्षों पर केंद्रित था। नृतत्व विभाग के प्रोफेसरों और छात्रों ने मेरे व्याख्यान के अंत में कई सवाल पूछे, इस विषय की अलग-अलग दृष्टिकोण से चर्चा हुई ।

अलबामा प्रदेश की राजधानी बर्मिंघम के माइल्स कॉलेज में अध्यापन कर रहे मेरे मित्र श्री दिगंबर मिश्रा के घर में ठहरा था। विश्वविद्यालय में व्याख्यान देने आने से पहले उन्होंने मुझे उनके साथ रहने का वचन लिया था।

आपसी मुलाक़ात हेतु उन्होंने लुसियाना स्टेट यूनिवर्सिटी के अंग्रेजी प्रोफेसर श्री सुर प्रसाद रथ को सपत्नीक अपने वहाँ आमंत्रित किया था। सपरिवार दोनों दोस्तों को मिलकर मुझे बहुत खुशी हुई। हम सब कार से चार दिन के लिए फ्लोरिडा गए थे। सुर और उनका परिवार (मंजू, चाना और गिटी), दिगंबर और उनकी पत्नी ज्योत्स्ना, बेटा अनुप, बेटी लिकुन और मैं- इस तरह हम आठ लोग सुबह सात बजे दो कारों से रवाना हुए। रास्ते में भिन्न-भिन्न स्थान मॉन्टगोमेरी, टालाहासी आदि को पार करते हुए शाम को लगभग 6.30 बजे फ्लोरिडा के ऑरलैंडो में पहुंचे। दिगंबर, ज्योत्स्ना और मैं उनके प्रोफेसर मित्र प्रो॰ रामानारायण के घर में रुके। रामानारायण बाबू स्थानीय विश्वविद्यालय में गणित के प्रोफेसर थे।उनके भाई सूर्यनारायण मेडिकल फिजिसिस्ट थे। दोनों मृत्युंजय महापात्रा के बेटे थे, जो मुझे अच्छी तरह से जानते थे। रामानारायण बाबू की पत्नी झुनु बहुत अच्छा गाना गाती थी। सुर सपरिवार आस-पास की होटल में रुके। अगली सुबह हम प्रसिद्ध एपकोट केंद्र में गए, जो वहाँ से लगभग चालीस मील दूर था। उस जगह के महत्व के बारे में मैंने पहले बहुत कुछ पढ़ रखा था। मुझे पता था कि एक दिन में उस जगह पर सब कुछ देखना संभव नहीं था। फिर भी अनेक भाग जैसे *द लैंड, द लिविंग सी और इमेजिनेशन* जैसे प्रदर्शनियां सुबह-सुबह हमने देख ली थी। नाश्ता-पानी करने के बाद कृत्रिम झील के दूसरी तरफ लगी प्रदर्शनी देखने गए, जो विभिन्न देशों की संस्कृति से संबंधित थी। हमने दो देशों की स्टालों को सविस्तार देखा। ये देश थे मेक्सिको और चीन। प्रत्येक स्टाल में अपने-अपने देशों की संस्कृति से संबंधित लघु फिल्म दिखाई जा रही थी। नाव में बैठकर कुछ समय कृत्रिम झील में घूमे। कृत्रिम झील के चारों तरफ कपूर के पौधे लगे हुए थे। एपकोट सेंटर में घूमकर उसके विभिन्न भागों को देखना मुझे बहुत अच्छा लगा था। हम सभी ने, खासकर बच्चों ने सोचा कि एक और दिन हमें वहां रुकना चाहिए था। लौटकर उस होटल में हमने डिनर लिया, जिसमें सूर रुके हुए थे। उसके बाद हम रामनारायण बाबू के घर चले गए। भुवनेश्वर, ओड़िशा, बर्मिंघम, लुसियाना और फ्लोरिडा के बारे में चर्चा हुई। झुनू ने कुछ गीत सुनाए। मुझे अपनी कविताएं सुनाने का अनुरोध किया गया। मैं इससे बचना चाहता था, लेकिन मेरे पास कोई विकल्प नहीं था। मेरे मित्र के पास मेरे दो कविता-संग्रह थे, मैंने उनमें से दो-तीन कविताएं पढ़ीं। ये सारा मनोरंजन होते-होते रात का एक बज गया था। सुर परिवार अपने होटल में चले गए।

अगले दिन क्रिसमस था, स्थानीय समाचार पत्रों में गाड़ी चालकों के लिए कई नोटिस छह पे थे, ताकि उनकी वजह से कम लोगों की मृत्यु हो। मुझे पता था हर साल की तरह इस साल भी लोग मद्यपान कर गाडियाँ

चलाने की घटनाओं की पुनरावृत्ति होगी और सड़क दुर्घटनाओं में कई लोग मौत के शिकार होंगे। अमेरिकी जीवन में क्रिसमस जश्न का दिन होता है और इस वजह से उस दिन घातक दुर्घटनाएं होना स्वाभाविक है, इसे स्वीकार्य तथ्य के रूप में मान लिया गया है। कुछ दिनों पहले ही नशे में धुत्त आदमी ने मैकडॉनल्ड रेस्तरां में अठारह लोगों को गोली से मार दिया था। क्रिसमस आशा और आश्वासन का दिन है। यह ईसाई धर्म के प्रवर्तक ईसा मसीह का जन्मदिन है। मगर जीवन का असीम आनंद लेने के लिए अमेरिकी संस्कृति लोगों को इतना उद्बुद्ध कर रखा हैं कि आनंद उत्सव पालन के दौरान कुछ मौतें अवश्यंभावी होना मान लिया गया हैं।क्रिसमस के दिन अमेरिकी परंपराओं के अनुसार सुबह से उपहारों को वितरण शुरू हो जाता है। उनकी तरफ से मुझे उपहार मिला सैफर्स की बॉल पेन और दिगंबर की बेटी लिकून से टाई। सुर नाश्ते के लिए रामानारायण बाबू के घर आए। सभी बच्चों को मैंने डॉलर में उपहार दिया। रामबाबू के बेटे मानस को उपहार में साइकिल मिली। वह तुरंत आधा घंटा बाहर साइकिल चलाकर आया। क्रिसमस पर राम बाबू और उनके बच्चों के कारण खाने-पीने में कोई कमी नहीं रही। दोपहर के दो बजे हमने उनका घर छोड़ दिया। उनका भतीजा राहुल *"आप लोग मत जाओ"* कहकर रोना शुरू किया। दो दिन में हमें उनका घर अपना लगने लगा था। घर से विदा लेने में हमें भी दुःख हो रहा था।

हमने ऑरलैंडो से 2 बजे प्रस्थान किया और 4.30 बजे टांपा पहुंचे। दिगंबर ने किरण सेनापति के घर में पहले से रहने का प्रबंध कर लिया था। किरण गोविंद सेनापति के बेटा था। गोविंद बाबू आई.पी.एस. अधिकारी थे और मेरे परिचित भी। किरण की पत्नी लेखा बसंत बेहुरा की बेटी थी। आई एससी में बसंत बाबू मेरे जूलॉजी के अध्यापक थे। किरण और लेखा की एक बेटी है, नाम जेनिफर। उसे जेनी कहकर बुलाते थे।चाय-नाश्ता करने के बाद हम टांपा के सेंटपीटर्सबर्ग समुद्र तट पर गए। वहाँ का सूर्यास्त बहुत शानदार था। सर्दियों में ऐसे भी सूर्यास्त हमेशा बहुत सुंदर होता था, टांपा शहर में लगभग हर जगह से समुद्र देखा जा सकता है और समुद्र तट वाली सड़क पर असंख्य रोशनियाँ दिखाई देती हैं। सूर्यास्त के बाद सारी आलोकमालाएँ जल उठने पर पूरा अंचल पृथ्वी पर स्वर्ग की तरह दिखाई देता है। सर्दी का मौसम होने के बाद भी बिलकुल सर्दी नहीं थी। शरीर पर समुद्री हवा बसंत की हवा की तरह लग रही थी।लौटते समय कुछ समय के लिए रास्ते में पड़ने वाले क्लीयरवॉटर द्वीप की तरफ गए। इस द्वीप में पार्क में घूमते कई पर्यटक, कुछ छोटे-छोटे रेस्तरां और चारों तरफ समुद्र- ये सब मिलकर इस जगह को अत्यंत आकर्षक बना रहा था। वहाँ से हम किरण के घर 8 बजे लौट आए। सुर और दिगंबर ने होटल में खाना खाने का प्रस्ताव रखा, मगर किरण इसके लिए बिलकुल राजी नहीं हुए। उन्होंने अपनी बात रखी, *"आप लोग इतनी दूर से आए हो। इसके अलावा, सीताकान्त बाबू भी आए हैं । लेखा और मैं आप लोगों को ओड़िया खाना खिलाए बिना नहीं छोड़ेंगे।"* उनकी बात मान ली गई।भात, दालमा, मछह ली की तरकारी, खीर, और कुछ अमेरिकी व्यंजन बनाकर उन्होंने हमारे लिए सच्ची दावत तैयार कर ली। वहाँ मुझे पता चला कि किरण को भी मेरी तरह ताश खेलना पसंद है। खाना खाने के बाद सुर, दिगंबर, किरण और मैं रात के दो बजे तक ताश खेले। बच्चे पहले से ही सो गए थे।

सुबह हम देरी से उठे।पहले हम अमेरिकी इंडियन रिज़र्वेशन में गए। अमेरिका में आदिवासियों के लिए एक विशेष स्थान पर बस्ती बनाई जाती है, उसे रिज़र्वेशन कहा जाता है। इस रिज़र्वेशन में केवल बहत्तर लोग थे,सेमिनोल समुदाय के। उन्होंने अपने घरों को अनूठी शैली में सजाकर रखा था।सभी ने मिलकर एक छोटा-सा तालाब खोदा था,जिसमें बहुत-सी मछह लियाँ छोड़ दी थीं।

उनकी साधारण कला वस्तुओं को एकत्रित कर बिक्री के लिए एक स्थान पर रखा गया था। थोड़ी देर वहाँ घूमने के बाद हम दूसरी जगह पर गए,जिसका नाम था *'रिवर आइलैंड'*। यह द्वीप छोटी नदी के मुहाने पर स्थित है,मगर समुद्र से काफी दूर। पेडल नौकाओं से हम नदी के मुहाने पर घूमे। पास वाली होटल में चाय-नाश्ता करके हम घर लौटे। उस समय हमारे ताश खेलते समय ज्योत्स्ना और किरण दोनों ने गाना गाया। मुझे पता नहीं था कि किरण बहुत अच्छा गाती भी है। उनके गीतों में एक सालवेग भजन भी था।

अगले दिन सुबह साढ़े आठ बजे हमने बर्मिंघम के लिए प्रस्थान किया। रास्ते में इधर-उधर घूमते-घामते, लंच लेकर छह ह बजे बर्मिंघम पहुंचे। अगले दिन 28 तारीख थी। सुर, दिगंबर और मैं न्यू ऑरलियन्स के लिए रवाना हुए। रास्ते में मिसिसिपी पार करनी पड़ी। न्यू ऑरलियन्स से पहले *'आयरिश बाउओ'* नामक विशाल जलराशि के बगल से होते हुए जाना पड़ता है। शहर पहुंचने से पहले हम मिसिसिपी नदी के तट पर गए। मैंने मिसिसिपी के बारे में बहुत कुछ पढ़ा था। नदी के किनारे पर कई छोटे-छोटे रेस्तरां थे। हमने वहाँ चाय-नाश्ता किया और कुछ समय नदी के तट पर बैठे रहे। मिसिसिपी नदी का मुहाना न्यू ऑरलियन्स शहर से बहुत दूर नहीं था। अमेरिका की सबसे बड़ी नदी न्यू ऑरलियन्स के पास गहरी हैं। कई स्टीमरों का नदी पर आवागमन हो रहा था। शाम की हवा मुझे अपने गांव की नदी की याद दिला रही थी। नदी कूल से हम शहर के भीतरी भाग में गए। हमारे पास अपनी कार थी,इसलिए शहर के भीतर घूमना आसान था। फ्रेंच भाषा-संस्कृति ने न्यू ऑरलियन्स पर अपना अमिट प्रभाव छोड़ा है, यह विशाल शहर अमेरिका के अन्य शहरों से बहुत अलग है। सबसे पहले, न्यू ऑरलियन्स के खाने के कारण। प्रचुर मात्रा में मछह ली की कई किस्में यहाँ उपलब्ध हैं। अधिकांश होटलों में पर्यटकों को लुभाने के लिए सीफ़ूड, प्लेटेटर्स परोसे जाते हैं। उसमें झींगा से लेकर मछह ली की कई किस्में,जिसमें कस्तूरी भी शामिल है। न्यू ऑरलियन्स का दूसरा मुख्य आकर्षण जैज संगीत है। यह शहर जैज संगीत की प्रसवशाला है। सड़क के किनारे जैज संगीत बजाते युवा लोगों के दल सहजता से देखे जा सकते हैं। न्यू ऑरलियन्स के फ्रेंच क्वार्टर अंचल में हम बहुत घूमे। इस अंचल की सड़कें संकीर्ण थीं। सड़क के दोनों किनारों पर लगभग घरों की बालकनी पर लोहे की सुंदर ग्रिल बनी हुई थी। इसलिए उस अंचल की सारी सड़कें किसी चित्रपट्ट से कम नहीं थी। वहाँ कुछ समय बिताकर हम शहर के केन्द्रांचल में गए। केन्द्रांचल की विस्तृत सड़कें और सुंदर आलोकमालाएँ पर्यटकों को आकर्षित कर रही थीं। सड़कों के दोनों तरफ होटल और रेस्टोरेंट भरे हुए हैं। ठाए,ठाए चारों तरफ जैज संगीत की ध्वनि। ऐसा प्रतीत होता था कि इस महानगर में केवल दो ही मुख्य काम हैं, खाना और गीत गाना।

हमें उसी दिन बर्मिंघम लौटना पड़ा। खाना खाने के बाद हम वापस लौटे। हार्वर्ड के फ़ेलो को अमेरिकी सरकार ने अमेरिका के पंद्रह दिवसीय दौरे का निमंत्रण दिया था, उसमें न्यू ऑरलियन्स की यात्रा भी शामिल थी। मैंने पहले भी न्यू ऑरलियन्स यात्रा के बारे में अन्यत्र लिखा है, इसलिए यहां उन्हें दोहराने की आवश्यकता नहीं है। बर्मिंघम पहुंचते-पहुँचते आधी रात हो गई थी। घूमते-फिरते,तरह-तरह का खाना खाते,गपशप करते, मजे से समय पार हो रहा था फिर भी बर्मिंघम पहुँचने से पहले थकान लगने लगी थी, बीच-बीच में नींद से आँखें भी बोझिल हो रही थीं। दिगंबर के घर पहुंचते ही मैंने बिस्तर पकड़ा।अगले दिन सुबह उठते-उठते 9 बज गए थे।

बर्मिंघम में मेरा यह आखिरी दिन था। हम तीनों और दिगंबर की पत्नी ज्योत्स्ना बहुत समय तक ताश खेलते रहे। ज्योत्स्ना और मंजू ने घर पर भोजन की प्रचुर व्यवस्था की थी। दिगंबर की बेटी ने भी खाना बनाने में

उनकी बहुत मदद की। मध्याह्न और रात्रि के भोजन में ओड़िया और अमेरिकन खाद्यों का एक अद्भूत सम्मिश्रण था। बहुत दिन बाद मुझे अच्छा ओड़िया खाना मिला। सुर, दिगंबर और मैंने अपने आपको *'द थ्री मस्केटियर्स'* का नाम दिया था। शाम को हम बर्मिंघम के केंद्रांचल में फिर से चले गए। न्यूयॉर्क की मेरी उड़ान अगले दिन सुबह दस बजे थी। मैंने हार्वर्ड लौटने से पहले नए साल के कुछ दिन न्यूयॉर्क में बिताने की योजना बनाई थी। मेरे न्यूयॉर्क जाने के दिन सुर भी सपरिवार अपने शहर श्रावपोर्ट (लुसियाना) गाड़ी में गए। दिगंबर और उनकी पत्नी कहने लगी, कल से उनका घर खाली-खाली लगेगा। बर्मिंघम हवाई अड्डे पर दिगंबर से विदा लेने के बाद बहुत समय तक मैंने अपने भीतर निर्वात अनुभव किया।

क्लेयरमाउंट पिट्जर कॉलेज समूह, लॉस एंजिल्स: कविता-पाठ और समालोचना

मुझे और एक निमंत्रण मिला था क्लेरमोंट पिट्जर कॉलेज (वास्तव में, यह कॉलेजों का समूह है) के नृतत्व विभाग के डीन सुसान सेमूर ग्रैहम की तरफ से, वहाँ अंग्रेजी विभाग में मुझे अपनी कविताएं पढ़ने और इस विषय पर कुछ कहने के लिए अनुरोध किया गया था।
क्लेरमॉन्ट लॉस एंजिल्स के बाहरी इलाके में स्थित है।यह सैनहोज के नजदीक है। ऑरेंज काउंटी की तरह क्लेरमॉन्ट को लॉस एंजिल्स का हिस्सा माना जाता है। क्लेरमोंट में एक छोटा हवाई अड्डा है। सैनहोज के जिस विमान से मैं आया था, वह भी बहुत छोटा था।यहाँ तक कि यात्रियों के सामने सामान रखा जा रहा था। जिस दिन मैं क्लेरमॉन्ट आया था, उसी दिन मेरी पत्नी, बेटा सत्यकाम, गोपीनाथ मामा और मामी सिंगापुर एयरलाइंस की उड़ान से सैनफ्रांसिस्को से कोलकाता जाने वाले थे। कार से उनके सैन फ्रांसिस्को जाने से दो घंटे पहले मैं सैनहोज हवाई अड्डे पर पहुँच गया था, वे सब मुझे मिलने आए थे।

सुजान और उनके पति लॉरी क्लेरमोंट हवाई अड्डे पर मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे, अपने घर ले जाने के लिए। लॉरी ग्राहम सुजान के दूसरे पति थे। इसलिए अब उनका नाम है सुजान सेमूर ग्राहम। मैंने पहले भी क्लेरमॉन्ट की मेरी पहली यात्रा और कैलिफ़ोर्निया के मोहावे रेगिस्तान के बारे में लिखा है।मगर इस यात्रा का उद्देश्य बहुत सीमित था। सुजान ने मुझे उनके कॉलेज में अपनी कुछ कविताएं पढ़ने तथा उनके बारे में कुछ कहने के लिए अनुरोध किया था।पहुँचने वाले दिन अपराह्न में हम क्लेरमोंट और लॉस एंजिल्स के हॉलीवुड के आसपास घूमने गए। अंत में डिज़नीलैंड घूमकर, वहीं डिनर लेने के बाद हम सुज़ान के घर वापस आए।

सुजान के घर मानव विज्ञान की पुस्तकों की काफी बड़ी लाइब्रेरी थी। उसके अलावा, उसमें उसकी पसंदीदा साहित्य और कविता की कई किताबें थीं। उनके पति लॉरी गणित के प्रोफेसर थे। उनका बेटा इलियट मोहवे क्षेत्र में अपने स्कूल द्वारा आयोजित सात दिवसीय शिविर में भाग लेने गया हुआ था। घर में हमने भारतीय नृतत्व और विभिन्न अमेरिकी विश्वविद्यालयों में नृतत्व अध्यापन के बारे में बहुत चर्चा की। सुजान ने *'ट्रांसफ़ॉर्मेशन ऑफ ए टेम्पल टाउन'* नामक पुस्तक का संपादन किया है। पुस्तक पुराने भुवनेश्वर पर लिखी गई है। इसके अलावा, उन्होंने *'भारत में बाल-पालन और शिक्षा'* पर शोध-ग्रंथ भी लिखा है। वह दीर्घ समय से पिट्जर कॉलेज में पढ़ा रही थी। यह कॉलेज कटक में हमारे रैवेनशॉ कॉलेज से बड़ा है, छात्रों और प्रोफेसरों की संख्या के दृष्टिकोण से। पिट्जर कॉलेजों का समूह है। कैलिफ़ोर्निया के बाहर भी इसके कैंपस हैं और एक शाखा काठमांडू में भी है।

अगले दिन अंग्रेजी विभाग में मेरा कार्यक्रम था। उस विभाग से जुड़ा हुआ विभाग था-रचनात्मक लेखन विभाग। मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि वहाँ कविता या साहित्यिक रचनाओं की एक कक्षा होती है, लेकिन कई अमेरिकी विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में ऐसे विभाग है, जिनमें ज्यादातर कवि और लेखक पढ़ाते हैं। ऐसे विभाग सैनहोज और हार्वर्ड में भी थे। रचनात्मक लेखन वहाँ विशिष्ट पाठ्यक्रम है, विश्वविद्यालय या कॉलेज जिसकी स्नातक डिग्री प्रदान करता है। छात्रों को रचनात्मक लेखन के विभिन्न पहलुओं के बारे में ही नहीं पढ़ाया जाता है,बल्कि उन्हें धीरे-धीरे कुछ लिखने के लिए भी प्रोत्साहित किया जाता है। कक्षा में छात्र द्वारा लिखित पाठ पर चर्चा की जाती है, प्रोफेसर और सहपाठी उसकी समालोचना करते हैं।

आरंभ में ही मैंने उन्हें बता दिया था कि मैंने सामाजिक, साहित्यिक और नृतत्व संबंधित कई चीजें अंग्रेजी में लिखी हैं, लेकिन कविताएं मैंने केवल मेरी मातृभाषा ओड़िया में लिखी हैं। क्योंकि मेरे विचार से कविता केवल उसी भाषा में लिखी जा सकती है, जिस भाषा में वह व्यक्ति सपने देखता है। मैंने अंग्रेजी में अनूदित मेरी छह ह कविताएं पढ़ी थीं और उनके ओड़िया संस्करण भी। मुझे खुशी हुई कि वहाँ के छात्रों में किसी अन्य भाषा को पढ़ने और जानने के बारे में उत्सुकता थी। सुजान के कहने के अनुसार मैंने एक-एक कर कविताएं पढ़ी थीं। छात्रों ने मुझे प्रत्येक कविता पर सवाल पूछे, प्रत्येक कविता की समालोचना भी हुई थी। विशेष रूप से उनकी मेरी कविताओं के उत्स, आभिमुख्य, विषय-वस्तु,काव्य-परंपरा और भाषा-शैली के बारे में जानने में रुचि थी। उदाहरण स्वरूप अँग्रेजी अनुवाद सहित पढ़ी कविता दादी माँ में 'धान खेतों के हिड', 'गुगुचिया(भाला घास)', 'दियासिलाई की तरह बस' आदि- उनके लिए अपरिचित और अननुभूत थे। संक्षेप में कहूँ तो, मुझे उनके जिज्ञासु मान ने बहुत प्रभावित किया। कार्यक्रम डेढ़ घंटे से अधिक चला। सुजान के अलावा दो अन्य प्रोफेसरों ने मेरे व्याख्यान पर टिप्पणी की थी। विभाग में अनौपचारिक मध्याह्न भोजन कर मैं घर लौट आया। सुजान ने अपने कुछ प्रोफेसर-सहकर्मियों और लेखकों को अपने घर में रात्रि भोज के लिए आमंत्रित किया था। वहाँ अनेक साहित्यिक और नृतात्विक विषयों पर आलोचना हुई ।

सैनहोज विश्वविद्यालय में व्याख्यान,पिट्जर कॉलेज में काव्य-पाठ और काव्य-समालोचना- ये दोनों कार्य समाप्त कर क्लेरमॉन्ट से लॉस एंजिल्स के रास्ते हार्वर्ड लौट गया।

19. हार्वर्ड से एक और भ्रमण: मेक्सिको

हार्वर्ड जाने से पहले मैंने मैक्सिको के साहित्य, संस्कृति, परंपराओं और आधुनिकता के द्वंद्वात्मक विषयों पर बहुत कुछ पढ़ा था और जाना था। मेक्सिको के प्रसिद्ध कवि ओक्टेवियो पाज़ जब दिल्ली में मेक्सिको के राजदूत थे, तब उनसे मेरा परिचय हुआ था और धीरे-धीरे हमारी दोस्ती सघन होती गई। उनकी कविताओं के साथ-साथ मेक्सिको की वर्तमान और अतीत स्थिति के बारे में भी उनसे काफी जानकारी मिली थी। मैंने ऑक्टेविओ के साथ अपने संबंधों पर इस पुस्तक में अन्यत्र भी चर्चा की है।

हार्वर्ड प्रवास के दौरान मेक्सिको में हमारे राजदूत श्री के.टी.सातारवाला के साथ मेरा पत्राचार हुआ। वह 1973-74 में ओड़िशा में राष्ट्रपति शासन के समय राज्यपाल बी.डी.जत्ती के दो सलाहकारों में से एक थे। उस समय मैं स्वास्थ्य विभाग का सचिव था। वे स्वास्थ्य विभाग के कार्यों के भी सलाहकार थे। स्वास्थ्य विभाग जैसे जटिल विभाग के प्रबंधन में श्री सतारावाला और तत्कालीन मुख्य सचिव श्री रामकृष्णन ने मेरी बहुत मदद की थी। कहने में कुछ संकोच नहीं है कि श्री सतारावाला मेरा काफी आदर करते थे, एक बार राज्यपाल ने मेरी अनुपस्थिति में उनके द्वारा सराहना करने की बात बताई थी। देखने में वह साधारण, लंबे,गोरे और स्पष्टवादी व्यक्ति थे। भुवनेश्वर से जाने के बहुत दिनों बाद वह मैक्सिको में भारत के राजदूत बने। पत्राचार में उन्होंने मुझे अपने निजी अतिथि के रूप में मेक्सिको के लिए आमंत्रित किया। वह मेरी साहित्य और संस्कृति के प्रति रुचि और कमजोरी से अवगत थे। वह खुद भी साहित्य-प्रेमी थे,खुद भी लिखते थे। उन्होंने मुझे लिखा था कि वे मेक्सिको के लेखकों, आलोचकों और कलाकारों के साथ मेरी भेंट कराने हेतु सारे इंतजाम कर देंगे। अंततः मेरी भी इच्छा हुई मैक्सिको में कम से कम आठ-दस दिन रहकर बहुत कुछ देखने, एक प्यारी संस्कृति और एक समाज को प्रत्यक्ष रूप से समझने का प्रयास करने की। हम दोनों के चाहने पर भी, एकाध बार योजना बनाने पर भी मैं हार्वर्ड के सरकारी कार्यक्रमों के कारण वहाँ नहीं जा सका था। श्री सतारावाला का मेक्सिको से स्थानांतरण का समय भी हो गया था, उनके सामान-पत्र बांधने पर भी वह मुझे वहाँ खींच रहे थे। लेकिन मुझे अच्छा नहीं लग रहा था, मन नहीं बन रहा था।

इतने उच्चकोटि के भद्र व्यक्ति के मैक्सिको छोड़ने की तैयारी के समय मेरा वहाँ अतिथि बनना ठीक नहीं लग रहा था। कोई बहाना बनाकर मैं वहाँ नहीं गया था। उन्होंने अंतिम पत्र में लिखा था कि उन्होंने मेरे पसंदीदा कवि ओक्टावियो, होमेरो आरिजिस, एल्सा क्रॉस और कुछ अन्य लोगों को मेरे आगमन के बारे में बता दिया था।

ऐसा ही हुआ। उनके मेक्सिको छोडने एक महीने बाद मैं वहां गया था। मेरे स्वीडिश मित्र मार्टिन एल्वुड अक्सर मेक्सिको जाते थे, वे वहाँ के साहित्यिक वातावरण से काफी परिचित थे, कभी-कभी तीन-चार महीने वहाँ रुक भी जाते थे। उनके शब्दों में- *"मेक्सिको मेरा दूसरा घर है"* । उन्होंने मुझे कहा, अगर हम दोनों एक ही समय मेक्सिको जाएंगे तो बहुत अच्छा रहेगा। ऐसा ही हुआ।वे स्टॉकहोम से आए। मैं टेक्सास में शोधार्थी अपने भतीजे के साथ गया और हम कम किराए वाले होटल में रुके। हमारे पहुँचने से एक दिन पहले मार्टिन वहाँ पहुंच गए थे। जितना संभव था, अलग-अलग स्थानों पर हम एक साथ घूमने गए। हम बस से कुवारवाका गए। हमने एक साथ ग्वाडालुपे बेसिलिका का भी दौरा किया।

मैक्सिको नगरी: क्रांति और संस्कृति का मनोरम शहर

एक सुबह चाय-नाश्ता करने के बाद हम तीनों कुवारवाका रवाना हुए। चार लाख की आबादी वाला यह शहर वास्तव में पर्यटकों को लुभाता था, मार्टिन के शब्दों में *'मैक्सिको के सबसे आकर्षक स्थलों में से एक'* था। यह समुद्र तल से पांच हजार फुट की ऊंचाई पर स्थित है। इस शहर के घरों के रंग नीले, पीले और गुलाबी हैं, जबकि छह तों पर पीले रंग की टाइलें लगी हुई हैं। चारों तरफ हरे पेड़ों की भरमार है और शहर रंग-बिरंगे सुंदर फूलों से सुशोभित है। घरों में बहुत सारे घर *हेरिटेज हाऊस* थे, ये केवल गुरुवार के दिन ही खुलते थे। इसलिए मार्टिन ने हमारे भ्रमण का दिन गुरुवार ही चुना था। मुझे लग रहा था जैसे घरों के रंग, छतों के टाइलों के लाल रंग और चतुर्दिग परिव्याप्त प्रभूत पेड़-पौधों और फूलों के रंग, सभी एक-दूसरे के परिपूरक थे और सभी मिलकर एक अवर्णनीय सौंदर्य की सृष्टि कर रहे थे। शहर जितना सुंदर था, उतना ही विप्लव का जन्म-स्थान भी।सन 1910 की मैक्सिको क्रांति के अन्यतम लोकप्रिय नेता एमिलिनो जापटा का यहीं जन्म हुआ था और उनकी क्रांति का नारा था, *'भूमि, स्वतंत्रता और हासेण्डो को मृत्यु-दंड'*। *'हासेण्डो'* जमींदारों का एक वर्ग था, जो अत्याचारी थे, जिन्होंने गरीब लोगों की भूमि हड़पकर उन्हें बंधुआ मजदूर बना दिया था। कुवारवाका मोरेलोस प्रदेश की राजधानी थी और इस अत्याचारी वर्ग का प्राण-केंद्र। जापटा ने अपने ओजस्वी वाणी और आदर्श द्वारा क्रांति का सूत्रपात करते हुए भूमि सुधार और किसानों के लिए 1911 में भूमि-आंदोलन की शुरुआत की थी। साथ ही साथ, 1914 में जापटा ने एक और क्रांतिकारी नेता पंचोविला के साथ मिलकर मैक्सिको नगरी पर कब्ज़ा कर लिया था और संघीय सेना के इस पर हमले को सुनकर वे पीछे हट गए थे। शहर के मुख्य चौक पर घुड़सवार एमिलियनो जापटा की कांस्य प्रतिमा लगी हुई है। संपूर्ण मैक्सिको और स्वाभाविक उनका अपना शहर उन्हें कृतज्ञता से याद करते है।

प्राचीन काल के अनेक एज़्टेक सम्राट, स्पेनिश आक्रमणकारियों में हर्नन कर्टेस, मैक्सी मिलियन और कार्लोटा और उन्नीसवीं सदी के मैक्सिको के अन्य शासक वर्ग कुवारवाका की प्रसिद्ध 'रूपाकामर सम्राट' होस्बोर्डा सभी के यहाँ ग्रीष्मकालीन घर हैं। दोनों मैक्सी मिलियन और कार्लोटा के घरों को अब संग्रहालयों में बदल दिया गया है। अभी भी यह शहर मैक्सिको के कई वरिष्ठ अधिकारियों, विदेशी राजनयिकों और अमीर लोगों की पसंदीदा जगह है। उन्होंने शहर के बाहरी इलाकों में अपने सुंदर घर बनाए हैं। मैं, मार्टिन और मेरा भतीजा इस अंचल में बहुत घूमे। शहर के बाहरी इलाकों में अनेक आधुनिक *'स्पा'* हैं, जहां शहर के समृद्ध लोग अपने स्वास्थ्य बनाने के लिए आते हैं। इस तरह के स्पाओं को मैंने पहले भी काकेशस पहाड़ी, ब्लैक सी बिच और हंगरी के पहाड़ी इलाकों में देखा था। बहुत से लोग गर्म पानी के झरनों में स्नान करने और पारंपरिक दवाइयों का उपयोग करने के लिए स्पाओं में आते हैं। आसपास में कई छोटे-छोटे होटल और खूबसूरत कैंपिंग एरिया भी हैं। गोल्फ, घुड़सवारी, टेनिस, छोटी कृत्रिम झीलों में नौकायन और कई जल-क्रीड़ा की सुविधाओं के लिए यह जगह काफी लोकप्रिय है। क्वर्नवाका से लेकर आसपास दस-बारह वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में ये स्वास्थ्यकर स्थान स्थित हैं। सप्ताहांत दो दिन और अन्य छुट्टियों के दिन मैक्सिको शहर की धूल, धुएं और ट्रैफिक जाम से मुक्ति पाने के लिए मैक्सिको शहर के लोगों की कतारें लगती हैं। छुट्टियां बिताने के बाद स्वस्थ तन-मन लेकर वे फिर से विशाल महानगरी में लौटते हैं। कुवारवाका कैथेड्रल शहर के केंद्र में स्थित है। यहाँ एक प्रसिद्ध स्मारक है। उसके पास 'बोर्डा उद्यान' है। एक फ्रांसीसी नागरिक होसबोर्डा 1716 में मैक्सिको आए थे और खनन व्यवसाय कर अरबपति बने थे। कहा जाता है कि उन्होंने तत्कालीन दस लाख मेक्सिको मुद्रा 'पेसो' खर्च कर एक खूबसूरत उद्यान और उसके भीतर वैभव-विलासिता पूर्ण अपना घर बनाया था। उसके मृत शरीर पास वाले गिरजाघर में

सन 1760 में दफना दिया गया था। उनके बाद संभ्रांत मैक्सी मिलियन और कार्लोटा ने होसबोर्डा की पूरी संपदा का ग्रीष्मकालीन आवास के रूप में इस्तेमाल किया था। कैथेड्रल,समग्र उद्यान अंचल, उसके भीतर टूटे घर आदि की कुवारवाका की नगर निगम ने जीर्णोद्धार की योजना बनाई है। नवीनीकरण का काम पहले ही शुरू हो चुका था। देखते-देखते मध्याह्न भोजन का समय हो गया था। मेरा दोस्त मार्टिन एलवुड इस शहर का पुराना 'मूषक' था। पारंपरिक मैक्सिकीय भोजन के लिए उसने एक रेस्तरां चुना। वहां हमने भोजन किया।

रेस्टोरेंट कुवारवाका के प्रसिद्ध संग्रहालय के पास था। संग्रहालय पहले हेर्नान कोर्टेस का महल था। कोर्टेस ने सन 1530 में इस महल की नींव रखी थी और अपनी पसंद के स्थानीय वास्तुकारों से इसे अनुसार बनाया था। महल की वास्तुकला में स्पैनिश और एज़्टेक दोनों शैलियां सहजता से देखी जा सकती हैं। वह महल अब अवश्य वैसा नहीं है,जैसा उसे बनाया गया था, समय के साथ उसमें कई बदलाव किए गए हैं। अब वहाँ, कुवारवाका और मेक्सिको के अन्यतम प्रसिद्ध संग्रहालयों में चित्रकला और भास्कर्य की कारीगरी देखी जा सकती है। मैक्सिको-संस्कृति के परिचायक के रूप में बहुत सारी वस्तुएँ और उपकरणों की यहां प्रदर्शनी लगाई गई है। अमेरिका के राजदूत 'ड्वाइट मूरो' ने हाल ही में डिएगो रिवेरा के तीन मशहूर भित्तिचित्र संग्रहालयों को दान दिया है। इन तीनों में यथा क्रम कोर्टेस द्वारा मेक्सिको सिटी पर कब्जा, मेक्सिको की स्वतंत्रता संग्राम और सन 1910 मैक्सिको क्रांति यहाँ प्रदर्शित हैं। 'डिएगो रिवेरा' और 'रूफिनो टॉमया' निस्संदेह मेक्सिको के सबसे बड़े आधुनिक चित्रकार हैं। भारत के प्रसिद्ध चित्रकार सतीश गुजराल ने दोनों के बारे में बहुत कुछ लिखा है। खासकर उन्होंने डिएगो रिवेरा के चित्रों की विशेषताओं पर विशद समालोचना की है।

डिएगो रिवेरा मैक्सिको के कालजयी सर्वोत्तम प्रसिद्ध चित्रकार हैं। यह तथ्य मेक्सिको के निवासियों एवं कला समालोचकों द्वारा स्वीकार्य है। न्यूयॉर्क के महानगरीय संग्रहालय में प्रदर्शित मेक्सिको के चित्रों के कैटेलोग में ऑक्टेविओ पाज़ ने डिएगो को उचित सम्मान दिया था। डिएगो की पत्नी फ्रिडा कालो भी खुद प्रसिद्ध चित्रकार थीं। फ्रिडा का बचपन से पेंटिंग के प्रति लगाव था। लगभग 30 साल पहले उनकी रीढ़ की हड्डी में चोट लगने के कारण वह और बाहर नहीं निकल पाती थीं। डिएगो ने उससे प्रेम विवाह किया था। फ्रिडा के दुर्भाग्य से वह बहुत मर्माहत हुआ था। डिएगो की फ्रिडा से पहली बार मुलाकात उसके कॉलेज में पढ़ते समय हुई थी। दुर्घटना के बाद अपने पारिवारिक ऋणों का भुगतान करने के लिए फ्रिडा ने अपने कुछ चित्र बेचे थे।

इस बारे में उसने डिएगो की राय मांगी थी। फ्रिडा के प्रति अपनी आर्थिक और सामाजिक जिम्मेदारी के बावजूद डिएगो एक दूसरी औरत से प्यार करते थे, वह स्वयं वामपंथी दर्शन में विश्वास रखते थे। उनके मार्क्सवादी चित्रों में कई राष्ट्र-विरोधी होने के बावजूद उन्होंने अपने आपको भित्तिचित्रों से दूर नहीं किया था, इससे भी ज्यादा उन्होंने अपने घर में निर्वासित रूसी दार्शनिक लियॉन ट्रॉट्स्की को आश्रय प्रदान किया था और अपने जीवन के आखिरी चरण में फ्रिडा को तलाक देकर अन्यत्र शादी की थी। इतने बड़े कलाकार द्वारा फ्रिडा के प्रति उनका अन्याय समकालीन कलाकारों को अच्छा नहीं लगा था। मैक्सिको प्रवास में मैंने डिएगो और फ्रिड़ा के लगभग सारे चित्र देखे थे। उनके चित्रों में अनेक अपने स्वयं और अपने परिवार के सदस्यों की पेन पोट्राइट थे। उनकी सबसे प्रसिद्ध पेंटिंग, उनकी रीढ़ की हड्डी के लिए प्रयोगात्मक सर्जरी और धातु की छह ड़ से जोड़ते समय उनके चेहरे पर व्याप्त दुःख और आँखों से बहते आंसुओं की चित्रकारी ने मुझे अभिभूत कर दिया था। चित्रकला ही फ्रिड़ा के शारीरिक और मानसिक पीड़ा से उबरने के लिए सहारा था। बाद में मैंने फ्रिड़ा के जीवन पर आधारित एक बहुत सुंदर फिल्म देखी थी, जिसमें मैक्सिकीय फिल्म नायिका सलमा हायेक ने फ्रिड़ा की

भूमिका निभाई थी। अल्फ्रेड मोलिना ने डिएगो रिवेरा का अभिनय किया था और प्रसिद्ध नायक एंटोनियो बैन्डरस ने तत्कालीन प्रसिद्ध चित्रकार की भूमिका निभाई थी। इस संग्रहालय में एक और चित्रकार रॉबर्टो रियो के चार भित्तिचित्र लगे हुए हैं।रेस्तरां में खाने से पहले मार्टिन ने मुझे पूछा था कि क्या मुझे मैक्सिकीय खाना पसंद है या नहीं। उत्तर में मैंने उन्हें बताया कि हार्वर्ड प्रवास के दौरान चाइनीज खाने के बाद दूसरे नंबर पर मैक्सिकीय खाना मुझे अच्छा लगता था। इसलिए हमने कुछ प्रसिद्ध मेक्सिकीय व्यंजनों का आदेश दिया। मैंने मार्टिन से कह रखा था कि मैं गोमांस के अलावा सब-कुछ खाता हूँ। पहले जो सूप हम पी रहे थे, उनमें शकरकंद, मूली, कटे प्याज, हरी मिर्च, काली मिर्च और कुछ स्थानीय सब्जियां डाली हुई थीं। यह शाकाहारी सूप मुझे बहुत स्वादिष्ट लगा था। मेक्सिकीय खाद्यों में टोर्टिला सबसे प्रिय और अपरिहार्य था। यह मक्का के चूर्ण से तैयार किया जाता है, इसे बनाते समय स्थानीय तेल का प्रयोग किया जाता है। गर्म-गर्म खाने पर बहुत अच्छा लगता है। उसके साथ हमने 'रिफ्रोटो' खाया, जिसमें बिन और अन्य सब्जियां मिली हुई थीं। सलाद में 'साल्सा' डालकर कटे प्याज, टमाटर, मिर्च और काली मिर्च दी गई थी। 'साल्सा' तेज मिर्ची का सॉस होता है। मार्टिन की सलाह से टोर्टिला में तरल पनीर मिलाकर खाया। मार्टिन खुद शाकाहारी था,मगर उसने मेरे लिए बहुत समय से नींबू निचोड़ कर रखे झींगे और छोटी मछह लियों की सब्जी मँगवाई,जिसमें टमाटर, प्याज, धनिया के पत्ते और एवोकादो भी डाले गए थे। मार्टिन ने बताया कि यह मैक्सिको की लोकप्रिय मछह ली की तरकारी थी। बहुत पहले से मार्टिन को पता था कि मुझे मछह ली पसंद है। अंत में उसने प्रसिद्ध मैक्सिकीय खाद्य 'एनचिलडा ' का आदेश दिया। टोर्टिला में प्याज, टमाटर और पनीर डालकर शाकाहारी एनचिलडा तैयार किया जाता है। मांसाहारी एनचिलडा में चिकन डाला जाता है।खाने में कुछ हद तक हमारे शाकाहारी और मांसाहारी रोल की तरह लगते है। ये सब खाने के बाद पेट में और जगह नहीं बची थी। मार्टिन ने मुझे मैक्सिकीय मिठाई खाने के लिए उकसाया। किन्तु वहाँ की मिठाई के बारे में मेरी अच्छी धारणा नहीं थी। शाकाहारी मार्टिन से मैंने अनुरोध किया कि वह अपनी पसंद की कुछ मिठाई खा लें। उसने टिन वाले मिश्रित फल मंगवाया, जिसे चीनी की चाशनी के साथ खाया जाता है। दोपहर के भोजन में हमें काफी समय लगा। यह खुला रेस्तरां था, कुछ हिस्सा छह त के नीचे था और तो कुछ बाहर। अच्छी हवा बहने के कारण हमने बाहर बैठकर खाना खाया। खाना खाते समय सड़क के किनारे छोटे-छोटे दल बाजे बजाते हुए आ-जा रहे थे। अंत में, अंजीर की छाल पर बनी पेंटिंग लेकर एक हॉकर हमारे पास आया। उसके पास छोटे-बड़े कई ऐसे चित्र थे। मुझे पहली बार पता चला कि यह मैक्सिको की एक स्थानीय कला है।जिसे '*आमाते*' चित्रकला के नाम से जाना जाता है। मार्टिन ने कहा कि नृतत्व विशेषज्ञ स्ट्रोमबर्ग ने '*आमाते*' चित्रकला पर एक बहुत बड़ी पुस्तक लिखी है। इन चित्रों को फ्रेम में जड़कर दीवारों पर लटकाया जाता है। कुछ हद तक हमारे देश की पट्टचित्र की तरह इस 'लोक चित्रकला' का आधुनिक रूप मैक्सिको में काफी लोकप्रिय है एवं विदेशों में बहुतायत से इनका निर्यात किया जाता है। इनके स्थानीय चित्रकार युगों से कुवारवाका और उसके आस-पास के इलाकों में रह रहे हैं। कुवारवाका की सड़कों पर वे घूम-घूमकर इन्हें बेचते हैं। मार्टिन ने कहा कि प्राचीन काल में 'नहुआ' संप्रदाय '*आमाते*' चित्रकारी में पारंगत हुआ करता था, उनकी चित्रकला अभी भी संग्रहालयों में देखी जा सकती है। मैंने थोड़े पैसों से अपने लिए एक पेंटिंग खरीदी। मेक्सिको सिटी से लौटने के बाद मुझे आधुनिक कला दीर्घाओं में बड़ी संख्या में '*आमाते*' चित्र देखने को मिले। ऑक्टेविओ पाज़ ने 'मैक्सिकन आर्ट के तीन हजार साल' नामक कैटलॉग का संपादन किया था, जिसमें इस चित्रकला के बारे में बहुत कुछ जानकारी दी गई है। खाना खाने के बाद हमने बस पकड़ ली, मार्टिन ने कह रखा था ग्वाडालुपे बेसिलिका की तरफ जाने से अच्छा होगा, क्योंकि वह मैक्सिको नगरी का अन्यतम प्रसिद्ध स्थान है।

गुआडालूपे बेसिलिका

मार्टिन, मैं और मेरा भतीजा गुआडालूपे में बस से नीचे उतरे। यह जगह शहर के केंद्र से उत्तर में चार मील की दूरी पर है। हर साल 12 दिसंबर को लगभग तीन-चार लाख मेक्सिको के निवासी गुआडालूपे बेसिलिका में इकट्ठा होते हैं, सोलहवीं सदी के एक मिराकल (चमत्कार) जयंती दिवस पर त्योहार मनाने के लिए। सोलहवीं शताब्दी में एक अति साधारण पारंपरिक इंडियन किसान 'जुआन डिएगो' को 'वर्जिन मैरी' के दर्शन हुए थे। 12 दिसंबर को हमारे देश के तीर्थयात्रियों की तरह पूरे मेक्सिको से गुआडालूपे के शिष्य वर्जिन मैरी के एक विशिष्ट चित्रपट्ट के सामने सिर नवाने के लिए बेसिलिका आते हैं। जुआन डिएगो ने उस मिराकल को देखने के बाद मन ही मन वर्जिन मैरी के बारे में सोचा था और अगली सुबह उनकी तस्वीर उसके छोटे कुटीर में मिली थी। जुआन डिएगो का विश्वास था कि यह वहीं चित्र था, जो उसने मिराकल में देखा था। मार्टिन ने कहा, *"केवल मेक्सिको के ही नहीं वरन लैटिन अमेरिका के प्राय सभी देशों से 12 दिसंबर को बहुत पर्यटक यहां इकट्ठा होते हैं, साल भर बहुत यात्री गुआडालूपे में आते हैं। जैसे हर धार्मिक मुसलमान की उनके जीवन में कम से कम एक बार हज करने की इच्छा को होती है, मुसलमानों की मक्का-यात्रा की तरह हर मैक्सिकन कैथोलिक अपने जीवन में कम से कम एक बार गुआडालूपे की यात्रा करने की इच्छा रखते हैं।"* साधारण मेक्सिकोवासी स्पेनियों के आक्रमण से मेक्सिको में ईसाई धर्म आया है, इस पर विश्वास नहीं करते हैं। मेक्सिको के प्रसिद्ध कवि होमेरो आरिडिहिस के घर में रात्रिभोज में कवयित्री एल्सा क्रॉस ने कहा था, *"वर्जिन, गुआडालूपे ने मेक्सिको के लोगों को ईसाई धर्म दिया है।अर्थात् ईसाई धर्म यूरोप के स्पेनियों ने मेक्सिको में नहीं लाया था, यह मेक्सिको का अपना और गुआडालूपे 'वर्जिन' का उपहार है।"*

मेक्सिको के निवासियों के धार्मिक विश्वासों को समझना आसान नहीं है। कैथोलिक उपन्यासकार ग्राहम ग्रीन मेक्सिको में आकर वहां के ईसाई लोगों के प्रति हुए अन्याय का विशद अध्ययन किया था। वे अपनी पुस्तक 'द लॉ-लेस रोड्स' में कहते हैं : *"अधिकांश पादरी चर्च का काम छोडकर दूसरे काम करने लगे थे। 1938 में पूरे मेक्सिको में केवल पाँच सौ पादरी थे,जो धर्मयाजक काम देखते थे। यहां तक कि रविवार का मास (maas) कार्य भी गुप्त रूप से आयोजित किया जाता था।"*

इस प्रकार मेक्सिको में ईसाई धर्म विस्मयकारी और कुछ हद तक दुर्बोध था। अधिकांश अंचलों में स्थानीय देवी-देवताओं उनके चमत्कार लोगों के जीवन को प्रभावित करते थे। हमारे देश की तरह मेक्सिको वासी अक्सर अपने बहुत से कार्यों के लिए अपने देवी-देवताओं से मन्नतें मांगते थे। बीमारियों का इलाज, लड़की के लिए अच्छा वर, बांझ महिला के लिए बच्चे, अपने क्षेत्रों में भूकंप और अन्य प्राकृतिक आपदाओं घटित नहीं होने जैसे सभी कार्यों के लिए मन्नतें मांगी जाती थीं। अनेक गिरजाघरों में एक-एक बॉक्स रखा जाता था, जिसमें श्रदालु अपनी मन्नत कागज पर लिखकर बॉक्स में डाल देते थे। उस कागज को लेकर पुजारी स्थानीय देवी-देवताओं के पाँव के नीचे रख देते थे और भक्त की मनोकामना पूर्ण हो, कहकर आशीर्वाद मांगते थे। मार्टिन ने कहा कि कुछ अंचलों में स्थानीय लोगों की अगर इच्छाएं पूरी नहीं होती हैं तो वे देवी-देवताओं के प्रति अपना व्यवहार बदल देते हैं। स्थानीय निवासियों की इच्छा-पूर्ति नहीं करने के कारण मेक्सिको के केन्द्रांचल में 'सेंट एंटनी' की मूर्ति उल्टी कर दी गई,अर्थात् सिर नीचे और पैर ऊपर। दूसरे शब्दों में, भक्त भी देवी-देवताओं को दंडित कर सकते हैं।

'गुआडालूपे' स्थानीय ईसाईयों की सर्वोच्च देवी है। गुआडालूपे के वर्जिन को समझे बिना मेक्सिको के धार्मिक विश्वासों और कैथोलिक ईसाई धर्म को नहीं समझा जा सकता है। उसकी तस्वीर मेक्सिको में हर जगह पर है - रेलवे स्टेशनों पर, बसस्टैंड में बसों और कारों के अंदर, रेस्तरां में, शराब की दुकानों पर, विभागीय दुकानों में। इसलिए गुआडालूपे' का बेसिलिका अजीब तीर्थ है। जुआन डिएगो के वर्जिन मैरी मिराकल का पोप अलेक्जेंडर सप्तम ने सन 1663 में प्रत्यक्ष सत्य कहकर घोषणा की थी। इस जगह का नाम "टेपेयाक" था। छोटी पहाड़ी पर जहां जुआन डिएगो सैंटियागो चर्च में प्रार्थना करने गया था। अचानक उसने आकाशवाणी सुनी एक प्रश्न के साथ: "हे मेरे बेटे जुआन, तुम कहाँ जा रहे हो?" उसका उत्तर सुनने के बाद जुआन ने देखा समग्र पहाड़ी अंचल एक अद्भूत रोशनी से चमक उठा था। वह उस प्रकाश के स्रोत की ओर बढ़ा। फिर से आकाशवाणी हुई, *"मैं वर्जिन मैरी हूँ, पवित्र भगवान की मां।"* उस आवाज ने उस जगह पर चर्च बनाने और मेक्सिको सिटी के तत्कालीन बिशप को अवगत कराने का आदेश दिया। जब बिशप ने इस बात का सबूत मांगा तो जुआन टेपेयाक पहाड़ी पर फिर से प्रार्थना करने गया। प्रार्थना के जवाब में पूरी पहाड़ी गुलाब उद्यान में बदल गई। उस बगीचे से आवाज़ आई, इन गुलाब फूलों का गुच्छा तोड़कर तुम बिशप को उपहार दो। जुआन ने ऐसा ही किया, बिशप जुआन से पुष्प-गुच्छ स्वीकार करते समय वर्जिन मैरी का एक चित्रपट्ट बाहर निकला।

अभी भी बेसिलिका में वर्जिन मैरी का वह चित्र है। बेसिलिका में बहुत बार बैठकर हमने आते-जाते यात्रियों की ओर देखा। चित्र में वर्जिन मेरी प्रतिपदा के चाँद के ऊपर खड़ी हुई है,उसके चारों ओर आलोक आभा, नीली पोशाक, यहाँ-वहां चमकते सितारे, एक तरफ झुका सिर, अधखुली आँखें और चेहरे पर करुणा और दया के सुंदर भाव। इस मूर्ति को लेकर पहले एक बेसिलिका का निर्माण हुआ था। उधर यह चित्र रखा गया था। टेपेयाक पहाड़ी पर मेट्रोपॉलिटन कैथेड्रल मेक्सिकोवासियों के लिए तीर्थ-स्थल बन गया। यह कैथेड्रल बहुत छोटा था और उसके खंडहर अभी भी हैं। सन 1709 में टेपेयाक पहाड़ी की तलहटी में एक बड़ा और भव्य कैथेड्रल बनाया गया। सन 1895 में पेरिस में सोने और बहुमूल्य रत्नजड़ित मुकुट बनाकर यूरोपीय कैथोलिकों द्वारा मेक्सिको को दान किया गया। वह सुंदर मुकुट अब वर्जिन मैरी के मस्तक की शोभा बढ़ा रहा है। 1904 में गुआडालूपे चर्च को रोम के वेटिकन ने बेसिलिका की मर्यादा दी। टेपेयाका पहाड़ी की तलहटी में जिस भित्तिभूमि पर बेसिलिका खड़ी थी, वह धीरे-धीरे दबने लगी। प्रतिवर्ष अधिक से अधिक दबने के कारण बेसिलिका एक ओर झुक गई, लाखों मुद्रा (पेसो) खर्च करने पर भी इसे सीधा नहीं किया जा सका। मेक्सिको के लोगों के लिए जमीन का दबना एक अन्यतम अभिशाप था। यह पहले भी ही कहा गया है कि मेक्सिको सिटी एज़्टेक युग की प्रसिद्ध झील और टेनोच्टिट्लान शहर के खंडहरों पर खड़ा है। जो भी हो, मेक्सिको वासियों ने 1970 में निर्णय लिया कि वर्जिन मैरी या वर्जिन गुआडालूपे के लिए नए बेसिलिका का निर्माण करना आवश्यक है। पुराने बेसिलिका से कुछ   दूरी पर नए बेसिलिका का निर्माण 1976 में पूरा हुआ, वेटिकन की अनुमति के बाद अब यहाँ पूजा-पाठ होता है। भीतर में गर्भगृह बहुत ही विशाल है। मैंने दुनिया में कहीं और ऐसा बेसिलिका नहीं देखा। वृत्ताकार गर्भगृह की वास्तुकला अत्याधुनिक है। यहाँ दस हजार लोग एक साथ प्रार्थना कर सकते हैं। मुझे लगा कि यह एक विशाल कॉन्सर्ट हॉल है और देवी का मंडप एक मंच। फर्श सुंदर संगमरमर से बनी है, कई दीवारों पर स्वर्ण प्रलेपित पत्ते देखे जा सकते हैं।

कृत्रिम रोशनी की सजावट भीतर में ऐसी है कि क्या दिन,क्या रात- हर समय चंद्रमा की चाँदनी की तरह लगता है। प्रवेश द्वार से देवी-मंडप स्पष्ट दिखाई देता है और हाल के भीतर के अनेक खंभों में से कोई भी

खंभा इस दृश्य में रुकावट नहीं बनता है। अनेक विज्ञ लोगों का मानना है कि गुआडालुपे बेसिलिका ईसाई धर्म के सामान्य चर्चों की तुलना में भिन्न पवित्र स्थान है। यह अत्याधुनिक और भव्य है एवं इसके निर्माण में विपुल धनराशि खर्च हुई है,जिसमें यूरोप और अमेरिका की भूमिका अनन्य है। रोम के सेंट पीटर, लंदन के सेंट पॉल और जर्मनी में कोलोन शहर के कैथेड्रल की तुलना में गुआडालुपे बेसिलिका अत्यंत विशाल,अत्याधुनिक और कभी-कभी लगता है कि यह चर्च न होकर कुछ और है।

नया बेसिलिका पुराने चर्च के पश्चिम में है। पुराने चर्च के दबने के कारणों पर पहले चर्चा हुई है। संपूर्ण मेक्सिको सिटी एज़्टेक युग की टेक्सकोको झील पर स्थित है। नई बेसिलिका की डिजाइन पूरी तरह से अपारंपरिक है। बेसिलिका के भीतर किए गए रंग काफी उज्ज्वल हैं और ध्वनिकी भी बहुत उच्च कोटी की हैं। बेसिलिका का निर्माण पादरी रैमिरेज़ वास्क्वेज के निर्देशन में किया गया था। वह नृतत्व राष्ट्रीय संग्रहालय के भी आर्किटेक्ट थे।

गुआडालुपे बेसिलिका मेक्सिको का सबसे पवित्र स्थान है। रोम के पोप ने 1945 में गुआडालुपे की वर्जिन को 'अमेरिकियों की आस्था' की संज्ञा दी है। कई किंवदंतियां और चमत्कार गुडालुपे की वर्जिन से जुड़े हुए हैं। इतिहास कहता है कि 1629 में मेक्सिको सिटी में एक भयानक बाढ़ आई थी। पूरा शहर पानी से भर गया था, कई मकान ध्वस्त हो गए, कई लोगों की मृत्यु हो गई थी, इस ऐतिहासिक घटना के साथ एक अलौकिक मिथक जुड़ा हुआ है। मेक्सिको नगरी के आर्कबिशप ने गुआडालुपे से वर्जिन का चित्र लाकर मेट्रोपोलिटन कैथेड्रल में पूजा-आराधना की। ऐसा कहा जाता है कि बारिश बंद हो गई और बाढ़ का पानी कम होने लगा, शहर को और अधिक नुकसान से बचा दिया गया। ऐसे कई चमत्कार और विलक्षण घटनाएं वर्जिन के नाम से जुड़ी हुई हैं। उन्हें मेक्सिको की अप्रतिद्वंद्वी देवी माना जाता है और उसकी पीठस्थली को श्रेष्ठ धर्मपीठ के रूप में सर्वसम्मति से माना जाता है।

टेनोक्चिटलन और आज़्टेक सभ्यता

सन 1502 में मोक्तेजुमा द्वितीय टेनोक्चिटलन का सम्राट बने थे। उन्हें अपने पूर्ववर्ती सम्राटों की तरह युद्ध करने का शौक नहीं था। इसके विपरीत,उन्हें युद्धविमुख,शांति प्रिय और कई पारंपरिक मंदिरों के निर्माता के रूप में जाना जाता था। सन 1519-20, इन दो वर्षों के दौरान हर्नान कोर्टेस क्यूबा से अपने सैन्य-सामंत के साथ पहुंचकर आज़्टेक का विरोध कर रहे छोटे-छोटे राज्यों की सहायता से टेनोक्चिटलन पर कब्जा करने का प्रयास किया। आज़्टेकों का धार्मिक विश्वास था कि उनका श्रेष्ठ देवता पूर्व दिशा से आएगा, वह श्वेतकाय होगा और उनका वाहन होगा पंखों वाला घोडा। सरल धार्मिक मोक्तेजुमा ने पहले आक्रमणकारियों के दल और उनके मुखिया हर्नान को देवता मान लिया। बहुत देर बाद उनका यह भ्रम खत्म हुआ। हर्नान ने मोक्तेजुमा को शांति-संधि पर हस्ताक्षर करने के लिए मजबूर किया। शांतिप्रिय राजा ने इस प्रस्ताव पर अपनी सहमति व्यक्त की तो उनकी प्रजा ने भयंकर उत्तेजित होकर अपने सम्राट पर पत्थर,ढेले,तीर-भाले फेंके। इतिहासकारों के अनुसार इस घटना से सम्राट का दिल टूट गया था और मर्माहत होने से उनकी मृत्यु हो गई। प्रजा आक्रमणकारियों से छः महीने तक घमासान लड़ाई करती रही।30 जून, 1520 की रात के दौरान लड़ी गई भयानक लड़ाई में लगभग दो-तिहाई स्पेनिश सेना को मौत के घाट उतार दी गई। इतिहासकारों का कहना है कि उनमें से

ज्यादातर झील में कूदकर मर गए थे क्योंकि वे लूटपाट में मिले प्रचुर सोने को हाथ से जाने नहीं देना चाहते थे। इतिहासकाज़ उस रात को *'द सेड़ नाइट या दुखद रात'* की संज्ञा देते है।

हर्नान ने हिम्मत नहीं हारी, फिर से अपनी सेना इकट्ठी की, अधिक से अधिक हथियार और गोला-बारूद की व्यवस्था की और आज़्टेक विरोधी छोटे-छोटे राज्यों के मुखियाओं को अपने पक्ष में करने में सफल रहे। 28 दिसंबर, 1520 को उस समय के हिसाब से सबसे बड़ी लड़ाई हुई। हजारों मेक्सिको वासी मारे गए। सम्राट के भाई और उत्तराधिकारी क्विट-ला-हुअक, जिन्होंने केवल अस्सी दिन शासन किया था, वे भी युद्ध में मारे गए। छह ह सप्ताह तक टेनोक्चिटलन के लिए आक्रमणकारी सेना के खिलाफ मोर्चा संभाला। झील और शहर को चारों ओर आक्रमणकारी सेना ने डेरा डाल दिया था। आखिरकार सन 1521 के अप्रैल में अनाहार और साहसी लड़ाई में असंख्य मेक्सिकोवासियों की मृत्यु हो गईं। उसके बावजूद नए सम्राट क्वाटोम, मोक्तेजुमा के दामाद , आक्रमणकारियों से लोहा लेते रहे। हर्नान ने शहर में पानी और भोजन की आपूर्ति बंद कर दी। अंत में, 13 अगस्त, 1521 ई॰ को स्पेनिश सेना शहर पर कब्जा करने में कामयाब रही। इतिहासकार बर्नाल डाएज ने पराजय के बाद टेनोक्चिटलन के परिदृश्य का इन शब्दों में वर्णन किया है, *"हमने लाशों से भरे घर देखे और कुछ बेचारे बचे हुए मेक्सिको वासी अब भी उनमें थे, जो चल नहीं पा रहे थे। शहर ऐसा दिख रहा था मानो वहाँ किसी ने हल चला दिया हो। सामने आए किसी भी हरे खाद्य पदार्थ की जड़ों को खोदकर, उबालकर खाया गया था और यहाँ तक कि कुछ पेड़ों की छाल को भी। .... "*

क्वाटेमोक की दुर्दशा वहीं से शुरू हुई थी। नाव से झील को पार करते समय विपक्ष सेना द्वारा वह पकड़ा गया और बंदी बनाकर उसे हर्नान के सामने लाया गया। 24 वर्षीय उस वीर नायक और इतिहास प्रसिद्ध आज़्टेक सभ्यता के अंतिम सम्राट ने अनुरोध किया कि उसे अपनी तलवार से मारा जाए, मगर उनके अनुरोध को अस्वीकार कर दिया गया। चतुर हर्नान ने उसे गले से लगा लिया और उसकी बहादुरी की प्रशंसा करने लगा। उसका असली मकसद था सम्राट मोक्तेजुमा के विशाल खजाने के ठिकाने का पता करना। शायद उस खजाने को *'द सेड़ नाइट'* को लूट लिया गया।

इतिहास के अन्य युद्धों की तरह आज़्टेक केवल पराजित ही नहीं हुए थे, वरन प्राचीन इतिहास और पश्चिमी गोलार्ध की अन्यतम प्रसिद्ध सभ्यता समूल नष्ट हो गई थी। सभ्यता का कोई नामोनिशान नहीं बचा था। इतिहासकारों का कहना है कि 1519 ई॰ से युद्ध के अंत तक शहर के लगभग 95 प्रतिशत लोग युद्ध, प्यास और आत्महत्या के कारण मर गए थे। इस युद्ध का विवरण सोलहवीं सदी की एक पांडुलिपि में उपलब्ध है। उसमें हर्नान कोर्टेस, आज़्टेक सेना और उनकी पारंपरिक पोशाकें देखने को मिलती हैं।

इतिहास के पन्नों में नष्ट हुई बहु प्राचीन सभ्यताओं के कुछ उपादान भविष्य के लिए मिट्टी के नीचे मिल जाते हैं, आज की मैक्सिको नगरी टेनोक्चिटलन के वक्ष-स्थल पर बनी है। लेकिन उस सभ्यता का कोई निशान नहीं मिल रहा है। आज़्टेक और यूरोपीय स्रोतों से बहुत कम सबूत उपलब्ध हुए हैं। आज़्टेक ने टैक्स रजिस्टर, हिसाब खाता,समकालीन अनेक रिकॉर्ड बनाकर रखे थे,लेकिन उनकी लिपि चित्रात्मक थी। इसलिए स्पेनियों के अत्याचारों से बहुत कम बच पाई, बाकी ज्यादातर उन्होंने जला दिए थे।आज़्टेक का साहित्य, संगीत, पारंपरिक गाथा, प्रार्थना-श्लोक सभी मौखिक,अलिखित थे। इस तरह आज़्टेक सभ्यता पूरी तरह से मिट गई।सम्राट

मोक्तेजुमा के गैर-ईसाई होने की आशंका सत्य साबित हुई। हर्नान कोर्टेस के आगमन ने आज़्टेक की दुनिया और उसका समृद्ध इतिहास नष्ट कर दिया। सौभाग्यवश स्पेनिश कब्जे के बाद यूरोपीय लिखित वर्णमाला की सहायता से स्पेन भाषा और आज़्टेक की 'नहुआटल' भाषा में कुछ हद तक आज़्टेक सभ्यता की परंपरा और संस्कृति लिपिबद्ध की जा सकी। जीवित आज़टेकों ने अपनी मौखिक परंपराओं का उनके आगे वर्णन किया। कुछ स्पेनियों ने भी 'नहुआटल' आज़्टेक भाषा सीखकर अनेक शोध निष्कर्ष लिखे। मगर वास्तव में अफसोस की बात यह है कि एथेंस के एक्रोपोलिस या रोम के रोमनफोरम की तुलना में मेक्सिको नगरी के टेनोक्चिटलन समय की बहुत कम जानकारी उपलब्ध है। केवल 1960 ई॰ में खुदाई में एक मंदिर-पिरामिड मिला था, जो उनके देवता ' हिव्जिल पोकटली' के मंदिर का एक हिस्सा था। इस अंचल को 'तीन संस्कृतियों का प्लाजा' कहा जाता है, जिसके आस-पास कई आधुनिक इमारतों का निर्माण किया गया है।

पेरिस की विश्व प्रसिद्ध सड़क है 'सांजेलिजे'। रिफार्मा इस सड़क से अधिक चौड़ी है, और अधिक सुंदर भी। यह सड़क 1860 ई॰ में पेरिस में उसके अनुकरण में बनी थी। इस विस्तृत सड़क पर रात को आलोकमालाएँ सुसज्जित होती हैं और इसका पार्श्ववर्ती इलाका परियों के देश की तरह लगने लगता है। मेक्सिको राज्यों का संघ है। इस सड़क पर प्रत्येक राज्य को अपने सबसे प्रसिद्ध व्यक्ति की मूर्ति स्थापित करने के लिए आमंत्रित किया गया था। उन मूर्तियों में से अनेकों को मेक्सिको के अधिकांश लोग शायद भूल गए हैं लेकिन उन्हें अभी भी दो हतभागे,मगर क्रांतिकारी सम्राट याद हैं, जिन्होंने आज़्टेक सभ्यता की रक्षा के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए थे। उपरोक्त दोनों सड़कों के चौराहे, जो मैक्सिको शहर की सबसे प्रशस्त और सबसे सुंदर जगह हैं, वहाँ पर है मोक्तेजुमा के छोटे भाई की मूर्ति। इतिहासकारों का कहना है कि हमलावर स्पेनियों ने 21 अगस्त को सम्राट पर बहुत अत्याचार किए थे और उन्होंने आज़्टेक साम्राज्य के स्वर्णभंडार के बारे में जानकारी लेने की बहुत कोशिश की थी, मगर नाकाम रहे थे। इसलिए 21 अगस्त मैक्सिको वासियों के लिए बहुत बड़ा दिन है और वे मानते हैं कि दुश्मन के सामने आत्मसमर्पण करने की बजाय मृत्यु वरण करना ज्यादा श्रेयस्कर है।

इतने कम समय में इतनी महान सभ्यता कैसे नष्ट हो गई ? इस विषय पर मेक्सिको के इतिहासकारों, समाजशास्त्रियों, दार्शनिकों और लेखकों में तर्क-वितर्क चलते रहते है। यह सच है कि हमलावर स्पेनियों ने आज़्टेक विरोधी कई छोटे आदिम समुदायों को अपने पक्ष में ले लिया था और उनकी संयुक्त ताकत बहुत उच्च स्तर की थी। इसके अलावा, आज़्टेक लोगों ने जो वीरता का प्रदर्शन किया था, वह बेहद असंगठित थी और सम्राट मोक्तेजुमा द्वितीय अपनी प्रजा को उचित नेतृत्व नहीं दे पाए थे। इस पराजय के बारे में मैक्सिको तथा लैटिन अमेरिका के महान कवि ओक्टेविओ पाज़ ने कई बातें कही हैं। उनके मत के अनुसार आज़्टेक सभ्यता ने अपने गौरवमय मध्याह्न में ही आत्महत्या का रास्ता चुन लिया था। मोक्तेजुमा द्वितीय ने स्पेनियों के इस हमले को दैविक घटना समझा था। उन्होंने यह भी सोचा कि यह इतिहास के एक अध्याय का अंत था और दूसरे की शुरुआत। ओक्टेविओ की भाषा में, *" वे देवता चले गए क्योंकि उनका समय समाप्त हो गया था, लेकिन दूसरी अवधि लौट आई और इसके साथ, दूसरे देवता और दूसरा युग भी। जब हम नवजात आज़्टेक प्रदेश के युवाओं और शक्तियों पर विचार करते हैं, तो दिव्य विसर्जन अधिक दयनीय लगता है।"*

उनका मानना था कि लंबे समय तक रोमन या बाइजेमनितयम साम्राज्य दीर्घसमय अतिक्रांत होने के बाद शायद थक गए थे और मृत्यु का आह्वान सुन पाए थे। दूसरी ओर, ऐसा लगता है आज़्टेक सभ्यता मध्याह्न लग्न में अचानक आगे बढ़ने की प्रवृत्ति,शक्ति, सामर्थ्य की स्मृति को पूरी तरह से भूल गई थी। यह प्रतीत

होता है कि स्पेनियों की उपस्थिति ने आज़्टेक समाज, उनके देवताओं का समाज, धार्मिक परंपराओं को नष्ट कर दिया हो। उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'द लेबरिंथ ऑफ सॉलिट्यूड' में इसके विशद दार्शनिक कारण दर्शाए है:*"आज़्टेक लोगों के एक भाग ने हिम्मत खो दी और आक्रमणकर्ता की शरण लेने लगे।"*

आज़्टेक धार्मिक मान्यताओं में द्वैतवाद हमेशा से रहा है। एक तरफ, प्राचीन आदि देवता ह्यूत्ज़िल पोचटली युद्ध-बलिदान के देवता थे, जिन्होंने कभी हार नहीं मानी। दूसरी ओर, पुरोहितों और सामाजिक वर्गों के देवता थे कुएतजल कोटल अर्थात् सूर्य देवता, जो स्वैच्छिक मृत्यु को जीवन और समाज का सर्वोत्तम गुण मानते थे। ह्यूत्ज़िल पोचटली वीरता, शौर्य, आत्मविश्वास और संग्रामी मनोभावों के प्रतिनिधि थे। क्रूरता और बर्बरता भी उनके कुछ हद तक दूसरे गुण थे। दूसरी ओर, पुरोहितों के देवता युद्ध-विमुख और समर्पण के देवता थे। दूसरा मोक्तेज़ुमा और उसके दरबारी दूसरे देवता के भक्त बन गए। ऐसे द्वन्द्वात्मक परिवेश के कारण आज़्टेक सभ्यता इतनी गौरवशाली और इतने विशाल साम्राज्य की हकदार होने के बाद भी साधारण फूल की तरह मुरझा गई।

इस विषय पर इतनी लंबी व्याख्या करने का कारण मैं जितनी बार सोचता हूँ आज़्टेक सभ्यता पूरी तरह से नष्ट हो गई है और इतिहास के पन्नों में एक झलक भी नहीं तो मुझे हमेशा अजीब लगता है। ओक्टेविओ पाज़ का विश्लेषण मुझे तर्क-संगत लगता है।

मैक्सिको शहर दुनिया का सबसे बड़ा शहर है। बीसवीं सदी अर्थात् 2000 ई॰ में इस शहर की आबादी (अपने उपनगरों को लेकर) दो करोड़ से अधिक थी।पश्चिमी गोलार्ध में यह सबसे प्राचीन शहर है। सोलहवीं शताब्दी में जब हेरनान कोर्टेस और उसकी सेना ने इस शहर पर कब्जा कर लिया था,तब इसकी आबादी तीन लाख थी। उस समय भी यह दुनिया का सबसे बड़ा शहर था। मैक्सिको नगरी तीन अलग-अलग संस्कृतियों का संगम-स्थल है। चौदहवीं शताब्दी में आज़्टेक ने इस शहर को स्थापित किया था, नाम था 'टेनोक्चिटलन' । अमेरिकी-इंडियनों को आमतौर पर यहाँ आज़्टेक कहा जाता है। उनमें भी कई समुदाय थे। चौदहवीं शताब्दी में जिस आज्टेक समुदाय ने जिस शहर की स्थापना की थी, उसका नाम था 'मैक्सिका'। उसी नाम के आधार पर देश और नगरी का नाम मेक्सिको पड़ा। चौदहवीं शताब्दी में टेनोक्चिटलन शहर की स्थापना से पूर्व इस अंचल में एक से अधिक आदिम जनजातियाँ रहती थीं। मेक्सिका समुदाय के लोगों ने उन्हें टेनोक्चिटलन शहर से खदेड़कर अपने शहर की स्थापना की। मैक्सिका ने पूरे मेक्सिको घाटी अंचल पर शासन किया। उस समय घाटी का नाम *आनाहुआका* था। मेक्सिका लोगों का साम्राज्य मध्य अमेरिका में अटलांटिक महासागर से प्रशांत महासागर तक फैल गया था।

'टेनोक्चिटलन' की छोटी-छोटी और परस्पर जुड़ी हुई झीलों से घिरे एक द्वीप पर स्थापना हुई थी। ऐसा कहा जाता है कि मैक्सिको वासियों ने इस जगह की सामूहिक सुंदरता से अभिभूत होकर इसे अपनी राजधानी बनाया था। आज़्टेक (मेक्सिका) लोगों का साम्राज्य और संस्कृति विश्व-संस्कृति का एक बड़ा हिस्सा है। सोलहवीं शताब्दी में हर्नन कोर्टेस और उसकी स्पैनिश सेना के कब्जे में आने के बाद वर्तमान मेक्सिको स्पेनिश संस्कृति का विशेष हिस्सा बन गया। सोलहवीं शताब्दी में 'टेनोक्चिटलन' शहर मलबे के ढेर में बदल गया और आज़्टेक साम्राज्य का पतन हो गया। मेक्सिको नगरी आज़्टेक और स्पेनिश संस्कृतियों का एक अद्भूत सम्मिश्रण है। शहर के उत्तर-पूर्व में है-तीन संस्कृतियों का प्लाजा। इस प्रकार वर्तमान मैक्सिको नगरी दफन हुई झीलों पर

स्थित है। शहर समुद्र तल से 7,500 फीट ऊपर है। साधारणतया इसकी जलवायु अच्छी है। यहाँ न तो बहुत गर्म है और न ही बहुत ठंड। एक दृष्टि से यहाँ की जलवायु को नित्य बसंत की क्रीड़ाभूमि कहा जाता है। मेक्सिको की आजादी के बाद उनकी अपनी संस्कृति 'आज़्टेक' परंपरा और 'स्पेनिश' परंपरा सहित पश्चिमी सभ्यता से घुल-मिलकर एक सामूहिक संस्कृति को जन्म देती है। यह समग्र विश्व में बिरल है। जिन्होंने भी मैक्सिकन सभ्यता और संस्कृति पर लिखा हैं, उन्होंने हमेशा इन तीनों समीकरणों का उल्लेख किया है। ओक्टेविओ पाज़ ने भी इसके बारे में उल्लेख किया है। उनका मानना है कि स्पेनिश और आज़्टेक संस्कृतियों के पीछे एक और संस्कृति है, जिसका परिप्रकाश मैक्सिको नगरी से 30 मील दूर एक परित्यक्त शहर 'टोओटिहुआना' हुआ है। शहर प्राक-आज़्टेक युग से संबंधित है।

आज़्टेक सभ्यता और टेनोक्चिटलन की महिमा लंबे समय तक नहीं चल सकी। इस सभ्यता की विलुप्त चेतना आधुनिक मेक्सिकोवासियों को विव्रत करती है। मुझे लगता है कि वे लोग हार और विनाश के दुखद इतिहास को भूलना चाहते हैं। इसलिए शायद राष्ट्रीय संग्रहालय में ही नहीं या मेक्सिको की मुख्य सड़क रिफार्मा पर स्थापित मूर्तियों में ही नहीं बल्कि मैक्सिको में सर्वत्र आज़्टेक और पूर्व सभ्यताओं को इतिहास का स्वर्ण युग कहा जाता है। दूसरी तरफ पराजय के इतिहास को भूलने की चेष्टा जारी है।उदाहरण के लिए, मोक्तेजुमा द्वितीय की मूर्तियां कहीं भी रिफॉर्मा पर नहीं देखी जा सकतीं। जबकि अपेक्षाकृत कम समय के लिए शासन करने वाले और अपने देश की रक्षा में अपना जीवन बलिदान करने वाले दोनों सम्राटों की प्रतिमाएं शहर के दोनों मुख्य सड़कों के चौक पर देखी जा सकती हैं। ऐसा लगता है कि मेक्सिको के लोग इस बात को नहीं भूल पा रहे हैं कि मोक्तेजुमा द्वितीय भीरु सम्राट की मौत मरा था।

मेक्सिको नगरी में दो मुख्य सड़कें हैं। एक रिफार्मा है, जिसका पूरा नाम *पैसियो डे ला रिफार्मा* है। दूसरे को *'एवेनिडा इन्सर्जेंट'* कहते है अर्थात् विप्लव एवेन्यू । ये दोनों सड़कें लगभग आठ से दस किलोमीटर लंबी हैं और वे शहर के केंद्र में एक-दूसरे को काटती हैं।

आज़्टेक समाज का दृढ़ विश्वास था कि मानव जीवन की प्रत्येक घटना एक अदृश्य और अलौकिक शक्ति द्वारा नियंत्रित और संचालित होती है। आज़्टेक ने इन शक्तियों के चित्रों को पेड़ों की छाल या हिरण या कुछ अन्य जानवरों के चमड़े पर बनाकर एकत्रित कर पुस्तकाकार रूप में बांधते थे। इन चित्रों को विभिन्न शक्तियों का प्रतीक माना जाता था, इनको बनाने वाले चित्रकारों को आज़्टेक समाज में उच्च स्थान मिलता था। इन चित्रों को साधारण लोगों को समझाने के लिए समाज नियोजित करता था- 'कैलेंडर पुरोहित' या दिनलिपि पाठक। बच्चे पैदा होने के बाद माता-पिता उनके भविष्य के बारे में जानने के लिए उनके पास जाते थे। विवाह के लिए दुल्हन, दूर देश जाने की योजना आदि में पुरोहित की राय ली जाती थी।

तुलाने विश्वविद्यालय की एलिजाबेथ बोन ने इस विषय पर विशेष शोध किया है। वह कहती है कि कभी आज़्टेक समुदाय में ऐसी नौ किताबें हुआ करती थीं। कालक्रम में सात पुस्तकें नष्ट हो गई, फिलहाल केवल दो ही पुस्तकें बची हैं, जिन्हें उसने खुद संग्रह किया है। आज़्टेकों के सप्ताह में तेरह दिन हुआ करते थे। लेकिन वर्ष के हर दिन के लिए निर्दिष्ट देवी-देवता के द्वारा नियंत्रित कथावस्तु की जानकारी इसी पुस्तक में मिलती थी। श्रीमती बोने ने इस किताब का नाम दिया है *'कोडेक्स बोर्गिया'*। हमारी भविष्य वाणी या कुंडली देखने की तरह ही आज्टेक समाज प्रतीकों के चित्रों की इस पुस्तक से व्यक्ति के भविष्य जानने में सक्षम थे। श्रीमती

बोने ने अपने शोध निष्कर्ष '*डिकोडिंग डेस्टिनी*' शीर्षक से प्रकाशित किए हैं। उनके शोध से स्पष्ट है कि आज़्टेक लोग अपने भविष्य के बारे में जानने के लिए इन पुस्तकों पर भरोसा करते थे और उनका मानना था कि उनकी नियति कुछ अदृश्य शक्तियों द्वारा प्रभावित होती थी।

राष्ट्रीय नृतत्व संग्रहालय

1964 ई॰ में राष्ट्रीय नृतत्व संग्रहालय साधारण जनता के लिए खोला गया था। मैंने दुनिया के कई संग्रहालय देखे थे, लेकिन ऐसा कहीं नहीं, जिसमें इतने सारे मूल्यवान दस्तावेज और वस्तुएँ रखी गई हों। मैंने अपने रहते समय जितनी बार संग्रहालय का दौरा किया था, मैंने देखा कि वहाँ संग्रहालय को किसी पवित्र स्थान से कम नहीं माना जाता था। हर साल लगभग 15 लाख लोग इस संग्रहालय को देखने आते हैं अर्थात् लगभग 50 प्रतिशत भारतीय पर्यटक इस संग्रहालय की यात्रा करते है।

पुरातत्वविदों द्वारा शहर के सबसे बड़े चौराहे जोकोलो की खुदाई में आज़्टेक सभ्यता और सुप्रसिद्ध शहर टेनोक्चिटलन के इतिहास प्रसिद्ध अभूतपूर्व स्वर्ण भंडार का एक टुकड़ा भी नहीं मिला था। टेनोक्चिटलन पर अधिकार सम्राट मोक्तेजुमा के महल और घंटाघर में रखा हुआ विपुल सोने का भंडार कहाँ चला गया, इस बात पर पुरातत्वविदों और इतिहासकारों को आश्चर्य होता है। जोकोलो की खुदाई इस विषय पर कोई प्रकाश डाल नहीं पाई। सोने का भंडार भले ही नहीं मिला हो, मगर आज़्टेक युग की तीन सौ वस्तुएं खुदाई में अवश्य मिलीं। जमीन के नीचे से पत्थरों की छुरियाँ, समुद्री शंख, मोतियों के हार और पत्थर की कई भग्न मूर्तियाँ मिली। ये सारी चीजें राष्ट्रीय संग्रहालय में रखी गई है। पुरातत्वविदों का मानना है कि जोकोलो के जिस हिस्से से ये प्राचीन वस्तुएं पाई गईं, वह जगह टेनोक्चिटलन की प्रसिद्ध *ग्रटे टीकोली* है। 1970 ई॰ में की गई खुदाई में उपर्युक्त वस्तुएं मिलीं, उनमें सबसे ज्यादा अद्भूत चीज थी आज़्टेक स्मारक: एक विशाल वृत्ताकार चट्टान था, जिसका वजन 24 टन, व्यास 12 फीट और मोटाई चार फीट थी। इस चट्टान पर खुदा हुआ था सूर्य भगवान टोंटियुह का मुंह, जिसके चारों ओर बहुत से अद्भूत अबोध्य प्रतीक थे। पुरातत्वविदों ने अपने शोध के आधार पर गहरे भूरे रंग के बेसाल्ट के इस मोनोलिथ को *आज्टेक कैलेंडर रॉक* नाम दिया। प्रतीकों में मुख्यत: आज़्टेक शैली में प्रति 52 वर्ष में संगठित हुए पुण्य समय चक्र और आज़्टेक वर्ष के 18 महीने और 20 दिन शामिल थे। मेक्सिको का सबसे प्रसिद्ध और लोकप्रिय यह चट्टान पूर्व हिस्पैनिक युग की है। सूर्य भगवान के चेहरे को केंद्र में रखकर चारों ओर वृतमाला और उनमें कई चित्रलेख पर्यटक सोवेनियर में अंकित है। मैंने सुना है कि यह मैक्सिको शहर और अन्य बड़े शहरों और यहां तक कि गांवों की चमड़े की वस्तुएं, चांदी के हार, तांबें की प्लेट, लकड़ी के विभिन्न आकार के बर्तन, टी-शर्ट आदि आदि यहाँ पर अंकित हैं। नेशनल म्यूजियम का यह विशाल मोनोलिथ पत्थर सबसे ज्यादा आकर्षक है।

राष्ट्रीय संग्रहालय के प्रवेश द्वार पर शोभायमान हो रहा है अमेरिकी महाद्वीप का सबसे विशाल मोनोलिथ बेसाल्ट की स्थापित ट्लालोक की 23 फुट ऊंची और 168 टन वजनी पत्थर की मूर्ति। इसके पीछे 175 फीट * 265 फीट क्षेत्रफल की कंक्रीट और स्टील की एक विशाल छह त है, जो कांस्य और पत्थर से बने एक स्तंभ पर टिकी हुई है। इसे दुनिया की सबसे बड़ी कैंटीलीवर छह त माना जाता है। स्तंभ के चारों तरफ सुंदर झरना बनाया गया है। ऑक्टेविओ पाज़ सहित कई लेखकों, स्थापत्यकारों, पुरातत्वविदों ने इस संग्रहालय को आधुनिक मेक्सिको का 'द ग्रेट टीकाली' नाम दिया है। संग्रहालय में कई हॉल, गैलेरी, ईसा के पूर्व देवी-देवताओं

और कई अन्य स्मारक देखने के बाद मुझे इस चीज का आभास हुआ कि यह आधुनिक मैक्सिको के उस प्राचीन टेनोक्चिटलन शहर के देव-मंदिर के समांतराल अनुष्ठान है।

संग्रहालय में विस्तार से प्राक् कोलंबियाई संस्कृति और प्राचीन मेक्सिको की विरासत प्रदर्शित की गई। सोलहवीं शताब्दी में हर्नान कोर्टेस के आक्रमण से पहले प्राचीन मेक्सिको में पाए जाने वाली छह ह अलग-अलग संस्कृतियां अलग-अलग हॉल में प्रदर्शित की गई हैं। ओल्मेक, मिक्टेक, जेपटेक, मायन, टॉलटेक और अंत में आज़्टेक संस्कृति। संग्रहालय के विभिन्न हॉलों में घूमने के बाद मुझे पता चला कि आज़्टेक संस्कृति प्राचीन मेक्सिको की सबसे महत्वपूर्ण संस्कृति थी। यह संस्कृति प्राचीन मेक्सिको के सांस्कृतिक इतिहास के शिखर पर थी। आज़्टेक संस्कृति केवल वास्तुकला और मूर्तिकला तक ही सीमित नहीं थी, वरन् उस संस्कृति के अंत:स्थल में भयानक नृशंसता भी मौजूद थी। संग्रहालय के आज़्टेक हॉल में बलिवेदी पर एक जीवित व्यक्ति को सोया हुआ दिखाया है और एक पुरोहित उसके जीवंत हृदय को छुरी से बाहर निकाल रहा है। इसे तत्कालीन प्रचलित भयानक मध्ययुगीन बर्बरता मानी जा सकती है। मैक्सिको के प्रसिद्ध कवि ओक्टेविओ पाज़ की भाषा में, *"नृतत्व संग्रहालय में प्रवेश करने का मतलब मिथकीय वास्तुशिल्प को भेदना है।"* ओक्टेविओ पाज़ का यह कथन बिलकुल सही था। मैक्सिको के सबसे महान उपन्यासकार कार्लो फुएंटेस ने मुझे हार्वर्ड में कहा था, *"मिथ-बनाना मैक्सिको सिटी का सबसे प्रमुख उद्योग है।"* मैक्सिको वासी खुद चुनते हैं कि वे किस पर विश्वास करेंगे और किस पर नहीं। वे यह भी चुनते हैं कि उन्हें किसको याद रखना है और किसको नहीं।जब उनकी इच्छा होती है, वे कल्पित घटनाओं को भी स्वीकार कर लेते हैं।

संग्रहालय में प्रवेश करते ही हमारी पहली मुलाक़ात हो गई आज़्टेक के वर्षा-देवता 'टियैलोक' से। एक पत्थर से बनी, 25 फीट ऊंची मूर्ति जिसका वजन 197 मैट्रिक टन है। मुख्य लॉबी की दीवार पर आप देख सकते हैं, मेक्सिको के अन्यतम प्रसिद्ध कलाकार रफिनो तामायो का विशाल म्यूरोम। संग्रहालय में कुल मिलाकर बारह प्रदर्शनी हॉल हैं। इन सभी से दर्शकों को आधुनिक संस्कृति की पृष्ठभूमि और देश की प्राचीन सभ्यताओं के बारे में जानकारी मिलती है। मुझे आज़्टेक हॉल सबसे ज्यादा पसंद आया। आज़्टेक कैलेंडर रॉक, मोक्षेजुमा के सिर का प्राचीन आवरण (मूल ऑस्ट्रिया के वियना संग्रहालय में संरक्षित है, यहाँ उसकी कॉपी है) यहां देखे जा सकते हैं और टेनोक्चिटलन का एक पूर्व हिस्पैनिक मॉडल भी। जिस झील के ऊपर प्राचीन सभ्यता की स्थापना हुई थी, उसका भित्ति-चित्र भी लगाया गया है।

हमने आज़्टेक हॉल के बाद टियोटिहुआकन हॉल देखा। यह बहुत ही और विशाल था। इस हॉल के अंदर प्रदर्शित है मुख्यतः टियोटिहुआकन में मेरे देखे हुए क्वाट्जल कोएटल मंदिर के मॉडल। कई अन्य देवी-देवता की मूर्तियाँ और खुदाई के समय जमीन के नीचे से निकली वस्तुएं भी यहां देख सकते हैं। अन्य दस हॉल में कई बहुमूल्य दर्शनीय वस्तुएं रखी गई हैं,जो आज्टेक के पहले वाली संस्कृति के बारे में जानकारी देती हैं। उनमें ज्यादातर मायान, टॉलटेक, मिक्टेक और जपानटेक समय की वास्तुकला, प्राचीन फर्नीचर, गहने, हस्तशिल्प आदि से संबंधित वस्तुएँ हैं। सबसे पहले 20 मिनट की एक डाक्यूमेंटरी फिल्म दर्शकों को दिखाई जाती है, जिसमें मैक्सिको की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से लेकर 1521 ई॰ में हर्नन कोर्टेस के आक्रमण तक की पूरी तस्वीर दिखाई जाती है।

मैंने राष्ट्रीय संग्रहालय में कुल सात घंटे बिताए। मैक्सिको की प्राचीन संस्कृति और खासकर आज़्टेक संस्कृति के बारे में मेरी एक धारणा बनाई। और ज्यादा पढ़ने के लिए मैक्सिको की प्रकाशित एक बड़ी किताब खरीदी।

जोकोलो- संविधान प्लाजा

मैक्सिको में रहने के दौरान हम एक पूरे दिन के लिए जोकोलो चले गए। जोकोलो मेक्सिको का अन्यतम प्रसिद्ध स्थान है। स्पेनिश में, इसका मतलब है कि संविधान प्लाज़ा।यह शहर के केंद्र में स्थित है। जो दुनिया का अन्यतम विशाल चौराहा है। संविधान प्लाजा के एक तरफ नेशनल पैलेस है। इतिहास कहता है आज्टेक सम्राट मोक्तेजुमा द्वितीय का महल इस स्थान पर स्थित था। आक्रमणकारी हर्नन कोर्टेस ने आज़्टेक सभ्यता को नष्ट करने के बाद टेनोक्चिटलन जैसे समृद्ध शहर को उजाड़कर इस जगह पर अपने नए महल का निर्माण किया था। मगर उत्तेजित जनता ने 1692 ई॰ में इस महल को ध्वस्त कर दिया था। पुराने महल के खंडहर आज भी कुछ हद तक देख सकते हैं। 1698 ई॰ में महल का पुनर्निर्माण हुआ और वायसरॉय के आधिकारिक निवास के तौर पर इसका इस्तेमाल किया जाने लगा। 1821 ई॰ में मेक्सिको के गणराज्य बनने के बाद राष्ट्रपति कार्यालय और अन्य कार्यालय इस स्थान पर काम करने लगे। बीच-बीच में कुछ अंश बढ़ा दिए गए हैं, उदाहरण के तौर पर 1909 ई॰ में तीसरी मंजिला का निर्माण किया गया था।

मेक्सिको के सबसे प्रसिद्ध चित्रकार डिएगो रिवेरा के विशाल भितिचित्र राष्ट्रीय पैलेस का सबसे आकर्षक दृश्य है। यह पैलेस के मुख्य प्रवेश द्वार का एक तरफ दीवार पर अंकित है। भितिचित्र में कई ऐतिहासिक और काल्पनिक कहानियों का समावेश है। मेक्सिको के कला आलोचकों का मानना है कि यह दुनिया का अन्यतम प्रसिद्ध भितिचित्र है, जिसमें मैक्सिको के प्राचीन इतिहास, आम आदमी और संस्कृति का सजीव चित्रण हुआ है। जोकोलो शहर के केंद्र में स्थित है।इसके एक तरफ राष्ट्रीय पैलेस है और दूसरी तरफ सोलहवीं सदी का प्रसिद्ध कैथेड्रल है। मैक्सिको सिटी का महानगरीय प्रशासन इस कैथेड्रल संरक्षण की देखभाल करता है। इसे लैटिन अमेरिका के सबसे बड़े और सबसे सुंदर कैथेड्रल में से एक माना जाता है। मैक्सिको सिटी के निवासी प्रार्थना करने के लिए हर दिन यहां आते हैं। राष्ट्रीय पैलेस को देखने जितने पर्यटक इस कैथेड्रल को भी देखने आते हैं।

कुछ वर्ष पहले जोकोलो से थोड़ी दूर बिजली की केबल लगाने के लिए जमीन खोदी गई थी तो लगभग 15 टन वजन वाला भास्कर्य युक्त एक विशाल पत्थर बाहर निकला था। पुरातत्वविदों का मत था कि यह चंद्र देवता की मूर्ति थी। इसके बाद आस-पास के अंचल में भू-खनन से अनेक प्राचीन ऐतिहासिक वस्तुओं के साथ आज़्टेक साम्राज्य का सबसे बड़ा मंदिर और राजधानी टेनोक्चिटलन के सबसे बड़े मंदिर का मलबा मिला। राष्ट्रीय पैलेस के अंदर एक और ऐतिहासिक चीज देखने को मिली।

इस महल के सेंट्रल हॉल की छह त से लटका हुआ 'स्वतंत्रता घंटा' (इंडिपिडेंस बेल)। 15 सितंबर, 1810 की रात को फादर मिगुएल फेदाल्गो ने घंटी बजाकर नागरिकों को सशस्त्र विद्रोह करने के लिए आह्वान किया था। उस दिन से हर साल 15 सितंबर की रात को यह विशाल घंटा बजाया जाता है। राष्ट्रीय पैलेस के इस हॉल में 1857 ई॰ को मेक्सिको के संविधान को अंतिम रूप दिया गया था।

इस महल के अंदर स्थित है *'बेनिटो कुआरेज संग्रहालय'* । इनकी मैक्सिको के इतिहास पर गहरी छाप है, इसका इतिहासकारों ने विशद वर्णन किया है।उनके जीवन के विभिन्न चरणों को संग्रहालय के अंदर चित्रित किया गया है।उनके द्वारा इस्तेमाल में ली जाने वाली मेज और कुर्सी, उनके सोने वाला खाट और अन्य फर्नीचर, उनके द्वारा प्रयोग में ली जाने वाली अन्य वस्तुएँ, उनकी अपनी किताबें इत्यादि संग्रहालय में रखी

हुई हैं। संग्रहालय में एक बड़ी लाइब्रेरी भी है, जिसमें तत्कालीन इतिहास के साथ-साथ *कुआरेज* के बारे में लिखी गई किताबें भी हैं।

जोकोलो की यात्रा के समाप्त होने के बाद पूर्व दिशा में चलते हुए हम मैक्सिको नगरी के सबसे बड़े माल-गोदाम में गए। इसे 'ला मर्सिड' कहा जाता है।यहां प्रदर्शित होने वाली सब्जियां, अनाज, फल और अन्य खाद्य पदार्थों की इतनी किस्में इकट्ठी होती है कि बिना देखे आप कल्पना तक नहीं कर सकते हैं। मेक्सिको न केवल भोजन में आत्मनिर्भर हैं, बल्कि प्रचुर मात्रा में भोजन करना भी स्थानीय लोगों के लिए सबसे बड़ी खुशी का विषय है। ऐतिहासिक काल से मेक्सिको ने पश्चिमी दुनिया को कई नए खाद्य पदार्थ दिए हैं । जिसमें चॉकलेट, टमाटर, वेनिला, मूंगफली, ऐवोकैडो, टर्की मांस आदि शामिल हैं। मैंने देखा कि मेक्सिको में मैकडॉनल्ड्स के फास्ट फूड्स, हाम्बर्गर रेस्तरां, पिज्जा हट आदि जैसी कई अमेरिकी शैली के केफेटेरिया हैं, फिर भी आज तक पारंपरिक खाना साधारण लोगों को बहुत प्रिय है। आम लोगों का मुख्य भोजन मक्का से बना टोर्टिला, मिर्चयुक्त सॉस और टमाटर हैं। टोर्टिला के साथ बहुत तरह की कटी मिर्ची और बिन मिलाकर स्वादिष्ट व्यंजन तैयार किए जाते हैं। टोर्टिला बनाने के लिए सूखे और चूरे हुए टमाटर और बीन्स में मिर्च मिलाई जाती है। मार्टिन ने कहा कि मेक्सिको में पचास विभिन्न किस्मों की बीन्स उपलब्ध है और विभिन्न आकार, रंग और खुशबू वाली एक सौ चालीस प्रकार की मिर्च भी। मार्टिन ने मुझे *ला मर्सिड* से *गार्बाल्डी प्लाजा* के सामने बहुत बड़े सर्व-साधारण डाइनिंग हॉल में ले गया। एक विशाल फुटबॉल मैदान के आकार का डाइनिंग हाल था। एक साथ लगभग दो हज़ार लोगों के खाने का दृश्य देखकर मैं आश्चर्य चकित हो गया था। काउंटर से खरीदकर टेबल पर लाकर आप खा सकते हैं । हमने भी इस विशाल पंगत में बैठकर कुछ खरीदकर खा लिया। इतने प्रकार के खाने में से चयन करना मेरे लिए दुष्कर था। मार्टिन के निर्देशानुसार मैंने अपना खाना ले लिया था। मैक्सिकन भोजन और मेक्सिको के खाने की आदतों के बारे में 1906 ई॰ के एक अंग्रेज पर्यटक की टिप्पणी मार्टिन ने मुझे सुनाई थी। वह इस प्रकार थी :-*"अवसरों के अनुरूप मेक्सिकन खाता है, और अवसर हमेशा होता है, वह हमेशा खाता है।"*

मार्टिन ने मतानुसार मेक्सिको वासियों को दो चीजों से ज्यादा लगाव है। पहला, भोजन-पेय तो दूसरा खेल, सबसे पसंदीदा खेल- बुलफाइट। स्पेन की तरह मेक्सिको में भी यह खेल अति लोकप्रिय है और मैक्सिको नगरी के सबसे बड़े बुलफाइट स्टेडियम में चालीस हज़ार लोग बैठ सकते हैं। चापुलटेपेक पार्क में छोटे बच्चों समेत बड़े लोगों का वॉलीबॉल, रिंग बॉल, बैडमिंटन आदि खेलना बहुत आम बात है।

टियोतिहुआकान: सूर्य पिरामिड, चंद्र पिरामिड

टियोतिहुआकान के लोग इकट्ठा हुए थे, साँझ के अंधेरे में। चर्चा होने लगी, हर दिन सूर्य भगवान के उगने और अस्त होने की। सूर्य भगवान के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने के बाद मुख्य पुरोहित कहने लगे, *"हमारी मक्के की फसल, घरों, सड़क-रास्तों, हर जगह वे अपनी किरणें डालते हैं। उन्हें कितना कठिन परिश्रम करना पड़ता होगा ? धीरे-धीरे वे कमजोर हो जाएंगे, केवल बातों से कृतज्ञता जताने से क्या होगा, उन्हें शक्तिशाली बनाए रखने के लिए कुछ करना होगा। नहीं तो कहीं अस्त होने के बाद कभी उदय नहीं होगा। अंधेरे का राज रहेगा, मक्के की फसल नहीं होगी,हमें कोई भी दृश्य नहीं दिखाई देगा।"* उन्होंने समस्या के हल के बारे में काफी विचार-विमर्श कर तय किया कि एक सबल,हृष्ट-पुष्ट,स्वस्थ और सुंदर युवक का खून सूर्य भगवान को चढ़ाया जाए,वैसा ही हुआ। निर्दिष्ट दिन टियोतिहुआकान के लोग सूर्य भगवान के पिरामिड के नीचे एकत्र हुए, दो

पुरोहित चयनित युवक को पिरामिड के शीर्ष पर ले जाकर पूर्व दिशा में खड़े हो गए। सूर्य के उगते समय उन दोनों पुरोहितों ने उस युवक की गर्दन नीचे झुकाकर सूर्य को नमस्कार करते हुए तलवार से सर धड़ से अलग कर दिया। टियोतिहुआकान के सभी लोगों ने सिर झुकाकर सूर्य भगवान से प्रार्थना की। जिस दिन मैं टियोतिहुआकन गया था, उस दिन मुझे लाइट एंड साउंड प्रोग्राम के माध्यम से इसके बारे में और शहर की प्राचीन संस्कृति के बारे में बहुत कुछ सीखने को मिला।

यह कहानी बहुत पुरानी है।200 ई. टियोतिहुआकान शहर की स्थापना के समय यह वर्तमान मैक्सिको सिटी से करीब 30 मील दूर स्थित था। परवर्ती पांच सौ वर्षों में यह मेक्सिको की सबसे प्राचीन सभ्यता, सबसे बड़े वाणिज्यिक केंद्र और धार्मिक क्षेत्र के रूप में जाना जाने लगा। इतिहासकारों का मानना है कि 750 ई॰ उत्तरी मेक्सिको के आक्रामक अस्थायी निवासी चिचिमेक समुदाय द्वारा नष्ट कर दिया गया। 1175 ई॰ चिचिमेक समुदाय के एक बड़े दल ने मैक्सिको घाटी में प्रवेश कर टेक्सको झील के मध्य स्थित द्वीप पर टेनोक्टीट्लान शहर की स्थापना की। इतिहासकारों के अनुसार 1325 ई॰ में इस शहर की स्थापना हुई थी। धीरे-धीरे आज्टेक समुदाय ने अपने साम्राज्य का अटलांटिक से प्रशांत महासागर तक विस्तार किया और उन्होंने पश्चिमी गोलार्ध के सबसे बड़े और धनी शहर को अपनी राजधानी बना लिया। समग्र मैक्सिको के छोटे-मोटे राज्यों ने उनकी अधीनता स्वीकार की और नाना प्रकार के सोने-चांदी के उपहार प्रदान किए थे। चौदहवीं शताब्दी से बहुत पहले टियोतिहुआकान एक प्रसिद्ध शहर था। बीसवीं शताब्दी में भूमि के नीचे से इस शहर का पुनरुद्धार किया गया। टियोतिहुआकान में बस से एक दिन का सफर मेरे लिए अविस्मरणीय बन गया। खुदाई से पुनरुद्धार किए गए टियोतिहुआकान में उच्च कोटि की संस्कृति का परिचय मिलता है। प्राचीन जन-बस्तियों के अलावा इस जगह पर अनेक मंदिर परिसर, प्रसिद्ध सूर्य पिरामिड, चन्द्र पिरामिड और दोनों पिरामडों को जोड़ने वाला एक रास्ता है, जिसका नाम *है 'डेथ हाईवे'*।

टियोतिहुआकान शहर में रहने वाले लोगों को टॉलटेक के नाम से जाना जाता था। लाइट एंड साउंड कार्यक्रम देखने से पहले मैंने शहर के मुख्य क्षेत्रों को देख लिया था। इस विशाल अंचल का क्षेत्रफल लगभग 91 वर्ग किलोमीटर है। शहर के केंद्र में थे सूर्य-चंद्रमा के दोनों पिरामिड, कई प्राचीन मंदिर और सम्राटों और अन्य शासकों के जीर्ण महल, जो खुदाई में मिले है।पिरामिड और मंदिरों के बाहरी हिस्सों पर कई भित्ति-चित्र बने हैं। पुरातत्वविदों का मानना है कि ये दोनों पिरामिड 350 ई॰पू॰ से 100 ई॰पू॰ निर्मित हुए। व्यापक शोध से पता चला हैं कि लगभग दो लाख लोग उस समय टियोतिहुआकन में रहते थे, और उस समय वह दुनिया का सबसे बड़ा शहर था। चंद्रमा पिरामिड की उत्तर दिशा का अंतिम भाग 150 मीटर लंबा, 120 मीटर चौड़ा और 42 मीटर ऊंचा है। 'चंद्र प्लाजा' यानि चंद्र पिरामिड के पास बने महल में उस समय के मुख्य शासक या मुख्य पुजारी रहते थे। सूर्य पिरामिड कुछ ज्यादा बड़ा है और पांच स्तरों में ऊपर उठा है। इस 65 मीटर ऊंचे पिरामिड की चारों भुजाएँ 225 मीटर हैं। सूर्य पिरामिड और चंद्र पिरामिड के बीच अंचल में कृषि-देवता का मंदिर है। यह मंदिर इतिहास प्रसिद्ध है। क्योंकि टियोतिहुआकान संस्कृति में कृषि सबसे महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधि थी। इस क्षेत्र के दक्षिणी हिस्से में एक विशाल स्टेडियम है, जो चारों तरफ दीवारों से घिरा हुआ है। इसे 'सिटाडेल' कहा जाता है। इसके अंदर कई मंदिर थे।कुछ मंदिर अभी भी अस्तित्व में हैं। कुएतजल कोटल अर्थात् *'पंखों वाला साँप'* वाला अन्यतम मंदिर है। पंखों वाला सांप पूर्व हिस्पैनिक संस्कृति का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है।

लाइट एंड साउंड शो देखने के बाद पास वाले रेस्तरां में कुछ नाश्ता कर जिस बस से हम गए थे, उसी बस से लौट गए। रात के नौ बज रहे थे। चाँदनी रात थी, बहुत दूर से पॉपोकटापिटल पहाड़ का शिखर दिखाई दे रहा था।मुझे लगा कि इस संस्कृति के समतुल्य नील नदी घाटी की मिस्र की संस्कृति रही होगी।

मैक्सिको का चापुलटेपेक पार्क

मैक्सिको सिटी का *'चापुलटेपेक पार्क'* केवल मेरे देखे गए पार्कों में ही सबसे बड़ा नहीं है,वरन यह सबसे सुंदर भी है और किसी भी दूसरे पार्क में इतने ज्यादा अनुष्ठान नहीं हैं। यह पेरिस के *'बोआ डी बूनो'* की तुलना में अधिक सुंदर, न्यूयॉर्क के सेंट्रल पार्क की तुलना में व्यस्त और अधिक घटनाबहुल और लंदन के सेंट जेम्स पार्क से अधिक सुपरिकल्पित और लोकप्रिय है। पार्क के अंदर सम्राट मैक्सीमिलियन द्वारा कभी प्रयोग में लाया जाने वाला महल, पांच संग्रहालय, छह थियेटर, नौकायन के लिए तीन झील, बच्चों के लिए दो छोटी ट्रेनें, दो रोलर स्केटिंग रिंक, एक चिड़ियाघर, फूलों की बिक्री के लिए बाजार, पोलो खेल का मैदान, कई सुंदर झरने, तीन बैंडबाजे, बच्चों के खेलने के लिए खुली जगह, प्राचीन जंगल के 200 फीट से अधिक ऊंचे अनेक साइप्रस पेड़ हैं। मेरे दोस्त मार्टिन ने पहले से ही रविवार के दिन वहाँ घूमने की व्यवस्था कर ली थी। करीब दस लाख लोग रविवार को पार्क में घूमने जाते हैं। पार्क हर आयु के लोगों के लिए खुला है, इसलिए हर कोई इसका आनंद उठाता है। पार्क में चारों तरफ घूमने के बाद मुझे लगा कि यह पार्क मैक्सिको सिटी का एक लघु संस्करण ही है। इस पार्क के घने जंगल से ढके हुए क्षेत्र पिकनिक के लिए निर्दिष्ट है। कम से कम सौ परिवार पिकनिक मनाने के लिए रविवार को पार्क में आते हैं, उधर से गुजरने पर मैक्सिकन भोजन की सुगंध चारों तरफ सूंघने को मिलती है। बच्चों के दल अलग-अलग खेल खेलने में व्यस्त होते हैं, अपेक्षाकृत वृद्ध लोग वॉलीबॉल खेलते हैं, पार्क के अंदर रेस्तरां में अनगिनत लोग कुछ-न-कुछ खाने में व्यस्त रहते है। झीलों के किनारे पर अनेक रेस्तरां बने हुए हैं। नौकायन के लिए छोटी-बड़ी नौकाओं के अतिरिक्त पेडल नौकाएं भी वहाँ उपलब्ध हैं। वृद्ध लोग वहाँ खूबसूरती से सजाए गए वृत्ताकार या आयताकार बेंच पर बैठकर बातें करते हैं और हाकर्स से कुछ खरीदकर खाते रहते हैं।

मैक्सिको शहर के सामान्य परिवारों के घर बेहद संकीर्ण और छोटे होते हैं, इसलिए रविवार को बाहर आकर खुले पार्क में समय बिताना किसी विलास से कम नहीं माना जाता है। पार्क बच्चों के लिए तो पृथ्वी का स्वर्ग है! खिलौना गाड़ियों में घूमने, विविध खेल खेलने, रेस्तरां में खाने, नौकायन करने या अपने माता-पिता के साथ जंगल इलाके में पिकनिक का आनंद लेने आदि के कारण पार्क बच्चों के लिए आकर्षक जगह हैं। मुझे पता नहीं था कि मैक्सिको में जादू इतना लोकप्रिय है! तीस से चालीस बच्चे पार्क के एक हिस्से में बैठे हुए थे और कुछ जादूगर अपने हाथों की सफाई दिखा रहे थे। पूछने पर पता चला कि इसके लिए बच्चों को बहुत ही कम शुल्क देना पड़ता है। चिड़ियाघर में चार-पाँच हाथी अपने कौशल का प्रदर्शन कर रहे थे, पृथ्वी के कोने-कोने से लाए गए दो हजार से ज्यादा जानवरों और चिड़ियों को देखा जा सकता हैं। चिड़ियाघर सम्राट मोक्तेजुमा की एवियरी(चिड़ियों को रखने का स्थान) थी। कहा जाता है कि सम्राट मोक्तेजुमा राज्य-प्रशासन में जितना समय देते थे, उससे ज्यादा विभिन्न अंचलों से संग्रहित पक्षियों को घूम-घूमकर देखने में। तीन झीलों में से सबसे बड़ी झील के किनारे एक सांस्कृतिक केंद्र है, जिसका नाम है *'हाउस ऑन दी लेन'*। बाहरी दर्शकों के आमोद-प्रमोद के लिए निशुल्क वहाँ पर मैक्सिको के पारंपरिक संगीत और नृत्य का आयोजन किया जाता है। सुनने में आया है, कभी-कभी वहाँ पर व्याख्यान और अन्य बैठकों का भी आयोजन किया जाता है। सांस्कृतिक केंद्र के पास स्थित

एक छोटा-सा शैक्षिक केंद्र है।जिसमें बच्चों को बढ़ईगीरी, कपड़ों की सिलाई, नौकाओं के मॉडल बनाने का काम, सुई वाले काम, फूलों की सजावट, गुड़िया बनाना आदि नि:शुल्क सिखाया जाता है। मेक्सिको का महानगरीय प्रशासन दोनों सांस्कृतिक और शैक्षणिक केंद्रों का प्रबंधन करता है। बच्चों को सिखाने का निर्दिष्ट समय हैं। अपने अतिरिक्त समय में शिक्षक वहां बनने वाली चीजों को शिक्षाकेन्द्र के ठीक बाहर अनेक दुकानों में बेचते है, जिससे उन्हें कुछ आय भी होती है।

चापुलटेपेक में सम्राट के महल का अब उसका दुर्ग के रूप में प्रयोग होता है और इसमें एक संग्रहालय भी खोला गया है। पार्क के अलग-अलग कोने में तीन संस्थान है,जिनके बारे में अलग से कहीं लिखना पड़ेगा। ये तीनों हैं- नृतत्व राष्ट्रीय संग्रहालय,आधुनिक कला संग्रहालय एवं *मोनुमेंट टू द बॉयज़ हीरोज़*।

20. न्यूयार्क में फिर एक बार, नववर्ष 1988 का स्वागत

हार्वर्ड के सिफ़ा सेंटर में एकवर्षीय प्रवास के दौरान अमेरिका सरकार के निमंत्रण पर हमारे लिए दो सप्ताह की वहाँ के विभिन्न स्थानों के परिदर्शन की व्यवस्था की गई थी। 9 जनवरी,1988 को हमने हार्वर्ड छोड़ा था और 25 जनवरी को हम वापस यहाँ पहुँच गए। हमारे प्रस्थान से दो दिन पहले अर्थात् 7 जनवरी को मैं न्यूयार्क से हार्वर्ड लौट आया था। नया वर्ष मनाने के लिए कृष्ण फूफाजी ने मुझे न्यूयार्क में अपने घर आमंत्रित किया था। कृष्ण फूफाजी अमेरिका में ओड़िशा की पहली पीढ़ी के थे। वह प्रसिद्ध पशु-चिकित्सक थे। अमेरिका के विश्वविद्यालय से उन्होंने डॉक्टरेट किया था। उनका घर ओड़िया लोगों के लिए परिचित स्थान था। हार्वर्ड आने से पहले ओड़िशा के मुख्य सचिव के.राममूर्ति ने अपनी अमेरिका यात्रा के दौरान उनसे मुलाक़ात की थी और उनके घर एक दिन ठहरे भी थे। यह बात मुझे राममूर्ति ने खुद बताई थी। इसके अलावा, कई डाक्टर,प्रोफेसर,राजनेता न्यूयार्क जाते समय या तो उनके घर पर रुकते थे,या फिर उनसे कम से कम मुलाक़ात करते थे। कृष्ण फूफा जी बहुत ही लोकप्रिय व्यक्ति थे, इसलिए नए साल का जश्न मनाने के लिए उनके घर में बहुत भीड़ होती थी। रात के 9 बजे से लॉन्ग आइलेंड,क्वीन्स,मैनहट्टान सभी जगहों से कम से कम 12 परिवार उनके घर पहुँचते थे। मुझे खास तौर पर याद है डाक्टर रायचौधरी और उनकी पत्नी। बाद में डाक्टर रायचौधरी ने भुवनेश्वर के कलिंग हॉस्पिटल के निर्माण में मुख्य भूमिका अदा की। बीच में फोन आया भुवनेश्वर से,मेरी पत्नी और बच्चों का, 12 बजने से बहुत पहले। नए वर्ष के स्वागत में टेलिफोन लाइन व्यस्त हो जाती थी। मेरे बेटे मुनु ने पहले फोन किया,मगर कट गया। फिर फोन आया,फिर कट गया। जो भी हो मुझे सभी के कुशल-क्षेम की खबर मिली। वहाँ तो नया वर्ष बहुत पहले ही आ गया था। उन्होंने भुवनेश्वर में श्री गोपीनाथ मोहंती के घर नया साल मनाया था। मुझे आज भी याद है हर साल भुवनेश्वर में रहते समय हम सभी मिलकर धौलीगिरि जाते थे,वर्ष के अंतिम सूर्य को अलविदा कहने के लिए। ठीक 12 बजे हम सभी मिलकर गोपी मामा और मामी को चरण-स्पर्श करते थे और वे दोनों हमारे सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद देते थे,मुंह में रसगुल्ला खिलाते थे।

कृष्ण फूफाजी के मैनहट्टन वाले घर में यह सारी स्मृतियाँ अचानक मन में हिलोरें खाने लगी। धौलीगिरि का शांति-स्तूप,सीढ़ी पर बैठना, चारों तरफ धान के खेत, दयानदी के उस पार वरुणेई पहाड़ के पीछे डूबते सूरज को देखना,शाम के अंधेरे में धौलीगीरी के इतिहास के बारे में गोपी मामा से सुनना सब-कुछ याद आने लगा। घर के बच्चों ने,मामा-मामी के परिवार के सभी लोगों ने नए वर्ष की शुभेच्छा भेज दी थी। हार्वर्ड से न्यूयार्क आने से पहले ही ये सारी शुभकामनाएँ मेरे पास पहुँच गई थी।

जो भी हो, इस बार न्यूयॉर्क में मेरा नया साल 1988 मनाने का संयोग था। हम टेलीविजन पर 'टाइम्स स्क्वायर' का दृश्य देख रहे थे। दो लाख से ज्यादा लोग (न्यूयॉर्क टाइम्स की रिपोर्ट के मुताबिक) वहां इकट्ठे हुए थे। ठीक बारह बजे लाल रंग का सेब 'टाइम्स स्क्वायर' के ऊंचे टॉवर से नीचे आया था। टीवी पर वहाँ इकट्ठे हुए लोगों का उत्साह और उत्तेजना साफ देखी जा सकती थी। एक-दूसरे को गले लगाना, एक-दूसरे पर पानी डालना,एक-दूसरे के चेहरे पर बर्फ मलने के दृश्य टीवी में दिखाई दे रहे थे। होटल वाल्डोर्फ एस्टोरिया के लाउंज में तीन संगीत कार्यक्रम चल रहे थे। पहला था- एक प्रसिद्ध अमेरिकी गायिका का (जहां तक मुझे याद है, वह मिस बेटल थी) जो नया साल का स्वागत गीत गा रही थीं। उस गीत के बोल,धुन और संगीत उत्कृष्ट थे। उसके बाद ज़ुबिन मेहता का ऑर्केस्ट्रा संगीत और अंत में मैनहट्टन के हारवेन के काले बच्चों का सुंदर समवेत गीत। उन गीतों के स्वर, टाइम्स स्क्वायर पर लोगों का उत्साह, भुवनेश्वर से फोन और मेरी मेज पर इकट्ठे हुए चिट्ठी-पत्रों के बीच नया साल आकर पहुँच गया था। ठीक बारह बजे हमने शुभकामनाएं जताई। फूफाजी का छोटा पुत्र टुकुना (डॉ॰आनंद मोहन दास) ने पारंपरिक तरीके से नए साल का स्वागत करने के लिए

शैंपेन की बोतल खोली। महिलाओं को छोड़कर हम सभी ने थोड़ा-थोड़ा पिया। खाना-पीना पहले से ही हो चुका था। शैंपेन के बाद हमने कुछ मिठाइयाँ खाई। एक-दूसरे से गपचप चलती रही। डेढ़ बजे सभी ने एक-दूसरे से विदा ली।नया साल डेढ़ घंटा पुराना हो गया था।

इस तरह वर्ष 1987 ने विदा ली। बिस्तर पर सोते-सोते मैंने याद किया कि विगत वर्ष मैंने क्या खोया,क्या पाया। मेरी छोटी बेटी ने दिल्ली से एम.ए. पास किया, मेरे बेटे मुनू को एनटीएस छात्रवृत्ति मिली, बीमार पत्नी को एम्स में इलाज के लिए दस दिन भर्ती कराया- सारी बातें याद आ गईं।

नए साल के पहले दिन फूफा के साथ में बसी देई और मैं उनके बड़े बेटे के घर गए। उनका बड़ा बेटा बुबु भी डॉक्टर था, जो न्यूयॉर्क से लगभग 60 किलोमीटर दूर एक छोटे से शहर में रहता था। हडसन नदी को पार करते हुए हम ब्रुन्क्स (न्यूयॉर्क के पांच उपनगरों में से एक) में बुबु के घर पहुंचे, वहाँ हमने पूरा दिन बिताया और उनकी गाड़ी में शाम को मैनहट्टन लौट आए। बुबु के घर में दिन शानदार ढंग से बीता। फूफा, बुबु, छोटा बेटा क्रिस और बेटी क्रिस्टिना के लिए अनेक उपहार खरीदे। नए वर्ष में बुबु के घर के पीछे विशाल हरे-भरे मैदान में घूमते हुए मैं अपने अतीत को याद कर रहा था। हडसन नदी के किनारे जाकर हम सभी ने थोड़ी देर के लिए वहां विश्राम लिया।

मैनहट्टन लौटने के बाद फूफा और फूफी अपना सामान पैक करने लगे। क्योंकि अगले दिन उन्हें ओड़िशा जाना था। फूफा के घर के नजदीक रेलवे ट्रैक के पीछे एक छोटा-सा सुंदर पार्क था। उस पार्क में तीन 'वीपिंग विलो' पेड़ थे, पार्क के बीचोंबीच बने छोटे तालाब में चार-पाँच बतख़ें तैर रही थी। वह पार्क मुझे बहुत अच्छा लगने लगा था। हार्वर्ड प्रवास के दौरान जब भी मैं मैनहट्टन गया, उस पार्क में अवश्य जाता था, तालाब के पास बैठकर तैरती हुई सुंदर बतखों को देखता था। उस समय पार्क सुनसान रहता था, कोई भी दूर-दूर तक नजर नहीं आता था। पार्क की घास पर यहाँ-वहाँ बर्फ दिखाई देता था। विलो पेड़ों को छोड़कर, दूसरे पत्रहीन पेड़ श्रीहीन होकर ध्यान-मुद्रा में चुपचाप खड़े थे। मैं पार्क के बेंच पर बैठकर थोड़ी दूर बने घरों की तरफ देखने लगा। एक घर का दरवाजा खोलकर एक भद्र-महिला और उसका चार-पाँच साल का बेटा बाहर निकला। तभी आस-पास के रेलवे ट्रैक पर एक ट्रेन आ पहुंची। सूर्य की कोमल किरणें सुखद लग रही थी। इतना अच्छा लग रहा था कि मैं उस बेंच पर सोना चाहता था। तीन जनवरी की सुबह हम सभी न्यूयार्क के जैक्सन हाइट पर गए। ओड़िशा ले जाने के लिए मौसा-मौसी कुछ खरीदना चाहते थे। उनके हाथ भेजने के लिए बच्चों के लिए कुछ सामान मैंने भी खरीदा। हम 5 बजे मौसा और मौसी को छोडने के लिए हम सभी भी कैनेडी हवाई अड्डे पर गए। हमने लाउंज में थोड़ी देर तक बातें कीं, उसके बाद वे हवाई अड्डे के भीतर चले गए। मैनहट्टन से घर लौटते समय थोड़ी-थोड़ी बर्फ गिरनी शुरू हो गई थी, फिर धीरे-धीरे अधिक बर्फ गिरने लगी। खाना खाने के बाद ऊपरी माले के कमरे में सहजता से नहीं सो पाया था। खिड़की खोलकर हिमपात के दृश्य को देखने लगा। बर्फ सफ़ेद होने के बावजूद भी उसमें कुछ नीला अंश था, खिड़की से चारों ओर हिमपात का दृश्य बहुत सुंदर लग रहा था। ऐसा लग रहा था मानो परियों का कोई देश हो। सुबह उठते समय चारों ओर बर्फ ही बर्फ थीं। बर्फ होने के बावजूद भी टुकुना अपनी कार निकालकर केनेडी हवाई अड्डे के पास अपने अस्पताल के लिए रवाना हो गया। कुछ समय बाद बाहर निकलकर हमने पत्रहीन पेड़ों और बर्फ पर कुछ तस्वीरें खींचीं। टुकुना की पत्नी रूबी ने अपने कैमरे से और मैंने अपने कैमरे से। पड़ोस के बच्चे बर्फ से खेल रहे थे, बर्फ की मूर्तियाँ बना रहे थे। पास घर के अठारह-उन्नीस साल के एक युवक ने बीस डॉलर लेकर मौसा के घर के सामने गिरे हुए बर्फ

को साफ किया। एक बार और चाय पीकर मैं उस छोटे सुंदर पार्क में फिर से गया। घास पूरी तरह से बर्फ से ढकी हुई थी, तालाब के किनारे से कुछ दूर बर्फ जमा हुआ था। मुझे पांच तारीख को हार्वर्ड जाना था। टुकुना और रूबी ने मुझे और दो दिन जबर्दस्ती रोककर सात तारीख को जाने के लिए बाध्य किया। उनका तर्क अकाट्य था, *"हार्वर्ड तो न्यूयॉर्क की तुलना में बहुत ज्यादा ठंडा है, अकेले अपार्टमेंट जाने से क्या आपको अच्छा लगेगा? "* उनका अनुरोध मैं काट नहीं सका,सात तारीख तक मैं वहाँ रुका। मेरे दिन आराम से कट गए, टुकुना का पुत्र अमृत बहुत छोटा था, बहुत बार मैं उसके साथ खेलता रहा। सभी बच्चों को बर्फ अच्छा लगता है, उसे भी बर्फ अच्छा लगता था। शायद उस समय उसकी उम्र पांच साल रही होगी। हम दोनों सामने वाले लॉन के पत्ते रहित पेड़ के नीचे बर्फ से खेला करते थे। मैं उसकी फोटो खींचता था। जब वह मेरी गोद में था, रुबी ने हमारी फोटो ले लीं। टुकुना हर सुबह 7.30 बजे अपने अस्पताल के लिए बाहर निकल जाता था और शाम को लगभग 7.30 या 8.00 बजे घर लौटता था। उसने हमारे देखने के लिए अच्छी फिल्में लाईं। बीच-बीच में हिमपात होता रहता था। उनके घर में मैंने जितनी फिल्में देखी थी, उनमें मुझे याद है कि मैंने *'चिल्ड्रेन ऑफ ए लेसर गॉड', 'फ्रेंच लेफ्टिनेंट'स वाइफ' (मेरिल स्ट्रीप द्वारा अभिनीत) और क्लासिक फिल्म 'कैसाब्लांका' (हम्फ्री बोगार्ट और इंग्रिड बर्गमैन द्वारा अभिनीत)* फिल्में देखी थी। रूबी हमेशा घर के कामों में लगी रहती थी, हमेशा मुस्कुराहता हुआ चेहरा। सभी कपड़े साफकर इस्त्री कर मेरे रूम में लाकर रख देती थी वह। अलबामा के बर्मिंघम से दिसंबर 30 उसके घर आने पर उसी तरह मेरे सारे कपड़े साफ कर इस्त्री कर रख दिए थे। उसने मेरी छोटी बहन की तरह देखभाल की। अमृत के साथ खेलना, उसकी बड़ी बहन आईरिस (सात साल) को कुछ पढ़ाना, फिल्में देखना, संगीत सुनना और बाहर बर्फीले रास्ते पर घूमने जाना- आदि में समय कैसे पार हो जाता था, पता ही नहीं चलता था। आज जनवरी 6 थी, हार्वर्ड में दूसरी बार मेरे कान की जांच होनी थी। मैंने डॉक्टर से नियुक्ति ली थी। नहीं जाने के कारण मैंने उन्हें फोन पर बता दिया था। आज थोड़ी धूप निकली थी, धीरे-धीरे बर्फ कुछ पिघलने लगी थी। मैं किताब पढ़ते, गाने सुनते और चाय-कॉफी पीते अपना समय काट रहा था। शाम को 7 बजे दिलीप का फोन आया। दिलीप हरिचंदन ने नव मौसा के सबसे छोटे दामाद थे, मॉन्ट्रियल में रहते थे और आईबीएम में काम करते थे।उनकी पत्नी अशोका मैकगिल विश्वविद्यालय में काम करती थी। वह अकेले-अकेले ओड़िशा चले गए थे; अशोका उनके साथ नहीं जा पाई थी। दिलीप ने कैनेडी हवाई अड्डे से कहा, मॉन्ट्रियल के लिए वह अपनी फ्लाइट नहीं पकड़ पाया,देर होने के कारण। वह टुकुना के घर पहुंचे, हमने देर रात तक बातें कीं। दिलीप से मुझे पता चला, मौसी और नहीं रही। 4 तारीख 11 बजे उनका स्वर्गवास हो गया था। दिलीप ने कहा- मौसी ने उनका अंतिम संस्कार कैसे होगा, के बारे में स्पष्ट निर्देश दिए थे। उसी के अनुसार शुद्धिक्रिया होगी। उसने मेरी बड़ी बेटी 'जितू' की शादी के बारे में पूछा, मेरे बेटे मुनू जिसे वह बहुत प्यार करते थे, की पढ़ाई के बारे में पूछह ताछह की। मैं 7 तारीख को बोस्टन लौटा और दिलीप मॉन्ट्रियल। हम दोनों को छोड़ने के लिए टुकुना लागार्डिया हवाई अड्डे तक आए थे।

बहुत दिनों के बाद मैं हार्वर्ड लौटा। दिगंबर के निमंत्रण पर 12 दिसंबर को मैं बर्मिंघम गया। लुसियाना से सुर रथ आए थे, दिगंबर की पत्नी ज्योत्स्ना और दिगंबर, सुर और उनकी पत्नी मंजू और मैं कार से फ्लोरिडा घूमने गए। हमने फ्लोरिडा में क्रिसमस मनाया। उसके एक दिन बाद मैं न्यू ऑरलियन्स गया और 30 दिसंबर को बर्मिंघम से न्यूयॉर्क में फूफा के घर आया, इस प्रकार हार्वर्ड से लंबी अनुपस्थिति के कारण सेंटर और मेरे अपार्टमेंट में पत्रों का ढेर लग गया था।दोस्तों से पता चला कि 4-5 दिसंबर को भारी बर्फबारी हुई थी।

उसके बावजूद मैं यूनिवर्सिटी के अस्पताल में मेरे निर्दिष्ट डॉक्टर कस्तूरी नागरजन से मिलने गया। उनके सचिव से विगत रात उनकी मृत्यु की खबर मिली। सेंटर से पत्र लेकर मैं अपार्टमेंट में वापस आ गया। मैंने हार्वर्ड स्क्वायर में मैक्सिकन रेस्तरां में कुछ खा लिया, क्योंकि अपार्टमेंट में खाना बनाने का मन नहीं कर रहा था। एक और दर्दनाक खबर पत्र बॉक्स में मेरा इंतजार कर रही थी। बीजिंग से चीनी साहित्य के मेरे परिचित प्रोफेसर के नाम लिखा हुआ मेरा पत्र लौट आया था।उनका भी निधन हो गया था।

दिन के एक बजे धीरे-धीरे हिमपात बढ़ने लगा, और फिर बर्फीली आँधी आना शुरू हो गई। मेरे मन में संदेह होने लगा कि आगामी 25 जनवरी तक हमारी लंबी यात्रा शुरू होने वाली थी, बर्फबारी के कारण वह हो भी पाएगी या नहीं! उन सारे पत्रों में एक पत्र था, मेक्सिको में हमारे राजदूत के.टी. सतारावाला का। वह चाहते थे कि मैं शीघ्र मैक्सिको जाऊँ, क्योंकि एक महीने के अंदर-अंदर उन्हें भारत लौटना था। मैंने उनसे बात की और अपनी समस्याओं के बारे में बताया। उस दिन सेंटर से मेरे अपार्टमेंट लौटते समय बर्फीली हवाएँ चल रही थीं, अपार्टमेंट लौटकर गर्म सूप पीकर थोड़े समय के लिए टीवी देखने लगा। किशोरी आमोनकर के गीत सुनें। मेरे छठे मंजिले अपार्टमेंट की खिड़की से लगातार बर्फबारी दिखाई दे रही थी। टेलीविजन में समग्र मैसाचुसेट्स प्रदेश में बर्फबारी की खबर दिखाई जा रही थी। मुझे लगा कि दूसरी जगहों से जब भी मैं बोस्टन लौटता हूँ, बर्फबारी मेरा इंतजार करते हुए नजर आती है। 13 नवंबर को भी ऐसा हुआ था, अब जनवरी में भी ऐसा ही है, अठारह दिनों की यात्रा के बाद 25 जनवरी को लौटने पर भी ऐसा ही था।

21. हार्वर्ड प्रवास के अंतिम दिन

साल भर का प्रवास पूरा होने जा रहा था। मैं विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित चीन,जापान,कोरिया के दौरे पर नहीं जा रहा था। मेरे मन में घर आने की प्रबल इच्छा थी, इसलिए एक और महीना बाहर रहना नहीं चाहता था। विश्वविद्यालय द्वारा हमारे लिए दीक्षांत उत्सव का आयोजन किया जा रहा था।

सैंडर्स थिएटर में हार्वर्ड के अनेक संगीत कार्यक्रम,ऑर्केस्ट्रा और व्याख्यान का आयोजन किया गया था। राजीव गांधी ने भी यहाँ अपना व्याख्यान दिया था। मगर इन कार्यक्रमों में मेरे लिए सबसे ज्यादा स्मरणीय था अफ्रीका की रंगभेद नीति के विरोध में हार्वर्ड के छात्रों के द्वारा आयोजित संगीत कार्यक्रम,जो ठीक हमारे दीक्षांत उत्सव के पहले सम्पन्न हुआ था। दक्षिण अफ्रीका की श्वेत सरकार के साथ हार्वर्ड के सारे संबंध खत्म करने का घोषणा-पत्र बहुत पहले ही विश्वविद्यालय प्रबंधन को दिया जा चुका था। दक्षिण अफ्रीका हार्वर्ड के कई कार्यक्रमों में प्रभूत वित्तीय सहायता करता है। Harvard-Radchitte Alumni Association की तरफ से सैंडर्स थिएटर में संगीत कार्यक्रम आयोजित किया गया था, जिनके सहयोगी थे Folk Tree Concert आयोजन की बागडोर संभाल रहे थे सुप्रसिद्ध गायक पीट सिगर। थिएटर के भीतर और बाहर युवक-युवतियों की भीड़ के बारे में नहीं कहा जा सकता। सभी कार्यक्रम भीतर में स्थानाभाव के कारण बाहर बड़ी स्क्रीन पर दिखाए जा रहे थे। मेरी भी इस कार्यक्रम को देखने की प्रबल इच्छा हो रही थी। इसलिए बाहर दो घंटे खड़े होकर मैंने कार्यक्रम देखा। पीट सिगर के संगीत से मैं परिचित हूँ। उनके एल्बमों में प्रस्फुटित होती समसामयिक चेतना का आवेग मुझे बहुत अच्छा लगता था। मैंने सुना था,वे अभी-अभी निकारागुआ से लौटे हैं अपना कार्यक्रम पूरा करने के बाद। रंगभेद नीति के विरुद्ध में गंभीर आवेग,दक्षिण अफ्रीका के स्वाधीनता हेतु दृढ़संकल्प और नेल्सन मंडेला को समर्पित विशेष संगीत सब उपस्थित छात्र-छात्राओं को मंत्र-मुग्ध कर रहा था। सिगर के संगीत की धुन पर लोग हाथ ऊपर उठाकर नाच रहे थे। सबसे पहले सिगर ने अपना प्रसिद्ध लोकगीत 'ओवियोयो' गाया,जिसमें प्रबल प्रतापी भयानक राक्षस को छोटे बच्चे के संगीत ने परास्त कर दिया था। यह संगीत प्रतीक है स्नेह,निविड़ संबंध और सौहार्दता का, जो दुष्ट आसुरी शक्तियों को पराभूत कर देता है। यह गीत पीट सिगर ने बहुत सुंदर तरीके से गाया था। उनके दो सहयोगियों *सी कान* अपने दादा के दिनों से अफ्रीका में रहने वाले प्रवासियों के लिए इस गीत को गाते आ रहे थे। जेन साप के प्रसिद्ध उपन्यास की पंक्ति Go,Tell it on the mountain पर आधारित संगीत भी प्रस्तुत किया गया था। उस गीत में अपने स्वर मिलाकर सैंडर्स थिएटर के सारे श्रोतागणों को गाते देखकर मुझे एक अद्भूत अनुभव हो रहा था। हार्वर्ड के प्रथम कृष्णकाय पीएचडी WEB Du Bois के कुछ वाक्य सिगर ने उद्धृत किए थे। उन लोगों के लिए विद्रुपता थी : *"लोग तुलनात्मक आराम और विलासिता में जीना चाहते हैं। यद्यपि वे जानते हैं कि यह उनके लाखों साथियों की अज्ञानता और गरीबी की कीमत पर* है।" अंत में एक गाना गाया गया,जिसकी रचना हार्वर्ड में पढ़नेवाले काले कुंबा गायकों और उनके कुछ दोस्तों ने की थी। संगीतकारों ने इस समवेत गीत को नेल्सन मंडेला और दक्षिण अफ्रीका को समर्पित किया था।

प्रिटोरिया, हम तुम्हारी स्वाधीनता चाहते हैं
नेल्सन, हम तुम्हारी स्वाधीनता चाहते हैं।
हम तुम्हारी स्वाधीनता चाहते हैं।

हम तुम्हारी स्वाधीनता चाहते हैं- का समवेत स्वर समग्र श्रोतामंडल को निनादित कर रहा था। कुछ जानने से पहले मैं भी उस गाने की पंक्तियों को बार-बार दोहरा रहा था। कार्यक्रम बहुत देर तक चला। शुरू हुआ था रात को 9 बजे। मैं 11 बजे तक अपने अपार्टमेंट में लौट आया।

देखते-देखते जून का महीना आ गया। अमेरिका में गर्मियों के दिन शुरु हो जाते हैं। चारों तरफ तरह-तरह के रंग-बिरंगे फूलों से भरपूर दृश्य नजर आने लगते हैं। हार्वर्ड में सर्दी के दिन बहुत दुखदायी होते हैं। उत्तर से ठंडी हवा आती है, बहुत ही ठंडी। स्थानीय तापमान उससे प्रभावित होता है- जिसे कहते हैं- wind chill फेक्टर अर्थात् हवा की वजह से ठंड का बढ़ना। जब स्थानीय तापमान 10 डिग्री होता है तो हवा के प्रभाव से वह 15 डिग्री हो जाता है। जब यह ठंडी हवा शरीर पर

लगती है तो नाक-कान बहुत ठंडे हो जाते हैं, आँखों से पानी गिरने लगता है। अलग-अलग पोशाकें पहनकर एस्कीमों की तरह मैं हमारे सिफ़ा सेंटर में आता-जाता था,फिर भी ठंड लगती थी।

ऐसी अवस्था में कुछ महीने बिताने के बाद जब हार्वर्ड के रंग और वर्ण महोत्सव आता है,उस समय उसे छोडकर जाने का मन नहीं होता है। दूसरी तरफ मेरा घरमुखी स्वभाव घर की तरफ खींचने लगता था। बच्चे चिट्ठी में लिखते थे, सभी का एक ही प्रश्न- आप कब आ रहे हैं ? आपको वहाँ रहते हुए बहुत दिन हो गए हैं। आपके आने की प्रतीक्षा में... ।

ऐसे परिवेश में हमारे कोर्स का अंतिम भ्रमण था जापान और दक्षिण कोरिया। उन देशों की सरकारों ने हमें आमंत्रित किया था। मैं जापान और दक्षिण कोरिया पहले भी गया था। मगर चीन नहीं देख पाने के कारण मन में थोड़ा दुख हो रहा था। समग्र भ्रमण तीन सप्ताह का था। फिर लौटकर आने के बाद एक और सप्ताह निर्धारित था चर्चा और सेमिनार के लिए। यह कार्यक्रम वैकल्पिक था,जाना जरूरी नहीं था। भ्रमण से पहले सिफ़ा का दीक्षांत समारोह हो गया था, तब तक मैं वहीं पर था। समारोह के बाद हंगिगटन ने बहुत अच्छा भोज दिया था। उनके अलावा दो-तीन सलाहकारों ने अपने विचार रखे थे। सामाजिक नृतत्व में पीएचडी करने वाले कई छात्रों की मैंने बहुत मदद की थी। उनकी थीसिस पर विशद चर्चा कर उन्हें सलाह भी दी थी। इस बारे में हंगिगटन ने अपनी रिपोर्ट में अलग से उल्लेख किया था। हमारे अंदर से चार लोगों ने(मुझे लेकर) हमारे प्रवास,हमारे कोर्स और सिफ़ा के भविष्य के बारे में अपने विचार प्रकट किए थे।हमने इस कोर्स में किए जाने वाले परिवर्तन के बारे में लिखित राय भी दी थी।

सिफ़ा के फ़ेलो होने के कारण मिलने वाली सुविधाओं के बारे में हंगिंगटन ने उल्लेख किया था कि भविष्य में विशेष गवेषणा या अध्ययन हेतु आने पर सिफ़ा उनका स्वागत करेगी। फ़ेलो को सिफ़ा में उच्च अध्यापन कार्य दिया जाता है और उनके रहने तथा अध्ययन की पर्याप्त सुविधा प्रदान की जाती है। हंगिंगटन और सिफ़ा को हमारी तरफ से मिस लुईस हुक संयुक्त राष्ट्रसंघ और 159 देशों के ध्वज(हमारे कोर्स में सभी देशों के राष्ट्रीय ध्वज प्रथम पंक्ति में लगाए गए थे) को एक स्क्रीन में लगाकर उपहार के रूप में प्रदान किया गया था। उन्होंने कहा था सिफ़ा के तीसवीं फ़ेलो के हार्वर्ड और सिफ़ा सहित दीर्घस्थायी सम्बन्धों का प्रतीक है। ड्रूक इस पाठ्यक्रम की प्रवक्ता थी। वह बहुत भद्र,मिलनसार और बहुत सुंदर महिला थी। केनेडी स्कूल से उन्होंने एम.ए. किया था और इस वर्ष के अंत में(1988)पीएचडी थीसिस जमा करनी थी। उससे ज्यादा उन्हें संयुक्त राष्ट्रसंघ के शरणार्थियों के काम का दायित्व शीघ्र लेना था। (वह UNHCR की सीनियर ऑफिसर के रूप में पाठ्यक्रम में शामिल हुई थी*)* उन्होंने कहा -*"शरणार्थी काम का मतलब आपातकालीन कार्य,चौबीसों घंटे। अब मुझे अपनी पीएचडी जल्दी पूरी कर लेनी चाहिए। सीताकान्त की तरह काम के दबाव मैं सुदूर पूर्व दौरे पर नहीं जा पाई"* हम दोनों के अलावा दो अन्य प्रतिभागियों ने भी इस दौरे पर नहीं गए थे। सैम हंगिंगटन(हार्वर्ड विश्वविद्यालय सिफ़ा के निर्देशक),लेस ब्राउन(फ़ेलो कार्यक्रम के निर्देशक), हमारे पाठ्यक्रम के निर्देशक,हमारे पाठ्यक्रम के छह ह प्रमुख प्रोफेसर,ऑफिस के छह ह स्टाफ ने प्रमाणपत्र वितरण वाले इस विदाई समारोह में भाग लिया। हर्मन हेस की कविता की कई पंक्तियाँ मुझे याद आने लगी :-

As each flower blooms and each youth yields to age
each step of life blooms,
each wisdom as well and each virtue blooms
in its time, and cannot last for ever.
The heart has to be nearly at each call of life
and say goodbye and to start afresh.
And within each new start there is enchantment
that protects us and helps us live.
The spirit of the cowed does not want
to constrain or narrow us;
it wants to lift us, broaden us, step by step.

मैंने बहुत सोच समझकर निर्णय लिया कि हमें विश्वविद्यालय और हमारे दीक्षांत समारोह के बाद लौट जाना चाहिए। विश्वविद्यालय का दीक्षांत समारोह केवल तीन दिनों के बाद था। इसके अलावा, मुझे इस प्रसिद्ध विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह को देखने की बहुत इच्छा थी। मेरे बाकी दोस्तों को विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह के दो दिन बाद चीन,जापान और कोरिया के दौरे पर जाना था।

जून महीने के हार्वर्ड का यह दृश्य मेरे लिए अविस्मरणीय रहेगा। कोहरा,बूँदाबाँदी, हाड़कंपाती सर्दी अतीत की बातें हो गई थीं। इस देश की गर्मियों में हल्के कपड़े पहन कर छात्र -छात्राओं के समूह चार्ल्स नदी के किनारे *ग्रेजुएट सेंटर* पर घूमने जाते हैं, हार्वर्ड स्क्वेयर रेस्टोरेन्ट और कॉफी क्लब पर एकत्रित होते हैं। कॉफी क्लब के बारे में एक और वाक्य यहाँ कहना उचित रहेगा। वहाँ पर बत्तीस क़िस्म की कॉफी मिलती है,जहां तक मुझे याद है। मैंने अवश्य कोलम्बिया की दो-तीन क़िस्मों की कॉफी को बहुत ऊंचा स्थान दिया था। भारतीय कॉफी की तीन किस्में वहाँ उपलब्ध थीं। कॉफी क्लब में हमेशा भीड़ लगी रहती थी। छात्र-छात्राओं,अध्यापकों और बाहरी लोगों की भीड़ के बारे में कहने के लिए शब्द नहीं है।

चार्ल्स नदी में पुंटिंग मैंने कभी नहीं किया था। इस अवसर पर हमारे कोर्स के दो दोस्तों के साथ नाव में बैठकर नौकाविहार करने का आनंद लिया।

सर्दियों में चार्ल्स नदी का पानी नहीं जमता था,भले ही, दोनों किनारों पर कुछ मात्रा में बर्फ जमती थी। हार्वर्ड यूनिवर्सिटी वाले किनारे की तरफ रास्ते से 200 फुट लंबाई वाला सुंदर लान में हरी-भरी सुंदर घास, तरह-तरह के फूल,नदी की छोटी-छोटी लहरें–सब मिलकर बहुत सुंदर परिवेश की सृष्टि कर रही थी। मैं कई बार चार्ल्स नदी के किनारे पर ऐसे ही बैठे रहता था। नदी,फूलों की क्यारी,छोटी-छोटी नावों में पुंटिंग कर रहे छात्र-छात्राओं को देखना अच्छा लगता था।

यूनिवर्सिटी के दीक्षांत समारोह में छात्र-छात्राओं को डिग्री प्रदान की जाती है। वह दिन भी आ गया। अतिथिगण,छात्रों के माता-पिता को गिनने से लगभग 25 हजार हो रहे थे,जबकि स्नातकों की संख्या 5000। विश्वविद्यालय में अलग-अलग टोपी वाले लगभग 200 मार्शल अतिथियों के आवाभगत और अन्यान्य कार्यों में हाथ बंटा रहे थे। मेमोरियल चर्च और वाइडनर लाइब्रेरी के बीच वाली जगह पर तीन सौवीं वर्षगांठ मनाने के उपलक्ष में बनाए गए थिएटर में खचाखच भीड़ थी। सन 1936 में तीन सौ साल पूरे होने के उपलक्ष में इस थिएटर में पहली बार दीक्षांत समारोह का आयोजन किया गया था। हार्वर्ड कालेज और रेड्क्लिफ कालेज के लाल,नीले,सफ़ेद,सुनहरे रंग के झंडे बहुत आकर्षक लग रहे थे। 3 नारंगी रंग के झंडे भी फहराए गए थे। तीन किताबें उनके साथ थीं,जिस पर सन 1643 का विश्वविद्यालय का मोटों वेरिटस(veritas)अर्थात् 'सत्य'लिपिवद्ध था। उसके साथ झंडे पर 1643 की प्राचीन शील्ड भी अंकित थी।

सितंबर 1943 में सुप्रसिद्ध लेखक डेविड मार्ककर्ड ने *हार्वर्ड एलूमनी बुलेटिन* में लिखा था : *"डिग्री प्राप्त करने वाले छात्रों द्वारा पहनी गई पोशाकें और उनके माथों को ढकती रेशमी टोपियाँ असंख्य इंद्रधनुष की आभा चारों तरफ फैला रही थी।"* हमारे दीक्षांत समारोह की तरह यहाँ के डिग्री धारक काली पोशाकें नहीं पहनते हैं। इमर्शन ने हार्वर्ड की 250वीं वर्षगांठ पर कहा था, *"शायद इस शोभायात्रा में अदृश्य,निराकार लोग चल रहे हैं, जो भविष्य के निराकार लोगों के साथ मिलकर अनंत काल तक लंबी कतार बनाएँगे।"*

दीक्षांत समारोह के उपलक्ष में विशिष्ट संगीत गायक दल समवेत गान गाते हैं-उत्सव के प्रारम्भ तथा भिन्न-भिन्न डिग्री प्रदान करने वाले कार्यक्रम के पूर्व में। ग्रेजुएट डिग्री पाने वाले छात्रों को डिग्री प्रदान करने से पहले सभापति (हमारे विश्वविद्यालय के कुलपति) घोषणा करते हैं। *आज से आप लोग शिक्षित लोगों की गोष्ठी में शामिल होने जा रहे हो।*

उसके बाद हार्वर्ड परंपरा की सबसे महत्वपूर्ण डिग्री प्रदान की जाती है। इन्हें Honorary Degree(मानद डिग्री) कहा जाता है। हमारे Honoris cause की डिग्री की तरह हार्वर्ड के इतिहास में अनेक विशिष्ट लोगों को यह डिग्री दी गई है। उनमें से कई नाम है। बेंजामिन फ्रेंकलिन को पहली मास्टर ऑफ आर्ट्स डिग्री वाली मानद डिग्री दी गई। जार्ज वाशिंगटन इस डिग्री को पाने वाले द्वितीय व्यक्ति थे। उन्हें विश्वविद्यालय ने डॉ ऑफ लॉ की उपाधि प्रदान की थी। पहली बार किसी महिला को यह सम्मान 1955 में दिया गया था,जिसका नाम था हेलेन किलर।

डिग्री प्रदान करने के बाद सभी डिग्रीधारी अपने-अपने स्थान पर खड़े होकर समवेत स्वर में हार्वर्ड- प्रार्थना गाते हैं। यह प्रार्थना लैटिन में लिखी गई है और विगत 300 वर्षों से यही परंपरा चली रही है। जिसमें विश्वनियंता से तीन आशीर्वाद मांगे जाते हैं :-

(1)विश्वविद्यालय के ट्रस्टी नैतिक हो,
(2)अध्यापकवृंद बड़े विद्वान हों एवं
(3)विश्वविद्यालय की विविध योजना के लिए भामाशाह और अधिक उदार हों।

दीक्षांत समारोह के तीन सौ साल का इतिहास की लिखने वाली सिंथिया रोसाना कहती है: *" उपनिवेश शासन काल में डिग्री वितरण समारोह समापन के बाद इस समारोह में भाग लेने वाले अतिथिगण,अध्यापक और डिग्री पाने वाले विद्यार्थी 'कैंब्रिज कॉमन'(एक छोटा सा सर्वसाधारण पार्क) में खोले गए खाने-पीने के बूथों में जाकर विभिन्न प्रकार के व्यंजनों और प्रचुर मात्रा में परोसी गई दारू का लुत्फ उठाते थे। बहुत छोटे-छोटे नाटक भी छोटे-छोटे मंचों पर बच्चों द्वारा अभिनीत होते रहते थे।"*

अब और विश्वविद्यालय के बाहर 'कैंब्रिज कॉमन' में जाने की आवश्यकता नहीं है। रो सन्नो कहती है,*"बहुत शृंखलित इस समारोह में मुर्गों का प्रचुर मांस,आलुओं के ढेर,सलाद,पहाड़ जैसे आइसक्रीम और समुद्र तुल्य शराब और मृदुपानीय द्वारा अध्यापक,छात्र,समवेत अतिथि वृंद को प्रसन्न किया जाता है। सन 1811 में रेवरेंड गिलमेन की उक्ति चरितार्थ होती है- इस प्रकार अनवरत प्रवाह बहता जाता है अतीत के इतिहास से नए युग की ओर, बहता जाता है अतीत के इतिहास से नए युग की ओर,जिस युग की सभी को प्रतीक्षा है।"*

सन 1642 के प्रथम दीक्षांत समारोह में तत्कालीन विश्वविद्यालय के सभापति रेवरेंड हेनरी डंस्टर ने घोषणा की थी, *" हमने जो लक्ष्य रखे थे,आज उसका कुछ अंश पूरा करने जा रहे हैं।"* उस वर्ष से रो सन्नो के इतिहास के अनुसार 9 स्नातक डिग्री प्राप्त कर रहे थे, 14 नए छात्र और उनके माता-पिता तथा अतिथि समेत कुल मिलाकर समारोह में 50 लोग उपस्थित थे। डंस्टर ने कहा: *"आज हम सभी मिलकर सीखने के आनंद का उत्सव मना रहे हैं।"* जिन लोगों को डिग्री मिली उन्हें कुछ शब्द बोलने के लिए आमंत्रित किया गया- केवल अंग्रेजी में नहीं, लैटिन,ग्रीक या हिब्रू भाषा में भी।

सैमुएल इलियट मारिसन की भाषा में, *"सब खाना,आमोद-प्रमोद और उत्सवमुखर दिन सभी को याद दिलाता है कि हार्वर्ड से डिग्री प्राप्ति की है " a rite of passage"-अर्थात् जीवन का एक विशेष अध्याय।"*

वास्तव में विश्व के सबसे पुराने विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह देखने और उनमें भाग लेने वाले,माता-पिता,डिग्रीधारी अध्यापक सभी से बातचीत करने का अवसर पाना मेरे लिए अविस्मरणीय स्मृति बनकर रहेगी।

हार्वर्ड पर मेरा लेख खत्म होने से पहले आपका ध्यान दो घटनाओं की तरफ आकर्षित करना चाहूँगा। पहला,हार्वर्ड के पहले निर्वाचित अध्यक्ष(हमारे विश्वविद्यालय के कुलपति)। लरेंस समर्स निश्चित रूप से सुदक्ष कुलपति थे,मगर महिलाओं के बारे में उनके किसी मंतव्य के कारण उन्हें आलोचना का शिकार होना पड़ा था और उनके खिलाफ बढ़ते विरोध के कारण उन्हें इस्तीफा देना पड़ा। मगर अध्यापन दक्षता,हार्वर्ड के लिए कोष-संग्रह की दक्षता और शैक्षिक प्रशासन क्षेत्र में ऐसे बहुत ही कम प्रेसिडेंट हार्वर्ड में हुए होंगे। सन 1987-88 अर्थात् मेरे प्रवास के दौरान वहाँ के प्रेसिडेंट बोक भी हार्वर्ड के दीर्घ इतिहास में अन्यतम सुदक्ष प्रेसिडेंट थे। लरेंस समर्स के इस्तीफे के बाद कोई महिला अध्यक्षा बनी थी। अखबार,टेलीविज़न आदि के संवादों में बहुत चर्चा में आई थी क्योंकि वह चार सौ से अधिक वर्षों के इतिहास में पहली महिला अध्यक्षा थीं।

दूसरी घटना थी हार्वर्ड में नए खोले गए पाठ्यक्रम "पॉज़िटिव साइकॉलजी" की अभूतपूर्व छात्रप्रियता। आठ सौ विद्यार्थियों ने इस कोर्स में नामांकन किया है और अनेक विद्यार्थियों को सीट भी नहीं मिल पाई है। सैंडर्स थिएटर(विश्व के सबसे बड़ा प्रेक्षागृह जहां चर्चिल,रुसवेल्ट,मार्टिन लूथर किंग ने व्याख्यान दिए थे,जहां मेरे समय में राजीव गांधी ने व्याख्यान दिया था)। टी-शर्ट पहने इस कोर्स के डायरेक्टर को सर्वसाधारण बैठने की जगह नहीं मिलने के कारण बाहर में

बड़ी स्क्रीन और माइक पर सुन रहे थे। वे टाल-बेन-साहा के पूर्वतन इस्राइल के पूर्व सैनिक और हार्वर्ड के पूर्व छात्र हैं। उनका कोर्स शुरू किए केवल तीन वर्ष हुए थे।

सकारात्मक मनोविज्ञान पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य आनंद या सुख की तलाश करना है। पहले तो मेरे मन में आया कि हमारे समय के बहुत बुद्धिमान जिम्मेदार और आध्यात्मिक गुरुओं के उपदेशों का मूलसार भी यही है, तो फिर यह कोर्स किस तरह से उनके उपदेश, प्रवचन या रचनाओं से भिन्न या महत्त्वपूर्ण है?

समकालीन व्यक्ति और समाज की निराशाजनक स्थिति के बारे में बहुत कुछ चर्चा हो चुकी है। दोनों व्यक्ति और समाज जीवन में आशा और आनंद की पुनः प्रतिष्ठा करना ही आध्यात्मिक चिंता और चेतना का मुख्य लक्ष्य है। श्री श्री रविशंकर की *जीवन जीने की कला* (आर्ट ऑफ लिविंग) में उसी सत्य पर ज़ोर देने की चेष्टा की गई है।

बेन साहार के कोर्स का मुख्य उद्देश्य है-हम जीवन के प्रति निराशावादी,वितृष्णासंपन्न,अत्यधिक भौतिकवादी दृष्टिकोण के शिकार हो गए हैं। जीवन ने हमें जो कुछ दिया है,उसके लिए पहले उसके प्रति कृतज्ञ होना चाहिए। विषाद 'आत्म-सर्वस्व' या हमारे अहंकार से ही पैदा होता है। व्यक्ति के हिसाब से हमें अपने जीवन में आशावाद को यथोचित स्थान देना चाहिए,दूसरे लोगों की तरफ भी देखना चाहिए और अपने भीतर सकारात्मक दृष्टिकोण पैदा करना चाहिए।

बेन साहार का कहना है कि विगत 50 सालों में सारे विश्व में 'अवसाद' सबसे खतरनाक मानसिक रोग बन गया है। इसलिए इतने अधिक डाक्टर,चिकित्सा पद्धति और खर्च हो रहा है जो हृदयरोग,कैंसर या एड्स के इलाज के समतुल्य है। पिछह ले 50 सालों में यह बीमारी लगभग 30 गुना बढ़ गई है। पाठ्यक्रम में विभिन्न विषय-वस्तु इस प्रकार है :-

- पहला, दूसरों को देना सीखो,दूसरों की सहायता करना सीखो। वास्तव में,यही मानवता है।
- दूसरा,जीवन में आपको जो भी काम करना पड़े,उसे आनंद से करते हुए जीवन का अर्थ खोजना चाहिए।
- तीसरा,जीवन ने हमें जो खुशी दी है और जो दूसरों से मिली है,उनकी सहायता करने में हमें कभी पीछे नहीं हटना चाहिए। बल्कि यह नहीं सोचना चाहिए कि आपको जो मिलना चाहिए था, उससे कम मिला है। आपको अपने जीवन तथा दूसरों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना चाहिए।
- चौथा,हमारा जीवन,कर्मप्रणाली और रिश्तों को अधिक से अधिक सरल बनाने चाहिए।
- पाँचवाँ,शरीर और मन के पारस्परिक संबन्धों के बारे में गहन अध्ययन करना और समझना जरूरी है। हमें यह याद रखना चाहिए कि आनंद अपने भीतर से पैदा होता है। हमारा बैंक अकाउंट,संपत्ति या शक्ति पर यह बिलकुल निर्भर नहीं करता है। बेन साहार जब हार्वर्ड में पढ़ रहे थे,तब वह अपने जीवन के कुशल खिलाड़ी थे। उनके जीवन में दुखी होने का कोई भी कारण नहीं था। ऐसा वे खुद कहते हैं। पढ़ाई पूरी करने के बाद वह इज़राइली वायु सेना में भर्ती हो गए। सामाजिक जीवन में उनकी खूब इज्जत थी, उनके बहुत दोस्त भी थे। वे कहते हैं कि इतना सब-कुछ होने के बावजूद उन्हें अपना जीवन कुछ अपूर्ण लग रहा था। कुछ दुख की छाया,अवसाद की छाया मन के आकाश पर हमेशा छाई रहती थी। मानसिक मेघमुक्ति और जीवन में आनंद पाने के लिए उस दिन से उन्होंने आत्मानुशीलन और अध्ययन द्वारा ज्ञान अर्जित करने में अपने आपको निमग्न कर दिया।

22. परिशिष्ट

साक्षात्कार

भारतीय ज्ञानपीठ व पद्मविभूषण से सम्मानित कवि सीताकान्त महापात्र से डॉ.प्रसन्न कुमार बराल द्वारा ओड़िया भाषा में लिए गए साक्षात्कार का हिन्दी अनुवाद

जीवन-परिचय:-

1953 से 2015 के अंतराल के भीतर कितने वर्ष गुजर गए,पता ही नहीं चला। माहांगा के कुशीदा गाँव से रेवेन्सा, वहाँ से इलाहाबाद और उसके बाद कितने ही देश-विदेशों का भ्रमण। कहने की आवश्यकता नहीं कि अपने जीवन काल में कितने राष्ट्रों का उन्होंने भ्रमण किया होगा। यही वजह है कि ओड़िया रामायण, महाभारत, भागवत, तपस्विनी जैसे ग्रन्थों को पढ़ने, सुनने और अध्ययन करने की साहित्यिक जिज्ञासा देश-देशांतर के कोने-कोने में व्याप्त होने लगी। विश्व के सबसे ज्यादा चर्चित, समृद्ध भाषा एवं साहित्य वाले देश ओड़िया अक्षरों के प्रति आकर्षित हुए, ओड़िया भाषा के एक-एक शब्दों के प्रति। ओड़िया भाषा की कविताओं को उन्होंने बिना पासपोर्ट और वीसा दिलवाए ही समग्र विश्व का भ्रमण करवा दिया।

यह वे कवि हैं, जो नन्द किशोर बल नहीं हैं, जिन्होंने 'छोटा मेरा गाँव' की तरह कविता भले ही नहीं लिखी हो,फिर भी उनकी कविताओं में विशेषकर गाँव तथा पल्ली का आकर्षक चित्रण मिलता है। कविताओं के माध्यम से एक अविश्वसनीय विश्वास के साथ चित्रोत्पला नदी ने कवि के पॉकेट में रहते हुए सारे विश्व का भ्रमण कर लिया। शायद पृथ्वी के किसी भी ऐसे भूखंड पर वह कभी भी खड़े नहीं हुए होंगे, जहां उन्होंने अपने गाँव की मिट्टी की खुशबू, चित्रोत्पला नदी की मधुर मूर्छना को भाव-विभोर होकर अनुभव नहीं किया होगा। उस स्वप्नशील कवि को अपने विचरण के समय आकाश के सारे बादल अपने चिर-परिचित लगते थे। सभी पेड़-पौधे और लताओं की हरियाली मानो उनके गाँव के छह परीले घरों पर लटकते लौकी और कद्दुओं की सर्पिल वेलों, नहीं तो, आँगन में लौकी के आलम्ब से झूलती अवांछित हरी लताओं के गुच्छों पर अंतिम कोपलों के अधखिले पत्तों का आकुल निवेदन कर रही हो।

उनका गाँव और पास में बहने वाली नदी मानो उनके प्रेम का एक सांकेतिक स्वरूप हो,सारी दुनिया का प्राकृतिक वैभव उनके लिए एक विशाल कैनवास बन गया हो। उनके अनुसार साठ साल से कलम रूपी तूलिका से कैनवास का एक छोटा कोना भी अभी तक नहीं भरा गया। प्राकृतिक सुंदरता की नैसर्गिक शोभा की सजीव प्रकृति से परिपूर्ण परिवेश उनके हृदय को अस्थिर करता था और उन्हें सांथाली भाषा से प्रेम हो गया। उन्हें आदिवासियों के जीवन से भी प्रेम हो गया। उस प्रेम से उनके खुले हृदय से गाए गए गीतों में प्राकृतिक माधुर्य भर दिया। "जहां मनुष्य,वहाँ देवता", "जहां प्रकृति, वहाँ उपासना" वाली विचारधारा को उन्होंने किसी भी भौगोलिक सीमा सरहद के भीतर बांध कर नहीं रखा। उनके विश्वास में मनुष्य इस धरती का है, सारी दुनिया का है। शब्दों की खोज में एक जीवन पर्याप्त नहीं है। पुनर्जन्म की बिलकुल भी इच्छा नहीं होते हुए भी एक अक्षर के लिए, एक शब्द के अनुसंधान के लिए वे पुनर्जन्म की तीव्र आकांक्षा लेकर व्याकुल हो उठते हैं। परम्पराएँ, भले ही, उनकी पृष्ठभूमि रही हो, मगर आधुनिकता उनका महत्त्वपूर्ण दृष्टिकोण है। छह ह दशकों की काव्य-यात्रा करने वाला यह कवि अभी भी अक्षर और शब्दों की प्रतीक्षा करता है।

हाँ पाठकों! इस बार गोधूली लग्न में “आमने-सामने साक्षात्कार” स्तम्भ में शब्द और समय का अनुपम चित्रण करने वाले कवि सीताकान्त महापात्र हमारे अतिथि हैं। इस स्तम्भ में सीताकान्त को अतिथि बनाते समय मन में हजारों सवाल उठ रहे थे, क्योंकि शायद ही कोई एक अनालोचित दिशा उनकी सृष्टि के विशाल परिसर के अंदर रही होगी, जिस पर उन्होनें पहले कुछ कहा न हो अथवा उन पर समालोचना नहीं हुई हो। विगत पचास-साठ सालों की दीर्घ साहित्यिक यात्रा के दौरान सीताकान्त जी की मुलाक़ात विश्व के अति प्रतिभाशाली, ज्ञानी और गवेषकों से हुई तथा उनसे उन्होंने बहुत सारी अनकही बातों का ज्ञान-भंडार अनजाने राज्य के रूप में प्राप्त किया।

ओड़िशा के बाहर देश-विदेश में भी सीताकान्त जी ने स्पष्ट भाव से उनसे संबन्धित प्रश्नों के सटीक उत्तर दिए। वे सारे उत्तर जितने निर्भीक है, जितने उज्ज्वल है, उतने ही विनम्र, उतने ही नमन योग्य है। सीताकान्त के सृजन-संसार की विशालता के कारण कभी-कभी उनका पूरी तरह आकलन नहीं किया जा सकता। कविता, गद्य-रचना, समीक्षा, आलोचना, यात्रा-वृतांत, अनुवाद, सम्पादन, आदिवासी-साहित्य और संस्कृति से संबन्धित साहित्य के अतिरिक्त मानव-विज्ञान पर भी सीताकान्त जी का असाधारण पांडित्य है, जबकि कभी भी उन्होंने अपने जीवन में एंथ्रोपोलोजी विषय नहीं पढ़ा। नहीं पढे हुए विषय के ऊपर न केवल उनका अध्ययन सराहनीय है बल्कि उच्चकोटि के शोध-संदर्भ में उनके आलेखों ने विश्व के प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों का ध्यान आकर्षित किया है।

किसी एक अंश को आधार बनाकर उनके साक्षात्कार का पूरा विवरण प्रस्तुत करने की संभावना का अर्थ है, हमें वास्तव में वृत्त की परिधी पर रचे हुए उनके रचना-संसार, व्यक्तिगत जीवन, नौकरी की अवधि, सुख-दुख, पश्चाताप के चारों ओर घूमकर जानकारी प्राप्त करना।

सीताकान्त के संबंध में यह सारा विवरण लिखते समय हमें संकोच और भय मिश्रित अनुभव हो रहे हैं क्योंकि इन प्रसंगो पर आलोचना करने का हमने निश्चय किया है, उन सभी के गंभीर अध्ययन के अभाव में यह संकोच होना स्वाभाविक है, इसमें हमारी किसी भी प्रकार की कुंठा नहीं है।

दुनिया के प्रत्येक कोने-कोने में विश्व के समस्त समृद्ध भाषाओं में सीताकान्त जी को जो मान्यता मिली है, उसमें व्यक्तिगत रूप से सीताकान्त जी के द्वारा ओड़िया भाषा को मिलने वाला गौरव हमारे लिए परम सौभाग्य की बात है। इसके अतिरिक्त सांथाली, हो, मुंडारी, खड़िया जैसी आदिवासी भाषाओं को सीख कर उनके मौखिक गीतों को आत्मसात कर सीताकान्त के निष्ठापूर्वक उद्यम को सरल भाषा में केवल अविश्वसनीय ही कहा जा सकता है। जीवन जीने के लिए सजिन्दगी भरे उन आदिवासी गीतों का संपादन और अँग्रेजी अनुवाद (They sing life) जैसे क्लिष्ट कार्यों को सफल अंजाम देना उनकी प्रकृति और परम्पराओं के प्रति असीम प्रेम का परिचय देते हैं। उन्होंने बहुत प्यार किया है शब्द, अक्षर और समय को। सीताकान्त के अद्यतन कविता-संग्रह “प्रत्येक अक्षर में मेरा पुनर्जन्म” के प्रथम पृष्ठ में उनकी कविताओं, उनकी पंक्तियों, कवि-जीवन की तमाम कविताओं को लेकर देखे हुए सपने, संभावना, दर्शन, नैराश्य, असहायता और उच्चारण का वर्णन इस कविता में साफ देखने को मिलता है

प्रत्येक अक्षर में मेरा पुनर्जन्म
मेरी मृत्यु प्रत्येक शब्द के कोने में।
मेरे जीवन की प्रतिध्वनि

प्रतिक्षण प्रति-उच्चारण में

स्वप्न और दृश्य के सम्मोहित सातवें आँगन में

ऐसे सपनों के लिए भला

रात कहाँ,दिन कहाँ

इस दृश्य के लिए।

शिक्षा और वृत्ति :- बाल्य जीवन और स्कूल की पढ़ाई अपने गाँव कुशीदा में सम्पन्न हुई थी। यह वही कुशीदा है, जहां के फकीर मोहन सेनापति मूल वासिंदा थे। अत्यंत मेधावी सीताकान्त कोरुया सरकारी हाईस्कूल से उत्तीर्ण होकर चले आते हैं कटक के रेवेंसा कॉलेज में। पहले दो साल विज्ञान की पढ़ाई करके आइ॰एससी॰ पास करने के बाद इतिहास ऑनर्स के साथ वहाँ से बी॰ए॰ तक पढ़ाई पूरी करके एम॰ए॰ पढ़ने के लिए वह चले जाते हैं इलाहाबाद विश्वविद्यालय को। 1957 से 1959 तक स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान में उत्तीर्ण होने के बाद दो साल उत्कल विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य किया। 1961 में सर्वभारतीय सिविल सर्विस परीक्षा में सर्वोच्च अंकों के साथ उत्तीर्ण कर भारतीय प्रशासनिक सेवा में योगदान देने लगे। ओड़िशा राज्य सरकार के विभिन्न विभागों में सचिव के तौर पर सफलतापूर्वक काम करते हुए केंद्र सरकार के अधीन डेपुटेशन पर चले गए। भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के सचिव की सेवाएँ देते हुए 1995 में सरकारी नौकरी से सेवा-निवृत्त हुए। आई॰ए॰एस॰ नौकरी के प्रारम्भिक चरण में ओड़िशा के दो प्रमुख आदिवासी बहुल जिलों सुंदरगढ और मयूरभंज के जिलापाल के रूप में कार्य करते समय वहाँ की ट्राइबल स्टडीज़(tribal studies) और गवेषणा उनके साहित्यिक कार्यों के लिए एक भित्तिभूमि बनकर उभरी।

इसके अलावा,तरह-तरह की फ़ेलोशिप और पद-पदवी से वे हावार्ड ओर कैंब्रिज विश्वविद्यालय से जुड़े। दो बार होमी भाभा फ़ेलोशिप प्राप्त ट्राइबल स्टडीज़ के ऊपर आधारित उनकी शोधपरक पुस्तक के दो भाग ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस से प्रकाशित हुए। सीताकान्त यूनेस्को वर्ल्ड डेकड़ फॉर कल्चरल डेवलपमेंट के सभापति तथा नेशनल बुक ट्रस्ट,इंडिया के चेयरमैन बने।

प्रकाशित कविता संग्रह और अन्य पुस्तकें –

सीताकान्त की सृजन-सृष्टि अत्यंत ही विशाल और विपुल है। खासकर कवि के रूप में उन्हें प्रसिद्धि मिली, मगर उनकी गद्य-रचना, अनुवाद, मौलिक-आलेख, यात्रा-वृत्तांत, समीक्षा, समालोचना तथा शोध के ग्रन्थों की संख्या भी कुछ कम नहीं है, जिन्हें विशेष प्रसिद्धि प्राप्त न हुई हो। सीताकान्त उँगलियों पर गिने जाने वाले बहुत कम भारतीय साहित्यकारों में अन्यतम है, जिनकी किताबों के अनुवाद सारे विश्व की प्रतिष्ठित भाषाओं के माध्यम से विश्व के कोने-कोने में पहुंचे। जिनके अंतर्गत अँग्रेजी, स्पेनिश, फ्रेंच, जर्मन, चाइनीज, रसियन, हिब्रू, रोमानियन, अरबी, डेनिस, स्वीडीश प्रमुख हैं।

1953 में अपने जीवन की पहली कविता लिखने वाले सीताकान्त का प्रथम कविता-संग्रह ठीक 10 साल के बाद अर्थात 1963 में प्रकाशित हुआ, जिसका नाम था दीप्ति और द्युति। उनका अद्यतन कविता संकलन 6 माह पहले "प्रति अक्षररे मोर पुनर्जन्म (2014)" के रूप में प्रकाशित हुई। 1963 से 2015 के भीतर सीताकान्त के 24 कविता-संकलन प्रकाशित हुए, जिनमें 'अष्टपदी (1967)', 'शब्द आकाश (1971)', 'समुद्र (1977)', 'चित्रनदी (1979)', 'आरदृश्य (1981)', 'समय र शेष नाम(1984)', 'काहाकु पुछिबा कुह (1987)', 'चढ़ेइ रे तू कि जाणु(1990)', 'फेरि आसिबार बेल (1991)', 'श्रेष्ठ कविता (1992)', 'वर्षा सकाल (1993)', 'पदचिन्ह (1996)', 'मृत्युर असीम धैर्य

(1997)’, ‘निर्वाचित कविता (1998)’, ‘कपट पाशा (2000)’, ‘प्रदक्षिण (2002)’, ‘सारा जीवन लोकटा (2004)’, ‘भारतवर्ष (2005)’, ‘छातितल फरुआरे कुनि (2006)’, और ‘कुनि चढ़ेई:भिन्न आकाश (2006)’ आदि बहुत पठित और प्रशंसित काव्य-संकलन है।

सीताकान्त जी का गद्य संसार में ‘भिन्न आकाश और भिन्न दीप्ति’, ‘निसंग मनुष्य’, ‘शब्द, स्वप्न और निर्भीकता’, ‘अंधार झोटी चिता’, ‘समय र आरपारि’, ‘संस्कृति:आम समय’ तथा ‘अनेक शरत’ प्रमुख हैं। यात्रा-वृत्तांत के तौर पर पाठकों को आकर्षित करने वाली पुस्तक “अनेक शरत” एक उल्लेखनीय और प्रशंसनीय कृति बनी है। 5 प्रबंध संकलन, 22 अँग्रेजी भाषा में समालोचना, जीवनी, चित्रकला और आलेखों पर आधारित पुस्तकें सम्मिलित हैं। इसके अलावा, ‘दे सिंग लाइफ’ और ‘अनएंडिंग रिदम’ की तरह चर्चित मौखिक आदिवासी गीतों के 10 ग्रंथ संकलन तथा अनुवाद भी प्रकाशित हुए हैं। सीताकान्त द्वारा अनूदित और संपादित (दोनों ओड़िया और अँग्रेजी) के संकलनों की संख्या 19 है। सीताकान्त जी द्वारा संपादित और अनूदित कुछ ओड़िया पुस्तकों में सारहूलर जहन, सूर्यदृष्टा, मगध और अन्यान्य कविता, असरंति पिलादिन, वसंत ऋतूरे दिने, शालगछह फुलरे नइंछी, कविता: पिलादिन, आधुनिक हंगरीय कविता तथा जन्हराति ओ अन्यान्य कविता मुख्य हैं।

<u>पुरस्कार एवं मान्यता</u> :-

कवि सीताकान्त महापात्र का रचना-संसार जितना व्यापक और वैविध्यपूर्ण है, उतनी ही उनकी पुरस्कार और मान्यता की तालिका दीर्घ है। देश के समस्त सारस्वत पुरस्कारों के अतिरिक्त उन्हें भारत का द्वितीय सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार “पद्मविभूषण” प्राप्त हुआ है। उनका समूचा जीवन समस्त पुरस्कारों को समेटता रहा है। जिसकी समय-सीमा 1971 के ओड़िशा साहित्य अकादेमी पुरस्कार से 2013 भारत के सर्वोच्च साहित्य पुरस्कार के रूप में केन्द्रीय साहित्य अकादमी की फ़ेलोशिप मिलना शामिल है। जिसके अंतर्गत 1993 का भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार शामिल है। सीताकान्त महापात्र को मिलने वाले पुरस्कार और सम्मानों की तालिका इस प्रकार है: -

1 – *ओड़िशा साहित्य अकादमी*
2 – केंद्र साहित्य अकादमी
3 – ओड़िशा साहित्य अकादमी प्रबंध
4 – विश्व हिन्दी सम्मेलन पुरस्कार
5 – सोवियत देश नेहरु पुरस्कार
6 – कुमारन आसन कविता पुरस्कार
7 – विषुव पुरस्कार
8 – सारला पुरस्कार
9 – ओड़िया संस्कृति परिषद पुरस्कार
10- भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार
11 – मराठी साहित्य सम्मेलन पुरस्कार
12 – गंगाधर मेहेर जातीय पुरस्कार
13 – योशुआ साहित्य पुरस्कार
14 – कबीर सम्मान

15 – जापान के सोका विश्वविद्यालय का सर्वोच्च सम्मान

16 – भारत सरकार के प्रदत्त 'पद्मभूषण'

17 – 'पद्मविभूषण' सम्मान

18 – केंद्र साहित्य अकादमी फ़ेलोशिप

साक्षात्कार के अंश:-

(प्रश्न॰1) – अपने भीतर काव्य-सत्ता की उपस्थिति को आपने किस उम्र में अनुभव किया, उस बिरले अनुभव को अगर शब्दों में ढाला जाए तो आप उस पर क्या कहना चाहेंगे?

कवि सीताकान्त महापात्र- जी, वास्तव में यह एक बिरला अनुभव है। जो कुछ इस विषय पर मैं कहना चाहता हूँ, उस अनुभव को उन शब्दों का सटीक विवरण दे पाऊँगा या नहीं मेरे कृतित्व के परे हैं। फिर भी यह कहना चाहूँगा कि यह अनुभव मुझे अपने स्कूल जीवन से प्राप्त हुआ था। उस समय मैं स्कूल में पढ़ा करता था। उस समय एक अध्यापक थे, उनका नाम था गोपाल मिश्र। उनके प्रयास से स्कूल में प्रकाशित होने वाली एक हस्तलिखित पत्रिका को देखकर मैं साहित्य की ओर आकृष्ट हुआ। उस समय मैं पिताजी की रामायण, महाभारत, भागवत तथा गंगाधर की कविताओं के प्रति बहुत ज्यादा आकर्षित हुआ, उस समय के अनुभव को भुलाया नहीं जा सकता। घर, परिवार और गाँव में जिस बोलचाल की भाषा का व्यवहार किया जाता था, उसे मैंने एक अनन्य ढंग से अनुभव करते हुए प्रयोग में लाना शुरू किया। आज भी मुझे अच्छी तरह याद है, मेरी माता की प्रतिदिन कहे जाने वाली अनेक नीतिज्ञान की बातें। कभी-कभी जब मैं उदास होता था, वह कहती थी "अरे जाल में फंसी हुई चिड़िया की तरह क्यों बैठे हो!" ऐसे सारे अनुभव जितने मैं आपको बताता हूँ, फिर भी मुझे ऐसा लगता है, बहुत कुछ अनकहा छूटा रह जाता है।

डॉ॰प्रसन्न कुमार बराल(प्रश्न॰2):- आपने अपनी कविताओं में गाँव, नदी, प्रकृति, विशेषकर चित्रोत्पला पर चित्रांकन किया है, इन सभी चीजों के अलावा परिवार, परिवेश और अन्य संबंधियों ने आपको किस तरह प्रभावित किया है?

कवि सीताकान्त महापात्र:- गाँव, परिवेश, प्रकृति और चित्रोत्पला नदी के प्रति मैं अपने मोह को भाषा में अच्छी तरह व्यक्त नहीं कर सकता।मैं जीवन भर प्रकृति प्रेमी रहा हूँ। पेड़-पौधे, जंगल, नदी, पहाड़, पर्वत जिस तरह मुझे आकर्षित कर पागल कर देते हैं, उन्हें शब्दों में व्यक्त करने का सामर्थ्य मुझमें नहीं है। इस प्रकृति के भीतर नीरस जीवन जीने वाले आदिवासी शायद इसलिए मेरे लिए इतने प्रिय हैं। बाकी रह गई बात निर्दिष्ट नदी चित्रोत्पला की। जिस दिन से मैं समझने लगा हूँ, चित्रोत्पला मेरे जीवन में इस तरह अंतरंग हो गई मानो मेरे भीतर लहू बनकर बह रही हो और मेरे मन मस्तिष्क की समस्त स्नायु ग्रंथियों पर अपनी उपस्थिति का गहरा प्रभाव छोड़ते हुए जा रही हो। मैंने सारी दुनिया भ्रमण किया है। देश-विदेश के नदी, समुद्र, जल-प्रपात सभी को जब-जब मैं देखता हूँ तब-तब चित्रोत्पला को मैं अपने हृदय में पाता हूँ। मुझे याद नहीं पड़ता कि बिना मैं अपने गाँव और चित्रोत्पला को लिए कभी कहीं समय बिताया हो। परिवेश और आस-पास के मनुष्यों के प्रभाव से क्या कभी मुक्त होना संभव है ?

(डॉ॰प्रसन्न कुमार बराल ने सीताकान्त महापात्र का चित्रोत्पला नदी के प्रति विशेष प्रेम दर्शाने के लिए गोधूलि लग्न में दो ओड़िया कविताओं "पुनर्जन्म" तथा "चित्रोत्पला : प्रेम की एक चिट्ठी" का समावेश किया है, जिसका मेरे द्वारा किया गया अनुवाद हिन्दी पाठकों के लिए निम्न हैं)

<u>पुनर्जन्म</u>

चित्रोत्पला के किनारे
कदंब-पेड़ की छांव में
बैठे-बैठे, कभी-कभी
जाने-अनजाने, अपने-आप
नींद आ जाती।
और
नींद में नौका विहार करते
चित्रोत्पला के गीत सुनते-सुनते
समुद्र की सैर करने लगता।
समुद्र को प्रणिपात कर
फिर से चित्रोत्पला के उल्टे स्रोत को
लौट आता उस नाव में बैठ
अपने परिचित तट पर
अपने गाँव के कदंब पेड़ की छांव में।
नींद टूट जाती कबूतर के गुटर-गूँ से
उस आवाज में बचपन के दिन
यौवन, वार्धक्य, दिन-रात, सुबह-शाम
सब एक साथ तरोताजा हो जाते
जैसे नारियल से खेलते
तालाब में तैरते,
ऑफिस में किसी को आवाज देते,
माता-पिता के खोने का भीषण क्रंदन
जैसे चित्रोत्पला से शिकायत करते हुए
क्यों मुझे लौटा लाई समुद्र के वक्ष-स्थल से
फिर मेरे गाँव और कदंब-पेड़ को
अगर मैं न होता तो
क्या यह सारी होनी-अनहोनी मुझे मिलती
मेरे दुर्बल सीने में खंजर घोंपने जैसे ?
नदी उसके कान में चुपचाप कहती
"ये देखो ! यह तो अनंत है
अरे पगले! हमेशा से तू इतना ही खोज रहा है

पाने को अनंत-क्षण को
क्षण के असीम अनंत को"
इतना कहते हुए खो जाता वह स्वर
उदास शाम की नदी की तरंगों,
कोमल घास के मैदानों में चरती गायों
और मायावी मल्हार पवन में।
उसके बाद और कैसी पृथ्वी
और कैसे गृह, तारे निहारिका ?
कैसी भाषा, कैसे शब्द
कैसी कविता और कैसा जन्मांतर?

चित्रोत्पला : प्रेम की एक चिट्ठी

जानती हो तुम्हें अपने जेब में रखकर
सारी दुनिया का भ्रमण करता हूँ मैं।
देखा है मैंने तुम्हें बहते हुए ईउफ्रेटिस में
गंगा, डैन्यूब, सिन नदी में।
उन्हें छूते ही
तुम मिल जाती हो।
मैंने सपना देखा है
नौका से पार होते हुए
चप्पू चलाते
मगर किनारा दूर-दूर होता जाता
और रह जाती नाव मँझधार में ।
समय की धारा ने मुझे
बच्चे से बूढ़ा बना दिया
तुम्हें पता नहीं
अभी भी मेरे पॉकेट में
तुम प्रेम-चिट्ठी की तरह हो।

(प्रश्न॰3):- जो कोई इंसान साहित्य के प्रति आकृष्ट होता है उसी क्षण सबसे पहले वह कविता की ओर अभिरुचि लेने लगता है। अनेक प्रतिष्ठित कहानीकारों और उपन्यासकारों ने अपने शुरूआती समय में कविता के माध्यम से इस सारस्वत जगत में अपनी पहचान बनाई है। क्या इसका अर्थ यह मान लिया जाए कि साहित्य सर्जन-कर्म कविता के अति नजदीक है ?

कवि सीताकान्त महापात्र– नहीं, साहित्य सर्जन का कार्य कविता के नजदीक है, यह मैं नहीं कहूँगा। फिर भी गद्य-रचना से पद्यों की उम्र अधिक होने के कारण मन होने पर बाद में कविताओं के रास्ते आगे निकला जा

सकता है। यह बात सही है कि अनेक कथा-शिल्पी और औपन्यासिक अपने लेखन जीवन के शुरूआत में कविताएं लिखते थे। मगर पहले गद्य रचना लिखकर बाद में कवि होने वाले शिल्पियों की संख्या बहुत कम है। कौन जानता है,बहुत खोज करने के बाद हो सकता है, कुछ लोग मिल भी जाएँ। मगर मेरे विचार से प्रत्येक कवि को गद्य लिखना बहुत जरूरी है। गद्य साहित्य की सरल बोधगम्यता पाठकों को साहित्य के प्रति आकर्षित करती है। कविता की अनेक बातों को स्पष्ट रूप से समझाने के लिए गद्य की आवश्यकता पड़ती है। कविता लिखने के दौरान मेरी अनेक गद्य रचनाएँ भी लिखी गई हैं। गद्य रचनाएँ लिखने के दौरान मेरा अधिक से अधिक यह प्रयास रहता है कि दोनों गद्य और पद्य की बीच की दूरी की रक्षा कर सकूँ। मगर कुछ आलोचक मेरी गद्य रचना-शैली में काव्य-धारा के संधान की बात करते हैं, जिसे वे काव्यमय गद्य के रूप में चिन्हित करते हैं। इसके अतिरिक्त, मेरे कविता संकलनों में जो भूमिका मैंने गद्य-शैली में लिखी है उनके भीतर मेरे अनुभव, अनुभूति और साहित्य संक्रांतीय धारणा कविता की तरह प्रतिपादित होती हुई नजर आती है। इस संक्रांति की मैंने अपनी अँग्रेजी पुस्तक *'बेयरफुट इंटू रियलिटी'* में पूरी तरह से व्याख्या की है।

(प्रश्न॰4):- मैंने कहीं पढ़ा है कि आपने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर की शिक्षा ग्रहण करते समय तत्कालीन यूनिवर्सिटी जर्नल सम्पादन का दायित्व संभाला था। उस समय आप किस तरह की कविताएं लिखते थे? तत्कालीन पत्र-पत्रिकाएँ कौन-कौन सी थी?

कवि सीताकान्त महापात्र:- 1957 से 1959 – इन दो सालों में एम॰ए॰ पढ़ने के लिए इलाहाबाद विश्वविद्यालय गया था। जहां मुझे यूनिवर्सिटी जर्नल का सम्पादन करने का दायित्व मिला था, उससे पहले मुझे रेवेन्सा कॉलेज में सम्पादन के क्षेत्र की जानकारी थी। ईस्ट हॉस्टल की पत्रिका 'जागरण' का मैंने सम्पादन किया था और उस पत्रिका में मेरी पहली कविता छह पी थी। इसके अलावा, मुझे याद है उस समय रेवेन्सा की पत्रिका में मेरी एक मात्र अंग्रेजी कविता को बिधुभूषण दास ने प्रकाशित किया था। उस समय लिखने का कार्य चल रहा था, मगर मेरी ज्यादा कविताएं प्रकाशित नहीं हुई थीं। उस समय वहाँ रहते समय सुमित्रा नन्दन पंत और फिराक गोरखपुरी जैसे प्रसिद्ध कवियों के साथ मेरा परिचय हुआ था। एक बार फिराक गोरखपुरी ने मुझे अपनी कविताओं के ऊपर कई सवाल पूछे थे जैसे क्या लिख रहे हो, किस विषय पर और कैसे लिख रहे हो इत्यादि-इत्यादि।

(प्रश्न॰5):- ओड़िशा के प्राचीन साहित्य से लेकर मध्य युगीन कविताओं में छंदबद्ध और लयबद्ध कविताएं देखने को मिलती है। उसके परवर्ती समय में गिने-चुने कवियों को छोड़कर अभी की रचनाएँ उन चीजों से दूर होती चली गई। इसके परिणाम स्वरूप ओड़िया कविताओं में पठनीयता घटती चली गईं। क्या इस बात से आप सहमत है ?

कवि सीताकान्त महापात्र:- संगीत और छंदबद्धता कविता के एक-एक पहलू मात्र है। इतना होने के बावजूद भी कविताओं को उस समय बहुत लोग पढ़ते थे, कहा नहीं जा सकता है। सभी युग में और सभी समय कविता की पाठक गोष्ठी सीमित रही है। इसका एक मुख्य कारण है कविता में प्रयुक्त होने वाली भाषा। कवि अपने वर्णन में इस तरह की भाषा का प्रयोग करता है जो साधारण मनुष्य की प्रतिदिन की भाषा से अलग होती है। खासकर कवि अपनी बात रखने के लिए अनेक प्रतीकों अथवा बिंबों का अपनी कविताओं में प्रयोग करता है।

मगर मेरा यह व्यक्तिगत अनुभव है कि उन चीजों की जरूरत नहीं होती है, उनका प्रयोग केवल बाह्य-आडंबर में मदद करता है। जिसे मैं अनावश्यक और अयुक्तिकर मानता हूँ ।

आधुनिक काल में कविता का प्रस्तुतीकरण के लिए पौराणिक घटनावलियों का प्रयोग अवश्य ही प्रासंगिक और तर्क-संगत है। इसी वजह से मैंने मेरी कविताओं में उनके पौराणिक चरित्रों को लिया है जैसे कि यशोदा। कृष्ण,यशोदा के प्रसंग को मैंने किसी कहानी की तरह न लेकर एक अति शक्तिशाली प्रतीक के रूप में प्रयोग किया है। मिट्टी खाने के बाद बाल-कृष्ण के मुँह के अंदर सारे ब्रहमांड का दर्शन करने का भाग्य यशोदा को छोड़कर किसी और को प्राप्त नहीं हुआ। इसका मतलब यह तो नहीं कि हम यशोदा को पागल कहें? जिसके बाल गोपाल के मुँह के भीतर ग्रह, नक्षत्र, सूर्य, चन्द्र की उपस्थिति देखी गई थी। इस प्रश्न का उत्तर किसी के पास नहीं है। खुद यशोदा इस प्रश्न पर निरुत्तर है। मेरी कविताओं में इसी अलौकिकता का वर्णन हुआ है।

हाँ, कविता की छंदबद्धता से दूर होने की बात पर मैं यह कहना चाहता हूँ कि जब सच्चि राउतराय ने मुक्तछंद कविता लिखना शुरू किया था और उस समय बहुत सारे कवि प्रभावित होकर परवर्ती काल में उसी तरह की कविताओं की रचना करने की ओर अग्रसर हुए।

(प्रश्न॰6):- ओड़िया कविताओं को राष्ट्रीय और अंतरर्राष्ट्रीय स्तर पर ले जाने वाली पृष्ठभूमि के आप एक मुख्य स्तंभ हैं। आप और आपके समसामयिक या परवर्ती काल के कवियों ने जो कुछ किया क्या आप उससे संतुष्ट हैं ?

कवि सीताकान्त महापात्र:- शुरू से ही आधुनिक ओड़िया कविता एक समृद्ध और सशक्त परंपरा रही है। इसलिए आप जिसे राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ले जाने वाली पृष्ठभूमि की बात कर रहे हैं, मेरे विचार में ऐसा कुछ   भी नहीं है। मेरे समसामयिक और मेरे परवर्ती समय के बहुत सारे प्रतिभाशाली कवियों ने अपनी काव्य-कृतियों के माध्यम से ओड़िया कविताओं को मान-सम्मान व प्रतिष्ठा दिलवाकर नई ऊंचाई तक पहुंचाया है। भारत की बहुत सारी प्रादेशिक भाषाओं में लिखी गई कविताओं को पीछे छोडकर हमारे ओड़िया काव्यकारों ने एक सम्मान जनक मुकाम प्राप्त किया है। विभिन्न भारतीय भाषाओं के प्रमुख कवियों की तालिका में ओड़िया कवियों की मौजूदगी सचमुच में उत्साह जनक है।

(प्रश्न॰7):-आपकी काव्य प्रतिभा की एक महत्वपूर्ण दिशा है ट्राइबल स्टडीज़ अर्थात आदिवासियों की जीवन-शैली, सांस्कृतिक परंपराओं और लोकगीतों का गहन अध्ययन। इस तरह के कष्टसाध्य कार्य करने की प्रेरणा आपको कहाँ से मिली ?

कवि सीताकान्त महापात्र:- आई॰ए॰एस॰ की नौकरी में मुझे ओड़िशा के दो जिलों का कलेक्टर और जिला मजिस्ट्रेट के रूप में कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जिसमें एक जिला था सुंदरगढ और दूसरा मयूरभंज। दोनों जिले आदिवासी बहुल जिले हैं। भिन्न-भिन्न संप्रदाय के आदिवासियों के साथ प्रत्यक्ष संपर्क स्थापित करने का अवसर मुझे इन दोनों जिले में प्राप्त हुआ।

सुंदरगढ में मेरा रहने का समय था 1967-68। राउलकेला में इस्पात कारख़ाना लगने के बाद यद्यपि शहर काफी बढ़ गया था। आदिवासी लोग हजारों की तादाद में काम-धंधों की तलाश में राऊरकेला आने और उसके

आस-पास के इलाकों में शाम के समय गीत गाते-गाते लौट जाने का दृश्य देखकर मैं अभिभूत हो जाता हूँ। मौखिक भाषा में गाए जाने वाले उन गीतों में था मेरे लिए एक अद्भूत मर्मस्पर्शी आकर्षण।

मयूरभंज जिला में कलेक्टर की नियुक्ति के समय में मैंने संथाली भाषा सीखी। भाषा सीखने की इस प्रक्रिया में संथाली से अलग 'हो', 'खडिया' और 'मुंडारी' भाषा मुझे समझ में आने लगी। एक बार भाषा सीख जाने के बाद उनके द्वारा गाए जाने वाले गीत मुझे और अधिक मीठे लगने लगे। उन सभी गीतों के अंतर्गत उनके जीवन के सभी अध्यायों और घटनाओं का वर्णन समाया हुआ था। जन्म-मृत्यु, कर्मचक्र, उत्सव, त्योहारों आदि प्रत्येक घटना के उपलक्ष में सभी गीतों का मुक्त-कंठ से वे लोग गान करते थे। उन सभी का मैंने जी भर कर उपयोग किया। फिर इन सभी गीतों को एकत्रित कर "दे सिंग लाइफ" शीर्षक से 9 संकलन मैंने प्रकाशित करवाए। इन संग्रहों का अनुवाद तथा संकलन करने में मुझे 20 साल से ज्यादा का समय लगा। ये सारे संकलन यूनेस्को रिप्रेजेंटेटिव वर्क सीरीज द्वारा प्रकाशित हुए। ये संकलन थे 'The empty distance carries', 'The wooden sword', 'They sing life', 'Unending Rhythms', 'Men, patterns of dust', 'The Awakened Wind', 'Forgive the Words', 'Staying is Now here' और 'The Endless Wave'।

इस कार्य की प्रेरणा मुझे अपने भीतर और मेरे चारों तरफ फैले हुए परिवेश से मिली। आदिवासी लोगों की मुक्त जीवन-धारा और जीवन के प्रति उनकी अकृत्रिम ममत्वबोध ने मुझे गंभीर तरीके से प्रभावित किया। इस वजह से मैं इस कार्य को अपने हाथ में लेकर अपने आपको सौभाग्यवान समझता हूँ।

(प्रश्न॰8):- आदिवासी भाषा, संस्कृति, त्यौहार तथा उनकी जीवनधारा के अध्ययन कार्य में आपका अनुभव कैसा रहा? वास्तव में यह कार्य कितना कष्टकारी रहा?

कवि सीताकान्त महापात्र – निस्संदेह यह अनुभव मेरे लिए उत्साहजनक था। यह काम मुझे अच्छा लग रहा था तभी तो इस कार्य को अपने अध्ययन का आधार बनाकर शोध करने का मैंने निश्चय किया था। आदिवासी लोगों द्वारा प्रयोग में ली जाने वाली अनेक भाषाएँ जब मुझे समझ में आने लगी तो मैंने सबसे पहले उनकी कई कविताओं और गीतों का संग्रह किया, उसके बाद धीरे-धीरे आदिवासी लोगों के सामाजिक जीवन में हो रहे परिवर्तनों का गहन अध्ययन करने के लिए पूर्वी भारत के पश्चिम बंगाल के बोलपुर तथा ओड़िशा की मयूरभंज आदि जिलों में मैंने बहुत काम किया। यहाँ तक कि इस विषय पर मैंने मेरी पी॰एचडी॰ की थीसिस लिख डाली जो ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी से दो भागों में ग्रंथाकार रूप में प्रकाशित हुई। पहले भाग का नाम था 'मार्डनाइजेशन एंड रिचुयल' और दूसरे भाग का नाम था "द टेल्स ऑफ द सेक्रड"। गीतों और कविताओं को छोडकर आदिवासियों की "वर्ल्ड् पेंटिंग" पर भी मैंने विस्तारपूर्वक अध्ययन किया। इस अध्ययन पर आधारित मेरी पुस्तक को ललित कला अकादमी ने प्रकाशित किया। सालों-साल एक ही इलाके में आंतरिकता से कार्य करते समय उनके कष्टों का या कष्टों की प्रासंगिकता मेरे हिसाब से कोई मायने नहीं रखती है।

(प्रश्न॰9) – किसी भी कवि के आपातत द्वैत सत्ता के ऊपर अक्सर सवाल उठते है, एक उसकी अपनी व्यक्तिगत-सत्ता तो दूसरी उसकी काव्य-सत्ता। सांसारिक जीवन जीते हुए एक मनुष्य के लिए दो अलग-अलग भूमिकाओं में अवतीर्ण होते समय आपसी समझौते की जरूरत पड़ती है,अन्यथा अंतरात्मा में संघर्ष जन्म लेने लगता है। वास्तव में ऐसा होता है ?

कवि सीताकान्त महापात्र:- इस दृष्टिकोण से मैं आपको सौभाग्यशाली मानता हूँ। इस तरह के समझौते अथवा संघर्ष के बारे में मुझे कोई भी जानकारी नहीं है। सांसारिक जीवन के भीतर एक व्यक्ति के रूप में मेरी जो भूमिका है, उसके समानान्तर कवि कर्म करते समय मैं अपनी भूमिका अदा करता हूँ। हाँ, यह बात अवश्य है, मेरे अध्ययन और लिखा-पढ़ी में तल्लीन होने के दौरान मैं अपने परिवार, परिजन और भाई, बंधुओं को पर्याप्त समय नहीं दे पाता था, किन्तु यह कभी भी मेरे सामने अवरोध बनकर खड़ा नहीं हुआ ।

(प्रश्न॰10):- ई-मेल, इन्टरनेट, सैटलाइट, टेलीविज़न की तरह कम्यूनिकेशन इंजीनियरिंग में भी विगत कई दशकों के भीतर उनके अभूतपूर्व परिवर्तन घटित हुए है, जिसकी वजह से आम लोगों का जीवन बहुत प्रभावित हुआ है। उसके साथ उभरकर हमारे समक्ष आया कंज्यूमेरिज़्म एंड ग्लोबलाइज़ेशन का एक दौर। जिनके साथ कदम-ताल मिलाकर चलने के कारण मनुष्य के चरित्र में परिवर्तन होने लगा और वह बहुत ही ज्यादा जटिल, स्वार्थी, अन्वेषी तथा आत्मकेंद्रित होने लगा है। मनुष्य के भीतर हो रहे इस मानसिक परिवर्तन की इस प्रक्रिया में कविता (साहित्य) को आप किस दृष्टि से देखते हैं ?

कवि सीताकान्त महापात्र:- भौतिकवाद की दृष्टि से जो प्रगति हो रही है तथा जिस तरह से समाज उससे प्रभावित हो रहा है, उसे रोका नहीं जा सकता। उसे रोकने की आवश्यकता भी नहीं है क्योंकि यह विश्वव्यापी प्रक्रिया सारे संसार को संकुचित करने में अपना योगदान दे रही है। सामग्रिक भाव से इससे विश्व-साहित्य लाभान्वित हो रहा है। इस परिवर्तन का प्रभाव पड़ने के बावजूद भी कविताओं की भूमिका पहले की तरह अपरिवर्तित रहेगी। कविताएं हमेशा से मानवतावाद का जय गान करती आ रही है। वास्तविक जीवन को पहचानने तथा मानवता के प्रति श्रद्धाभाव रखने की मनुष्य को शिक्षा देती है। कविता के इस प्रयास को अगर मनुष्य ग्रहण कर लेता है तब भले ही वह मनुष्य से देवता न हो पाए, मगर वह एक इस प्रकार शक्ति का अधिकारी बन जाता है, जिसके द्वारा जीवन को यथार्थ ढंग से जीने का रास्ता खोज सकता है। कविता के इस लक्ष्य की उपलब्धि कोई मामूली नहीं है। प्रत्येक क्षण नए तरीके से जीवन जीने तथा प्रकृति के सारे परिवर्तनों तथा नित्य-नैमिकता के अंदर नयेपन की खोज करने का अभिनव-कौशल कविता ही मनुष्य को सिखाती है। कविता (साहित्य) के माध्यम से मनुष्य जीने की अपनी शैली का आविष्कार करता है। सूर्योदय, सूर्यास्त की तरह प्रतिदिन घट रहे इस दृश्य के भीतर हर रोज वह नूतन-आशा और संभावना के प्राचुर्य को देख पाता है। वास्तव में, मैं यह कहना चाहता हूँ कि मनुष्य को किसी परिचित और निर्दिष्ट भौगोलिक सीमा के भीतर बंद कर देना उचित नहीं है, प्रत्येक इंसान इस दुनिया का विशेष इंसान है। मनुष्य का यह विश्वाभिमुखी अंतर्दृष्टि ही उसकी सबसे बड़ी सफलता है। भारतीय होने पर मुझे गर्व है, मगर मेरा कर्तव्य और मेरी भूमिका सारे संसार के प्रति मानवतावाद की प्रतिष्ठा और जयगान के लिए उद्दिष्ट होनी चाहिए।

(प्रश्न॰10):- कम उम्र और अपेक्षाकृत कम लेखन कार्य करने के बावजूद भी अँग्रेजी भाषा के भारतीय लेखक जिस प्रतिष्ठा और सम्मान को प्राप्त करते है, वहाँ अपनी मातृभाषा में लिखने वाले बहुत सारे वरिष्ठ और सम्माननीय लेखकों को वह सौभाग्य प्राप्त नहीं हो पाता। इसके लिए क्या भाषा एक परिस्थितिजन्य कारण है ?

कवि सीताकान्त महापात्र:- इस परिस्थिति के लिए भाषा एक महत्त्वपूर्ण कारण हो सकता है। इस प्रश्न का उत्तर मैंने अपने पूर्व के कई साक्षात्कारों दिया है। सबसे बड़ी बात है कि हमारे देश के विशुद्ध साहित्य से संबन्धित

पुस्तकों के अध्ययन करने वाले पाठकों की संख्या बहुत कम है फिर इस संबंध में अँग्रेजी भाषा की पुस्तक पढ़ने वाले लोगों की संख्या और ज्यादा कम।

भारतीय लेखक जो अँग्रेजी भाषा में लिखते हैं, वे जिस विषयवस्तु को अपना आधार बनाते हैं अथवा जिन घटनाओं का वर्णन अपने पुस्तकों में करते हैं, वे सब पाश्चात्य देशों के लिए आश्चर्य का केन्द्र बिन्दु बन जाते है। भारत के सामाजिक जीवन, पारिवारिक बंधन और व्यक्ति और सामाजिक व्यवस्था की सशक्त अंतरंगता विदेशी राष्ट्रों के लोगों को अद्भूत लगने लगती है। उन परिस्थितियों का विदेशी लोग कभी सामना नहीं करते हैं, इसलिए इस तरह की अभिनव और अनुपम घटनाओं को भारतीय लेखकों की पुस्तकों में देखकर वे अभिभूत हो उठते हैं। यही वजह है विक्रम सेठ की 'ए सूटेबल बाय' की कहानी पाश्चात्य राष्ट्रों में इतनी लोकप्रिय साबित हुई।

इसके साथ-साथ मैं यह बात स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि भारतीय लेखकों के अँग्रेजी भाषा की पुस्तकों की गुणवत्ता अत्यंत ही उच्चकोटि की है। भारत की वरिष्ठ और बहुचर्चित लेखकों की पुस्तकों का अनुवाद न होने के कारण वे विदेशी पाठकों तक नहीं पहुँच पाए। फकीर मोहन, गोपीनाथ और कान्हू चरण की कितनी पुस्तकों का अनुवाद हुआ है। भारत के बाहर रहने वाले एक विपुल पाठक गोष्ठी तक पहुंचाने का एक मात्र रास्ता अनुवाद और व्यापक प्रसारण है।

(प्रश्न-11):- आप कैंब्रिज और हावार्ड विश्वविद्यालय के साथ–साथ विश्व के बहुत प्रसिद्ध शिक्षा, सांस्कृतिक, संस्थाओं तथा विश्वविद्यालय के विभिन्न कार्यक्रमों से जुड़े हुए हैं। उन सभी संस्थाओं में भारतीय साहित्य को किस दृष्टि से देखा जाता है ? वहाँ पर इस संदर्भ में कुछ कार्यक्रमों का आयोजन होता है ?

कवि सीताकान्त महापात्र– मैंने थोड़ी देर पहले पाश्चात्य राष्ट्रों,भारतीय साहित्य और उनके लेखकों की स्थिति के बारे में प्रकाश डाला। फिर भी भारतीय भाषा और साहित्य को लेकर वहाँ पर नजरों में आने वाला कार्यक्रम नहीं होता है। हाँ, यह बात अवश्य है कि कई प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में इंडियन स्टडीज के विभाग है। मैं खुद कई विशेष कार्यों के लिए उन विभागों से जुड़ा हुआ हूँ, इसके अतिरिक्त, ओरिएंटल लैंगवेज़ सीरीज की उन सारी संस्थाओं में विपुल मात्रा में संस्कृत भाषा के दुर्लभ ग्रंथ और पुस्तकों के संग्रह पड़े हुए हैं ।

पहले ही मैंने कहा कि केवल अनुवाद के अभाव के कारण भारतीय लेखकों को पाश्चात्य राष्ट्रों के पाठक और साहित्य जगत से वंचित रहना पड़ा है। गोपीनाथ मोहंती की 'परजा', 'दाना-पानी', 'लय-विलय' और 'दादी बूढ़ा' को छोडकर अन्य किसी भी पुस्तक का अँग्रेजी में अनुवाद नहीं हुआ है। इसी तरह कान्हू चरण की 'झंझा' एक मात्र अनूदित पुस्तक है। फकीर मोहन के "छह माण आठ गुंठ'- एक मात्र उपन्यास का अमेरिका के अन्यतम प्रसिद्ध कोमेल यूनिवर्सिटी के अँग्रेजी प्रोफेसर सत्यप्रकाश मोहंती के साथ-साथ यतीन नायक, रविशंकर मिश्रा ने अनुवाद किया है। बहुत सारे अज्ञात कारणों के कारण "अंधा दिगंत" जैसी पुस्तक का अँग्रेजी में अनुवाद अभी तक नहीं हो पाया। दुनिया की सारी प्रसिद्ध संस्थाओं और विश्वविद्यालय में भारतीय भले ही उच्च पदवी पर कार्य कर रहे हो, मगर भारतीय भाषा और साहित्य पर कभी चर्चा नहीं करते।

(प्रश्न॰12):- "शब्द और समय" जैसे दो शब्दों के साथ आपकी अत्यंत ही अंतरंगता है, इन दोनों शब्दों के प्रति आपकी ज्यादा ही कुछ ममता और श्रद्धा है। इसलिए आपके द्वारा लिखी गई किताबों के शीर्षकों में यह

शब्द बारबार देखे जाते हैं, जैसे कि “समय र शेष नाम”, “फेरि आसिबार बेल”,(समय),“समयर आरपारि”, “संस्कृति’, ‘आम समय”, ‘शब्द आकाश’, ‘शब्द’, ‘स्वप्न और निर्भीकता’ इत्यादि। इस विषय पर कुछ प्रकाश डालें।

कवि सीताकान्त महापात्र – इस प्रसंग को हिन्दी की विशिष्ट साहित्यकार डॉ॰ नामवर सिंह ने उठाया था। मेरे एक कविता-संग्रह की भूमिका में “शब्द और समय के कवि सीताकान्त” नाम से उन्होंने एक आलेख लिखा था। मनुष्य जीवन के प्रत्येक स्तर को समय किस तरह स्पर्श कर प्रभावित करता है, इस विषय का उसमें उल्लेख किया था। मेरी धारणा यह थी कि कभी भी समय से मनुष्य मुक्ति नहीं पा सकता। चाहे किसी की इच्छा हो या न हो,उसे समय का सामना करना ही पड़ता है। जीवन के समूचे परिवर्तन में समय एक अवश्यंभावी उपादान है। समय मनुष्य जीवन का एक विशेष अविच्छेद्य अंग है। समय को ढकना या समय को भूलने का सामर्थ्य मनुष्य में नहीं है। सच में, समय के सामने मनुष्य की अवस्था असहाय है।

यह बात सही है कि समय स्थिर नहीं है। वह एक चिरंतन प्रवाहमान धारा है। समय की गति के साथ के साथ मनुष्य को कदम-ताल मिलाते हुए आगे बढ़ना पड़ता है। एक कवि के तौर पर मेरे लिए यह बिलकुल असंभव है कि समय के बहते हुए स्रोत के पास मैं स्थिर खड़ा हो जाऊँ। समय अदृश्य है, मगर इसकी शक्ति असीम है। मनुष्य जीवन के सभी परिवर्तनों के पीछे समय की अनिवार्य उपस्थिति रहती है। यही वजह है मैं कविता लिखते समय अत्यंत ही सचेतन होकर समय को महत्त्वपूर्ण आधार मानता हूँ। इसी तरह शब्द को भी। शब्दों का सामर्थ्य कल्पना से परे हैं। यह होता है संयोग के सेतु की तरह। एक जीवन काल में शब्दों की खोज समाप्त नहीं होती है,जन्म-जन्मों तक उसका इंतजार करना पड़ता है। कभी-कभी मिल जाता है तो कभी नहीं मिलता है। यह अन्वेषण की कथा कहते समय मेरे मन में कविता की कुछ पंक्तियाँ याद हो उठती है, जैसे– एक शब्द को गढ़ने में/ जिस तरह आकाश हजारों रंग बदलता है / हवा कितने तरीकों से गीत गाती है/ समुद्र रोता है, हँसता है, गूंगी बालू पर टकराता है/ सर्वसहा वसुंधरा चातक की तरह ताकती है / कि कब एक शब्द का निर्माण होगा / इसलिए सौ जन्म, सौ मृत्यु की आवश्यकता होती है?

(प्रश्न॰13):- मैंने आपका पहले एक मंतव्य पढ़ा था जिसमें आपने समय के प्रसंग में कहने के लिए निर्जनता की बात उठाई थी। निर्जनता मनुष्य जीवन के सारे स्तरों को किस तरह समेटे बैठी है, इस बात की समालोचना हुई थी। इस विषय पर थोड़ा-सा विस्तार से प्रकाश डालें ।

कवि सीताकान्त महापात्र – हाँ, मैंने इसके ऊपर मेरे विचार रखे थे, अपना वक्तव्य दिया था। समय के प्रसंग पर कहने के लिए मैंने कहा था कि समय के अनेकानेक नाम है, निर्जनता उसका अंतिम परिचय होती है। सभी मनुष्य को निर्जनता खा जाती है। पारिवारिक जीवन और सांसारिक कोलाहल के भीतर रहते समय मनुष्य उस निर्जनता के द्वीप का निर्वासित जीवन जीता है। संसार, जीवन, लोभ, मोह, माया जैसे अनेकानेक अनुभवों से दूर, छोटे बच्चे के रूप में शुरू कर स्वयं भगवान के जीवन में निर्जनता का प्रभाव देखने को मिलता है।

याद करो, उस अनन्य क्षण को, जब घनघोर जंगल में भगवान श्री कृष्ण सोते हुए नीरवता में जारा शबर के उस तीर का इंतजार कर रहे थे। श्री कृष्ण के जीवन की इस निर्जनता का निष्ठुर अनुभव था। निर्जनता भिन्न-भिन्न रूप बदल कर आती है, चली जाती है। घर में रह रहे एकाकी बुजुर्ग लोग, मध्यम-वर्गीय परिवार में बच्चों की स्कूल और पति के बाहर जाने पर घर की अकेली महिला एक विचित्र शून्यता के भीतर कुछ समय के

लिए जिस असहायता का अनुभव करती है, उसी का नाम है निर्जनता। प्रेमी जोड़ों के मिलने के पथ पर जिन किन्हीं बाधाओं को लेकर निर्जनता के शीतल द्वीप को ले जाती है, निर्जनता के वे क्षण उन्हें इस तरह लगते हैं, जैसे उनके चारों तरफ दुनिया उजड़ी हुई नजर आती है। जीर्ण-शीर्ण हो जाती है। जिस तरह एक छोटे बच्चे के खिलौने टूटने का दुख उसे निर्जनता के भीतर खींच ले जाता है, वास्तव में "यह है या यह नहीं है" की बीच की स्थिति मनुष्य के लिए उसकी निर्जनता होती है।

(प्रश्न-14):- साहित्य रचना के क्षेत्र में परम्पराओं की भूमिका कितनी महत्त्वपूर्ण है?

कवि सीताकान्त महापात्र – परंपरा और आधुनिकता पर मैं पहले ही बहुत बता चुका हूँ। परंपरा की सशक्त जड़ों पर ही आधुनिकता टिकी है। परंपरा हर समय हमेशा पुरानी और आधुनिकता नई, इस बात पर मेरा कोई विश्वास नहीं है। आज हम जिसे परंपरा कहते हैं, कभी वह लोगों के लिए आधुनिकता हुआ करती थी। इसलिए मेरी दृष्टि में अनेक पुराने काव्य, कविताओं में आज भी आधुनिकता की वह सतेज खुशबू मिलती है। अभी भी ऐसा लगता है मानो यह हमारे समय की रचना हो। इसी तरह दूसरी तरफ अभी भी अनेक रचनाओं में बहुत प्रयास करने के बाद भी आधुनिकता का पता नहीं चलता। फिर भी साहित्यकारों के लिए, खासकर कवियों के लिए,परम्पराओं के साथ जुड़ा होना बहुत आवश्यक है, प्राचीन और मध्य युगीन साहित्य का अध्ययन किए बिना आधुनिक काल की कविता कैसे लिखी जा सकती है, मुझे समझ में नहीं आता। हम केवल ओड़िया साहित्य की बात नहीं कर रहे हैं। बंगाल के सुनील गांगुली जैसे कवियों ने भी कभी भी अपनी परम्पराओं को नहीं छोड़ा हैं। पारंपरिक परम्पराओं की समालोचना के परिसर में रवीद्र नाथ के अनेक दोष त्रुटियाँ दर्शाई गई हैं। इसलिए मैं हमेशा आधुनिकता को परंपरा का नवीन संस्करण मानता हूँ, इसलिए मैं उसे इसका नवकलेवर कहता हूँ।

(प्रश्न-15)–आदिवासियों की मौखिक कविताओं के संग्रह, संरक्षण और अनुवाद के लिए आप अपनी नौकरी के जीवन में इतना समय किस तरह दे पाए, जबकि आईएएस की नौकरी में तो पदभार वास्तव में ज्यादा महत्त्वपूर्ण होता है।

कवि सीताकान्त महापात्र – यह बात बिलकुल सही है कि आई॰ए॰एस॰ की नौकरी में पद ज्यादा महत्त्वपूर्ण होता है और इसका दायित्व भी ज्यादा होता है। मेरे सारस्वत जीवन के संदर्भ में इस नौकरी को लेकर पहले भी अनेक बार सवाल पूछे गए हैं। सही अर्थों में, मैंने यह प्रशासनिक सेवा की नौकरी एक सुयोग के रूप में ग्रहण की थी। आई॰ए॰एस॰ होने के कारण समाज में जितने प्रकार के लोगों से मिलने का मौका मिलता है, जितनी अलग-अलग समस्याओं का सामना करना पड़ता है और फिर जितनी समस्याओं का मैंने समाधान किया है, इतना किसी दूसरी नौकरी में संभव नहीं है। राजनैतिक व्यक्तियों से लेकर वरिष्ठ अधिकारियों और समाज के सभी स्तर के लोगों के सुख- दुख को नजदीकी से देखने का अवसर इसी नौकरी से मिला। अनेक घटनाओं में मेरे ऊपर दबाव भी आया। मगर मैं उन किसी बाहरी दबाव के वश में नहीं हुआ। मेरे टेबल पर आई फाइलों को मैं यत्नपूर्वक पढ़कर अपने विवेकानुसार निर्णय लेता था। इस नौकरी के माध्यम से दूसरों के दुख और अभाव-बोध को समझने का सौभाग्य मिला। आदिवासी लोगों का जीवन के प्रति जिस तरह अखंड दृष्टिकोण मिलता है,वैसा और कहीं देखने को नहीं मिलता। उनके अनुसार मनुष्य,समाज, प्रकृति, ईश्वर सभी इस जीवन के अंश विशेष हैं। जीवन का ऐसा सामग्रिक बोध और देखने को नहीं मिलता। उस समय उनके मौखिक गीतों पर कार्य

करने के लिए मुझे दो बार होमी जहागीर भाभा फ़ेलोशिप प्राप्त हुई थी। पहली बार इस फ़ेलोशिप को प्राप्त करते समय मेरे साथ थे– गिरीश कन्नार्ड, जे॰पी॰दास और फिल्म निर्माता श्याम बेनेगल। दूसरी बार सीनियर फ़ेलोशिप प्राप्त करते समय मेरे साथ थी रोमिला थापर। फ़ेलोशिप मिलने के बाद पूरे दो साल छुट्‌टी लेकर मैंने यह कार्य किया था।

(प्रश्न-16)— आप कविता कैसे लिखते हैं ? कितना समय लगता है? एक बार लिखने के बाद आप क्या दुबारा संशोधन करते हैं ?

कवि सीताकान्त महापात्र - कविता आवेग से पैदा होती है। यह आत्मा का अपना एक दस्तावेज़ होता है, इसलिए कविता किस तरह लिखी जाए, इसका कोई सीधा उत्तर नहीं होता। कभी-कभी मन में आई हुई पहली पंक्ति को मैं लिख देता हूँ, मगर आगे की और पंक्तियां नहीं लिख पाता। उस पहली पंक्ति के लिए कभी-कभी उचित योग्यतम दूसरी पंक्ति पाने के लिए दीर्घकाल प्रतीक्षा तक करनी पड़ती है। मैं कभी-कभी एक ही बार में सारी कविता लिख देता हूँ। मगर जब मुझे लगता है, जो मुझे कविता में कहना था, नहीं कह पाया तो मैं उसे वहीं छोड़ देता हूँ। लगभग चार-पाँच महीने के बाद फिर से मैं उस कविता की ओर लौट आता हूँ। दूसरी तरफ जब मुझे लगता है कि जब मैंने अपनी कविता में ठीक-ठीक लिख दिया है तो और मैं उसके साथ छेडखानी नहीं करता। लंबी कविता के लिए कई शृंखलाओं का ध्यान रखना पड़ता है, इसलिए उनकी रचना में मुझे अधिक समय लगता है। लेखन के बाद उसमें कुछ संशोधन करने पड़ते हैं। कभी-कभी बिना किसी संशोधन के कविता चल जाती है। इसलिए इस प्रश्न का संक्षिप्त उत्तर मैं कह सकता हूँ।

“मैं प्रतिक्षण कविता लिखता हूँ”

(प्रश्न-17)– आपके साथ इतने लंबे समय से चल रही वार्तालाप के दौरान मैंने पाया कि आप पढ़ने के ऊपर विशेष ज़ोर देते हैं कि लेखन कार्य में व्यय हो रहे समय के तुलना में पाँच गुना ज्यादा पढ़ना चाहिए। इस तरह समय का भाग-बंटवारा किया जा सकता है ?

कवि सीताकान्त महापात्र – मेरी लाइब्रेरी तो आपने देखी है। लगभग 15 हजार के आसपास किताबों का संग्रह है। विगत कुछ सालों से मैं अलग-अलग संस्थाओं को किताबें दान दे देता हूँ। बहुत पहले से ही मैं पढ़ने पर विशेष ज़ोर देता हूँ। छात्र जीवन से ही रेवेन्सा कॉलेज की ईस्ट हॉस्टल में रहते समय, जब ग्यारह बजे लाइट बंद करने का नियम था,इस दौरान मैंने अनेक पुस्तकें पढ़ीं। जैसेकि काम्यू का उपन्यास ‘द प्लेग’ मैंने उस समय पढ़ लिया था।

केवल साहित्य ही नहीं इतिहास, दर्शन, संस्कृति, नृत्य तथा अनेक अन्य विषयों पर आधारित पुस्तकें मुझे अत्यंत ही प्रिय लगती थीं। आपको यह जानकार खुशी होगी कि टाइम्स लिटरेरी सप्लीमेंट ने इस शताब्दी की सबसे अधिक प्रभावशाली पुस्तकों की सूची प्रकाशित थी। 2010 मसीहा की प्रकाशित इस सूची में से 85 किताबें मेरी पढ़ी हुई थीं। किताबें पढ़ना मेरा सबसे बड़ा शौक है। किताबें मेरी सर्वश्रेष्ठ संपत्ति हैं।

(प्रश्न-18)— हकीकत में भारतीय साहित्य जैसी कोई चीज है? संविधान की अष्टम सूची में स्वीकृत 22 भाषाओं के अलावा कुछ अन्य भाषाओं को जोड़ने का दबाव बन रहा है। प्रत्येक भाषा का अपना साहित्य संस्कृति आपस

में अलग होने के कारण भारत के समूचे साहित्य की पहचान नहीं बन पाती है, जिस वजह से नोबेल पुरस्कार भी नहीं मिल पाते हैं। इस विषय पर आप कुछ प्रकाश डालें।

कवि सीताकान्त महापात्र – सारे यूरोप में जितनी भाषाएँ हैं, उनसे कई गुना अधिक भाषाएँ भारत में है। अपने-अपने अंचलों में, भले ही, इन भाषाओं के साहित्य का प्रचार-प्रसार हो जाता हो, मगर उनका प्रभाव विश्व साहित्य के दरबार में अनुभव नहीं किया जा सकता है। हमारे देश में अलग-अलग भाषाओं पर वाद-विवाद पैदा होने के कारण एक अस्वस्थ वातावरण का निर्माण हुआ है। प्रादेशिक भाषाओं के बीच आपसी असहिष्णुता पैदा होने की भी समस्या है।

सारी भारतीय भाषाओं में केवल बंगला और तमिल भाषा में हुए शोध कार्य संतोष जनक है। अगर उच्चकोटि की साहित्यिक पुस्तकों पर उत्तम शोधकार्य के साथ उनका अनुवाद नहीं होता है तो उनका मूल्यांकन कैसे किया जा सकेगा? एशियाई देशों में भी चीन को दो बार तथा जापान को तीन बार साहित्य के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार मिल चुका है, मगर 1913 में रवीद्र नाथ टेगोर की गीतांजली के बाद सौ वर्ष से अधिक समय बीत जाने के बाद भी किसी भारतीय को नोबेल पुरस्कार मिलने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ है। विश्व स्तर पर भारतीय साहित्य की उत्साहजनक स्थिति के लिए उच्चकोटि का अनुवाद होना ही यथेष्ट नहीं है, वरन उन पुस्तकों के प्रकाशकों का भी वैसा ही स्तर होना चाहिए, जिनके पास विश्वव्यापी प्रसारण व विक्रय के नेटवर्क हो। शायद यही कारण है कि स्पैनिश भाषा के साहित्य को सबसे ज्यादा नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुए, तथा अंग्रेजी दूसरे स्थान पर रही ।

पाबलों नैरुदा का नाम लगभग दस बार नोबेल तालिका में चयन होने की सूचना मिलते ही अंतिम पादान में नाम कटने की खबर मिलती। इस तरह लगातार हर वर्ष चर्चा में रहते-रहते अंत में विजयी हो गए। नोबेल पुरस्कार के लिए पूर्व नोबेल पुरस्कार विजेताओं की सिफ़ारिशों की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है, जिसे प्राप्त करना इतना सहज नहीं है।

(प्रश्न-19)— ओड़िया भाषा का शास्त्रीय मान्यता पर आप अपना विचार रखना चाहेंगे?

कवि सीताकान्त महापात्र - ऐसी सरकारी मान्यता से क्या मिलेगा? आप तो सत्यनगर में घूमते-घूमाते मेरे घर पहुंचे हो। किसी घर के दरवाजे पर ओड़िया भाषा में लिखा हुआ कोई नाम देखा है? इस भाषा को जिन लोगों के मान्यता की जरूरत है अगर वे लोग अपना मुंह फेर लेते हैं तो सरकार द्वारा प्रदत्त शास्त्रीय मान्यता के मुकुट का क्या अर्थ है। ओड़िया भाषा को शास्त्रीय मान्यता क्यों मिली – उसके लिए चल रही प्रतिद्वंद्विता तो अभी तक रुकी नहीं है। देखा जाएगा आगे क्या होगा, अभी तो केवल इंतजार किया जा सकता है।

(प्रश्न-20)— आपके प्रिय लेखक कौन-कौन हैं ? विदेशी लेखकों में भी?

कवि सीताकान्त महापात्र– भागवतकार जगन्नाथ दास, महाभारतकार सारला दास को मिलाकर गोपीनाथ मोहंती मेरे प्रिय साहित्यकार हैं। विदेशी साहित्यकारों में काम्यू,सार्त्र की रचनाएँ मुझे अच्छी लगती हैं। अल्बर्ट काम्यू द्वारा लिखित लगभग सारी पुस्तकों का अनुवाद मैंने पढ़ा है, मगर मेरे साहित्यिक जीवन पर किसी भी विदेशी लेखक का खास प्रभाव नहीं है। विदेशी कवियों में आक्टो वियो पाएज मेरे पसंदीदा कवि हैं। मैंने उन्हें भी खूब चाव से पढ़ा है।

(प्रश्न-21)— आपकी विगत पचास सालों से चली आ रही साहित्यिक यात्रा बहुत लंबी है। अनेक किताबें,अनेक पुरस्कार, गहन अनुभव और प्रगल्भ ज्ञान इस आधी शताब्दी के भीतर आपके जीवन में प्राप्त हुआ है। क्या फिर मन में किसी चीज का अवशोष बाकी है कि कुछ रह गया है?

कवि सीताकान्त महापात्र – मेरी यह यात्रा जितनी लंबी है, उतनी ही उपभोग्य भी। इस जीवन काल के दौरान मैंने अनेक अभिज्ञता अर्जित की है। प्राप्त किया है अनवद्य अनुभव। बहुत सारे लोगों की श्रद्धा, स्नेह और प्रेम से मैं पूरी तरह सराबोर हुआ। मेरा किसी प्रकार का अवशोष नहीं है। मेरे सामर्थ्य के अनुरूप जितना संभव हुआ, मैंने उसे किया।

(प्रश्न-22)— आपके जीवन में ऐसा कोई दुःखद अनुभव है जिसे आप भूल नहीं पा रहे हो। अगर कोई आपत्ति न हो तो कृपया बताएं।

कवि सीताकान्त महापात्र – मेरे छोटे भाई ताराकान्त की असामयिक मृत्यु मेरे जीवन की सबसे ज्यादा दुःखद घटना है। वह मुझसे छह साल छोटा था मैंने उसे अपने हाथों से पढ़ाया, इंसान बनाया। आई॰आई॰टी॰ से इंजीनियरिंग करने के बाद वह अपने काम में व्यस्त था। अचानक हार्ट अटैक से उसकी मृत्यु हो गई। यह दुख अभी भी मेरे सीने में ठहरा हुआ है।

(प्रश्न-23)– 'श्रद्धा' (कवि सीताकान्त के घर का नाम) के भीतर अब समय कैसे कट रहा है ?

कवि सीताकान्त महापात्र– मैं यहाँ अच्छा हूँ। शरीर भी अब स्वस्थ है। लेखन-पठन नियमित करता हूँ।

सीताकांत महापात्र: लेखक-परिचय

एक बड़े कवि का परिचय देना एक कठिन कार्य है, खासकर तब जब वह अपनी रचनात्मकता के शिखर पर हो। इस वजह से, उसके कविता का यह मूल्यांकन और भी कठिन है कि साहित्य को उसका अवदान है। ये कठिनाइयाँ तब और भी विकट हो जाती हैं जब हम देखते हैं कि वह कभी लिखता तो प्रथमतः एक क्षेत्रीय भाषा में है,उसका सन्धान तत्वतः भारतीय है, और शिल्प में उसकी प्रतिभा की लीला या क्रीडा समसामयिक सार्वभौमिक है। लेकिन सीताकांत महापात्र की कठिनाइयों के भीतर से अपना वह भेद खोलते हैं जिससे उनकी कविता समझी जा सकती है। अस्वीकार और स्वीकार के उद्योगों के संघर्ष की एक आदर्श परिणति है और इस तरह वह विवेक-बुद्धि तथा भावावेग के द्वंद्वात्मक घात-प्रतिघात का एक समाधान प्रस्तुत करते हैं। डेविड ऑल बुक के शब्दों में, इसी कारण वे 'एक जीवन-संधान में अभिकेंद्रित मेधा' हो गए हैं।

सीताकांत महापात्र (जन्म 1937) ने अपना पहला कविता-संग्रह ' दीप्ति ओ द्युति' 1963 में प्रकाशित किया था और उनका दसवाँ संग्रह 'वर्षा सकाळ' दिसंबर 1993 में प्रकाशित हुआ। यह कालखंड ऐसा है जिसमें उत्तरोत्तर विकास देखा जा सकता है। इसे एक अनोखी परिघटना मानना चाहिए- उक्ति अभिव्यक्ति की नवीनता के लिए न सही, पर खोज या सन्धान के नैरन्तर्य के कारण निश्चित ही। यह यात्रा एक कवि की ही नही, बल्कि एक समूचे सौन्दर्य-विधान की भी है जो कला के अन्तिम पड़ाव तक अन्ततः मिलेगा भी या नहीं। नैरन्तर्य के इस बोध और सन्धान की तल्लीनता ही सीताकान्त को अपना समकालीनों और समवयस्कों से भिन्न या विशिष्ट बनाती है।

'दीप्ति और द्युति' ने 1963 में ओड़िया काव्य-जगत में एक वजनदार कवि के आर्विभाव का संकेत दिया था। यह वह दौर था जब ओड़िया कविता का मुहावरा एक कायाकल्प की कगार पर था। सच्चि राउतराय अपनी अंतिम बड़ी कृतियों में से एक (कविता,1962) प्रकाशित कर चुके थे, गुरुप्रसाद महांति अपने अंतिम सार्थक कृति (नूतन कविता,1965) प्रकाशित कर विदा हो चुके थे, और रमाकांत रथ अपनी पहली महत्वपूर्ण कृति (केते दिनारा,1963) के साथ सामने आ चुके थे। राउतराय ओड़िया कविता में प्रतीकवादी अभिदृष्टि और रामाजवादी चिंतन का उद्वेलक समन्वय ले आये थे, जो कि एक दुर्लभ किस्म की रचनात्मकता थी। इससे ओड़िया कवियों को पहलीबार सचमुच में मुक्त पद्य या काव्य का आस्वाद मिला था और सच्चि राउतराय को कला-गुरु या काव्य-गुरु माना जा चुका था। गुरुप्रसाद ने अपनी कृति 'काल-पुरुष' में 'वेस्टलैण्ड' की काव्यात्मक पुनर्रचना करके इलियट के काव्य से परिचय करा दिया था। लेकिन गुरु प्रसाद की सर्वाधिक सार्थक देन यह थी कि उन्होंने कविता का एक ऐसा मुहावरा दिया था जो अधिक हल्का-फुल्का, अधिक सम्प्रेषणप्रवण, अपनी संरचना में अधिक मुक्त-प्रवाही और अपनी बोलचाल की लय में आकर्षक ढंग से क्षिप्र या तेज रव था। रमाकांत रथ भिन्न थे। वे राउतराय और गुरुप्रसाद, दोनों के प्रशंसक तो थे लेकिन उनसे जरा-भी प्रभावित नहीं हुए। वे एक ऐसी बोली में बोल रहे थे जो अपने रूपकार्थ में रुढ़ि-विरुद्ध, यहाँ तक कि अटपटी थी। लेकिन इसकी आड़ में वे एक ऐसा मुहावरा रच रहे थे जिसमें काव्य-वस्तुओं की खोज-बीन के लिए भाषा का प्रयोग दर्पण पर पारे की परत की तरह किया जाता हैःझटके,व्याघात, परिहास, सुर के आत्मोपहासी उतार-चढ़ाव और छह द्म-गम्भीर आध्यात्मिक गप्पबाज़ी इत्यादि तत्व उसी खेल के हिस्से थे, मानो कोई घुन्ना दैत्य अपना अर्धोच्चरित नैराश्यगीत बुदबुदा रहा हो। सीताकान्त महापात्र अपनी 'दीप्ति ओ द्युति' एक ऐसे दौर में लेकर आए थे।

इस पहले संग्रह को भारी-भरकम अपेक्षाओं और किंचित हिचकिचाहट के साथ हाथों-हाथ लिया गया। अपेक्षाएँ जगी थीं इसके मुहावरे की ऋजुता के कारण। हिचकिचाहट इस दुश्चिन्ता की देन थी कि कहीं तत्कालीन प्रभावशाली फ़ैशन का शिखर न छूट जाए। यह मानना होगा कि 1963 में ओड़िया कविता में विचारों की संश्लिष्टता और शैली का एक तरह का बेलौसपन स्पष्ट दिखता था। कविता कवि का खब्त बन चुकी थी और विशुद्ध पाठक गायब हो चुका था। सीताकान्त महापात्र ने अपने पहले संग्रह से ही अपना इरादा काफी स्पष्ट कर दिया था। वह सबके दर्पण में डूबते सूर्य को देखने के लिए कटिबद्ध थे और उन्होंने कहा :-

गायब सर्वस्व, लुप्त।
बिला रहीं लड़ियाँ ब्रह्माण्ड की सदा के लिए
आद्य देह सोख रही
त्वचा की पोरों से,
सभी कुछ समेटती, अंतिम रवि-रश्मियाँ।

पुनारावलोकन के दृश्यबन्ध की यह शुरुआत थी और उनके चौगिर्द श्रोता जमा हो चुके थे-कुछ -कुछ सराहते,कुछ -कुछ चकित। प्रत्यक्ष, सम्प्रेषण के प्रति अनुराग और अपने सामने खुलते जगमग संसार के प्रति विस्मय का भाव लिये हुए पाठक कवि के साथ हो गये, मानो कोई अनुष्ठानिक सायुज्य हो।

'अष्टपदी' (1967) में सीताकान्त ने अपने प्रत्यक्ष कथन को मिथकपुराणों के आवरण से ढँक दिया-मथुरामंगला से कुब्जा आ गयी, भागवत से देवकी, और अस्तित्वहीन द्वीप से सोलन आ गया और मिथकीय पात्रों की भीड़ ओड़िया-काव्य परिदृश्य पर छा गयी। सीताकान्त की मिथकीय कल्पना की संरचना यही प्रकट हुई। मिथक-रचना की प्रचलित शैली छोड़कर सीताकान्त ने प्रत्यक्ष-निर्मित सतह-संरचना का उपयोग किया; अधिक गहरे गोता लगाने की उनकी कोई मंशा नहीं थी, क्योंकि उन्हें पता था कि ओड़िया की काव्य-संवेदना मुलतः मिथक-ग्रस्त है, और सम्पर्क साधने के लिए क्रम-परिवर्तन या अदला-बदली मात्र पर्याप्त है। गहनतर संरचनाओं की खोज ना तो तर्कसम्मत होती,न ही वह आवश्यक थी। इसलिए सीताकान्त की कुब्जा तत्वतः एक पौराणिक मिथक ही बनी रही, और मिथक की रचना सम्पर्क मात्र से हो गयी। किसी विशेष आह्वान-अनुष्ठान के बग़ैर ही पाठक की गहनतर संवेदना जाग्रत हो गयी।

इसके दो निहितार्थ स्पष्ट थेः एक यह कि सीताकान्त द्वारा प्रयुक्त मिथकों ने मानवीय परिस्थिति या मानवीय नियति को पुनः परिभाषित करने की कोइ चेष्टा नहीं की; दूसरा यह कि मिथक अनायास रूपक बन गये। इसे आधुनिक ओड़िया कविता के विकास का एक अत्यन्त अर्थगर्भ चरण माना जाना चाहिए।

सीताकान्त ने चुपचाप ही मुहावरे की जगह विचार रख दियाः अगर कुछ कहने को है, तो शैली की परवाह करने की जरूरत, अब नहीं रही। काव्योक्ति के सारतत्व में इस निष्ठा के काव्य के दो प्रयोजन सिद्ध हुए :- प्रथम, इससे एक संसाधन या स्रोत का पुनर्नवीकरण हुआ; और दूसरे इससे दैनन्दिन अस्तित्व की लघुता को एक वृहत्तर सन्दर्भ मिल गया।मिथक-रचना की पौराणिक कला में अधिकतर कथात्मक विधान की प्रत्यक्षता से शक्ति आती थी और सीताकांत ने भी ठीक उसी तरह उस सामग्री का पुनरूपयोग किया। इस समय तक यह स्पष्ट हो चुका था कि सीताकांत किसी खास तकनीक का प्रयोग नहीं कर रहे, बल्कि उपलब्ध सामग्री का ही निष्ठापूर्ण, प्रामाणिक और सीधे-सीधे उपयोग कर रहे हैं। तकनीक का प्रतीयमान अभाव वास्तव मी खुद एक तकनीक था। इस तरह, कथापरक बाह्य-रुपाकार का प्रत्यक्ष कथन वस्तुतः मिथक रचना की एक तकनीक बन गयी। यह काम जोखिम का था, लेकिन सीताकांत ने खतरा मोल लिया और ओड़िया कविता के लिए एक साँचा तैयार कर दिया: जो नितांत साधारण किंतु शिक्षाप्रद सूझ थी। इस सांचे की प्रमुख सामग्री थी जातीय के स्मृति के रूप में मिथकमाला या मिथकशास्त्र।

'शब्दर आकाश' (1971) के प्रकाशन से कवि के काव्यजीवन का एक रोचक मोड़ सामने आया। इसमें अनुभव के दो स्तर दृष्टिपटल के केंद्र में आये, वे स्तर थे जातीय स्मृति और निजी स्मृति। अनुभव के रूप में स्मृति वस्तुतः एक युग्म है : सामूहिक (जातीय) स्मृति और व्यक्तिगत (निजी) स्मृति अलग-अलग इकाइयाँ नहीं

होती, बल्कि, एक दूसरे से आबद्ध, अदल-बदल कर एक-दूसरे की जगह लेती रहती है। 'शब्दर आकाश' में सीताकांत ने निजी स्मृति को जातीय स्मृति पर तरजीह दी, लेकिन वे यह कदापि नहीं भूले कि उनकी निजी स्मृति को अपनी भूल-भुलैया में दबा-छिपाकर सामूहिक स्मृति के अवशेष भी अवश्य बचाकर रखने हैं। 'हवाई अड्डा' कविता मे वे लिखते हैं :-

हवाई जहाज़ का लपलपाता मुँह
ढलती दोपहरी को पोखर में
रूपहले चोईदार कई भाकुर
वार्निश-पुता आसमान धूप-धुला
हवाई अड्डा गाँव परनाला
रातों को स्वर्ण लौटता चैत्ररथ
लाल-नीली रोशनी
घर लौटना, लंबी यात्रा की
वापसी विदाई का अनाहत नाद।

हवाई जहाज के उड़ान भरने और दोपहर के पोखर में रूपहले शल्क वाली मछली का बिम्ब उसी अभयमुखी या युग्मक सामूहिक एवं व्यक्तिगत स्मृति का सूचक है। हवाई जहाज़ उनकी निजी स्मृति का अंग है, जबकि पोखर की मछह ली उनकी सामूहिक स्मृति का, जो उन्होंने सामुदायिक जीवन की प्राथमिक इकाई गांव मैं अर्जित की है। एक दूसरी कविता, 'बगीचे' में सागर द्वीपों की तलाश में निकलते हैं और आकाश गिरि-शिखरों की तलाश में :-

खोजते रहे सागर अपने भूद्वीप
झुका रहे आसमान अपने गिरि-शिखरों पर ।
मैं यहाँ प्रतीक्षा करूँगा तुम्हारी,
क्योंकि तुम आओगे, मुझे यह पता है
मेरे प्रिय अपरिहार्य।

सागर द्वारा किसी द्वीप की खोज करना काल या समय में स्थिरता की तलाश की एक रूपक परख अभिव्यक्ति है, और आकाश द्वारा किसी पहाड़ की तलाश अनंत की परिभाषा खोजने की एक आलंकारिक उक्ति। जातीय स्मृति और निजी स्मृति के बीच वह छोटी-सी बगिया है जो जीवन जीने की प्रक्रिया की प्रतीक है। यहीं हमें स्मृतियों के एक दूसरे में गुँथने और विपर्यासों के समाहार का दृष्टांत मिलता है। वस्तुतः सीताकांत की कविता में काव्य-देश (या काव्य-स्थान) का विन्यास इसी क्रम से हुआ है :- सामूहिक व्यक्तिगत और तात्कालिक।

यहीं हम सीताकांत की कविता में काल और देश की अंतर्वस्तु तक पहुंचते हैं और 'समुद्र' (1977) नामक संग्रह इसका परिपूर्ण संवाहक है। 'ग्रीष्म में बूढ़ा' नामक उनकी एक कविता का यह उद्धरण लें :

सड़क पार करते सूखे पते
बवण्डर के एक औचक झोंके में
यातायात कर देते ठप्प;
एप्रिल का दुर्बल स्वर छेड़ रहा रक्तगान
गगन के नीले ज्वाला प्रताप से
चकित हुए पक्षीगण होते दिग्भ्रान्त ।

तो सीताकांत काल और देश को इस प्रकार देखते हैं : काल एक ऋतु है और देश उसका ज्वाला-प्रताप या (या अग्नि-विस्फोट)। देशकाल को इस प्रकार प्रस्तुत करके सीताकांत कम से कम एक नई ज़मीन तोड़ते हैं: वे मानवीय विडंबना के हमारे संज्ञान को परिशोधित करते हैं । यह परिशोधन तीन स्पष्ट दिशाएँ लेता हैं :पहली अवसाद का लबादा उतार फेंका जाता है ; दूसरी विशिष्ट स्थान पुनः परिभाषित हो जाता है; और तीसरी काल

और देश को निर्दिष्ट या विशिष्ट भूमिकाए दे दी जाती है। मानव नियति की यह एक नितांत नई सिद्धांत प्रस्थापना है;नई इस अर्थ में कि यह भाग्यवाद के क्लासिकी रूमानी मुखौटे को चीर देती है और दैनदिन प्रयोग के लिए एक टिकाऊ सामग्री की बिल्कुल नई दरी बुन देती है । यह टिकाऊ सामग्री यदि और कुछ नहीं तो कम से कम आशावाद जरूर है।

'चित्रनदी' (1979) की चर्चा से पहले उस काव्य-युक्ति या तकनीक के अनोखेपन पर जिसके कारण सीताकांत अपने महान समकालीनों से भिन्न ठहरते हैं : या भेद मुहावरे में एक नए मोड़ और व्यक्तिगत अर्थवत्ता, दोनों का है। यह तकनीक है विचार के एवज़ मैं बिंब रखने की। एक प्रतीकवादी के रूप में शुरुआत करने के बाद कवि अब एक ऐसा काव्य-अनुशासन की रचना कर चुका था जो प्रकट प्रतीकवादिता से परे हटकर थी। इस बीच उन्होंने कथन या बयान की ऐसी रीति भी अर्जित कर ली जो बिम्ब मुक्त थी। आशय यह नहीं है कि कवि ने बिंबों और रूपको का उपयोग किया ही नहीं। वह उन्होंने किया, पर कविता के परवर्ती भाग में विचारों के एवज़ में उन्हें रखने के लिए ही। दूसरे शब्दों में, उन्होंने मिथकमाला के एवज़ में प्रतीक रखे और रूपक में एवज़ में बिंब।

इसके जरिए उन्होंने पुरजोर तरीके से बता दिया कि वे समकालीन विधि-विधान या काव्यचार से अलग हटे है और जातीय काव्य का अपना ही मानदंड लेकर चल रहे हैं। यूनानी कवि बासिल विताकिस्स की राय में सीताकांत भविष्यवक्ताओं की गढ़ भाषा में छिपाये बिना संदेश पहुंचाने में समर्थ है।' उनका यह सामर्थ्य दरअसल उनकी यही अदला-बदली की निपुणता है, जो कविता से उसके बिंब तो छीन लेती है, मगर उनके एवज़ में विचार रख देती है। इससे एक उल्लेखनीय उपलब्धि के रूप में देखा जाना चाहिए। खासकर उस दौर में जब कविताएं अगर बिंब ना हो तो कुछ भी नहीं होती थी।

'चित्रनदी', 'अदला-बदली' की इस तकनीक का पुंजीभूत प्रतिफलन है। 'घास फूल'कविता की ये पंक्तियां देखें :-

वह आए तो उन्होंने देखा
कि यह सच था, घास की फुनगी पर
नग्न नील फूल थरथरा रहा था
कुहरिल सुबह की सर्द हवा मे,
और बगीचे का प्रसव-कक्ष
भरा था धूल और राख से।

यहां कवि का उद्देश्य अपने प्रतीक 'घास फूल' के जन्मका दृश्य उपस्थित करना है, जो दरअसल है एक मिथक ही। 'नग्न नील फुल', ' कुहरिल सुबह की सर्द हवा' और 'बगीचे का प्रसव-कक्ष' हमारे संज्ञान या बोध को तीव्र करने के लिए नहीं है यह केवल वातावरण को ठेस रूपाकर देने के लिए है। बिंब की दृष्टि से वे निश्चल है। उनका कार्य या प्रयोजन स्वयं विचार को सौंप दिया गया है; उन्हें दिया गया चित्रात्मक आधार परिवेशपरक यथार्थ मात्र है।

'आरा दृश्य' (1981) में सीताकांत मिथक संरचनाओं के अपने पुराने आखेट क्षेत्र में लौटते हैं,पर अब वह एक बदले हुए व्यक्ति हैं। बीच के वर्षों के अन्तराल में उन्होंने जान लिया है कि मिथक का एक रूपक की तरह प्रयोग तभी अधिकतम प्रभावी होता है जब संपर्क का बिंदु स्वतः ज्ञात हो, और युग्मपरक सामूहिक एवं निजी स्मृति का उपयोग तब तक नहीं होना चाहिए जब तक कि दैनन्दिन या पार्थिव को अलौकिक आध्यात्मिक आवृत न कर ले।अतः वह यशोदा को लेते हैं। कृष्ण के मुख में उसने विश्वरूप के दर्शन किए हैं इस दावे की साख जमाने में वह विफल रहती है । इसके जरिए वे यह विचार संप्रेषित कर रहे हैं कि इस धरती से प्रेम करने का अपरिहार्य दंड यह है कि जीवन के महान अभिदर्शन(विजन) को मृत्यु में दफन करना पड़ता है। इस तरह 'दूसरे दृश्य' का रहस्य यशोदा का निजी अनुभव है जो कि आधुनिक पाठक के पास उसकी सामूहिक स्मृति के अंग के रूप में आता है। इसी तरह ' श्रीकृष्ण की मृत्यु' नामक कविता 'जारा शबर की गीत' से अपना सूत्र उठाती है पर उससे बहुत कम करुण या आर्त्त। हम यह मान सकते हैं कि ऐसा कवि ने सोद्देश्य किया है, क्योंकि

जारा नामक व्याध की व्यथा को यहाँ उस महती घटना के प्रति छह द्म-उदासीनता में रुपान्तरित कर दिया गया है। लेकिन व्यंग्य की पैनी धार को सोचे-समझे विचार-बिंबो के प्रयोग से चतुराई से कुण्ठित कर रखा गया है। यह आश्चर्यजनक नहीं, क्योंकि सीताकांत के शस्त्रागार में व्यंग्य या आत्म-उपहास प्रमुख हथियार नहीं है। उनका मुख्य अस्त्र करुणा है, और इसका प्रयोग है दुर्बलतर आत्माओं की बल्कि खुद अपनी भी नैतिक त्रुटियों के बचाव में करते हैं और यही उनकी रूमानी कल्पना है।

‘ समयेर शेष नाम’(1984) ‘काहाकू पुच्छिबा कह’(1986) ‘ चढेई रे तु कि जाणु’ ‘जड़ों मे लौटने’ की त्रयी है। ऐसा नहीं कि सीताकांत कभी भी अपनी जड़ों को भूले हो, लेकिन एक विचार की तलाश उन्हें एक दूर देश ले गयी थी- चाहे वह सामूहिक अतीत हो या सार्वभौम मनुष्य की समसामायिक विडंबना (या दुविधा) । ‘समयेर शेष नाम’ के साथ वे घर लौटते हैं- अपनी दादी,अपने बच्चों, अपने घर-द्वार के पास, और मोटे तौर पर असंख्य अंतरंग नातों-रिश्तों के पास।

न ही कवि आत्मसमर्पण करता है। वे एक दुर्दान्त विश्व के बरखिलाफ़ अपने बूते पर खड़े हुए हैं और उन्होंने अपनी आत्मा को छुपाने के लिए एक जगह खोज ली है । वह जगह शायद ‘वर्षा सकाळ’ (1993) का बदली-भरा आकाश हो । यह देखना रोचक है कि आध्यात्मिक प्रगतिवादी धुंध में विचार संरचनाएं या विचार बिंब किस तरह धीरे-धीरे लुप्त होते जा रहे हैं। सीताकांत इसके लिए ओड़िया के 3 महाकाव्यों के ऋणी हैं : सारला दास, जगन्नाथ दास और भीमा भोई। ओड़िया कविता के तीन प्रमुख मुहावरों के संगीत-समन्वयक के रूप में सीताकांत इतिहास क्रम में काव्योक्ति की दो बड़ी खाइयों को पाट रहे हैं। एक और वे ओड़िया कविता को महत् परंपरा से जोड़ रहे हैं, और ऐसे करने के बाद दूसरी ओर वे अपना लंगर अपनी समसामायिक पनाहगाह की सुरक्षा में डाल रहे हैं और इस प्रक्रिया में वे समसामयिकता को आधुनिकता के करीब ले आए हैं। उनके काव्य को नवीनतम चरण के आध्यात्मिक प्रगीत इन दूरियों को पाटने के प्रतीक है , ऐसी दूरियां जो बहुत समय से थी। स्वीडिश समीक्षक ओल्स मामग्रेन के शब्दों मे, सीताकांत की कविता संस्कृत धार्मिक मिथकीय परंपरा यूरोपीय प्रगीतात्मक आधुनिकतावाद और अपने गृह प्रांत ओड़िशा के सूर्य-स्नात गाँवों की लोक कविता का महासंगम है। अपनी काव्य-उक्तियों को ऐसा महासंगम बनाते हुए सीताकांत आधुनिक भारतीय कविता को एक निहायत नया लोकाचार और अर्थ दे रहे हैं, और एक ऐसी काव्य संस्कृति भी, जिसमें औदात्य और पार्थिवता बराबर की मात्रा में सम्मिश्रित है।

कृतियाँ :

ओड़िया

काव्य :

1. दीप्ति ओ द्युति(1963); 2. अष्टपदी (1967); 3. शब्दर आकाश (1971); 4. समुद्र(1977); 5. चित्रनदी (1979); 6. आरद्दश्य (1981); 7. समयर शेष नाम (1984); 8.काहाकु पूछिबा कह (1987); 9. चढ़ेई रे तू कि जाणु (1990); 10.फेरि आसिबार बेळ (1991); 11. श्रेष्ठ कविता (1992); 12. वर्षासकाळ (1993) ।

निबन्ध :

1. भिन्न आकाश , भिन्न दीप्ति (1978); 2. निस्संग मणिष (1980); 3. शब्द स्वप्न ओ निर्भीकता(1990); 4. अन्धारर झोटिचित्र (1990) ।

यात्रा-वृतांत :

1. अनेक शरत् (1981) ।

अनुवाद :

1. सारहुलर जन्ह (1977); 2. मगध (1987); 3. सूर्य-तृष्णा (1982); 4. असरन्ति पिलादिन (1991) ।

अँग्रेज़ी

काव्य (अनुवाद) :

1. क़्वाइट वोयलेन्स (1970); 2. द अदर साइलेंस (1973); 3.ओल्ड मैन इन समर (1975); 4. द जेस्टर (1979); 5. द सांग ऑफ कुब्जा (1980); 6. सिलेक्टेड पोयम्स (1986); 7. डेथ ऑफ़ कृष्ण एण्ड अदर पोयम्स (1991); 8. ए मार्निंग ऑफ रेन एंड अदर पोयम्स (1991)।

आदिवासी काव्य :

1. द एम्पटी डिस्टेंस केरिज़ (1972); 2. द वुडन स्वोर्ड (1973); 3.स्टेइंग इन नोव्हेयर (1975); 4. फॉरगिव द वर्ड्स (1976); 5.बाखें : रिचुअल इनवोकेशन सांग्ज़ ऑफ़ ए प्रिमिटिव कम्युनिटी (1979); 6. मेन, पैटर्स ऑफ डस्ट (1981); 7.द अवेकेण्ड विण्ड (1983); 8. द एण्डलेस बीव : ट्राइबल सांग्ज एंड टेल्स ऑफ ओड़िसा(1991); 9. अन एंडिंग रिद्म्स : ओरल पोयट्री ऑफ़ द इंडियन ट्राइब्ज़(1992)।

निबंध एवं शोध :

1. द कर्व ऑफ मीनिंग (1974); 2. वेअरफूट अन-टू रियलिटी (1975); 3. गैस्चर्स ऑफ इंटिमेसी (1976); 4. भीम भोई (1983); 5. मॉडर्नाइजेशन एंड रिचुअल (1986); 6. ट्रेडिशन एंड द मॉडर्न आर्टिस्ट (1987); 7. महाभारत एंड मॉडर्न इंडियन लिटरेचर(1988); 8.जगन्नाथ दास (1990); 9. ट्राइबल वॉल पेंटिंग्ज़ ऑफ उड़ीसा (1991); 10. ट्राइबल लाइफ एंड कल्चर ऑफ ओड़िशा (1992); 11.छउ डांस ऑफ मयूरभंज (1993); 12. वियाण्ड द वर्ड (1993); 13. डिस्कवरिंग द इन्स्केप(1993)।

अनुवाद और संपादन :

1. ओडिसा : कुन्स्ट एंड कल्चर इन नॉडस्टि इण्डेन (एडिटेड विद ईबेरार्ड फिशर एंड डी. पैथी) (1980); 2. लांगिंग फॉर द साउथ : एन एंथोलॉजी ऑफ मॉडर्न मैसिडोनियन पोएट्री (1982); 3. ओड़िया पोएट्री टुडे (1982); 4. एण्ट्स एंड अदर स्टोरीज बाई गोपीनाथ मोहन्ती (1983); 5. एन एन्थ्रोलॉजी ऑफ मॉडर्न ओड़िया पोएट्री (1984); 6. फॉकवेज़ इन रिलीज़न : गॉड्स स्पिरिट्स एंड मेन (1983); 7. अमरु शतकम् : द इरोटिक लव पोएट्री ऑफ अमरु (1985); 8. द रॉक एंड द सेंडलवुड ट्री : (मॉडर्न वियतनामीज़ पोयट्री) (1985); 9. द रिअम ऑफ द सेक्रेड : वर्बल सिम्बॉलिज़्म एंड रिचुअल स्ट्रक्चर (1992)।

वक्तव्य

ओड़िया कवि सारलादास के महाभारत के आदिपर्व के प्रथम अध्याय में वाग्देवी का निम्नलिखित आह्वान किया गया है जिसमें उनकी 'अमृत दृष्टि' की, उनकी मांगलिक चितवन की प्रार्थना की गयी है -

" आदि अंतमध्य तू अतु सर्व थाने
ग्रंथ भिएलु तु भूत भविष्य वर्तमाने ।"

"तू सर्वव्यापक है : आदि में है, मध्य में है और अंत में है । भूत, वर्तमान और भविष्य के सभी ग्रंथों का उद्गम भी तू ही है।

मैं उस देवी सरस्वती को नमन करता हूँ, जिनकी कृपा के बिना शब्द काव्य रूप में तत्वान्तरित नहीं होते।

इस अवसर पर मेरे स्मृति पटल पर उनेक दृश्य उभर रहे है । वर्ष 1953 की बात है । मैं अपने गाँव अपने माता-पिता, आत्मीय परिजन, मित्र, अपने गांव की कल-कल निनाद करती चित्रोत्पला नदी और आक्षितिज फैले धान के अंतहीन खेत सबको छोड़कर कटक में स्थित रावेनशॉ महाविद्यालय के छात्रावास में आ गया । मेरी पहली कविता उसी वर्ष लिखी गई, जिसने बाद में मेरे पहले काव्य-संग्रह में सर्वप्रथम कविता का भी स्थान प्राप्त किया ।

कभी-कभी तो यह विचार आता है कि चालीस वर्ष की यह लंबी अवधि कैसे तो, मानो पलक झपकते ही व्यतीत हो गई । पराजय, प्रीति, स्मृति, मैत्री और घनिष्ठता के 40 वर्ष । व्यथा के कितने पल और आयु के सोपान पर चढ़ने की पीड़ा ! स्वयं अपने भीतर बाहर और सर्वत्र घट रही घटनाओं के प्रति जिज्ञासा और एहसास के कितने ही प्रयत्न ! लेकिन सपने में सुनी वाणी की तरह स्मृति की वाणी भी बहुधा बोलती है । और कथन में अपने समूचे अस्तित्व के साथ यह दोनों उपस्थित होते हैं और साथ ही होता हैं मेरा एक परिवर्तनशील आत्मभाव, मेरा निजी व्यक्ति। मुझे एक छोटे काष्ठ पर विराजमान अनेक देवताओं वाले घर के भीतरी कक्ष में उड़िया 'भागवत' का स्वयं उच्चार सुनाई दे रहा है। मुझे सुनाई दे रहे हैं गांव के एक छोर पर स्थित छोटे से मंदिर में अच्युत यशोवंत तथा भीम भोई के भजन-स्वर। हैजे से ग्रस्त गाँव गहन अंधकार में नीरवता की नितान्त भयानक आवाज तथा देवी मंगला की मनुहार करने वाला संकीर्तन। और तभी सुन रहा हूं वर्षा, अगणित मृत्यु,स्मृतिजन्य अनुराग और जन्म, रुग्णता तथा मृत्यु को चित्रित करते हुए गुजरते मौसम के स्वर। इस सबके साथ ही गंगाधर मेहर की 'तपस्विनी' तथा 'दीन कृष्ण','कविसूर्य' और ओड़िया साहित्य के कई अन्य दिग्गजों के छंदों का पाठ करते मेरे पिताश्री- उन्हें गुजरे हुए 11 वर्ष बीत चुके हैं- का भी स्वर है ।

मेरे लिए कविता इन 40 वर्षों के अन्वेषण, अपर्याप्तता, अधूरेपन, कभी-कभी सर्वथा संतोषप्रद भी नहीं और अनुभव के सतत को अभरते नए आयामों तथा काव्य-रूप देने हेतु शब्दों की खोज की गाथा है|

मैं यह सदा अनुभव करता रहा हूं कि मैं अपने चारों ओर घट रही घटनाओं, सर्व-अस्तित्व तथा उनकी भवितव्यता के साथ अनुन्मोचनीय रूप से जुड़ा हुआ हूं । सभी घटनाएं दो बार घटित होती है- प्रथमत: घटित होने के समय बाहयरूप में, उसके बाद औचक रूप से, जिसकी आवृत्ति मेरे भीतर होती रहती है। सर्व-अस्तित्व-मनुष्य,नदियां,वृक्ष,पाषाण और हमारे सामूहिक अचिरता के सारे सूत्र परिहार्य रूप में मुझसे सहबद्ध हैं। साथ ही, मेरा अंत:करण प्रत्येक को प्रत्येक को, प्रत्येक अस्तित्व को अंतरंगता प्रदान करता है और सबका सहभोक्ता भी होता है|

मेरी कविता में सभी दारुण विपत्तियों तथा उल्लासों, मुस्कानों और विषादों को झेलने के बाद जीवन के सांध्य-काल में मनुष्य द्वारा की जाने वाली वह कामना है कि यदि पुनर्जन्म सत्य है तो वह इस नियति में, मानव होने की नियति में, पुनर्जन्म ले ।

कविता शब्दों की रचना है और शब्द सामाजिक स्मृति-चिन्ह हैं। साथ ही वहां प्रयोक्ता के स्वयं के अंत:करण की स्मृतियां और कल्पनाएं भी हैं । यह विरासत चीत्कार तथा रिरियाने से लेकर प्रबल वाग्मिता तक, वेश्यालयों की सौदेबाजी से लेकर अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति तक व्याप्त समग्र मानव-इतिहास पर आच्छादित है। एक उत्तम कविता में प्रत्येक शब्द बोलता है । प्रत्येक शब्द अपरिहार्य होता है, अद्वितीय होता है । प्रत्येक शब्द संयोजनों के असंख्य अर्थभेद से अधिरोपित मुग्धकारी होता है। एक उत्तम कविता में शब्द मौन बोलते हैं, सरलता से, मौन भंग की आशंका से मानो डरते हुए मुखरित होते हैं| वे अन्य से द्वंद्व के सोपान हो जाते हैं और ऐसे संयोग को प्राय: नकारते नहीं । वे उस उर्जा से अलंकृत होते हैं जिसे लोर्का ने द्वंद्व की संज्ञा दी है, वह प्रच्छन्न ऊर्जस्विता जो उन्हें तत्पर करती है और हमें भी प्रेरित करती है, वह रहस्यात्मक गुणवत्ता, जिसका बोध केवल अंतः प्रज्ञा से ही होता है|

एक उत्तम कविता किसी उत्तम कलाकृति की तरह सत् की उपासना करती है, निर्देशन नहीं करती। यह हमारे विचार भंडार का परिवर्तन नहीं है । यह तो हमारे अनुभव के पुरोभाग का विस्तार है, हमारे अस्तित्व की विस्तृति, हमारे प्रारब्ध की जागरूकता । कविता का स्वरूप तो गत्यात्मक है जो अपने शब्द-विन्यास के माध्यमों से सभी अस्तित्ववान तथ्यों की कुछ रहस्यात्मकता को संप्रेषित करती है। इसमें हमारी देह, हमारी आत्मा, हमारे स्वप्न, हमारी मृत्यु सभी समाहित हैं। यह उद्बोधनों से परिपूर्ण है- सुदूर नक्षत्रों के स्वप्नलोक से लेकर मुख में भोजन के कौर के आस्वाद तक। कविता किसी अविद्यमान को जन्म देने का मातृ-आह्लाद है।

अनुभव की व्यग्रता का सिंहावलोकन कविता को जन्म देता है । कविता शब्दों के कांपते हाथों में अनुभव को इस आराधना के साथ धारण करने का आग्रह करती है कि प्रत्येक अनुभव स्व-आत्मोद्घाटन करें, वह उसके समक्ष एक पुरोहित की तरह नहीं, करबद्ध प्रार्थना में लीन एक बालक के समान अभिमुख होती हैं। क्योंकि उसकी उत्कंठा हमारे अस्तित्व की अशाश्वतता को अपने निष्ठुर अवसाद तथा परिहार्य इंद्रजाल के साथ पूर्णरूपेण ग्रहण करना है। यह उस शाश्वत अर्द्ध-तिमिर में अन्वेषण है जो समाप्त होने का नाम तक नहीं लेता। उसका प्रमाण अर्थ प्रांजल विस्मय जैसा है।

मेरी धारणा है कि कविता अंततः उत्साह,निर्भीकता का विषय है। शास्त्रविद्या अथवा प्रज्ञा को उस वास्तु के रूप में परिभाषित करना है जो आपको विमुक्त करती है- सा विद्या या विमुक्तये। मेरे लिए कविता परा विद्या अर्थात् परम विद्या है। यह सभी तरह के भय-पशुओं, मानव, देवताओं, दानवों के भय, यहां तक कि स्वयं के, हमारे क्षुद्रतर, हीनता, स्व-भय से भी हमें मुक्ति प्रदान करती हैं और हमारे समय को चित्रित करने वाले भय से बढ़कर दूसरी कोई वस्तु नहीं है। भय से ग्रसित हो शब्द सघोष अथवा वाग्मितापूर्ण हो जाते हैं, छद्म आवरण से लिपटी हुई भय की अभिव्यक्ति वैसे ही है- जैसे कि एक अकेला व्यक्ति अंधेरे पथ पर अपने आप को सांत्वना देने के लिए ऊंचे स्वरों में गाता है।

मेरा मानना है कि कविता अनहंकार का भी विषय है। इसके अनौद्धत्य के दो स्रोत हैं। अपनी संसृति से किसी को भी न छोड़ने का दृढ़ संकल्प, और किसी भी पक्षधरता के प्रति अस्वीकृति,बल्कि सबके साथ समरसता। रचनात्मकता के क्षेत्र में मनुष्य होने की सभी अपेक्षित भव्यता का आह्वान कविता करती है, और साथ ही अवलोकन के लिए सभी प्रकार की स्वार्थपरक परितुष्टि का परित्याग भी कर देती है। इसकी अनंहकारता इस अनुभूति से भी प्रवाहमान होती है कि जो कुछ उसने व्यक्त किया है वह वही नहीं है जो उसका मंतव्य है, और शायद प्रकारांतर से पहले भी पूर्णत: वह व्यक्त किया जा चुका हो, जबकि बहुत संभव यह भी है कि जो वह अभिव्यक्त करना चाहता है उसमें से बहुत कुछ अवर्णनीय रह जाए । कह सकते हैं

कि कविता एक प्रकार से निरंहकार का साहस है । कुल मिलाकर उन्मूलन और साथ ही आश्वासन हेतु अति-संवेदनशीलता तथा अनंहकारता इसकी शक्ति के स्रोत हैं ।

यदि यह उत्तम कविता किसी अनौद्धत्य से परिपूर्ण है तो इसमें शब्दों के प्रति निष्ठा की मौत अनुभूति भी है। लगभग उसी प्रकार जैसी निष्ठा कुम्हार की माटी के प्रति और साधारण बढ़ई की सूखी लकड़ी के प्रति होती है।

एक उत्तम कविता मानव संवेदना के संपूर्ण इतिहास से कोई कटुता नहीं ग्रहण करती बल्कि वह तो केवल करुणा तथा आशा का अभावुकतापूर्ण दृढ़ संकल्प ग्रहण करती है । यह सृजन से अभिभूत तथा इतिहास से उदासीन होती है । यहां तक कि जब चींटी पैरों के नीचे दब आती है तो कविता जवाबदेही के लिए देवताओं के सभी बंद दरवाजों पर दस्तक भी देती है । तृण का एक दल जहां पहले अंकुरित हो जाता है तो यह दो दलों के अंकुरित होने की प्रार्थना करती हैं। इसकी परम प्रार्थना भी यही है कि प्रत्येक पाठक, प्रत्येक मानव कवि बने।

मेरी दृष्टि से कविता विचारों का अभियान या द्वंद्व नहीं है। क्या संवेग का समाज शास्त्र भी नहीं है और न ही यह अस्तित्व तथा अनुरूपता का तत्व विज्ञान है । दरअसल कविता, वेगवान क्षणों पर चिन्हित अनुभवों को पकड़ने की एक कोशिश है। यह उस स्मृति और कल्पना की शक्ति तथा महिमा का अविष्कार है जो सनातनता में किसी घटना या किसी संवेग को उत्कीर्ण करती है। यह अपनी कुंठित साधारणता को एक रहस्य और एक चमत्कार में रूपांतरित कर देती है, ताकि विलक्षण सार्वभौमिक तथा व्यक्ति के संवेग की लघु, तीक्ष्ण प्रतिमूर्ति युग का मूलाधार बन सके।

हमारे युग ने हमें किसी भी रूप के रहस्य के प्रति, सभी अस्तित्वों के रहस्य के प्रति, हमारे स्वयं के अस्तित्व के प्रति तीव्र खोज का पाठ पढ़ाया है। इसने ऐसा इसलिए किया है क्योंकि व्यक्ति रहस्य की उपस्थिति के समक्ष अपने को तुच्छ यहां तक की शक्तिहीन अनुभव करता है, जबकि हमारे युग की यह धारणा है कि हम सभी शक्तिमान हैं। इसने हमें उन मनोवेगों पर विश्वास न करने की शिक्षा दी है जो तर्कसंगत नहीं है। इसके विपरीत लेखकीय धारणा होती है कि रहस्य न केवल विश्व को गतिशील रखता है बल्कि यह हमारे स्वत्व के तत्व में है; और शब्दों का कार्य है इसके लिए प्रतीकों को खोजना । हमारे युग ने हमें आशा एवं चमत्कार के प्रति पूर्णत: अविश्वास की शिक्षा दी है । आज आशा की बात करना लगभग एक पाखंड है और हम क्या भूल गए हैं कि चमत्कार हमारी आंखों के समक्ष, हमारी साधारणता की उत्तरजीवी निरंतरता में, हमारे अंतहीन सपनों के जटिल अवशेष में अभी भी घटित होता होगा, और वे मात्र पैराणिक काल में ही घटित नहीं हुए होंगे । साहित्य का संबंध किसी साधारणता से है कि न असाधारणता से। और जैसा कि जोयस ने कहा है, समय आ गया है कि इसी साधारणता में, अपने अंतस में और अपने चारों ओर के संकेतों तथा अपने कूटबद्ध सपनों के अवशेष में चमत्कार को खोजें । इसे उद्घाटित करने का उपाय है जीवन से निराश न होने का दृढ़ निश्चय अथवा आशा को न त्यागना; किंतु साथ ही अपने साधारण अनुभव की उपासना करना, जिसके आगे शायद अंततः कोई अर्थ, रहस्य, चमत्कार और स्वप्न नहीं होता।

रहस्य की तो माँग ही है कि हम उसका मनन करें और भ्रम और वास्तविकता के बीच चलते संघर्ष का समाधान करें और स्वप्न को मनुष्य के सम्मोह, उभयवादिता, त्याग, आकांक्षा, आशा तथा कल्पना-शक्ति के सभी रंगों से दृश्यमान बनाएँ। इसका अधःसांवेदनिक संदेश प्रीति तथा समागम की शक्ति को विमुक्त कर सकता है जो मृत्यु तथा परिशून्यन को परास्त करती है । अपनी अंतरात्मा तथा साथ ही 'अन्य' के साथ अंतरगता के द्वार बंद कर हम अपने को एकाकीपन तथा इन्द्रियार्थों से घिरे रहने की यंत्रणा से बचाए रख सकते हैं। अपनी संपूर्ण विक्षिप्तता से पूर्व वान गॉग़ ने एक वृत्त में बार-बार चक्कर लगाते बंदियों का एक मार्मिक चित्र बनाया था। चित्र (लैंडस्केप) में वृत्त के बाहर जीवन्तता है, चांदनी में नहाई धरती का एक दृश्य है, उन बंदियों को केवल यह करना है कि वे द्वार खोलकर बाहर आ जाएँ। किंतु फिर भी वे ऐसा नहीं करते। जीवन तो मानवीय आत्मशक्ति का आवास है और कल्पना के विमुक्ति द्वार खोलने का प्रतिषेध उसे एक कारागार के रूप में परिवर्तित कर सकता है ।

कल्पना की यह भावप्रवण यात्रा ही हमें अपनी अनिवार्य मानवीयता के सतत ह्रास से मुक्त करती है। नीत्शे ने उल्लेखनीय वक्तव्य दिया था कि स्वप्न में हम अपनी वास्तविक सृजनात्मकता का इतना अधिक उपयोग कर लेते हैं कि हमारा जागृत जीवन अत्यधिक अंकिचन हो जाता है। कला जीवन के स्वप्न तथा उसकी सृजनात्मकता की पुनः स्थापना का अन्वेषण स्वीकार नहीं करती है। हममें से प्रत्येक में एक मानसिक अवचेतन लोक होता है, जिससे हम बहुधा स्वीकार नहीं करते हैं। साहित्य उसी अंतरात्मा का दर्पण है और वह उस विशेषाधिकृत बिम्ब को उपस्थित करना चाहता है जिसे लेखक के सर्जनशील व्यक्तित्व ने जन-जन का बना दिया है। सहचारिता को प्राप्त करने का यह अंतिम कृत्य है ।

पन्द्रहवीं शताब्दी के यूरोप में एक मठ में एक ऐसा अधीर युवक आया जिसने मठाधीश से यह प्रश्न किया कि क्या वे वर्षानुवर्ष किये जा रहे सतत तथा एकान्त ध्यान से कभी ऊबे नहीं? प्रमुख ने युवक का ध्यान पास के ही एक वृक्ष पर बैठी कूजन करती सुंदर पंखों वाली एक चिड़िया की ओर आकृष्ट किया । युवक मुग्ध हो गया और जैसे-जैसे चिड़िया एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष पर उड़-उड़कर बैठती, वह उसे निकट से देखने की कोशिश करने लगा । अनंतः थका-हारा वह मठ में वापस आ गया। वहां उसे एक नये मठाधीश ने शांत भाव से बताया, *" प्रियवर, आपने एक पक्षी के मात्र अवलोकन में चालीस वर्षों की लंबी अवधि व्यतीत कर दी!"* तभी कोई व्यक्ति युवक के लिए एक दर्पण ले आया और उसे उसमें यह देखकर निराशा हुई कि उसके सिर के सारे बाल सफेद हो गए हैं और कुछ दाँत भी गिर चुके हैं। तब मठाधीश ने आगे कहा *"प्रियवर, जब आप एक सुंदर पक्षी का अवलोकन करते-करते यह नहीं जान पाये कि कैसे चालीस वर्षों की लंबी अवधि व्यतीत हो गई तो कोई व्यक्ति जीवन को देखने और उसके कुछ अर्थ पाने-समझने की इच्छा से कैसे क्लांत हो सकता है?"*

प्रत्येक निष्ठावान कवि अच्छी तरह जानता समझता है कि यह विषमावस्था उसकी भी है और यही अन्वेषण भाषा की शुचिता के अन्वेषण की ओर अपरिहार्य रूप से उसे अन्मुख करता है। वह भाषा जो दो उद्देश्यों की सहभागी हो सके- यानी वह व्यक्ति के अस्तित्व के मर्म तक पहुंच सके और साथ ही अन्य के साथ संपर्क हेतु एक मंच प्रदान कर सके। इसका आशय होगा कि एक शब्द के लिए व्यक्ति द्वारा अपना लगभग संपूर्ण जीवन समर्पित कर देना, यह अनुभव करते हुए कि आपको एक शब्द के परिष्कार के लिए संभवतः अपना संपूर्ण जीवन भी लगाना पड़ सकता है, बल्कि कई-कई जीवन की आवश्यकता भी पड़ सकती है। यही मैं अपनी एक कविता का अंश उद्धृत कर रहा हूँ :

एक शब्द गढ़ा जाएगा
इसलिए रंग बदलता है आकाश हजार बार
गाता है पवन कई तरह से गीत
रोता है, मुस्कुराता है समुद्र
टकराता है गूंगी रेत से
ताकती रहती है चातक-सी सर्वसहा वसुन्धरा
एक शब्द गढ़ा जाएगा
इसके लिए है जरूरी
सौ जन्म और सौ मृत्यु

(नीरवता और कवि)

प्रशस्ति

भारतीय ज्ञानपीठ वर्ष 1993 का ज्ञानपीठ पुरस्कार ओड़िया के यशस्वी लेखक डॉ॰ सीताकान्त महापात्र को भारतीय साहित्य की श्रीवृद्धि में वर्ष 1973-92 के बीच उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए समर्पित करता है।

सन् 1937 में जन्मे डॉ॰ सीताकान्त महापात्र की सारस्वत साधना का उनके प्रथम काव्य-संकलन 'दीप्ति ओ द्युति' (1963) के साथ हुआ। उनके अगले दो संकलन 'अष्टपदी' (1967) और 'शब्दर आकाश'(1971) क्रमशः राज्य तथा केंद्रीय साहित्य अकादमियों द्वारा पुरस्कृत हुए। अब तक उनके 12 काव्य-संकलन, 4 निबंध-संग्रह,1 यात्रावृत्त और कुछ अनुवाद भी प्रकाशित हो चुके है। साथ ही अँग्रेजी में उनकी 30 रचनाएँ,मुख्यतः चिंतनपरक,प्रकाशित हैं। पिछले बीस वर्षों में प्रकाशित उनकी प्रशस्त रचनाओं में 'समुद्र'(1977), 'अनेक शरत'(1981), 'समयर शेष नाम'(1984) और 'फेरि आसिबार बेल' (1991) विशेष उल्लेखनीय है।

महापात्र का काव्य-दर्शन समय-निरपेक्ष और समाज सापेक्ष है। उसमें संवेदनशीलता की सात्विक जिज्ञासा है,'अहम्' और 'इदम्' का तात्विक विवेचन है और पौराणिक कथ्य एवं सनातन सत्य का रसनिर्भर प्रतिपादन है। पाश्चात्य साहित्य में निष्णात होते हुए भी सीताकान्त की वाणी में देश की मृण्मय माधुरी की मनमोहन सुगंध मिलती है। देश-विदेश की अनेक भाषाओं में महापात्र की कविता के अनुवाद उपलब्ध हैं। प्रशासनिक दायित्व का पालन करते हुए उन्होंने ग्रामीण और जन-जातीय जीवन की सहज मार्मिकता का जो गहन अनुभव प्राप्त किया है, उसे उन्होंने अपने कृतित्व में उपबृंहित किया है।

डॉ॰ महापात्र को अनेक साहित्यिक मान-सम्मान प्राप्त हुए हैं जिनमें साहित्य अकादमी पुरस्कार के अतिरिक्त सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार,कुमारन् आशान् पुरस्कार,सारला पुरस्कार आदि सम्मिलित हैं।

डॉ॰ सीताकान्त महापात्र का भावी जीवन भव्य अनुभूतियों और नव्य अभिव्यंजना से समृद्ध हो,यही मंगल-कामना है।

नयी दिल्ली
22 मार्च 1994

कर्ण सिंह
अध्यक्ष
प्रवर परिषद

अशोक कुमार जैन
अध्यक्ष
भारतीय ज्ञानपीठ